॥ श्रीः ॥

जातकाभरण।

बाँसबरेलीस्थ गौडवंशावतंस श्रीबलदेवप्रसादात्मज गौरीपुत्र
राजज्यौतिषिक पंडित श्यामलालकृत-

श्यामसुन्दरीभाषाटीकासहित.

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

पौष संवत् १९६२, शके १८२७.

भूमिका ।



वाचकवृन्द ! भारतवर्षकी इस गिरीहुई दशामें भी यदि ऋषियोंकी भविष्य वाणीके यथार्थ होनेमें कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण है तो वह ज्योतिष शास्त्रहै; यद्यपि इस शास्त्रमें कहेहुए प्रत्येक विषय सत्यहैं; परन्तु ग्रहण, वृष्टि इत्यादिका निर्दिष्ट समयमें होना इत्यादि मुख्य २ बात जिस प्रकार लोगोंके विश्वासको इस शास्त्रकी सत्यतामें दृढ करतीहैं, अन्य विषय वैसे नहीं । जो कुछ हो अभी भारतवर्षमें अनेक मनुष्य इस बातको निर्विवाद स्वीकार करतेहैं कि—उक्त शास्त्रकी भूत, भविष्य और वर्तमान किसी भी बातमें सन्देह नहींहै । शास्त्रोंमें लिखीहुई सभी बात सत्यहै । उनमें साम्प्रतमें जो कुछ दोष लोग लगातेहैं वह मनुष्योंके आलस्य, कम परिश्रम करना इत्यादि दोषोंके कारणसे हैं । अब भी कितनेही गणक अपने शास्त्रमें इतने निष्णात मिल सकतेहैं कि, वह इस विद्याके मर्मको जानते और सन्दिग्धोंके संशयोंको निर्मूल करतेहैं । यहां हमको संक्षिप्त सूचना जातकाभरणके विषयमें देनीहै । गोदावरी नदीके समीप पाथनगरके निवासी गणकवर श्रीढु-ण्ढिराजका बनाया हुआ यह ग्रन्थ जन्मपत्रीके लिखने अथवा उसके फल कहनेमें अत्युपयोगीहै । जातकादि अनेक ग्रन्थोंको देखनेका कुछ भी परिश्रम उस मनुष्यको न करना पडेगा जो केवल इस ग्रन्थको भलीभाँति पढ़कर कण्ठस्थ करले । एक ही ग्रन्थसे जन्मपत्री लिखने वा फल कहनेमें परम सुभीता हो इस आशयसे हमने इस ग्रन्थको बाँसबरेलीस्थ पण्डित श्यामलालजीसे भाषाटीका बनवाय सुपुष्ट चिक्कण कागजोंपर अपने "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेसमें मुद्रित कियाहै । साथही मनोहर दृढ जिल्द बँधवाकर पुस्तककी पुष्टि करनेमें त्रुटि नहीं रक्खीहै । और ग्राहकोंके सुभीतेके लिये ऐसी उपयोगी और मनोरम पुस्तकका मूल्य अल्प रक्खाहै । आशाहै कि विद्यानुरागी तथा ज्योतिर्विद् लोग इस पुस्तकको मँगाकर लाभ उठावेंगे; और दृढ परिश्रम पूर्वक इस शास्त्रके फलादेशको ऐसा यथार्थ बतावेंगे कि लोगोंका विश्वास हमारे ज्योतिष शास्त्रमें नित्य नया बनारहै ।

आपका कृपाकांक्षी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

प्रोप्रायटर "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

॥ श्रीः ॥

भाषाटीकासहित जातकाभरणकी-
विषयानुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।



॥ श्रीहरिः ॥

श्यामसुंदरी-भाषाटीकासहित-

जातकाभरणप्रारंभः

॥ अथ भाषाकारकृतं मंगलाचरणम् ॥

नत्वा गणेशमथ पूषणमंबिकां च
मोमाधवौ च कृतसूरिनतिः प्रयत्नात् ॥
श्रीढुण्ढिराजमुखनिर्गतजातकस्य ।
श्रीश्यामलाल उचितां वितनोति भाषाम् ॥ १ ॥

अब भाषाकार पंच देवकी. स्तुति करता है श्रीगणेशजी और सूर्य और दुर्गा और लक्ष्मी और शिवजीको नमस्कार करके और वसिष्ठ गर्गादि पूर्वाचार्योंको यत्नसे नमस्कार करके श्रीढुंढिराजके मुखसे निकले हुए जातकाभरण नामक ग्रंथकी श्रीश्यामलाल योग्य भाषाको विस्तार करता है ॥ १ ॥

अथ ग्रंथकारकृतमङ्गलाचरणम् ।

श्रीदं सदाहं हृदयारविंदे पादारविंदं वरदस्य वंदे । मंदोपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवंद्योपमतां समेति ॥ १ ॥ उदारधी-मंदरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिंधुराजम् ॥ श्रीढुंढिराजः कुरुते किलार्यामार्या सपर्यामलकोक्तिरत्नैः ॥ २ ॥

अथ ग्रंथकर्ता गणेशजीकी वंदना करते हैं. हमेशा ऋद्धिसिद्धिके दाता ऐसे श्री-गणेशजीके चरणकमलको हृदयमें धारण करके वंदना करताहूं जिन गणेशजीको स्मरण करके मूर्खभी बहुत जल्दी बृहस्पतिके समान होजाता है ॥ १ ॥ बडे बुद्धिमान् पंडितरूप मंदरा-चलपर्वतके तुल्य इस होराशास्त्ररूपी समुद्रको मथकर श्रीढुंढिराज श्रेष्ठ यह सुंदरवचनरूपी रत्नोंको देखकर इस जातकाभरण नामक ग्रंथको करते हैं ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिंत्य भक्तितः ॥
जातकाभरणनाम जातकं जातकज्ञसुखदं विधीयते ॥ ३ ॥
शास्त्रप्रोक्तां जन्मपत्रीं करोति नानाग्रंथालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नं स्यात्ततो जातकेऽस्मिन्कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिं
च सर्वाम् ॥ ४ ॥

ज्ञानके देनेवाले श्री गुरुजीके चरणारविंदोंको अपने हृदयमें निश्चय कर भक्तिसहित स्मरण कर यह जातकाभरण नाम जातक ग्रंथ ज्योतिषियोंको सुखका देनेवाला विधान करता हूं॥ ३॥ जो पंडितजन शास्त्रोक्त अनेक पद्धतियों करके जन्मपत्रीको बनाते हैं उन पंडितजनोंके चित्त बहुत ग्रंथोंके देखनेसे उच्चाटको प्राप्त होजाता है इसवास्ते इस जातकाभरण ग्रंथमें सब जातक ग्रंथोंका कथन करताहूं ॥ ४ ॥

विचित्रपत्रीकरणादराणां श्रमं विनानुक्रमलेखनार्थम् ॥
समर्थमेनं प्रकटार्थमेवात्यर्थं ततो नाम यथार्थमस्य ॥ ५ ॥
सन्मङ्गलाशीर्वचनान्वितानि पद्यानि चाग्रे समुदीरयंते ॥
तान्येव पत्रीकरणे प्रवीणाः श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखंतु ॥ ६ ॥

विचित्र जन्मपत्र बनानेवाले पंडितजनोंको विना परिश्रमके यथार्थ लिखनेका क्रमपूर्वक शक्ति होय इसको प्रकट करते हैं ॥ ५ ॥ श्रेष्ठ मंगलाचरणके श्लोक और आशीर्वादके श्लोक पद्यमें जो आगे कहे उन्हीं श्लोकोंको जन्मपत्र बनानेवाले चतुर विद्वान् [illegible] कारक पहिले लिखें ॥ ६ ॥

शुण्डामण्डलमंप्रसारकरणैर्मौलिस्थलान्दोलनैर्नेत्रोन्मीलन-
मीलनैरनिलश्रीकर्णतालक्रमैः ॥ दानालिध्वनितैर्विलास
चरितैरुच्चाननोद्गर्जितैर्जातानंदभरः करींद्रवदनो नः श्रेयसे
कल्पताम् ॥ ७ ॥ पुनः पुनर्मङ्गलमूर्तिस्मरणं प्रत्यूहव्यूह
निवारणपरमेवेति पद्यांतरम् । नानादानविधानयज्ञनिकरैः
कर्मैरनल्पैर्भिश्रगत्प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलावाप्तिः कथं-
चिद्भवेत् ॥ नूनं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः संपूर्णकामः पुमा-
न्सोयं योऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥ ८ ॥

अब मंगलाचरणके श्लोक कहते हैं इन्हीं श्लोकोंको पहिले लिखना चाहिये सूंडको घुमाते हुऐ शिरको उठाय आँखोंको खोल और बंद करते कर्णतालसे क्रम करके गजमदकी पंक्तिसे गूँजते हुए भौंरोंकरके ऊपरको मुख करके गर्जते ऐसे श्रीगणेशजी मेरेको कल्याण देवें ॥ ७ ॥ वारंवार श्रीगणेशजीका स्मरण करनेसे विघ्नोंके समूह निवारण करनेको और भी श्लोक जानो और अनेक दान और यज्ञ विधान करनेसे और बडे तप बहुतकाल करनेसे और कल्प वृक्षकी प्राप्ति होनेसे मनवांछित फल कभी प्राप्त होजाते हैं जिन गणेशजीके कमलरूपी चरणारविंदोंके स्मरण करनेसे शीघ्रही मनुष्य सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्त हो जाते हैं सो श्रीगणेशजी मनवांछित फल निरंतर देव कल्पवृक्षके तुल्य ॥ ८ ॥

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा ॥
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु ॥ ९ ॥

श्रेष्ठ मनमें वास करके विलास करनेवाली हंसी कानोंमें गहने पहिरे ऐसे लक्ष्मी बहुत संतोष और विशेष मनोरथोंकी सिद्धि आपको देवे ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कांतिं कलानां निधिर्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरंजीविताम् ॥ साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्बलोत्कर्षतां केतुर्यच्छति तस्य वांछितमियं पत्रीयदीयोत्तमा ॥ १० ॥

अब और आशीर्वादात्मक श्लोक लिखते हैं सूर्य आपको कल्याण देवे और चंद्रमा लालित्य और कांतिको देवे मंगल लक्ष्मीको देवे बुध बुद्धिको देवे और बृहस्पति दीर्घायु करे और शुक्र साम्राज्यको देवे और शनिश्चर विजयको देवे और राहु बलकी वृद्धि करे और केतु मनवाञ्छित फलको देवे जिसकी उत्तम पत्री मैं करताहूँ ॥ १० ॥

ननु पूर्वजन्मोपार्जितानां सदसत्कर्मणां परिपाकोऽस्मिञ्जन्मनि शुभाशुभफलावाप्तिकालादेव व्यक्तोऽस्तीति जातकागमोक्तप्रपंचेन किं प्रयोजनमिति चेत्सत्यम् । पूर्वोपार्जितकर्मपरिपाकः शुभाशुभफलोपलब्धिदर्शनादेव ज्ञायते परमभीष्टकाले ज्ञातुं न शक्यते । तथा च भाग्यमखण्डितमखण्डितं रिष्टभंगोऽप्यायुर्मानमित्यादिज्ञानार्थे जातकागम एवास्यार्थे समर्थस्तदेककारणत्वात् तथाहि दिनरात्रिविभागेन

सूक्ष्मकालावयवसाधनोपायैस्तुर्यध्रुवभ्रमादिविचित्रयंत्रैरुपलक्षितास्ति । स्पष्टसमयोपातलग्नादिद्वादशराशिचक्रैः स्वोच्चादिगतानां ग्रहाणां सदसद्दशानुक्रमेणाभीष्टसमयेपि प्राक्कर्मपरिपाकोवगम्यते । रिष्टभंगः प्रकृष्टं नु रिष्टस्यापि विनाष्टिं विशिनष्टि तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयः प्रमाणस्य च निर्णयः स्यात् तस्माद्वेदाङ्गत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धित्वेनापि विनष्टिं विशिनष्टि तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयःप्रमाणस्य च निर्णयः स्यात् तस्माद्वेदाङ्गत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धं जातकस्कंधांगीकरणमुचितमेवेति ॥ ११ ॥

निश्चय कर पहिले जन्मके इकट्ठे किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका परिपाक इस जन्ममें शुभाशुभफल प्राप्तिकालमे स्पष्ट है जातकोंकप्रपंचकरके क्या प्रयोजन है यह सत्य है पूर्वजन्मार्जितकर्मपरिपाक शुभाशुभफलकी प्राप्ति देखनेसे जानते हैं परन्तु इष्टकालमें नहीं जानसक्ते हैं तैसेही भाग्योदय कम या पूरा रिष्टभंग और आयु जाननेके लिये पंडितजन अत्यंत समर्थ नहीं होते हैं जैसे दिनरात्रिका विभाग करके सूक्ष्मकालके साधन करनेका उपाय तुर्यध्रुव भ्रमनयंत्र इत्यादिकरके जाना जाता है स्पष्टसमय ज्ञात होता है लग्नादि द्वादशराशिचक्र करके उच्चादिराशियोंमें प्राप्त ग्रहोंका अच्छी बुरी दशा क्रम करके प्राप्त होनेका समय पहिले जन्मके कर्मोंको जानते हैं रिष्टभंगादि जिसीप्रकार आयुर्दाय प्रकार करके उमरका प्रमाण निर्णय होता है जिसकारण ज्योतिषशास्त्र करके कहेहुये भावकरके प्रत्यय सिद्धि करके जिसीप्रकार आयुर्दाय जाननेके प्रकार करके उमरका प्रमाण निर्णय होता है तिसकारणसे ज्योतिष करके कहे हुये भाव करके प्रत्यय सिद्धि करके जातकस्कंधको अंगीकार करनेमें ये उचित करना चाहिये ॥ ११ ॥

उपार्जितं यन्मदसद्भिमिश्रं जन्मांतरे कर्म नरैरिदानीम् ॥
होरागमस्तस्य विपाकमुच्चैर्दशाक्रमेण प्रकटीकरोति ॥ १२ ॥

जो जन्मान्तरोंके बीचमें मनुष्योंने अच्छे बुरे कर्म मिले हुये इकट्ठे किये हैं उन पूर्वकिये कर्मोंका शुभाशुभ फल ज्योतिषशास्त्रके ज्ञाता इस जन्ममें दशाक्रम करके बतलाते हैं प्रत्यक्ष प्रकट करते हैं ॥ १२ ॥

अथ ज्योतिषशास्त्रप्रशंसामाह ।

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय सुनिर्मलादर्शतलञ्चिलेदम् ॥ शास्त्रं विपद्वारिनिधेश्च तर्तु तरिस्तथार्थार्जनचारुमित्र-म् ॥१३॥ आधानकाले कमलोद्भवेन वर्णावली भालतलां-तराले ॥ या कल्पिता पश्यति दैववेत्ता होरागमज्ञानविलो-चनेन ॥१४॥ होरागमव्योमचरानुसारस्तेषां विचारः सुतरा-मुदारः॥सिद्धान्तवादाकलनं तदा स्यादभ्यासो यदा स्याद्गणित-द्वयस्य ॥ १५ ॥

मनुष्यके भाग्य देखनेके लिये यह होरा शास्त्ररूपी निर्मल आईना साक्षात् है और यह होराशास्त्र आपत्तिरूपी समुद्रसे पार उतरनेकी नौका है और धन पैदा करनेमें सुंदर मित्र है ॥ १३ ॥ मनुष्यके गर्भाधानके समय अथवा माताओंके गर्भसे पैदा होकरके सुखदुःखके अक्षरोंकी माला जो भालके बीचमें ब्रह्माने लिखदी है उसको ज्योतिषशास्त्रका ज्ञाता होरा शास्त्ररूपी ज्ञाननेत्रोंसे देखता है ॥ १४ ॥ ज्योतिषशास्त्र ग्रहोंके अनुसार है जिसका विचार निरंतर उदार है वह ज्योतिषशास्त्र सिद्धांत ग्रंथोंके पढनेसे और गणित जाननेसे होता है १५

अथ दैवज्ञलक्षणम् ।

अपारहोरागमपारगामी पाट्यां च बीजे सुतरां प्रगल्भः ॥ सद्गोलविद्याकुशलः स एव भवेत्फलादेशविधौ समर्थः ॥ १६ ॥

जिस शास्त्रका आदि अंत नहीं ऐसे ज्योतिषशास्त्रके आदिसे अंततकके जाननेवाला पाटी और बीजगणितमें अत्यंत प्रगल्भ और श्रेष्ठ गोलगणितमें कुशल इस प्रकारका ज्योतिषी फलादेश कहनेमें समर्थ होता है ॥ १६ ॥

अथ जन्मपत्रप्रशंसामाह ।

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भावि फलं समस्तम् ॥ क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातं प्रकटत्वमेति ॥ १७ ॥ सा जन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं संततमंधकं स्यात्॥ अनल्पमल्पं च ततोल्पकं वा न कल्पते भाग्यमतीव हेतोः १८

जो सब होनहार फल होनेवाले हैं सो संपूर्ण जन्मपत्ररूपी दीपकसे जान पडते हैं जैसे मकानमें दीपक करके रात्रिमें घटादिक सब पदार्थ जानपडते हैं ॥ १७ ॥ इसप्रकार ऐसी

निर्मल जन्मपत्री जिस मनुष्यको नहीं है उस पुरुषका जीवन निरंतर अंधरूप होता है बहुत थोडा भाग्यका फल नहीं जानपडता है ॥ १८ ॥

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणाः क्षणाभिधाः ॥ मंगलाय किल संतु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते ॥ १९ ॥ ये वक्ष्यमाणा इह राजयोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च ॥ ये कारकाः पूर्णफलं हि पूर्णं यच्छंतु पत्री क्रियते यदीया ॥ २० ॥ यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता ॥ तस्यालये सत्कमला सलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम् ॥ २१ ॥ कृतं मया नोदकयंत्रसाधनं नृपेक्षणं चापि न शंकुसाधनम् ॥ परोपदिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलं मयोच्यते ॥ २२ ॥

जन्मसमयका इष्ट और तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण और क्षणलग्न मंगलके अर्थ करो जिसकी यह जन्मपत्री शास्त्रविहित रचना करते हैं ॥ १९ ॥ जो राजयोग कहे हैं रश्मिआदियोंसहित नाभसयोग और पूर्णकारक योग पूर्ण शुभफलको देवैं जिसकी ये पत्री करते हैं ॥ २० ॥ जिस मनुष्यकी जन्मपत्री कौतुकसे शास्त्रोक्त करते हैं उस मनुष्यके घरमें लक्ष्मी अचल बहुत कालतक स्थिर होय ॥ २१ ॥ मैंने जलयंत्र साधन नहीं किया और न श्रम और न कोई सिद्धांतोंसे शंकु जन्मसमयमें लगाकर इष्टसाधन किया पराये जनाये हुए समय करके यत्नपूर्वक अच्छा बुरा जन्मपत्रका फल मैं कहता हूं ॥ २२ ॥

अथ संहिताभिप्रायेण पंचाङ्गफलानि निरूप्यंते तत्रादौ संवत्सरफलम् ।

अथ प्रभवसंवत्सरजातफलम् ।

सर्ववस्तुपरिसंग्रहे रतः पुत्रसंततिरतीव सन्मतिः ॥
सर्वभोगयुतदीर्घजीवितो जायते प्रभवसंभवः पुमान् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रभव संवत्सर होता है वह मनुष्य सम्पूर्ण वस्तुओंके संग्रह करनेमें तत्पर पुत्रसंतानवाला श्रेष्ठबुद्धि सर्वप्रकारके भोगसहित बडी उमरवाला होता है ॥ १ ॥

अथ विभवसंवत्सरजातफलम् ।

कृतज्ञभोक्ता प्रियदर्शनश्च बलाधिशाली चतुरः कलाज्ञः ॥
राजा भवेद्राजकुले सुशीलो विद्वान्मनुष्यो विभवाब्दजन्मा ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विभवनाम संवत्सर होवै वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला प्यारा है दर्शन जिसका अधिक बलवान चतुर कलाओंका जाननेवाला अपने कुलमें राजा शीलवान् पंडित होता है ॥ २ ॥

अथ शुक्लसंवत्सरजातफलम् ।

सदा सहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारैर्विभवैः समेतः ॥
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं पुमाञ्शुक्लसमुद्भवः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लसंवत्सर होवै वह मनुष्य हमेशा हर्षयुक्त निरंतर उदार श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री नयाविभव सहित श्रेष्ठ भाग्य विद्या और नम्रतासहित होता है ॥ ३ ॥

अथ प्रमोदसंवत्सरजातफलम् ।

दाता सुतानंदयुतोऽभिकांतः सत्येन नित्यं सहितो गुणी स्यात् ॥
दक्षश्च धूर्तः परकार्यकर्त्ता प्रमोदजन्मा मनुजोऽभिमानी ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमोद संवत्सर होवै वह मनुष्य दाता पुत्रके आनंद सहित सत्य करके युक्त गुणवान् चतुर धूर्त और पराया कार्य करने वाला अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ प्रजाधीशसंवत्सरजातफलम् ।

दाराभिमानः सुतरां दयालुः कुलानुवृत्तः किल चारुशीलः ॥
देवद्विजार्चाभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रजाधीश संवत्सर होता है वह मनुष्य स्त्रीका अभिमानी निरंतर दयावान् अपने कुलके समान चले सुन्दर शीलवाला देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर नम्रतासहित होता है ॥ ५ ॥

अथाङ्गिरस्संवत्सरजातफलम् ।

कांतः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः ॥
सुगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरोवत्सरसंभवः स्यात् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अंगिरा संवत्सर हो वह मनुष्य स्त्री करके सुखी भोग सहित मानी प्यारी वाणी बोलनेवाला बहुत पुत्रोंवाला छिपीहुई बुद्धि बड़ी उमरवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ श्रीमुखसंवत्सरजातफलम् ।

श्रीमान्प्रतापी बहुशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियश्चारुमतिर्बलीयान् ॥
सत्कीर्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसंभवोसौ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रीमुख संवत्सर होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान् बड़ा प्रतापी बहुत शास्त्रोंको जाननेवाला मित्रोंको प्यारा सुंदर मति बलवान श्रेष्ठकीर्तिसहित निरंतर उदार होता है ॥ ७ ॥

अथ भावसंवत्सरजातफलम् ।

प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ॥
सदा महर्षोऽभिमनो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाव संवत्सर होता है वह मनुष्य श्रेष्ठचित्त निरंतर यशस्वी गुणों सहित दान करनेमें तत्पर नम्रतासहित हमेशा आनंदसहित बहुत जनोंका प्यारा होता है ॥ ८ ॥

अथ युवसंवत्सरजातफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्गुणवान्विनीतो शांतश्च दानाभिरतो नितांतम् ॥
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें युवानाम संवत्सर होता है वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति गुणवान नम्रतासहित शांतचित्त दान करनेमें तत्पर श्रेष्ठ बुद्धिवाला दीर्घउमर मजबूत देह-वाला होता है ॥ ९ ॥

अथ धातृसंवत्सरजातफलम् ।

सर्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोप्यतितरां गुरुभक्तः ॥
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धातृनाम संवत्सर होता है वह सब मनुष्योंमें गुण और गौरवसहित सुंदर स्वरूप निरन्तर गुरुका भक्त शिल्पशास्त्रमें चतुर श्रेष्ठ शीलवान होताहै १०

अथ ईश्वरसंवत्सरजातफलम् ।

तत्कालसंजातमहाप्रकोपो हर्षाभियुक्तो गुणवान्प्रतापी ॥
दक्षः कलाकौशलशीलशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ईश्वरनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य शीघ्रही क्रोध करनेवाला हर्षसहित गुणवान प्रतापी चतुर कलाओंमें कुशलस्वभाववाला शीलवान होताहै ॥ ११ ॥

अथ बहुधान्यसंवत्सरजातफलम् ।

त्यागान्वितः क्षितिपालमानी दानाभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ॥
बहुप्रकारैर्बहुधान्यवित्तैः स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बहुधान्यसंवत्सर होवे वह मनुष्य व्यापारमें चतुर राजा करके मान पानेवाला दानी अभिमानी शास्त्रका जाननेवाला अनेक प्रकार करके बहुत अन्न और धनवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ प्रमाथिसंवत्सरजातफलम् ।

रथध्वजच्छत्रतुरंगमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहंता ॥
मंत्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतिज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्म कालमें प्रमाथी संवत्सर होता है वह मनुष्य रथ, ध्वजा, और छत्र, घोड़े आदिकरके सहित शास्त्रमें तत्पर शत्रुओंका नाश करनेवाला राजाका वजीर वेदका जाननेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ विक्रमसंवत्सरजातफलम् ।

अत्युग्रकर्माभिरतो नितांतमरातिचक्रक्रमणेऽतिदक्षः ॥
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विक्रमसंवत्सर होता है वह अत्यन्त उग्र कर्मोंमें तत्पर शत्रु दलका नाश करनेवाला चतुर वीर धैर्यवान अत्यन्त उदार बड़ा बलवान होता है ॥ १४ ॥

अथ वृषसंवत्सरजातफलम् ।

कार्यप्रलापी किल निंद्यशीलः खलानुयातः परकर्मकर्ता ॥
भर्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोऽतिलुब्धः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषसंवत्सर होता है वह मनुष्य कार्यमें बोलनेवाला निंद्यशील दुष्ट जनों सहित पराये कामका करनेवाला बहुत जनोंका स्वामी मलिन और आलसी लोभी होता है ॥ १५ ॥

अथ चित्रभानुसंवत्सरजातफलम् ।

चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा ॥
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजननो हि पूरुषः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रभानु संवत्सर होता है वह मनुष्य विचित्रवस्त्र और पुष्पोंका धारण करनेवाला मानसी चिन्ताके समूह करके सहित सुन्दर शील प्रकाशमान कलाकरके सहित होता है ॥ १६ ॥

अथ सुभानुसंवत्सरजातफलम् ।

अरालकेशः सरलः सुकांतिर्जितारिपक्षो मतिमान्विनीतः ॥
प्रसन्नमूर्तिर्विलसद्विभूतिः सुभानुसंवत्सरजातजन्मा ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्म कालमें सुभानु संवत्सर होवे वह मनुष्य घुंघरवाले केशोंवाला श्रेष्ठकांतिवाला शत्रुओंको जीतनेवाला बुद्धिमान नम्रतासहित प्रसन्नमूर्ति शोभायमान वैभवसहित होता है ॥ १७ ॥

अथ तारणसंवत्सरजातफलम् ।

धूर्तश्च शूरश्चपलः कलाज्ञः सुनिष्ठुरो गर्हितकर्मकर्ता ॥
उत्पन्नभोक्ता द्रविणेन युक्तः स्यात्तारणाब्दोद्भवमानवो यः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तारण संवत्सर होता है वह मनुष्य धूर्त और शूरवीर चपल कलाओंका जाननेवाला कठोरचित्त निंदित काम करनेवाला पैदा कियेका भोगनेवाला और धनयुक्त होता है ॥ १८ ॥

अथ पार्थिवसंवत्सरजातफलम् ।

स्वधर्मकर्माभिरतो नितांतं सच्छास्त्रपारंगमतामुपेतः ॥
कलाकलापे कुशलो विलासी यःपार्थिवाब्दे कुलपार्थिवस्स्यात् १९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पार्थिव संवत्सरहो वह मनुष्य अपने धर्म कर्ममें तत्पर श्रेष्ठ शास्त्रोंके पारको जानेवाला कलाओंके समूहमें कुशल विलास करनेवाला होताहै ॥ १९ ॥

अथ व्ययसंवत्सरजातफलम् ।

सौख्येविरक्तो व्यसनाभिभूतो भीतोन किंचिद्ग्रहणादृणी स्यात् ॥
जातः पुमानस्थिरचित्तवृत्तिर्व्ययाभिधाने व्ययकर्मशीलः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य सौख्यमें आसक्त व्यसनों करके सहित भयको थोडाभी नहीं ग्रहण करनेवाला कर्जदंद चित्तकी वृत्ति जिसकी स्थिर नहीं है खर्च करनेवाला होताहै ॥ २० ॥

अथ सर्वजित्संवत्सरजातफलम् ।

राजप्रियश्चमहोत्सवः शुचिमाननः पृथुतनुर्महीपतिः ।
सर्वकार्यविजयोन्नतः सदा सर्वजिच्छरदि यस्य संभवः ॥ २१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वजित् संवत्सर होताहै वह मनुष्य राजा करके गौरवको प्राप्त बड़े उत्सव सहित पवित्र मोटी देहवाला राजा और शत्रुओंका जीतनेवाला होताहै ॥ २१ ॥

अथ सर्वधारिसंवत्सरजातफलम् ।

भूरिभृत्यबहुभोगसंयुतः सुंदरश्च मधुरान्नभुक्सदा ॥
धीरतागुणयुतोतिधारणः सर्वधारिणि च यस्य संभवः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्वधारी संवत्सर होताहै वह मनुष्य बहुतसे नौकर और बहुत भोग सहित सुंदर मीठा अन्न खानेवाला धीरतासहित गुणों करके युक्त होताहै ॥ २२ ॥

अथ विरोधिसंवत्सरजातफलम् ।

वक्ता विदेशाटनतां प्रपन्नः कुटुंबसौख्याय च यातिधूर्तः ॥
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवर्षप्रभवो नरः स्यात् ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालम विरोधी संवत्सर होताहै वह मनुष्य बड़ा बोलनेवाला परदेश घूमनेवाला कुटुम्बके समूहसे युक्त सौख्यके वास्ते, बडा धूर्त मनुष्योंके साथ मित्रतारहित होताहै ॥ २३ ॥

अथ विकृतिसंवत्सरजातफलम् ।

निर्धनः किल करालतां गतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ॥
चारुबुद्धिरहितोप्यसौहृदो मानवो विकृतिवर्षसंभवः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकृतिनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य धनहीन विकरालताको प्राप्त पहिले बड़ा अभिमान सहित सुंदर बुद्धिवाला मित्रतारहित होताहै ॥ २४ ॥

अथ खरसंवत्सरजातफलम् ।

कामातुरो धूसरकामकांतिः कठोरदीर्घश्च नसारवाक्यः ॥
क्लेशी च लज्जाविधिवर्जितःस्यान्नरः खराब्दप्रभवोतिदीर्घः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें खरनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य कामातुर मलिन देहकी कांतिवाला कठोर दीर्घ असार वाणी बोलनेवाला क्लेशयुक्त लज्जाकरके रहित अत्यन्त दीर्घ होताहै ॥ २५ ॥

अथ नंदनसंवत्सरजातफलम् ।

तडागवापीगृहकूपकर्ता सदान्नदानाभिरुचिः शुचिः स्यात् ॥
विलासिनीनंदनजातहर्षो नरो भवेन्नंदनवर्षजातः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नंदननाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य तालाव और बावड़ी मकान कुआँ बनानेवाला और हमेशा अन्नदानमें प्रीति करनेवाला पवित्र स्त्रियोंके साथ आनंदको प्राप्त होता है ॥ २६ ॥

अथ विजयसंवत्सरजातफलम् ।

संग्रामधीरः सुतरां सुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ॥
दाता दयालुः किल वैरिहंता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विजयनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य युद्धमें धीर निरंतर श्रेष्ठ शीलवाला राजा करके माननीय बोलनेमें श्रेष्ठ दाता दयावान शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ जयसंवत्सरजातफलम् ।

शास्त्रप्रसंगे विदुषां विवादी मान्यो वदान्यो रिपुवर्गहंता ॥
जयाभिलाषी विषयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजो महौजाः २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जयनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य शास्त्रके प्रसंगमें विद्वानोंसे विवाद करने वाला माननीय शत्रुओंको मारनेवाला जयकी इच्छा रखनेवाला विषयोंमें आसक्त बड़ा पराक्रमी होताहै ॥ २८ ॥

अथ मन्मथसंवत्सरजातफलम् ।

भूषाविशेषैः सहितश्च योषाविलासशीलोऽमृतवाक्कलाज्ञः ॥
सद्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जननं प्रपन्नः ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मन्मथनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य विशेष आभूषणोंसहित स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला मीठी वाणी बोलनेवाला कलाओंका जाननेवाला श्रेष्ठ गीत और नृत्योंमें तत्पर भोगोंका भोगनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ दुर्मुखसंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरेङ्गितो निष्ठमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाह्वङ्घ्रिरघप्रियः स्यात् ॥
विरुद्धभावो बहुदुष्टचेष्टो यो हायने दुर्मुखनाम्नि जातः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुर्मुखनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य क्रूरता सहित दुष्ट बुद्धिवाला लोभी और जिसके मुख बाहें और पैर टेढ़े और विरुद्ध शील बड़ी दुष्ट चेष्टा करनेवाला होता है ॥ ३० ॥

अथ हेविलम्बसंवत्सरजातफलम् ।

तुरंगहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितांतं सुतदारसौख्यः ॥
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धिर्यो हेविलंबे पुरुषोऽभिजातः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेविलंबनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य घोडे और सोना, वस्त्र, धान्य और रत्नोंसहित निरंतर पुत्र और स्त्रीके सौख्यको प्राप्त सब चीजोंके ग्रहणमें एक बुद्धिवाला होताहै ॥ २१ ॥

अथ विलम्बसंवत्सरजातफलम् ।

धूर्तोऽतिलुब्धोलसतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्त्वविवर्जितश्च ॥
प्रारब्धकार्ये नितरां प्रलापी विलंबसंवत्सरसंभवः स्यात् ॥ २२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विलंबनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य धूर्त बडा लोभी आलस्यसहित कफ प्रकृतिवाला बलहीन प्रारब्ध कार्य्योंमें निरंतर प्रलाप करनेवाला होताहै २२

अथ विकारिसंवत्सरजातफलम् ।

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्तः ॥
अनल्पजल्पस्ससुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात् २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विकारिसंवत्सर होय वह मनुष्य झूठा हठ करनेवाला सब कलाओंमें प्रवीण सब चीजोंका संग्रह करनेवाला चंचलबुद्धि धूर्त बहुत बोलनेवाला मित्रोंसे कल्पना करनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ शार्वरीसंवत्सरजातफलम् ।

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम् ॥
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः संवत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शार्वरी संवत्सर होताहै वह मनुष्य व्यापारके काममें चतुर विलास करनेवाला मित्रोंका विरोधी अनेक प्रकारकी विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ प्लवसंवत्सरजातफलम् ।

कामी प्रकामं धनवांश्च शश्वत्सेवादरोदारहृतार्थतत्तः ॥
सुगुप्तबुद्धिश्चपलस्वभावः प्लवाभिधानाब्दभवो नरःस्यात् ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य कामी धनवान् निरंतर सेवा करके आदर पानेवाला स्त्रियोंसे संतापको प्राप्त गुप्तबुद्धि चपलस्वभाव होता है ॥ ३५ ॥

अथ शुभकृत्संवत्सरजातफलम्।

सौभाग्यविद्याविनयैः समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ॥
स्यान्मानवः सूनुधनोरुसंपद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभकृत् संवत्सर होय वह मनुष्य सौभाग्य और विद्या-नम्रता करके सहित बहुत पुण्यों करके युक्त बड़ी उमरवाला और वह पुत्र, धन और संपदासे सौख्य पाता है ॥ ३६ ॥

अथ शोभनसंवत्सरजातफलम्।

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्ता विजयी विशेषात् ॥
कांतो विनीतः शुभदृक्प्रवीणो यः शोभने वत्सरके हि जातः ॥३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभननाम संवत्सर होता है वह मनुष्य ऊँचा शरीरवाला सुंदर गुणोंसहित दयावान् श्रेष्ठ कर्म करनेवाला विजयको प्राप्त सुंदर नम्रतासहित श्रेष्ठ नेत्रोंवाला प्रवीण होता है ॥ ३७ ॥

अथ क्रोधिसंवत्सरजातफलम्।

क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्वः ॥
स्यादन्तरायः परकार्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधी संवत्सर होय वह मनुष्य क्रूर दृष्टिवाला दुष्टस्वभाववाला स्त्रीका प्यारा पहाड़के समान अभिमानी पराये कार्यको बिगाड़नेवाला होता है॥ ३८॥

अथ विश्वावसुसंवत्सरजातफलम्।

सपुत्रदारः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोतिधीरः ॥
मिष्टान्नभुक्सर्वगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विश्वावसु संवत्सर होता है वह मनुष्य पुत्र और स्त्रीसहित निरंतर उदार हमेशा आचारमें तत्पर अतिधैर्यवाला मिष्टान्न खानेवाला सम्पूर्ण गुणोंकरके युक्त होता है ॥ ३९ ॥

अथ पराभवसंवत्सरजातफलम् ।

धनस्य धान्यस्य च नैव किंचित्सुसंग्रहोत्यंतकठोरवाक्यः ॥
आचारताल्पत्वशठत्वयुक्तो पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पराभव संवत्सर होताहै वह मनुष्य धन धान्य करके रहित चाहे कितना संग्रह करे, कठोर वाक्य बोलनेवाला आचारता थोड़ी शठता सहित होता है ॥ ४० ॥

अथ प्लवङ्गसंवत्सरजातफलम् ।

भवेदलं चंचलचित्तवृत्तिर्नस्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्ये ॥
धूर्तः सदाचारविचारहीनः प्लवङ्गजो वै मनुजः कृशाङ्गः ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्लवङ्गसंवत्सर होता है वह मनुष्य परिपूर्णता सहित चंचल चित्त वृत्तिवाला श्रेष्ठकार्यमें प्रवृत्ति नहीं करे धूर्त हमेशा आचार विचार रहित दुर्बल देह होता है ॥ ४१ ॥

अथ कीलकसंवत्सरजातफलम् ।

रूपेण मध्यः प्रियवाग्दयालुर्जलाभिलाषी त्वनुवेलमेव ॥
स्थूलाङ्घ्रिसन्मौलिरलं बलीयान्किलारिकीलः किलके प्रसूतः ४२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कीलक संवत्सर होता है वह मनुष्य स्वरूपमें मध्यम प्यारी वाणी बोलनेवाला दयावान वारंवार जलकी इच्छा करनेवाला स्थूल पैर श्रेष्ठ शिर बल करके पूर्ण होता है ॥ ४२ ॥

अथ सौम्यसंवत्सरजातफलम् ।

पण्डितो हि धनवान्बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः ॥
सात्त्विकः कृशकलेवरयष्टिः सौम्यवत्सरभवो हि नरः स्यात् ४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौम्यसंवत्सर होता है वह मनुष्य पंडित धनवान बड़ा भोगी देवता और अतिथिमें प्रीति करनेवाला बड़ा पवित्र सात्त्विक स्वभाव दुर्बल देह वाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ साधारणसंवत्सरजातफलम् ।

इतस्ततः संचलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी ॥
क्रोधी शुचिर्भोगनिवृत्तचेताः प्राणीति साधारणजः प्रणीतः ४४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें साधारण नाम संवत्सर होता है वह मनुष्य इधर उधर चलने फिरनेमें तत्पर लेख क्रियामें कुशल विवेकी क्रोधसहित पवित्र भोगसे संतुष्ट चित्तवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ विरोधकृत्संवत्सरजातफलम् ।

महेश्वराराधनतत्परः स्यात्क्रोधी विरोधी सततं बहूनाम् ॥
पराङ्मुखस्तातवचस्यतीव विरोधकृन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥४५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विरोधकृत्संवत्सर होय वह मनुष्य शिवजीके आराधन करनेमें तत्पर क्रोधयुक्त बहुत जनोंसे विरोध करनेवाला और पिताकी आज्ञासे विमुख होता है ॥ ४५ ॥

अथ परिधाविसंवत्सरजातफलम् ।

विद्वान्सुशीलश्च कलाप्रवीणः सुधीश्च मान्यो वसुधाधिपानाम् ॥
व्यापारसंप्राप्तमहाप्रतिष्ठः पुमान्भवेद्वै परिधाविजन्मा ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिधावी संवत्सर होता है वह मनुष्य विद्वान सुंदर शीलवाला कलाओंमें प्रवीण श्रेष्ठ बुद्धिवाला माननीय राजा करके और व्यापारमें बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै ॥ ४६ ॥

अथ प्रमादिसंवत्सरजातफलम् ।

दुष्टोऽभिमानी कलहानुरक्तो लुब्धः कुटुंबाभिरतश्च दीनः ॥
स्यादल्पधीर्गर्हितकर्मकर्ता प्रमादिजन्मा मनुजः प्रमादी ॥४७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रमादी संवत्सर होताहै वह मनुष्य दुष्ट अभिमानी कलहमें आसक्त लोभी कुटुम्बमें तत्पर दीन थोड़ी बुद्धिवाला बुरे कर्म करनेवाला होता है ॥ ४७ ॥

अथ आनंदसंवत्सरजातफलम् ।

स्याद्भूरिदारश्चतुरोऽतिदक्षः शश्वत्सुतानन्दभरप्रपूरः ॥
प्राज्ञः कृतज्ञः सुतरां विनीतोऽप्यानंदजातो मनुजो वदान्यः ४८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आनंदनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला चतुर अत्यंत चतुर निरंतर पुत्रोंके आनंदसे भरपूर पंडित कृतज्ञ निरंतर नम्रतासहित होता है ॥ ४८ ॥

अथ राक्षससंवत्सरजातफलम् ।

क्रूरान्यकर्मा कलहानुरक्तः संत्यक्तसद्धर्मविचारसारः ॥
दयाविहीनश्च समाहसोपि भवेन्नरो राक्षसजातजमा ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य क्रूर और कर्म करने वाला कलहमें तत्पर श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ विचारोंको त्यागनेवाला दयारहित साहसी होता है ॥ ४९ ॥

अथ नलसंवत्सरजातफलम् ।

सद्बुद्धिशाली जलसस्यसंपद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ॥
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः ॥५०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नलनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला खेती करके धन पैदा करनेवाला वैश्यवृत्ति करनेमें चतुर श्रेष्ठ सुशील थोडा धनवाला बहुत जनोंका पालन करनेवाला चपल होता है ॥ ५० ॥

अथ पिंगलसंवत्सरजातफलम् ।

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्मकर्ता स्यादुद्धतश्चंचलवैभवाढ्यः ॥
त्यागी शठोत्यंतकठोरवाक्यो जातो नरः पिङ्गलनामधेये ॥५१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पिंगलनाम संवत्सर होय वह मनुष्य पीले नेत्रोंवाला निषिद्ध कर्म करनेवाला उद्धत चंचल वैभव करके सहित त्यागी शठ अत्यंत कठोर वाक्य होताहै ॥ ५१ ॥

अथ कालयुक्तसंवत्सरजातफलम् ।

अनल्पजल्पप्रियतामुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः ॥
कलिप्रसंगे किल कालरूपो यः कालयुक्तप्रभवः कृशांगः ॥५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कालयुक्त संवत्सर होताहै वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला प्रीति सहित खोटी बुद्धिवाला विधियोंकरके वियुक्त कलहकरनेवाला विकरालरूप होताहै ॥ ५२ ॥

अथ सिद्धार्थिसंवत्सरजातफलम् ।

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणाङ्गणप्राप्तयशाः सुवेषः ॥
नरेंद्रमंत्री बहुपूजितार्थी सिद्धार्थिजातो मनुजः समर्थः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धार्थी संवत्सर होय वह मनुष्य उदारचित्त दयावान संग्राममें यशको प्राप्त सुंदर वेषवाला राजाका वजीर बहुत जनोंकरके पूजनीय होताहै ॥ ५३ ॥

अथ रौद्रसंवत्सरजातफलम् ।

भयंकरः पालयिता पशूनां शश्वत्परीवादपरोतिधूर्तः ॥
जातापकीर्तिः खलचित्तवृत्तिर्नरोतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा ॥५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रौद्रनाम संवत्सर होताहै वह मनुष्य भयंकर पशुओंका पालनेवाला निरंतर विवादतत्पर अत्यन्त धूर्त अपयशका भागी दुष्टचित्तवृत्तिवाला रौद्र स्वरूप होता है ॥ ५४ ॥

अथ दुर्मतिवर्षजातफलम् ।

स्ववाक्यनिर्वाहमहाभिमानः प्रसन्नताहीनतरो नरः स्यात् ॥
कामी प्रकामं दुरितप्रवृत्तिर्यो दुर्मतिर्दुर्मतिवर्षजातः ॥ ५५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुर्मति संवत्सर होय वह मनुष्य अपने वाक्यका पालनेवाला बड़ा अभिमानी प्रसन्नतारहित कामी यथेष्ट पापकर्ममें प्रवृत्त दुष्टबुद्धि होताहै ॥ ५५ ॥

अथ दुंदुभिसंवत्सरजातफलम् ।

नित्यं नरेन्द्रार्पितगौरवः स्याद्गजाश्वभूहेमसमन्वितश्च ॥
तौर्यत्रिकप्रीतिरतीव जातश्चेन्मानवो दुंदुभिनामधेये ॥ ५६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुंदुभिसंवत्सर होय वह मनुष्य राजा करकै गौरवको प्राप्त हाथी और घोडा, सुवर्ण धरती सहित गीत वाद्य और नृत्यमें अतीव प्रीति करनेवाला होता है ॥ ५६ ॥

अथ रुधिरोद्गारिसंवत्सरजातफलम् ।

आरक्ताक्षः क्वचिदपि महाकामलाद्यामयानां प्रादुर्भावादति कृशतनुर्जायतेत्यंतरोषः ॥ पादद्वंद्वे भवति कुनखो हस्तयुग्मे-ऽथवा स्याच्छस्त्राद्दुःखं व्रजति रुधिरोद्गारिजन्मा मनुष्यः ॥५७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रुधिरोद्गारी संवत्सर होता है वह मनुष्य लाल नेत्रोंवाला कहीं बड़े कामलादिकके सहित रोग युक्त देहवाला अत्यंत दुर्बल देहवाला बड़ा क्रोधी और दोनों पैरोंमें बुरे नख होंय और हाथोंकि भी काले नाखून शस्त्रसे दुःखको प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

अथ रक्ताक्षिसंवत्सरजातफलम् ।

आचारधर्माभिरतो नितांतं मनोभवोत्कर्षतरो नरः स्यात् ॥
अन्याभिकर्तं सहते न किंचिद्रक्ताक्षिजातोक्षिरुजान्वितश्च ॥५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रक्ताक्षि संवत्सर होता है वह मनुष्य आचार और धर्ममें तत्पर कामी कहीं कहीं पराई अभिकना नहीं सहनेवाला, रोगी नेत्रोंवाला होता है ॥ ५८ ॥

अथ क्रोधनसंवत्सरजातफलम् ।

स्यादंतरायो हि परस्य कार्ये तमोगुणाधिक्यभयंकरश्च ॥
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्रोधननाम संवत्सर होय वह मनुष्य पराये कार्यमें विघ्न करनेवाला अधिकक्रोधी भयंकर स्वरूप पराई बुद्धिका अत्यन्त हरनेवाला होताहै ॥ ५९ ॥

अथ क्षयसंवत्सरजातफलम् ।

उपार्जितार्थव्ययकृन्नितांतं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ॥
सत्कर्ममार्गेल्पमनःप्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य ॥ ६० ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे संवत्सरजातफलाध्यायः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षयनाम संवत्सर होता है वह मनुष्य पैदा किये हुए धनको व्यय करनेवाला निरंतर सेवामें तत्पर कठोर चित्त श्रेष्ठ कर्म करनेमें थोडी मनकी वृत्तिवाला होता है ॥ ६० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रो राजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां षष्टिसंवत्सरजातफलवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ अयनजातफलमाह तत्र उत्तरायणजातफलम् ।

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकांतासंतोषयुक्तोतितरां चिरायुः ॥
नरः सदाचारपरोप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा ॥ १ ॥

जो मनुष्य उत्तरायणसूर्यमें पैदा होय वह मनुष्य निरंतर प्रसन्न निश्चयकर पुत्र और स्त्री करके सन्तोषको प्राप्त बडी उमरवाला हमेश आचारमें तत्पर उदार धीरवान होताहै ॥ १ ॥

अथ दक्षिणायनजातफलम् ।

अखर्वगर्वः कृषिकर्मकर्ता चतुष्पदाढ्योतिकठोरचित्तः ॥
शठोप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने ना जननं प्रपन्नः ॥ २ ॥

जो मनुष्य दक्षिणायनमें जन्मता है वह मनुष्य बडा अभिमानी खेती करनेवाला चतुष्पदों सहित अत्यंत कठोरचित्त और शठ किसीकी बातको सहनेवाला नहीं होता है ॥ २ ॥

अथ ऋतुजातफलमाह तत्रादौ वसंतऋतुजातफलम् ।

कंदर्परूपो मतिमान्प्रतापी सङ्गीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ॥
शास्त्रप्रभूतामलचैलचेता वसंतजन्मा मनुजः प्रसन्नः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वसंतऋतु होवे वह मनुष्य कामदेवसमान रूपवाला बुद्धिमान् प्रतापी गानेबजानेमें प्रवीण गणितशास्त्रमें चतुर बहुत शास्त्रोंका जाननेवाला सुन्दरवस्त्र धारण करनेवाला प्रसन्नचित्त होता है ॥ १ ॥

अथ ग्रीष्मऋतुजातफलम् ।

ऐश्वर्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः ॥
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो योग्रीष्मकालोद्भवतां प्रपन्नः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रीष्मऋतु होय वह मनुष्य ऐश्वर्य और विद्या, धन, अन्न करके सहित बहुत बोलनेवाला बहुत बड़ा लंबा सुन्दर केशोंवाला भोगी जलमें विहार करनेमें शील जिसका ऐसा होता है ॥ २ ॥

अथ वर्षर्तुजातफलम् ।

संग्रामधीरो मतिमान्प्रतापी तुरंगमप्रेमकरः सुरूपः ॥
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥ ३ ॥

जो मनुष्य वर्षाऋतुमें पैदा होय वह मनुष्य युद्धमें धैर्यवाला बुद्धिमान प्रतापी घोडेसे प्रीति करनेवाला रूपवान कफ और वात करके सहित स्त्रियोंमें विलास करनेवाला विचित्र सलाहवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ शरदृतुजातफलम् ।

अपूर्णरोषः पुरुषोनिलात्मा मानी धनी कर्मरुचिः शुचिः स्यात् ॥
रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शरद ऋतु होय वह मनुष्य क्रोधहीन वातप्रकृतिवाला अभिमानी धनवान कर्मोंमें प्रीति करनेवाला पवित्रदेह संग्राम जिसको प्यारा वाहनों करके सहित होता है ॥ ४ ॥

अथ हेमंतऋतुजातफलम् ।

नरेन्द्रमंत्री चतुरोप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः ॥
सत्कर्मधर्मानुरतो मनस्वी हेमंतजातः सततं विनीतः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हेमंतऋतु होती है वह मनुष्य राजाका मंत्री चतुर उदार श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित श्रेष्ठ कर्म और धर्मसहित निरंतर नम्रतासहित होताहै ॥ ५ ॥

अथ शिशिरऋतुजातफलम्।

मिष्टान्नपानानुरतो नितांतं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः ॥
सत्कर्मवेषः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिशिरऋतु होय वह मनुष्य मिष्टान्नपानमें तत्पर क्षुधासहित पुत्र और स्त्री सहित सौख्यवान श्रेष्ठ कर्म करनेवाला क्रोधसहित बलवान होता है ॥ ६ ॥

अथ मासजातफलमाह तत्रादौ चैत्रजातफलम्।

सत्कर्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोजी ॥
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमंत्रः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चैत्रमास होताहै वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनयसहित भोगी मधुर अन्नका खानेवाला सत्पुरुषोंसे मित्रता करनेवाला राजाका वजीर विचित्र मन्त्रवाला होता है ॥ १ ॥

अथ वैशाखमासजातफलम्।

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान्बलीयान्द्विजदेवभक्तः ॥
कामी चिरायुर्जलपानशीलः स्यान्माधवे बांधवसौख्ययुक्तः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैशाखमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ लक्षणवाला पुण्यगुणोंमें शीलवाला बलवान देवता और ब्राह्मणोंका भक्त कामी बड़ी उमरवाला जलपानमें शील भाइयोंके सौख्यसहित होता है ॥ २ ॥

अथ ज्येष्ठमासजातफलम्।

क्षमान्वितश्चश्चलचित्रवृत्तिर्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः ॥
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्रो ज्येष्ठोद्भवःश्रेष्ठतरो नरः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठमास होता है वह मनुष्य क्षमासहित चंचलचित्तवाला परदेशमें वास करनेवाला तीव्र विचित्र बुद्धिवाला बहुत देरमें काम करनेवाला श्रेष्ठ मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

अथ आषाढमासजातफलम्।

बहुव्ययोऽनल्पवचोविलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च ॥
सदाग्निमांद्यः शुभकर्मकृत्स्यादाषाढजो गाढतराभिमानः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आषाढमास होता है वह मनुष्य बहुत खर्च करनेवाला बहुत बोलनेवाला झूठ बोलनेवाला गुरुका भक्त हमेशा मन्दाग्निरोगवाला शुभकर्म करनेवाला बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ श्रावणमासजातफलम्।

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्ता ॥
लोकप्रसिद्धः कफवान्वदान्यो गुणान्वितो श्रावणमासजन्मा ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रावणमास होय वह मनुष्य पुत्र और पौत्र और स्त्री और मित्रों करके सुखी और पिताकी आज्ञा पालन करनेवाला संसारमें प्रसिद्ध कफसहित गुणों करके युक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भाद्रपदमासजातफलम्।

श्रीमान्भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कांताश्रुतजातसौख्यः ॥
सुखे च दुःखे विकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदासजन्मा ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भाद्रपदमास होता है वह मनुष्य लक्ष्मीवान क्षीणशरीर दानी स्त्री और शास्त्र सौख्य पानेवाला सुख और दुःखमें व्याधित होता है ॥ ६ ॥

अथ आश्विनमासजातफलम्।

विद्वान्धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्यकर्त्ता बहुभृत्ययुक्तः ॥
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसंपत्स्यादाश्विनेश्वादिसमृद्धियुक्तः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्विनमास होय वह मनुष्य विद्वान्धनवान राजाका प्यारा श्रेष्ठ कार्य करनेवाला बहुत नौकरोंवाला दानी गुणका जाननेवाला बहुत पुत्रसंतान समृद्धियोंसहित होता है ॥ ७ ॥

अथ कार्तिकमासजातफलम्।

सत्कर्मकर्ता बहुवाग्विलासो धनी लसत्कुंचितकेशपाशः ॥
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्तिकजातजन्मा॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कार्तिक मास होय वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करनेवाला बहुत वाणी बोलनेवाला धनवान टेढे बालोंवाला कामी क्रय विक्रय अर्थी अच्छे काम करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ मार्गशिरमासजातफलम्।

सुतीर्थयात्राभिरतः सुशीलः कलाकलापे कुशलो विलासी ॥
परोपकर्ता धनमाशुमार्गो मार्गोद्भवो वै विभवैः समेतः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मार्गशिमास होय वह मनुष्य श्रेष्ठ तीर्थोंकी यात्रा करनेमें तत्पर श्रेष्ठ शीलवाला कलाओंके समूहमें चतुर पराया उपकार करनेवाला श्रेष्ठ मार्गको धारण करनेवाला वैभव सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ पौषमासजातफलम् ।

परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्विपिज्ञः ॥
सुगुप्तमंत्रः कृतशास्त्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृशाङ्गः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पौषमास होय वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला पिताके धनसे रहित कष्टसे धन पैदा करनेवाला थोडा खर्च करनेवाला गुप्त मंत्र करनेवाला शास्त्रमें यत्न करनेवाला दुर्बल देह होता है ॥ १० ॥

अथ माघमासजातफलम् ।

सन्मंत्रविद्वैदिकसाधुयोगो योगोक्तविद्याव्यसनानुरक्तः ॥
बुद्धेर्विशेषान्निहतारिसंघो माघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें माघमास होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्रोंका जाननेवाला वेदका जाननेवाला साधु योगवाला और योगशास्त्रोक्त विद्याके व्यसनमें तत्पर बड़ा बुद्धिमान शत्रुदलको नाश करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ फाल्गुनमासजातफलम् ।

परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली ॥
विलासिनीकेलिविधानशीलो यः फाल्गुणे फल्गुवचोविलासः १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें फाल्गुण मास होवे वह मनुष्य पराये उपकार करनेमें कुशल दयावान कोमल शरीरवाला स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला निःसार वचन बोलनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मलमासजातफलम् ।

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग्विविधतीर्थकरश्च निरामयः ॥
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमाससमुद्भवः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मलमास होता है वह मनुष्य विषयमें हीनबुद्धिवाला और चरित्रसहित रोगरहित सबका प्यारा अपने जनोंका हित करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पक्षजातफलमाह तत्रादौ शुक्लपक्षजातफलम् ।

चंचच्चिरायुः सुतरां सुशीलः श्रीपुत्रवान्कोमलकायकांतिः ॥
सदा सहर्षश्च विनीतकालश्चेज्जन्मकालस्तु वलक्षपक्षे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लपक्ष होवे वह मनुष्य बड़ी उमरवाला निरंतर श्रेष्ठ शीलवाला लक्ष्मी और पुत्रवान कोमल देहकांतिवान हमेशा आनंदसहित नम्रतासहित होता है ॥ १ ॥

अथ कृष्णपक्षजातफलम् ।

प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च ॥
मनोभवाधिक्ययुतो नितांतं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृष्णपक्ष होता है वह मनुष्य प्रतापी शीलवान निर्बल चंचल कलहजिसको प्रिय अपने कुलसे विपरीत अत्यंत कामी होता है ॥ २ ॥

अथ दिनरात्रिजातफलमाह तत्रादौ दिवाजातफलम् ।

तेजस्वी पितृसादृश्यश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः ॥
बंधुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका जन्म दिनमें होवे वह मनुष्य तेजवाला पिताके तुल्य सुंदर नेत्र राजाओंका प्यारा भाइयों करके पूज्य धनवान होता है ॥ १ ॥

अथ रात्रिजातफलम् ।

मंददृग्बहुकामार्तः क्षयरोगी मलीमसः ॥
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो नरो भवेत् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका जन्म रात्रिमें होय वह मनुष्य धुंधे नेत्रवाला बहुत बड़ा कामातुर क्षयरोग वाला मलिनचित्तवाला दुष्टात्मा पापोंसे आच्छादित होता है ॥ २ ॥

अथ तिथिजातफलमाह तत्रादौ प्रतिपदाजातफलम् ।

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी कनकमणिविभूषा वेषशाली सुशीलः ॥ अतिसुललितकांतिर्भूमिपालाप्तवित्तः प्रतिपदि यदि सूतिर्जायते यस्य जंतोः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रतिपदा तिथि होय वह मनुष्य बहुत जन और परिवारवाला सुंदर विद्यावान विवेकी सोना मणि और आभूषण सहित श्रेष्ठ शीलवाला अति सुंदर कांति वाला राजासे धनको प्राप्त करता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाजातफलम् ।

शूरो दयालुर्गुणवान्विवेकी चंचत्सदाचारविचारधन्यः ॥
स्मरप्रमूर्तिर्बहुमानकीर्तिर्मर्त्यो द्वितीयातिथिसंभवः स्यात् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीया तिथि होय वह मनुष्य दानी दयावान गुणवान और विवेकी होता है और निरंतर श्रेष्ठ आचार और विचारोंमें धन्य प्रसन्न मूर्ति बहुत यशवाला होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयाजातफलम्।

कामाधिकश्चाप्यनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलात्तवित्तः ॥
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीया तिथि होय वह मनुष्य अधिक कामी निर्दोष विद्यावाला बलवान राजा करके धन प्राप्त करनेवाला परदेशमें रहनेवाला चतुर विलासी और अभिमानी होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थीजातफलम्।

ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः ॥
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थी तिथि होय वह मनुष्य ऋणमें प्रवृत्ति करनेवाला बड़ा साहसी संग्राममें प्रवीण जुआ खेलनेवाला चंचलमन विवाद करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमीजातफलम्।

सम्पूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च ॥
नरेंद्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पंचमी चेत् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमी तिथि होय वह मनुष्य पूर्णशरीर स्त्री और पुत्र मित्रों सहित प्राणीमात्रपर दयाकरनेवाला राजमान्य मनुष्य होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठीजातफलम्।

सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसंपद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः ॥
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें षष्ठी तिथि होय वह मनुष्य सत्यप्रतिज्ञा करनेवाला धन पुत्रोंकी संपदा सहित बड़ी जंघा और जानुवाला बड़ा पराक्रमी बड़ी कीर्तिवाला चतुर और श्रेष्ठ घाव युक्त देहवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमीजातफलम्।

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रदेवार्चनचित्तवृत्तिः ॥
कन्याप्रजो वै परवित्तहर्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहंता ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमी तिथि होय वह मनुष्य ज्ञानी गुणवान बडे नेत्रोंवाला श्रेष्ठ मनुष्य और देवताओंके पूजनमें चित्त लगानेवाला कन्या संतान पैदा करनेवाला पराया धन हरण करनेवाला शत्रुओंको नाश करनेवाला होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमीजातफलम् ।

नानासंपत्सूनुसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालप्राप्तविद्याधिकारः ॥
कांताप्रीतिश्चंचला चित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां जन्म चेन्मानवस्य॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमी तिथि होवे वह मनुष्य अनेक पुत्र और संपत्तिका सौख्य पानेवाला दयावान राजा करके विद्याके अधिकारको प्राप्त स्त्रियोंसे प्रीति करनेवाला चंचल चित्तवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमीजातफलमाह ।

पराङ्मुखो बंधुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधी विरोधी ॥
नरः सदाचारगतादरः स्याद्यस्य प्रसूतौ नवमी तिथिश्चेत् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमी तिथि होवे वह मनुष्य अपने कुटुंबियोंके कार्यसे विमुख कठोरवाणी बोलनेवाला श्रेष्ठ बुद्धि विरोधी और हमेशा आचार और आदर हीन होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमीजातफलमाह ।

धर्मैकबुद्धिर्भववैभवाढ्यः प्रलंबकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ॥
उदारचित्तोतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवः स्यात्॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमी तिथि होय वह मनुष्य धर्म करनेमें एक बुद्धि रखनेवाला कल्याण और वैभव करके सहित ऊंचे कंठवाला बहुत शास्त्रोंका पढनेवाला उदारचित्त अत्यंत नम्रता सहित कामी होताहै ॥ १० ॥

अथैकादशीजातफलमाह ।

देवद्विजार्चाव्रतदानशीलः सुनिर्मलांतः करणः प्रवीणः ॥
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मकृत्स्यादेकादशीजो मनुजः प्रसन्नः ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशी तिथि होय वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला व्रत और दान करनेमें शील जिसका पुण्य करनेमें तत्पर उत्तम कर्म करनेवाला प्रसन्न होताहै ॥ ११ ॥

अथ द्वादशीजातफलमाह।

जलप्रियोवै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः ॥
सदान्नदाता क्षितिपालवित्तः स्याद्वादशीजो मनुजः प्रजावान् १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वादशी तिथि होय वह मनुष्य जलसे प्रीति करे व्यवहारमें शील जिसका अपने मकानपर रहनेमें और विलास करनेमें शील जिसका हमेशा अन्न दान करनेवाला राजासे धनको प्राप्त करनेवाला पुत्रवान होताहै ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशीजातफलमाह।

रूपान्वितः सात्त्विकतावियुक्तः प्रलम्बकंठश्च नरप्रसूतिः ॥
नरोतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें त्रयोदशी तिथि होय वह मनुष्य रूपवान सत्त्वगुण रहित ऊंची गर्दन बड़ा शूर वीर चतुर कामी होताहै ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशीजातफलमाह।

क्रूरोतिशूरश्चतुरः सहासः कंदर्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः ॥
स्याद्दुःसहोत्यंतविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्दशी तिथि होय वह मनुष्य क्रूरस्वभाव शूर वीर चतुर हास्ययुक्त कामकलाकरके व्याकुल चित्त किसीसे सहारा न जाय दुष्ट वाणी बोलनेवाला होताहै १४

अथ पौर्णमासीजातफलम्।

अतिसुललितकामो न्यायसंप्राप्तवित्तो बहुयुवतिसमेतो नित्यसंजातहर्षः ॥ प्रबलतरविलासोत्यंतकारुण्यपुण्यो गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्णमासी तिथि होय वह मनुष्य अत्यंत सुंदर देहवाला न्याय करके धन पैदा करनेवाला बहुत स्त्रियोंसहित हमेशा हर्षको प्राप्त अत्यंत विलास करनेवाला अत्यंत दयावान पुण्यवान गुणोंके समूहसे पूर्ण होताहै ॥ १५ ॥

अथ अमावास्याजातफलमाह।

शांतो मनस्वी पितृमातृभक्तः क्लेशान्वितश्च धनागमेच्छुः ॥
मान्यो जनानां हतकांतिहर्षो दर्शोद्भवः स्यात्पुरुषः कृशाङ्गः १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अमावास्या तिथि होय वह मनुष्य शांतचित्त पिता माताका भक्त क्लेशको प्राप्त धन करके पूर्ण धनके प्राप्त करनेकी इच्छावाला मनुष्योंमें माननीय कांति रहित दुर्बल देह होता है ॥ १६ ॥

अथ वारजातफलमाह तत्रादौ रविवारजातफलम् ।

शूरोल्पकेशो विजयी रणाग्रे श्यामारुणः पित्तचयप्रकोपः ॥
दाता महोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः ॥१॥

जो मनुष्य रविवारके दिन पैदा होता है वह मनुष्य शूर वीर थोड़े केशोंवाला संग्राममें यशको प्राप्त होता है और श्यामता लिये लालवर्णवाला पित्तके समूहसे कोपित दानी बड़ा उत्साहवाला व पराक्रमी होता है ॥ १ ॥

अथ सोमवारजातफलम् ।

प्राज्ञः प्रशांतः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेंद्राश्रयवृत्तिवर्ती ॥
सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चंद्रवारको होता है वह मनुष्य चतुर शांतचित्त प्यारी वाणी बोलने वाला विधियोंका जाननेवाला निरंतर राजाके आश्रय करके आजीविका करनेवाला सुख और दुःखमें एकसा स्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

अथ भौमवारजातफलम् ।

वक्रोक्तिरत्यंतरणप्रियः स्यान्नरेंद्रमंत्री च धरोपजीवी ॥
सत्त्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावो दिने भवेन्नावनिनंदनस्य ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मंगलवारको होता है वह मनुष्य टेढ़ी वाणी बोलनेवाला संग्राम जिसको प्यारा राजाका वजीर पृथिवी करके आजीविका करनेवाला बलवान तीव्र स्वभाव-वाला होता है ॥ ३ ॥

अथ बुधवारजातफलम् ।

सद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान्कलाकौशलतासमेतः ॥
वणिक्क्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो ज्ञदिनोद्भवो यः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधवार होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला मीठी वाणी बोलने वाला श्रीमान् कलाओंमें कुशल व्यवहारमें निपुण चतुर गुणोंका जाननेवाला होता है ॥४॥

अथ गुरुवारजातफलमाह ।

विद्वान्धनी सद्गुणोपपन्नो मनोरमक्ष्मापतिलब्धकामः ॥
आचार्यवर्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे गुरोर्यस्य नरस्य जन्म ॥५॥

जिस मनुष्यका जन्म गुरुवारको होता है वह मनुष्य विद्वान धनवान सम्पूर्ण गुणोंसहित मनका हरनेवाला राजा करके कामनाको प्राप्त श्रेष्ठ आचार्य मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ ५ ॥

अथ भृगुवारजातफलम्।

सुनीलसत्कुंचितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान्विशेषात् ॥
शुक्लांबरः प्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भृगुवार होता है वह मनुष्य सुंदर नीलवर्णके घूंघरवाले बालोंवाला प्रसन्नचित्त बुद्धिवान विशेष सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाला श्रेष्ठ मार्गपर चलनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिवारजातफलम्।

अकालसंप्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः ॥
तमोगुणी क्रौर्यचयाभिभूतः शनेर्दिने जातजनुर्मनुष्यः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनिवार होता है वह मनुष्य विनासमयके आये बुढ़ापेको प्राप्त बलहीन दुर्बल देहवान् तमोगुणी क्रूरस्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥

अथ नक्षत्रजातफलमाह तत्रादावश्विनीनक्षत्रजातफलम्।

सदैव सेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसंपत् ॥
योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य ॥ १ ॥

जिस मनुष्यका जन्म अश्विनी नक्षत्रमें होय वह मनुष्य हमेशा सेवा करनेवाला नम्रतासहित सत्ययुक्त सम्पूर्ण प्रकार संपत्तियोंको प्राप्त स्त्री और आभूषण तथा पुत्रादिकों करके बडे संतोषको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

अथ भरणीनक्षत्रजातफलम्।

सदापकीर्तिर्हि महापवादैर्नानाविनोदैश्च विनीतकालः ॥
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतो भरणीभजातः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भरणी नक्षत्र होता है वह मनुष्य हमेशा अपयशका भागी बडी निंदा करके युक्त अनेक विनोदों करके समयको व्यतीत करनेवाला जलसे अधिक डरनेवाला चपल और खलस्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

अथ कृत्तिकानक्षत्रजातफलम्।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः ॥
कठोरवाग्गर्हितकर्मकृत्स्याच्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जंतोः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कृत्तिका नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य अधिक क्षुधावाला सत्य और धन रहित व्यर्थ घूमनेवाला कृतघ्नी कठोर वाणी बोलनेवाला निंदित कर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ रोहिणीनक्षत्रजातफलम् ।

धर्मकर्मकुशलः कृषीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ॥
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रोहिणी नक्षत्र होय वह मनुष्य धर्मकर्ममें कुशल खेती करनेवाला सुंदर शीलवाला सुंदर शरीर वाणी बोलनेमें चतुर सभी आशयोंका प्रगट करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ मृगशिरनक्षत्रजातफलम् ।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गुणेषु ॥
भोक्ता नृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृत्तो मृगजातजन्मा ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मृगशिर नक्षत्रमें होता है वह मनुष्य धनुष विद्याके अभ्यासमें तत्पर नम्रतासहित गुणियोंके गुणोंमें हमेशा तत्पर भोग करनेवाला राजाके स्नेहसे पूर्ण श्रेष्ठ मार्गकी वृत्ति करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ आर्द्रानक्षत्रजातफलम् ।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकांतिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ॥
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्म कालमें आर्द्रानक्षत्र होय वह मनुष्य अधिक क्षुधाळ रूक्ष शरीरवाला क्रोधसहित भाइयोंका प्यारा कृतघ्नी दयावान चित्त होता है ॥ ६ ॥

अथ पुनर्वसुनक्षत्रजातफलम् ।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ॥
दाता धरित्रीवसुभिः समेतः पुनर्वसुर्यस्य भवेत्प्रसूतौ ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मृगशिर नक्षत्र होता है वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला शास्त्रका यत्न करनेवाला श्रेष्ठ रत्न सोनेके आभूषणोंसहित दानी बहुत धरतीवाला धनवान होता है ॥ ७ ॥

अथ पुष्यनक्षत्रजातफलम् ।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयानुयुक्तः ॥
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सन्माननानाधनवाहनाढ्यः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुष्य नक्षत्र होता है वह मनुष्य मस्त देह पिता और माताका भक्त अपने धर्ममें आसक्त विनयसहित अनेक सन्मान और धन वाहनोंवाला होता है ॥ ८ ॥

अथाश्लेषानक्षत्रजातफलम्।

वृथाटनः स्याददतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम्॥
सार्पे सदर्थो हि वृथार्पितार्थः कंदर्पसंतप्तमना मनुष्यः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आश्लेषा नक्षत्र होवे वह मनुष्य व्यर्थ भ्रमण करनेवाला अत्यंत दुष्टचित्त कष्टका देनेवाला वृथाही मनुष्योंको कष्ट देनेवाला धनको वृथा खर्च करनेवाला कामकला करके दुःखित चित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ मघानक्षत्रजातफलम्।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ॥
चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्षः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मघा नक्षत्र होवे वह मनुष्य कठोरचित्तवाला पिताकी भक्तिसहित तीव्रस्वभाववाला और अनवद्यविद्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला हमेशा शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रजातफलम्।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्त्ता कामार्तोपि स्याच्छिरालोतिदक्षः॥
धूर्तः क्रूरोत्यंतसंजातगर्वः पूर्वाफाल्गुन्यास्ति चेजन्मकाले ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र होय वह मनुष्य शूर, वीरत्यागी साहसी, बहुत नौकरोंवाला काम करके दुःखी श्रेष्ठ केशोंवाला अत्यन्त चतुर, धूर्त, उग्र, अभिमानी होता है ॥ ११ ॥

अथ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रजातफलम्।

दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतेः प्रधानः ॥
धीरो नरोत्यंतमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र होय वह मनुष्य दानी निरंतर सुशील, बड़ी कीर्तिवाला राजाका वजीर धैर्यवान अत्यंत कोमल होता है ॥ १२ ॥

अथ हस्तनक्षत्रजातफलम्।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेवार्चनकृत्प्रयत्नात् ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसंपत् ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हस्त नक्षत्र होय वह मनुष्य दानी निरंतर यशवान ब्राह्मण और देवताओंका पूजनमें यत्न करनेवाला होता है और उसके हाथसे सब तरहकी संपत्ति होती है ॥ १३ ॥

अथ चित्रानक्षत्रजातफलम् ।

प्रतापसंतापितशत्रुपक्षो नयेतिदक्षश्च विचित्रवासाः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चित्रा नक्षत्र होय तो उस मनुष्यके प्रतापसे शत्रुजन संतापको प्राप्त होता है वह नीतिमें चतुर विचित्र वस्त्र पहिरनेवाला विचित्र बुद्धिवाला शास्त्रोंमें होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वातीनक्षत्रजातफलम् ।

कंदर्परूपः प्रभया समेतः कांतापरप्रीतिरतिप्रसन्नः ॥
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें स्वाती नक्षत्र होय वह मनुष्य कामदेवके समान रूपवाला वैभवसहित स्त्रियोंसे अधिक प्रीति करनेवाला अत्यंत प्रसन्न राजा करके वैभवको प्राप्त होताहै १५

अथ विशाखानक्षत्रजातफलम् ।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विशाखा नक्षत्र होय वह मनुष्य अग्निहोत्र और देवताओंकी क्रियामें तत्पर और धातु क्रियाओंको जाननेवाला उग्र और सौम्यस्वभाव होता है और वह किसीका मित्र नहीं होता है ॥ १६ ॥

अथ अनुराधानक्षत्रजातफलम् ।

सत्कांतिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेता रिपूणां च कलाप्रवीणः ॥
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा संपद्विशाला विविधा च तस्य ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनुराधा नक्षत्र होय वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति और उत्सवसहित शत्रुओंका जीतनेवाला कलाओंमें प्रवीण होता है और विशालसंपत्तिवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ ज्येष्ठानक्षत्रजातफलम् ।

सत्कांतिकीर्तिर्विपुलासमेतो विराग्निवतोत्यंतलसत्प्रतापः ॥
श्रेष्ठप्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ज्येष्ठा नक्षत्र होय वह मनुष्य श्रेष्ठ कांति और कीर्ति तथा वैभव सहित धनवान प्रताप करके शोभित श्रेष्ठप्रतिष्ठावाला बोलनेवालोंमें श्रेष्ठ होताहै ॥ १८॥

अथ मूलविचारः।

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदंति संतः ॥
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात्सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम् ॥ १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभुक्तमूल होय तो वह बालक जड़से कुलका नाश करता है और अभुक्त मूल न होय तो वह सौभाग्य और आयुका बढानेवाला कुलकी वृद्धि करताहै १९

अथ अभुक्तमूलमाह।

ज्येष्ठांत्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम् ॥
अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् ॥ २० ॥
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता ॥
तद्दोषपरिहारार्थं शांतिकं प्रोच्यतेऽधुना ॥ २१ ॥

अब अभुक्तमूल कहते हैं ज्येष्ठा नक्षत्रके अंतकी एक घड़ी और मूल नक्षत्रके आदिकी एक घड़ी ये दोनों घड़ी अभुक्तमूल कहाती हैं इनमें पैदा हुए बालकका मुख ॥ २० ॥ शुभकी इच्छा करनेवाला पिता आठ वर्षतक नहीं देखे तिस अभुक्तमूल जातदोष दूर करनेको शांति कहते हैं ॥ २१ ॥

अथ मूलशांतिप्रकारः।

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् ॥
शतच्छिद्रं घटंतस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ २२ ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति ॥
जपहोमप्रदाने च कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥ २३ ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः ॥
मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥ २४ ॥

अब मूलजातशांति कहते हैं नवरत्न सौ औषधियोंकी जड़ सात मृत्तिका करके पूर्णकरे और सौ छेदके घडेमेंसे निकलते हुए जलकरके ॥ २२ ॥ पैदा हुआ बालक और माता पिता स्नान करैं ब्राह्मणोंके कहे हुए वाक्य करके जप, होम, दान करके निश्चय मंगल होता है ॥ २३ ॥ ये विरुद्ध मूलोंकी विधि पंडितजनोंने कही है कल्याणकी इच्छा वालेकरके

पुरुष मुनीश्वरोंके वचनको सत्य मानें ॥ २४ ॥ और विधिपूर्वक मूल और आश्लेषा ज्येष्ठा शांति भाषाकारके बनाये हुये ग्रंथ स्त्रीजातकमें सविधि वर्णित हैं जिसको आवश्यकता होय सो स्त्रीजातकमें देखले यह स्त्रीजातक खेमराज श्रीकृष्णदासके यहां बंबईमें छपा है ॥

अथ मूलपादजातफलम् ।

मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्य रिष्टम् ॥
चतुर्थपादः शुभदो नितांतं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् ॥२५॥

जिस बालकका जन्म मूलनक्षत्रके पहिले चरणमें होय तो पिताको कष्ट और दूसरे चरणमें माताको कष्ट और तीसरे चरणमें धननाश कहना चाहिये और चतुर्थ पाद हमेशा शुभ है इसीतरह आश्लेषानक्षत्रका उलटा फल जानना चाहिये अर्थात् चतुर्थचरणमें पिताका नाश, और तीसरे चरणमें माताका नाश और दूसरे चरणमें धनको नाश करता है और आश्लेषा नक्षत्रका पहिला चरण शुभ है ॥ २५ ॥

अथ विशेषमूलमाह ।

कृष्णे तृतीया दशमी चलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः ॥
चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य ॥२६॥
दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ॥
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म कृष्णपक्षकी तृतीया, मंगलवार, और दशमी, शनिश्चरवार और शुक्लपक्षकी चतुर्दशी, बुधवार सहित होय और मूलनक्षत्र होय ऐसे समयमें जन्मा बालक समग्र कुलको नाश करता है ॥ २६ ॥ दिन, संध्या, रात्रि, प्रातःकालमें जन्म होय तो क्रम करके पिता, माता और पशु और मित्रवर्गोंको मूल नष्ट फल देते हैं ॥ २७ ॥

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलमाह ।

मूर्ध्नि पंच मुखे पंच स्कंधयोर्घटिकाष्टकम् ॥
नखाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेष्टकम् ॥ २८ ॥
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् च जान्वोः षट्चपादयोः ॥
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् ॥ २९ ॥

अब पुरुषाकृति मूल और आश्लेषा नक्षत्रको कहते हैं मनुष्याकार स्वरूप बनावे और शिरमें पांच घड़ी मुखमें पांच दोनों कंधोंमें आठ दोनों बांहोंमें आठ और हाथोंमें दो हृदयमें आठ ॥ २८ ॥ नाभिमें २ कमरमें दश छः जांघोंमें छः पैरोंमें इसतरह पुरुषाकृति मूलको आदिमें स्थापन करे ॥ २९ ॥

अथ पुरुषाकृतिमूलघटीफलम्।

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातकम् ॥
स्कंधयोर्भारवहत्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत् ॥ ३० ॥
हत्याकरः करद्वंद्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ॥
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३१ ॥
जङ्घायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीविताल्पता ॥
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥ ३२ ॥

अब पुरुषाकृतिमूलोंकी घटीका फल कहते हैं शिरकी घटियोंमें पैदा होय तौ छत्रलाभ करावे मुखकी घटी पिताका नाश करे और दोनों कंधोंकी घटीमें पैदा होय तो भार वहन करनेवाला होय दोनों बांहोंकी घटीमें जन्मे तो खोटे कर्म करे ॥ ३० ॥ और दोनों हाथोंकी घटीमें हो तो हत्याकरनेवाला होय और हृदयकी घटीमें पैदा होय तो राज्यकी प्राप्ति करावे और नाभिकी घटीमें पैदा होयतो थोडी उमर करे और कमरकी घडीमें पैदा होय तो अद्भुत सुख करावे ॥ ३१ ॥ और जांघोंकी घडीमें पैदा होय तो भ्रमण करनेवाला होय और पैरोंकी घडीमें थोडा जीवे ये मूलकी घडियोंका फल श्रेष्ठ मुनियोंने कहा है ॥ ३२ ॥

॥ चक्रम् ॥										
सिर	मुख	कंधा	भुजा	हाथ	हृदय	नाभि	कमर	जांघ	पैर	अंग
५	५	८	८	२	८	२	१०	६	६	घटी

विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्पे तच्च विपर्ययात् ॥ ३३ ॥

जो पहिले पुरुषाकृतिमूलनक्षत्रकी घडी वर्णन करी हैं और उनका फल कहा है सो आश्लेषा नक्षत्रमें घडी तथा उनका फल उलटा जानना चाहिये ॥ ३३ ॥

अथ मूलाश्लेषामुहूर्तस्वामिन आह।

राक्षसो यातुधानश्च सोमशक्रफणीश्वराः ॥
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ॥ ३४ ॥
शर्वाख्यश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः ॥
गंधर्वो यमदेवश्च ब्रह्माविष्णुर्यमस्तथा ॥ ३५ ॥

ईश्वरो विष्णुरुद्रश्च पवनो मुनयस्तथा ॥
षण्मुखो भृङ्गिरीटी च गौरीनाम्नी सरस्वती ॥ ३६ ॥
प्रजापतिश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनामकाः ॥
विपरीता पुनर्ज्ञेया आश्लेषा जातबालके ॥ ३७ ॥

एक नक्षत्रके तीस मुहूर्त होते हैं एक मुहूर्त दो घडीका होता है उन मुहूर्तोंके स्वामी कहते हैं राक्षस १ यातुधान २ सोम ३ शुक्र ४ फणीश्वर ५ पिता ६ माता ७ यम ८ काल९ विश्वेदेवता १० महेश्वर ११ ॥ ३४ ॥ शर्व १२ कुबेर १३ शुक्र १४ मेघ १५ दिवाकर १६ गंधर्व १७ यम १८ ब्रह्मा १९ विष्णु २० यम २१ ॥ ३५ ॥ ईश्वर २२ विष्णु २३ रुद्र २४ पवन २५ मुनि२६ स्वामी कार्तिक २७ भृंगिरीटि २८ गौरी सरस्वती २९ ॥ ३६ ॥ प्रजापति ३० ये मूलनक्षत्रके ३० तीस मुहूर्तोंके स्वामी कहे हैं और आश्लेषानक्षत्रमें इनके विपरीत (उलटे) मुहूर्तोंके स्वामी जानना चाहिये ॥ ३७ ॥

अथ मुहूर्तजातफलम् ।

प्रथमे द्वितीये षष्ठे चाष्टमेष्टादशे तथा ॥
त्रयोविंशे च नवमे परिवारभयंकरः ॥ ३८ ॥

अब मूल और आश्लेषानक्षत्रके मुहूर्तोंमें उत्पन्न बालकका फल कहते हैं पहिले दूसरे छठें आठवें अठारवें तेईसवें नवमें मुहूर्तमें जो बालक पैदा होय तो परिवारका नाश करताहै ॥ ३८ ॥

॥ अथ मुहूर्तेशचक्रम् ॥

मुहूर्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मुहूर्तेश	राक्षस	यातुधान	सोम	शुक्र	फणीश्वर	पिता	माता	यम	काल	विश्वेदेवता	महेश्वर	शर्व	कुबेर	शुक्र	मेघ
मुहूर्त	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मुहूर्तेश	दिवाकर	गंधर्व	यम	ब्रह्मा	विष्णु	यम	ईश्वर	विष्णु	रुद्र	पवन	स्वामी कार्तिक	भृंगिरीटि	गौरी	सरस्वती	प्रजापति

॥ अथाश्लेषानक्षत्रस्य मुहूर्तेशचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	मुहूर्त.
प्रजापति	सरस्वती	गौरी	भृंगरीटि	स्वा.कार्तिक	मुनि	पवन	रुद्र	ईश्वर	यम	विष्णु	ब्रह्मा	यम	गंधर्व	दिवाकर	मुहूर्तेश
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	मुहूर्त
मेघ	शुक्र	कुबेर	शर्व	महेश्वर	विश्वेदेव	काल	यम	माता	पिता	फणीश्वर	शुक्र	सोम	यातुधान	राक्षस	मुहूर्तेश

अथ मूलवृक्षः ।

वेदाः४ सप्त७ गजाः८काष्ठाः१०खेटा९वाणा५श्च षट्६शिवाः११
मूलस्तंभत्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ ३९ ॥

अब मूलवृक्ष कहते हैं मूल वृक्षकी जड़में ४ चार और स्तंभमें ७ सात और छालमें ८ आठ शाखाओंमें दश १० पत्तोंमें नौ ९ फूलोंमें ५ पांच फलोंमें ६ छः और शिखामें ११ ग्यारह घडियोंको स्थापन करना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथ मूलवृक्षफलम् ।

मूलवृक्षविभागेषु मंगलं हि फले दले ॥
अमंगलं फलं विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ॥ ४० ॥

अब मूल वृक्षकी घडियोंका फल कहते हैं मूल वृक्षके अंगविभागोंमें फल और पुष्पोंकी घड़ियोंमें पैदा होय तो श्रेष्ठ फल जानो और अन्य अंगोंके घडियोंमें पैदा होय तो नष्ट फल कहना चाहिये ॥ ४० ॥

अथ मूलस्य शुभाशुभम् ।

पादे मुहूर्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ॥
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभं फलम् ॥ ४१ ॥

जो मूल नक्षत्रके चरण और मुहूर्त और वेला और मूल वृक्षमें और पुरुषाकृतिमूलोंके विचारसे जो अधिपक्षोंमें शुभफल आवे तो शुभफल कहना चाहिये और जो नेष्टफल अधिक पाया जाय तो नेष्टही कहना चाहिये ॥ ४१ ॥

अथ पितुर्नक्षत्रजातफलम् ।

तातस्य जन्मभे यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ॥
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं स कुरुते ध्रुवम् ॥ ४२ ॥

जो मनुष्य पिताके नक्षत्रमें पैदा होय तो वह बालक पिताको अथवा भ्राताको जरूर रोग देताहै अथवा पिता वा ज्येष्ठ भ्राताको नाश करता है ॥ ४२ ॥

तस्य शांतिमाह ।

मूलवच्छांतिकं तत्र विधेयं हि विचक्षणैः ॥
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः ॥ ४३ ॥

जो बालक अपने पिताके नक्षत्रमें पैदा होय तो मूलनक्षत्रके समान कही हुई शांति करना चाहिये धरती, रत्न, सोना और अन्न ब्राह्मणको दान करके देवे ॥ ४३ ॥

अथ मूलनक्षत्रजातफलम् ।

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता ॥
प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मूलनाम नक्षत्र होताहै वह मनुष्य सुख सहित धन और वाहन सहित हिंसा करनेवाला बलसहित स्थिर कर्म करनेवाला शत्रुजनोंको संताप देनेवाला और उपकारज होता है ॥ ४४ ॥

अथ पूर्वाषाढानक्षत्रजातफलम् ।

भूयोभूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासः सुशीलः ॥
नूनं संपज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः ॥४५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाषाढा नाम नक्षत्र होय वह मनुष्य बारंबार जल पीनेमें आसक्त भोग करनेवाला निर्मल वाणीका विलास करनेवाला श्रेष्ठशील बहुत धनवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ उत्तराषाढानक्षत्रजातफलम् ।

दाता दयावान् विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुतासमेतः ॥
कान्तासुतावाप्तसुखो नितांतं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी ॥४६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराषाढा नक्षत्र होय वह मनुष्य दानी दयावान युद्धमें जयके। साथ नम्रतासहित अच्छे कर्म करनेवाला ऐश्वर्यसहित स्त्री और पुत्रों करके पूर्ण सुखको प्राप्त अभिमानी होता है ॥ ४६ ॥

अथ अभिजिज्जातफलम्।

अतिसुललितकांतिः संमतः सज्जनानां ननु भवति विनीत-
श्चारुकीर्तिः सुरूपः ॥ द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ्मानवः
स्यादभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स स्ववंशे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अभिजित नक्षत्र होवे वह मनुष्य अत्यंत शोभायमान कांतिवाला सत्पुरुषोंका सम्मत नम्रतासहित कीर्तिमान रूपवान देवता और ब्राह्मणोंकी भक्ति करनेवाला पंडितोंकीसी वाणी बोलनेवाला अपने वंशमें राजा होता है ॥ ४७ ॥

अथ श्रवणनक्षत्रजातफलम्।

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः ॥
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ॥ ४८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें श्रवण नक्षत्र होय वह मनुष्य शास्त्रोंमें तत्पर बहुत पुत्र और मित्रोंवाला सत्पुरुषोंका भक्त शत्रुओंका जीतनेवाला पुराण श्रवण करनेमें प्रवीण होताहै ४८॥

अथ धनिष्ठानक्षत्रजातफलम्।

आचारयुक्तादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान्कृपालुः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितो नरः स्यात्४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनिष्ठा नक्षत्र होय वह मनुष्य आचार युक्त आदरका देनेवाला सुंदर शीलवाला अधिक धनवान दयालु बडी प्रतिष्ठावाला होताहै ॥ ४९ ॥

अथ शतभिषानक्षत्रजातफलम्।

शीतभीरुरतिसाहसिदाता निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत् ॥
वैरिणामतिशयेन दारुणो वारुणोडुनि च यस्य संभवः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शतभिषा नक्षत्र होय वह मनुष्य शीतसे डरनेवाला साहसी दाता कठोरचित्त चतुर होताहै शत्रुओंको अतिशय करके दारुण होताहै ॥ ५० ॥

अथ पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रजातफलम्।

जितेंद्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम् ॥
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र होय वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला सब कलाओंमें चतुर शत्रुओंका जीतनेवाला निरंतर अपूर्व बुद्धिवाला होता है ॥ ५१ ॥

अथ उत्तराभाद्रपदानक्षत्रजातफलम् ।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता ॥
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः ५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र होय वह मनुष्य अपने कुलमें आभूषण अत्यंत ऊंचा देहवाला नहीं, श्रेष्ठ कर्मका करनेवाला धन्य होता है ॥ ५२ ॥

अथ रेवतीनक्षत्रजातफलम् ।

चारुशीलविभवो जितेंद्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः ॥
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रेवतीनक्षत्र होय वह मनुष्य सुंदर शीलवाला इंद्रियोंका जीतनेवाला श्रेष्ठ धनवाला बडा बुद्धिमान होता है ॥ ५३ ॥

अथ बृहज्जातकोक्तनवांशफलमाह तत्रादौ प्रथमनवांशजातफलम् ।

विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ॥
विद्याव्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ॥ १ ॥

जो मनुष्य पहिले नवांशमें पैदा होय वह मनुष्य नम्रतासहित धर्ममें शीलवाला सत्य बोलनेवाला दृढ प्रतिज्ञावाला विद्याको पढनेवाला होता है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयनवांशजातफलम् ।

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ॥
गंधर्वप्रमदासक्तो जायते द्वितियांशके ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें द्वितीय नवांश होय वह मनुष्य उत्पन्न किये हुए वैभवोंका भोगनेवाला युद्धमें हारनेवाला वेश्याओंमें आसक्त होता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयनवांशजातफलम् ।

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोल्पवीर्यवान् ॥
वीरविद्याविचारज्ञो जायते तृतियांशके ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यका जन्म तीसरे नवांशमें होय वह मनुष्य स्त्रियोंकरके जीता हुआ पुत्रहीन इंद्रजाली करनेवाला थोडे बलवाला शूरवीर विद्याके विचारको जाननेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थनवांशजातफलम् ।

बहुस्त्रीसुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ॥
नृपमंत्र्यथवामात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चतुर्थ नवांशमें होय वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंवाला श्रेष्ठ भाग्यवाला पूजनीय जलसेवामें तत्पर धनवान राजसेवी अथवा राजाका मंत्री होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमनवांशजातफलम् ।

बहुमित्रनृपामात्यो बंधुमित्रसुखान्वितः ॥
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पंचमांशके ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवांश होय वह मनुष्य बहुत मित्रोंवाला राजाका नौकर कुटुंबीजन और मित्रोंकरके सुखसहित बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठनवांशजातफलम् ।

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ॥
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठा नवांश होय वह मनुष्य वैरियोंको जीतनेवाला शूरवीर पक्की मित्रता करनेवाला देशका स्वामी होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमनवांशजातफलम् ।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथकलायुतः ॥
सेनापतित्वमाप्नोतिः संजातः सप्तमांशके ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यका जन्म सातवें नवांशमें होता है वह मनुष्य सब जगह निर्बंधन होकर विचरनेवाला राजाओंकी कला करके सहित फौजका मालिक होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमनवांशजातफलम् ।

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्यपोहितः ॥
क्रोधी दुर्जनसंतप्तांगो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यका जन्म अष्टमनवांशमें होय वह मनुष्य उदार बुद्धिवाला धरतीपर प्रसिद्ध धन और अन्नको दूर करनेवाला क्रोधी खोटे आदमियोंकरके संतापको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमनवांशजातफलम् ।

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदा सुखी ॥
ज्ञाता धर्मी धनी मान्यो जायते नवमांशके ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यका जन्म नवम नवांशमें होय वह मनुष्य बडी उमरवाला प्रसन्न देह विद्याको पढनेवाला हमेशा सुखी ज्ञाता धर्म करनेवाला धनवान माननीय होता है ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलमाह तत्रादौ विष्कंभयोगजातफलम् ।

शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातंत्र्यं स्यात्सर्वकार्यप्रसङ्गे ॥
चंचद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कंभे वै संभवो यस्य जंतोः ॥१॥

जिस मनुष्यका जन्म विष्कंभयोगमें होवे वह मनुष्य निरंतर स्त्री पुत्र और मित्रादिकोंके सौख्यको प्राप्त सब कामोंमें स्वाधीनताको प्राप्त शोभायमान देहवाला होता है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगजातफलम् ।

वक्ता चंचद्रूपसंपत्तियुक्तो दातात्यंतं स्यात्प्रसन्नाननश्च ॥
जातानंदः सद्विनोदप्रसङ्गो धर्मे प्रीतिः प्रीतिजन्मा मनुष्यः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रीतिनाम योग होता है वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला सुंदरस्वरूप और संपत्तिवाला और प्रसन्नमुख बडा दानी आनंदको जाननेवाला श्रेष्ठ विनोदयुक्त होता है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मान्योगजातफलम् ।

अर्थात्पूर्णः साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानपानप्रवृत्तिः ॥
यस्यायुष्मत्संभवः संभवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आयुष्मान् नाम योग होय वह मनुष्य धन करके पूर्ण साहस करके सहित अनेक स्थान और जंगलमें जानेकी इच्छा रखनेवाला मान सहित बडी उमरवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलम् ।

ज्ञानी धनी सत्यरतो यशस्वी स्यादाचारशीलो बलवान्विवेकी ॥
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सौभाग्ययोग होय वह मनुष्य ज्ञानवान धनवान सत्यमें तत्पर श्रेष्ठ आचारवाला बलवान् चतुर जनोंकरके प्रशंसाको प्राप्त सौभाग्य युक्त बडा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलम् ।

मनस्वी नितुरः सद्गुरुसेवाकरो गौरवयुतश्च सन्मतिः ॥
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शोभन नाम योग होता है वह मनुष्य बहुत जल्दी चतुरता युक्त बडाई करनेवाला सुंदर गौरव सहित श्रेष्ठ बुद्धिवाला नित्यही शुभकार्यमें तत्पर होता है॥५॥

अथातिगण्डयोगजातफलम्।

सदामदोऽथो गलरुक्सरोषो विशालहस्ताङ्घ्रिरतीव धूर्तः ॥
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगंडजातः॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अतिगंडनाम योग होय वह मनुष्य हमेशा अभिमान-सहित गलेकी बीमारीवाला क्रोधसहित विशालहाथ पैरोंवाला अत्यंत धूर्त कलह जिसको प्यारी बड़ी ठोडी वाला पाखंडी होता है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगजातफलम्।

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ॥
परोपकारी सुतरां सुकर्मी भवेत्सुकर्मा परिसूतिकाले ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुकर्मनाम योग होय वह मनुष्य हमेशा प्रसन्न चित्त सब कलाओंमें प्रवीण श्रेष्ठ पराक्रमी होता है पराये उपकारमें तत्पर श्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगजातफलम्।

प्राज्ञो वदान्यः सततं प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ॥
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धृति योग होय वह मनुष्य चतुरतायुक्त बोलनेवाला निरंतर प्रसन्न श्रेष्ठ सभामें चपल बोलनेवाला श्रेष्ठ शीलवाला नीतिसहित नियमका धारण करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगजातफलम्।

नरो दरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरक्तः ॥
यस्य प्रसूतौ यदि शूलयोगो शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित्॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होता है वह मनुष्य दरिद्र और रोगसहित श्रेष्ठ कर्म और विद्या विनय करके रहित हो उसको कभी कभी शूलरोगकी व्यथा होती है ॥ ९ ॥

अथ गण्डयोगजातफलम्।

धूर्तः सुहृत्कार्यपराङ्मुखश्च क्लेशी विशेषात्परुषस्वभावः ॥
चेत्संभवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचंडकोपः पुरुषः प्रदिष्टः ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गंडनाम योग होता है वह मनुष्य धूर्त मित्रोंके काममें विमुख क्लेशका पानेवाला कठोरस्वभाववाला बड़े क्रोधका करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ वृद्धियोगजातफलम् ।

सुसंग्रहप्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात्क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याधिवृद्धिर्नियमेन तस्य ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य सब चीजोंके संग्रह करनेमें अत्यंत चतुर क्रय और विक्रय करनेसे धनवान नियम करके भाग्यकी वृद्धिवाला होता है॥ ११ ॥

अथ ध्रुवयोगजातफलम् ।

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ॥
चारुकीर्तिरपि सध्रुवं तदा चेद्ध्रुवो भवति यस्य संभवे ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ध्रुवनाम योग होय उस मनुष्यके घरमें अचल लक्ष्मी सदा रहती है और उसके मुखमें सरस्वती वास करे कीर्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ व्याघातयोगजातफलम् ।

क्रूरोल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी ॥
असत्यताप्रीतिरतीव मर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्ता १३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्याघात नाम योग होता है वह मनुष्य क्रूरस्वभाववाला थोड़ी दृष्टिवाला दयारहित ऊँची ठोड़ीवाला झूठे विवादका करनेवाला असत्यमें प्रीति करनेवाला घात करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ हर्षणयोगजातफलम् ।

सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः ॥
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत्स मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात्॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षणनाम योग होता है वह मनुष्य चिकनी देहवाला शास्त्रका पढनेवाला लाल वस्त्रोंका पहिरनेवाला सुंदर आभूषणों सहित शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम् ।

सुधीः सुरूपुर्गुणवान्महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात् ॥
प्रसूतिकाले यदि वज्रयोगः स वज्रयुक्तोत्तमभूषणाढ्यः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्रनाम योग होता है वह मनुष्य सुंदर बुद्धिवाला गुणवान पराक्रमी सत्यसहित रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला हीरोंकरके जड़ेहुए आभूषण और वस्त्रोंसहित होता है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम् ।

उदारचेताश्चतुरः शुशीलः शास्त्रादरः सारविराजमानः ॥
प्रसूतिकाले यदि सिद्धियोगो भाग्याभिवृद्धिः सततं हि तस्य १६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धिनाम योग होता है वह मनुष्य उदार चित्त चतुर श्रेष्ठ शीलवाला शास्त्रका जाननेवाला बल करके युक्त निरंतर उसके भाग्यकी वृद्धि होती है ॥ १६॥

अथ व्यतीपातयोगजातफलम् ।

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः ॥
परस्य कार्ये व्यतिपाततुल्यो नरः खलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्यतीपातनाम योग होवे वह मनुष्य उदारबुद्धि पिता माताके वचनको माननेवाला रोगयुक्त देहवाला कठोर चित्त पराये कार्यको बिगाड़नेवाला होता है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगजातफलम् ।

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पतासद्व्ययतासमेतः ॥
सुकर्मसौजन्यतया वरीयान्भवेद्वरीयान्प्रभवे हि यस्य ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वरीयाननाम योग होवै वह मनुष्य उत्पन्न किये भोगोंका भोगनेवाला नम्रतासहित थोड़े धनवाला श्रेष्ठ कार्यमें खर्च करनेवाला श्रेष्ठ कर्म करनेवाला श्रेष्ठजन होता है ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगजातफलम् ।

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः ॥
दक्षोल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवः स्यात्॥ १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिघयोग होता है वह मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला बहुतोंकी जमानत करनेवाला दयारहित चतुर थोड़ा भोजन करनेवाला शत्रुओंका जीतनेवाला निर्भय होता है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगजातफलम् ।

सन्मंत्रशास्त्राभिरतो नितांतं जितेंद्रियश्चारुशरीरयष्टिः ॥
योगः शिवो जन्मनि यस्य जंतोः सदाशिवं तस्य शिवप्रसादात् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शिवनाम योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ मन्त्रशास्त्रमें तत्पर निरन्तर जितेन्द्रिय सुन्दर देहवाला हमेशा कल्याणको प्राप्त शिवजीकी कृपासे होता है ॥ २० ॥

अथ सिद्धियोगजातफलम् ।

जितेन्द्रियः सत्यपरोतिगौरः सर्वेषु कार्येष्वतिकोविदश्च ॥
भवेत्प्रसूतौ यदि सिद्धियोगः सिद्ध्यंति कार्याणि कृतानि तस्य २१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिद्धियोग होय वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला, सत्यमें तत्पर अत्यंत गौर सब कार्योंमें चतुर होता है और जिस कामको करे सो सब कार्य उसके सिद्ध होते रहें ॥ २१ ॥

अथ साध्ययोगजातफलम् ।

नूनं विनीतश्चतुरः सुहासः स्वकार्यदक्षो जितशत्रुपक्षः ॥
सन्मंत्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्साध्यभवो हि दक्षः ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें साध्यनाम योग होता है वह मनुष्य निश्चय कर नम्रतासहित हास्ययुक्त अपने कार्यमें चतुर शत्रुओंका जीतनेवाला श्रेष्ठ मंत्रविद्या करके कार्योंका साधनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ शुभयोगजातफलम् ।

शुभप्रचारः शुभवाग्विलासः शुभस्य कर्ता शुभलक्षणश्च ॥
शुभोपदेशं कुरुते नराणां यस्य प्रसूतौ शुभनामयोगः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभयोग होता है वह मनुष्य शुभकार्यका प्रचार करनेवाला श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला शुभ करनेवाला शुभ लक्षणों सहित श्रेष्ठ उपदेशोंका करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ शुक्लयोगजातफलम् ।

जितेन्द्रियः सत्यवचा महौजा वाग्वादसंग्रामजयाभ्युपेतः ॥
सन्मानशुक्लांबरधारणेच्छुः शुक्लाद्भवो वैभवसंयुतः स्यात् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्लनाम योग होय वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला सत्य बोलनेवाला बड़ा पराक्रमी शास्त्रार्थ करनेमें युद्धमें जयको प्राप्त सन्मानको प्राप्त सफेद वस्त्र धारण करनेकी इच्छावाला होता है ॥ २४ ॥

अथ ब्रह्मयोगजातफलम् ।

विद्याभ्यासेऽत्यंत प्रीतिः सचेता नित्यं सत्याचारजातादरश्च ॥
शांतो दांतो जायते चारुकर्मा ब्रह्मयोगे संभवो यस्य पुंसः २५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ब्रह्मनाम योग होवे वह मनुष्य विद्याके पढनेमें अत्यंत प्रीति करनेवाला हमेशा सत्य आचारको प्राप्त आदर पानेवाला शांत तप करनेवाला सुन्दर कर्म करनेवाला होता है ॥ २५ ॥

अथ ऐंद्रयोगजातफलम्।

प्राज्ञो बलीयान्विपुलामलश्रीयुक्तः कफात्मा हि भवेन्महौजाः ॥
निजान्वये वै मनुजो नरेंद्रस्त्वैन्द्रोद्भवश्चाकृतरप्रभावः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ऐंद्रनाम योग होता है वह मनुष्य चतुर बलवान् बहुत धनवाला कफकी प्रकृतिवाला बडा पराक्रमी अपने वंशमें राजा होता है ॥ २६ ॥

अथ वैधृतियोगजातफलम्।

चंचलश्च कुटिलः खलनेत्रः शास्त्रभक्तिरहितो हतचित्तः ॥
साध्वसे मनसि तस्य नो धृतिर्वैधृतिर्भवति यस्य जन्मनि॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वैधृतिनाम योग होय वह मनुष्य चंचल कुगल दुष्टोंसे मित्रता करनेवाला शास्त्रभक्तिसे रहित भयमें हतचित्त और अधीर होता है ॥ २७ ॥

अथ करणफलमाह तत्रादौ बवकरणजातफलम्।

कामी दयालुर्बलवान्सुशीलो विचक्षणः शीघ्रगतिः सभाग्यः ॥
बवाभिधाने जननं हि यस्य नानाविधा तस्य भवेत्सुसंपत् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बवकरण होय वह मनुष्य कामी दयावान बलवान श्रेष्ठ शीलवाला बडा चतुर जल्दी चलनेवाला भाग्यवान हो उसकी अनेक प्रकारकी सम्पत्ति होती है ॥ १ ॥

अथ बालवकरणजातफलम्।

शूरतातिविलसद्बलवत्तासंयुतो भवति चारुविलासः ॥
काव्यकृद्वितरणप्रवणश्चेद्बालवे मलमतिश्च कलाज्ञः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बालव करण होय वह मनुष्य शूर वीर अत्यंत बलवान सुन्दर विलास करनेवाला काव्य करनेवाला दान करनेमें तत्पर बडा बुद्धिवान कलाओंका जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ कौलवकरणजातफलम्।

कामी प्रगल्भोभिमतो बहूनां नूनं स्वतंत्रो बहुमित्रसख्यः ॥
बलान्वितो कोमलवाग्विलासः श्रेष्ठः कुले कौलवजातजन्मा॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कौलवनाम करण होय वह मनुष्य कामी बुद्धिमान बहुतोंक प्यारा स्वाधीनताको प्राप्त बहुत मित्रोंसे मित्रता करनेवाला बलसहित कोमल वाणी बोलनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ तैतिलकरणजातफलम् ।

चारुकोमलकलेवरशाली केलिलाससुमनाश्च कलाज्ञः ॥
वाग्विलासकुशलोतिसुशीलस्तैतिले विमलधीश्चलदृक्स्यात् ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तैतिलकरण होय वह मनुष्य सुंदर कोमल देहवाला कालिनाम हास्य विलासमें प्रीति करनेवाला वाणी विलासमें चतुर श्रेष्ठ शीलवाला बुद्धिवान चंचल नेत्रोंवाला होताहै ॥ ४ ॥

अथ गरकरणजातफलम् ।

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ॥
शूरोतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गरकरण होय वह मनुष्य पराया उपकार करनेवाला विचार करनेवाला चतुर शत्रुओंका जीतनेवाला शूर वीर धैर्यवान निरंतर उदार होता है ॥ ५ ॥

अथ वणिजकरणजातफलम् ।

कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सन्मानसमन्वितश्च ॥
प्रसूतिकाले वणिजो हि यस्य वाणिज्यतोर्थागमनं हि तस्य ॥ ६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वणिजनाम करण होय वह मनुष्य कलाओंमें प्रवीण हास्ययुक्त चतुर सन्मान सहित व्यापार करके धन पैदा करनेवाला होताहै ॥ ६ ॥

अथ विष्टिकरणजातफलम् ।

चारुवक्त्रचपलो बलशाली हेलयातिदलितारिकुलश्च ॥
जायते खलमतिर्बहुनिद्रो यस्य जन्मसमये खलु भद्रा ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विष्टिकरण होय वह मनुष्य सुंदर मुखवाला चपल बलवान हास्य विलास सहित शत्रुके कुलका नाश करनेवाला दुष्ट बुद्धि बहुत सोनेवाला होताहै ॥७॥

अथ शकुनिकरणजातफलम् ।

अनिमुन्नितबुद्धिर्मन्त्रविद्याविधाने गुणगणसमवेतः सर्वदा सावधानः ॥ ननु जनकृतसख्यः सर्वसौभाग्ययुक्तो भवति शकुनजन्मा शाकुनज्ञानशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शकुनिनाम करण होय वह मनुष्य अत्यंत सुंदर बुद्धिवाला मंत्रविद्याके विधानमें चतुर गुणोंके दल सहित हमेशा सावधान मनुष्योंसे मित्रता करनेवाला सम्पूर्ण सौभाग्य पदार्थोंसहित शकुनका जाननेवाला होताहै ॥ ८ ॥

अथ चतुष्पदकरणजातफलम्।

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रहः क्षीणशरीरयष्टिः ॥
चतुष्पदे यस्य भवेत्प्रसूतिश्चतुष्पदात्सत्त्वयुतो मनुष्यः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्योंके जन्मकालमें चतुष्पद नाम करण होय वह मनुष्य हमेशा पवित्रतासे रहित किसी वस्तुका संग्रह नहीं करै क्षीण शरीरवाला चौपायोंके बलवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ नागकरणजातफलम्।

दुःशीलवक्रचलनो बलवान्खलात्मा कोपानलाहतमतिः कलिकृत्कुलार्यैः ॥ द्रोहात्कुलक्षयभवादतिदीर्घकाले जातो हि नागकरणे रणरङ्गधीरः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नागकरण होवे वह मनुष्य खोटे स्वभाववाला उलटा चलनेवाला बलवान् दुष्टात्मा क्रोधाग्निसे नष्ट बुद्धिवाला कलह करनेवाला कुलका शत्रु वैरसे कुलका नाश करनेवाला संग्राममें धीर होता है ॥ १० ॥

अथ किंस्तुघ्नकरणजातफलम्।

धर्मेऽप्यधर्मे समता मतेः स्यादङ्गेऽप्यनङ्गे विबलत्वमुच्चैः ॥
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किंचित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें किंस्तुघ्न करण होताहै वह मनुष्य धर्म और अधर्ममें बराबर होता है देहमें और काम क्रीडामें निर्बल मित्रता और शत्रुता उसकी स्थिर कभी न रहे॥ ११॥

अथ गण्डा[illegible]म्।

पौष्णादिगंडांतभवो हि म[illegible] पित्रोरशुभोऽग्रजस्य ॥
तथा च सत्यं त्रिवि[illegible]र्पोभिघातं कुरुते वदंति ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके [illegible] होय वह मनुष्य पिताको नाश करे और तिथिगंडांतमें [illegible]माताका नाश करता है और लग्न गंडांतमें पैदा हुआ आप नष्ट हो[illegible] कालमें पैदा होय तो कुलका नाश करता है ॥ १ ॥

अथ गणजातफलमाह तत्रादौ देवगणजातफलम् ।

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च ॥
जायते सुरगणेऽन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः ॥ १ ॥

जो बालक देवगणमें पैदा होय वह श्रेष्ठ शब्दवाला सीधी उक्ति बुद्धिवाला थोडा भोजन करनेवाला गुणोंका माननेवाला विद्वान वर्णनीय गुणवाला धनसहित होताहै ॥ १ ॥

अथ मनुष्यगणजातफलम् ।

देवद्विजार्चाभिरतोऽभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः ॥
प्राज्ञः सुकांतिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मनुष्यगण होय वह मनुष्य देवता और ब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर अभिमानी धनवान् दयासहित बलवान् कलाओंका जाननेवाला चतुर श्रेष्ठ कांतिवाला बहुत जनोंको सुख देनेवाला होताहै ॥ २ ॥

अथ राक्षसगणजातफलम् ।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ॥
दुःशीलवृत्तः कलिकृद्बलीयान्रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राक्षसगण होय वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला कठोरचित्त साहसी क्रोधवाला बुरे शीलवाला कलह करनेवाला बलवान् विरोध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ लग्नजातफलम्–तत्रादौ मेषलग्नजातफलम् ।

चंडाऽभिमानी गुणवान्सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम् ॥
पराक्रमप्राप्तयशोविशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽतिरोषः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष लग्न होय वह मनुष्य बडा अभिमानी गुणवान् क्रोधसहित मित्रोंका वैरी होता है अन्यजनोंका मित्र होय पराक्रमको प्राप्त बडे प्रशंसावाला अत्यंत क्रोधी होता है ॥ १ ॥

अथ वृषलग्नजातफलम् ।

गुणाग्रणीः स्याद्द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च ॥
मानी च शूरः प्रियवाक्प्रशांतः स्यात्पुरुषो यस्य वृषो विलग्ने ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषलग्न होय वह मनुष्य गुणवानोंमें अग्रणी धन करके पूर्ण गुरुओंका भक्त संग्राम जिसको प्यारा अभिमान शूर वीर प्यारी वाणी बोलनेवाला शांत स्वभाव होता है ॥ २ ॥

अथ मिथुनलग्नजातफलम्।

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः॥
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसंनिधाने लग्ने भवेद्वै मिथुनाभिधाने॥३॥

जिस मनुष्यका जन्म मिथुन लग्नमें होय, वह मनुष्य भोगी दाता बहुत पुत्र और मित्रोंवाला छिपाहुआ मन्त्र जिसका धनसहित श्रेष्ठ शील होता है और उसका रहना राजाके पास होता है॥ ३॥

अथ कर्कलग्नजातफलम्।

मिष्टान्नभुक्साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः॥
प्रकृष्टसारोनितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेद्यः॥ ४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कलग्न होय वह मनुष्य मिष्टान्नका खानेवाला साधुओंमें तत्पर नम्रतासहित उलटी बुद्धिवाला जलमें विहार करनेवाला अनेक चीजोंके सारको जाननेवाला निरन्तर उदार होता है॥ ४॥

अथ सिंहलग्नजातफलमाह।

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्पभक्षः॥
संजातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पंचानने संजनने विलग्ने॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहलग्न होय वह मनुष्य दुर्बल पेटवाला सुन्दर पराक्रमवाला भोगी थोडे पुत्रोंवाला थोडा भोजन करनेवाला अभिमानमें जिसकी बुद्धि होती है॥ ५॥

अथ कन्यालग्नजातफलम्।

कामक्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः॥
लग्नं कन्या यस्य जन्यां जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्यालग्न होय वह मनुष्य कामी अधिक श्रेष्ठ गुण और ज्ञान तथा बलसहित चतुरता आदिमें युक्त श्रेष्ठ प्रसन्न अन्तमें लक्ष्मीको प्राप्त होता है॥ ६॥

अथ तुलालग्नजातफलम्।

गुणाधिकत्वाद्द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्मण्यतिनैपुणत्वम्॥
पश्चालया तन्निलये न लोला लग्नं तुला चेत्स कुलावतंसः॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलालग्न होय वह मनुष्य गुणोंमें अधिक धनको प्राप्त करनेवाला व्यवहार कार्यमें अत्यन्त निपुणताको प्राप्त उसके स्थानसे लक्ष्मी नहीं हटती अपने कुलमें प्रकाशवान होता है॥ ७॥

अथ वृश्चिकलग्नजातफलम् ।

शूरो नरोऽत्यंतविचारसारोनवद्यविद्याधिकतासमेतः ॥
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकलग्न होय वह मनुष्य शूर वीर अच्छा विचार करनेवाला श्रेष्ठ विद्याओंकी अधिकता सहित हमेश क्लेशको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ धनुर्लग्नजातफलम् ।

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः ॥
सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेद्धनुर्यस्य जनुस्तनुः स्यात् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनुर्लग्न होय वह मनुष्य चतुर राजाकी सेवा करनेवाला सत्यप्रतिज्ञावाला निरंतर मनकी जाननेवाला विद्वान् कलाओंका जाननेवाला धनुर्विद्याको जाननेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ मकरलग्नजातफलम् ।

कठिनमूर्तिरतीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः ॥
सुचतुरोपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदयसंभवः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर लग्न होय वह कठोरमूर्ति अत्यंत शठ अपने मनका काम करनेवाला बहुत पुत्रोंवाला श्रेष्ठ चतुरता सहित लोभी अधिक होता है ॥ १० ॥

अथ कुंभलग्नजातफलम् ।

लोलस्वांतोत्यंतसंजातकामश्चंचद्देहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे ॥
लस्यारम्भः संभवेद्युक्तदम्भश्चेत्स्यात्कुंभे संभवो यस्य लग्ने ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभलग्न होय वह मनुष्य चंचल अपने हृदयमें कामको प्राप्त सुन्दर देह मित्रवर्गोंसे प्रीति करनेवाला अन्नका आरंभ करनेवाला क्रोधी होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनलग्नजातफलम् ।

दक्षोल्पभक्षोल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोतिधूर्तः ॥
स्यान्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने ॥ १२ ॥
भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ॥
तदित्थमल्पोने यदि वा विलग्ने युक्तेक्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् १३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनलग्न होय वह मनुष्य चतुर थोडा भोजन करनेवाला [illegible] और रत्न और सुवर्ण सहित चपल अत्यंत धूर्त अनेक प्रकारकी रचना करनेवाला होता

है ॥ १२ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न बलवान् होय तो कहाहुआ पूरा फल होता है और जो लग्न निर्बल होय अथवा पापयुक्त होय वा पापग्रह देखते होय तो थोडा फल करता है ॥ १३ ॥

नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात् निराधारकत्वेन फलादेशः कथं सम्यग्घटतीति व्यर्थमेव किमर्थमुक्तमिति चेन्न समयनियमोप्यस्ति तथा हि–

निश्चयकर संवत्सरादिका फल निराधार कहा है और उसके प्राप्त होनेका समयभी नहीं कहा है तो वह निराधार फल क्यों फले? किस प्रकार घट सक्ता है तो पूर्वोक्त फलका कहना व्यर्थ है किस वास्ते कहा? ऐसा तो न कहो क्यों कि समय नियमभी है सो तहाँ कहते हैं–

उक्तानि संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ॥
सांवत्सरं सावनवर्षपस्य पाकेयनर्तुप्रभवं खरांशोः ॥ १४ ॥

जो पहिले कहा हुआ संवत्सरादिका फल कहा है तिसके प्राप्त होनेका समय कल्पना करते हैं संवत्सरका फल सावन वर्षपतिकी दशामें कहना चाहिये और अयन ऋतुका फल सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ पूर्वोक्तसंवत्सराणां फलप्राप्तिसमयमाह।

मासोद्भवं मासपतेस्तथेंदोर्गणोडुपक्षप्रभवं च यत्स्यात् ॥
तिथिप्रभूतं करणोद्भवं च चंद्रान्तरेऽर्कस्य दशाविभागे ॥ १५ ॥
वारोद्भवं वारविभोर्विचिंत्य योगोत्थमिन्द्वर्कबलान्वितस्य ॥
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्दशायां दृग्भावयुग्राशिजमेव सूक्ष्मम् ॥ १६ ॥

और महीनेका फल मासपतिकी दशामें कहना चाहिये और गण तथा नक्षत्र फल और पक्षफलभी चंद्रमाकी दशामें कहना चाहिये और तिथिजात और करणजात फल चंद्रमाके अंतरमें सूर्यकी दशामें कहना चाहिये ॥ १५ ॥ और वारजातफल वारके स्वामीकी दशामें कहना चाहिये और योगजातफल सूर्यचंद्रमामें जो अधिक बली होय उसकी दशामें कहना और लग्नजातफल लग्नपतिकी दशामें कहना चाहिये और दृष्टिभाव राशि इनका फल इनके स्वामीकी दशामें कहो ॥ १६ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रम्।

डिंभाख्यचक्रे रविभाच्च भानां त्रयं न्यसेन्मूर्ध्नि मुखे त्रयं च ॥
द्वे स्कंधयोर्द्वे भुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पंच भानि ॥ १ ॥

नाभौ च लिंगे च तथैकमेकं द्वे जानुनोः पादयुगे भषट्कम् ॥
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयं मुनिप्रवर्यैः फलमुक्तमत्र ॥ २ ॥

अब डिंभाख्यचक्र कहते हैं डिंभाख्यचक्रके विषे सूर्यके नक्षत्रसे नक्षत्रोंका न्यास करे सो शिरपर तीन मुखमें तीन दोनों कंधोंपर एक एक और दोनों बाहोंपर एक एक दोनों हाथोंपर एक एक छातीपर पांच नक्षत्र स्थापित करे ॥ १ ॥ टूंडीमें एक लिंगपर एक और दोनों जांघोंमें दो दो और तीन तीन दोनों पैरोंपर पुरुषोंके हमेशा कल्पना करे यह मुनीश्वरोंके कहेहुए फलको कहते हैं ॥ २ ॥

अथ डिंभाख्यचक्रे नक्षत्रन्यासफलमाह ।

सद्रत्नचामीकरचारुवस्त्रविचित्रबालव्यजनातपत्रैः ॥ विराजमानो मनुजो नितांतं मौलिस्थले भं नलिनीप्रभोश्चेत् ॥३॥
मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततं प्रसन्नः ॥
स्मिताननो ना वदनानुयातं भानोर्भवेद्भं जनने हि यस्य॥४॥
कुलांशको वंशविभूषणश्च महोत्सवार्थे प्रथितः प्रतापी ॥
नरोतिशूरोऽतितरामुदारो दिवाकरोडुस्थितमंशके चेत् ॥ ५ ॥

जो बालक शिरके नक्षत्रोंमें पैदा होय तो श्रेष्ठ रत्न और सोना सुंदर वस्त्र व्यजन छत्र करके शोभित वह मनुष्य शोभाको प्राप्त होता है जो सूर्यके शिरके नक्षत्रमें पैदा होय ॥ ३ ॥ और जो सूर्यके मुखके नक्षत्रमें पैदा होय तो वह बालक उत्तम भोजन शय्या और आसनोंका भोग करने वा बोलनेवाला निरंतर प्रसन्न होता है हँसता मुख होता है ॥ ४ ॥ और जो कंधोंके नक्षत्रमें पैदा होय तो वह मनुष्य वंशमें आभूषणके समान बड़े उत्सवोंसहित अग्रणीय प्रतापवाला प्रबल वीर अत्यंत उदार होता है ॥ ५ ॥

त्यक्तस्वदेशः पुरुषो विशेषाद्गर्वोद्धतः शौर्ययुतो नितांतम् ॥
चिंताभिमानमहत्प्रनिष्ठो मार्तंडभं बाहुगतं प्रसूतौ ॥ ६ ॥
वदान्यतासद्गुणवर्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च ॥ सत्यान्वतान्या महितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भं यदि पाणिसंस्थम् ॥७॥ शृगालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालो-

त्तमकीर्तिशाली ॥ शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षस्थले
चेन्नलिनीशभं स्यात् ॥ ८ ॥

जो बालक बाहोंके नक्षत्रोंमें पैदा होय वह मनुष्य अपने देशको विशेष करके त्याग देताहै और बड़ा अभिमानी वीरता सहित और परदेशमें वास कर बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै और जो सूर्यके हाथोंके नक्षत्रमें पैदा होय ॥ ६ ॥ वह बालक व उदार श्रेष्ठ गुणरहित व्यापारमें रत्नोंकी परीक्षा करनेवाला सच और झूटसहित होता है ॥ ७ ॥ और जो बालक सूर्यकी छातीके नक्षत्रोंमें पैदा होय वह मनुष्य राजाके समान अपने कुलमें होता है और श्रेष्ठ शीलवाला विशाल श्रेष्ठ यशवाला शास्त्रमें प्रवीण होता है ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः ॥
धर्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेम्बुजवंधुताराः ॥ ९ ॥
कंदर्पधुर्य्योज्झितसाधुकर्मा सङ्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ॥
चेज्जन्मकाले नलिनीशभं स्याद्गुह्यस्थले सोतुलकीर्तियुक्तः
॥ १० ॥ नानादेशानेकधा संप्रचारः कार्य्योत्साहश्चंचलाने
मगात्रः ॥ धर्मोमर्त्यः सत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुभं
जन्मनि स्यात्॥ ११ ॥कृषिक्रियायां निरतोल्पधर्मःशत्रूज्झितः
सेवनकर्मकर्ता ॥ तारा यदि स्यादरविंदबन्धोः पादारविंदे
च नरस्य सूतौ ॥ १२ ॥

जिसके जन्मकालमें सूर्यके नाभिका नक्षत्र होय वह मनुष्य दयासहित संग्राममें डरपोक कलाओंके समूहमें रचना करनेमें शील जिसका शास्त्रमें प्रवीण धर्ममें वृत्ति निरन्तर उदार होता है ॥ ९ ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके गुह्यस्थलका नक्षत्र होवे वह मनुष्य बड़ा कामी साधुकर्मोंसे रहित श्रेष्ठ गीत और नृत्यमें प्रीति करनेवाला कलाओंका जाननेवाला होता है और बड़े यशवाला होता है ॥ १० ॥ और जिसके जन्मकालमें सूर्यके जानुके नक्षत्र होवें वह मनुष्य अनेक देशमें अनेक तरहका प्रचार करनेवाला कार्यमें उत्साही चंचल दुर्बल देहवाला धूर्ततायुक्त सत्यरहित होता है ॥ ११ ॥ जिसका जन्मकालमें सूर्यके पैरोंका नक्षत्र होय वह मनुष्य खेतीकी क्रियामें कुशल थोडे धर्म करनेवाला शत्रुरहित सेवाका काम करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ ह्रस्वदीर्घाङ्गज्ञानमाह ।

ह्रस्वा मीनवृषाजघटामिथुनधनुःकर्किमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः॥ १॥एभि-
र्लग्नादिगण्यैः शीर्षप्रभृति नृशरीराणि ॥ सदृशानि विजायंते
स्थितगगनचरैश्चैव तुल्यानि ॥ २॥ इदं लग्नतः सकाशात्का-
लपुरुषाकारचक्रं द्रष्टव्यम् ॥

अब ह्रस्व दीर्घ राशि कहते हैं मीन, वृष, मेष, कुंभ, ये राशि छोटी हैं और मिथुन, धन, कर्क, मकर ये सब सम अर्थात् न छोटी हैं न बडी हैं और वृश्चिक, कन्या, सिंह, तुला ये राशि बडी हैं ॥ १ ॥ ये राशि लग्नसे लेकर शिरको आदि लेकर मनुष्यके शरीरके अंगोंको छोटा बडा समान जानना चाहिये ॥ २ ॥ ये लग्नके सकाशसे लेकर काल पुरुषका शरीरका आकार चक्रमें छोटा बड़ा जानलेना चाहिये ॥

अथ द्वादशभावानां फलानि ।

भित्त्वाद्वादशधा विधाय विलसच्चक्रं च तत्र न्यसेत् लग्ना-
द्द्वादश राशयोतिविशदा वामाङ्गमार्गक्रमात्॥अङ्क्या तत्र न-
भश्चरा स्फुटतरा राशौ च यत्र स्थितास्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधु
सुधिया वाच्यं हि होरागमात् ॥ १ ॥

पहिले बारह स्थान बनावे सो चक्र करके न्यास करे फिर लग्नसे लेकर बारहों राशियोंको बायें अंगसे क्रम करके अंकस्थापित कर उन राशिके अंकोंमें ग्रह स्थापित करे उसको जन्मकुण्डली कहते हैं उससे अच्छा बुरा फल ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले विचार करैं ॥ १ ॥

अथ तनुभावे किं विचारणीयम् ।

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ॥
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् २॥

अब तनुभावका विचार कहते हैं सो तनुभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये लग्नसे रूप और वर्णका निर्णय देहके चिह्न अवस्थाका प्रमाण सुख और दुःख साहस ये सब लग्नसे विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

अथ तनुभावविचारः ।

विलोकिते मंगलगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ॥
[illegible] ॥ ३ ॥

दीर्घायुर्योगः ३

श. मं. बु. शु. सू. चं. बृ.

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण ग्रह लग्नको देखते होंयतो वह मनुष्य हास्यविलास युक्त और बलवान् होता है राजाके कुलमें पैदा होय बडी उमरवाला भयरहित शत्रुओंके कुलको नाश करता है ॥ ३ ॥

राजयोगः ४

बु. बृ. शु.

दरिद्रयोगः ४

सू. मं. श.

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वंति जातं नृपतिं विनीतम्॥पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितांतं बहुभक्षकं च ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन शुभग्रह लग्नमें बैठे होंय तो वह मनुष्य नम्रतायुक्त राजा होता है और जो तीन पापग्रह लग्नमें बैठे होंयतो वह मनुष्य दुःख दरिद्र शोककरके सहित निरंतर भोजन करनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

[illegible]योगः ५

मं. सू. शु. बु. बृ.

लग्नाद्यूनषडष्टकेऽपि च शुभ[illegible]क्षितो मंत्री दण्डपतिः क्षि[illegible] बहूनां पतिः ॥ दीर्घायुर्ग[illegible] गतभयः सौंदर्यसख्यान्वितः स[illegible]वनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा [illegible]

जो जन्म लग्नसे सातवें, छटे, आ[illegible] बैठे होंय और पापग्रहोंकरके नतो युक्त न दृष्ट होंय तो वह मनुष्य राजाका मं[illegible] मालिक धरतीका स्वामी बहुत स्त्रियोंका पति बडी उमरवाला रोगरहित भयहीन सुंदरता और मित्रता सहित [illegible] हमेशा प्रसन्न होता है यह यवनाचार्यने कहा है ॥ ५ ॥

अथार्कादिग्रहाणांतु गुणवर्णविनिर्णयः ॥
आकारोपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसंमतः ॥ ६ ॥

अब मुनिमतानुसार सूर्यादि ग्रहोंके गुण वर्णका निर्णय और शरीरके आकार कहते हैं॥ ६॥

अथ सूर्यस्वरूपम् ।

शूरो गभीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुंतलश्च ॥
सुवृत्तगात्रो मधुपिंगनेत्रो मित्रो हि पित्तास्थ्यधिको न तुंगः ७॥

अब सूर्यका स्वरूप कहते हैं शूर, वीर, गभीर, चतुर, श्रेष्ठ रूप श्याम, लालवर्ण, थोडे बाल सुडौल शरीर सहतके समान पीले नेत्र पित्तप्रकृति अस्थिमें सार न बहुत लंबे न बहुत छोटे ऐसा सूर्यका स्वरूप है ॥ ७ ॥

अथ चंद्रस्वरूपम् ।

सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुञ्चितकेशकृष्णः ॥
कफानिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोतिगौरः ॥ ८ ॥

अब चंद्रमाका स्वरूप कहते हैं श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला श्रेष्ठ बुद्धिवाला रुधिर अधिक घूंघरारे काले बाल कफ वायुके प्रकृति कमलके समान नेत्र शोभायमान अत्यंत गौर होता है८

अथ भौमस्वरूपम् ।

मज्जासारो रक्तगौरोत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ॥
चंडः पिंगाक्षो युवा खर्वगर्वः खर्वश्चोर्वीसूनुरग्निप्रभः स्यात् ॥९॥

अब मंगलका स्वरूप कहते हैं मेदामें सार लाल गौरवर्ण अत्यंत उदार हिंसा करनेवाला शूरवीर पित्तप्रकृति क्रोधी प्रचंड पीले नेत्र जवान बडा अभिमानी अग्निके समान कांतिवाला ऐसा मंगल होता है ॥ ९ ॥

अथ बुधस्वरूपम् ।

श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक्त्रिदोषी ॥
रजोधिको मध्यमरूपधृक्स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥ १० ॥

अब बुधका स्वरूप कहते हैं, काले बाल अनेक कलाओंकी विधि जाननेवाला हास्य करनेवाला प्रिय वाणी त्रिदोषयुक्त रजोगुण अधिक मध्यम रूप लाल नेत्र होता है ॥ १० ॥

अथ गुरुस्वरूपम् ।

दीर्घाकारश्चाकचामीकराभः सम्यक्सारः सुस्वरोदारबुद्धिः ॥
स्थूलः पिंगाक्षः कफी चातिमांसः प्राज्ञैः सुज्ञैः कीर्तितो जीवसंज्ञः ११

अब बृहस्पतिका स्वरूप कहते हैं, छोटा आकार सुंदर सोनेके समान कांतिवाले मज्जामें सार श्रेष्ठ शब्द उदार बुद्धि चतुर पीले नेत्र कफप्रकृति मोटी देह बुद्धिवान् होता है ॥ ११ ॥

अथ भृगुस्वरूपम्।

सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा कुवलयदलनेत्रो वक्र-
नीलालकश्च॥ सुसरलभुजशाली राजसश्चातिकामी मदयुत-
गजगामी भार्गवः शुक्रसारः॥ १२॥

अब शुक्रका स्वरूप कहते हैं, मेघकी समान नीलवर्ण कफयुक्त वातप्रकृति कमलसे नेत्र टेढे नीले बाल सीधी बाहों राजसी प्रकृति अत्यंत कामी अभिमानसहित हाथीकेसी चाल चल-नेवाला वीर्यमें सार होता है ॥ १२ ॥

अथ शनिस्वरूपम्।

श्यामलोतिमलिनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः॥
स्थूलदंतनखपिंगलनेत्रे युक्शनिश्च [illegible]तानिलकोपैः ॥ १३ ॥

अब शनैश्चरका स्वरूप कहते हैं, काला वर्ण मलिन स्वरूप रोमों सहित आलस्ययुक्त जटाओंको धारण किये दुर्बल देह बडे मोटे दांत मोटे नख पीले नेत्र दुष्टतासहित वातविकार-वाला होता है ॥ १३ ॥

अथ शरीराकारादिज्ञानम्।

लग्नस्य नंदांशपतेर्हि मूर्त्या मूर्तिः समाना बलशालिनो वा॥
स्यादिंदुनंदांशपतेस्तु वर्णः परं विधार्याः कुलजातिदेशाः॥१४॥

अब शरीराकारादि वर्णन करते हैं, लग्नमें जिस नवांशका उदय होय उस नवांशनाथके समान मनुष्यका स्वरूप कहना चाहिये अथवा लग्नेश बलवान् होय उसके समान मूर्ति कहना चाहिये और चंद्रमा जिस नवांशमें बैठा होय उसके स्वामीके समान वर्ण कहना चाहिये और कुल, जाति, देश, विचार कर फल कहना चाहिये यथा काश्मीरदेशमें तथा विलायतमें सब गोरही पैदा होते हैं तो उस देशमें सबको श्याम मत कहना और जातिके अनुसार विचार करना जैसे नागरजाति खत्री जातिके लोग बहुधा गौर होते हैं जैसे भील किरात कोलजातिके लोग काले होते हैं उन लोगोंको कालाही कहना चाहिये ॥ १४ ॥

अथ अंगन्यास।

सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ च रजोज्ञशुक्रौ॥
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्यो गुणस्तस्य खगस्य नूनम्॥१५

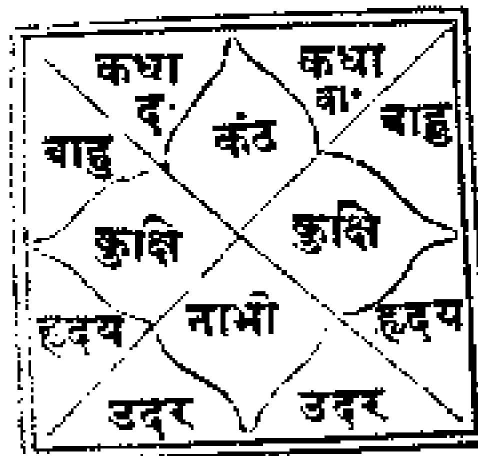
शिरोक्षिणी कर्णनसा कपालौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृकाणे ॥
कंठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये ॥१६॥
बस्तिस्ततो लिंगगुदे तथाण्डावूरू च जानू चरणौ तृतीये ॥
क्रमेण लग्नात्परपूर्वषट्के वामं तथा दक्षिणमंगमत्र ॥ १७ ॥

चन्द्रमा और सूर्य बृहस्पति सत्त्वगुणके स्वामी हैं और शनैश्चर मंगल तमोगुणके स्वामी हैं बुध शुक्र रजोगुणके स्वामी होते हैं सूर्य जिस २ त्रिंशांशमें बैठा होय उस उस त्रिंशांशका स्वामी जो ग्रह होय उसीके गुणकी अधिकता मनुष्यमें कहनी ॥ १५ ॥ शरीरके तीन भाग कहना जो उसमें पहिले द्रेष्काणका उदय होय शिर, आँख, कान, नासिका, गाल, ठोढी, मुखपर्यंत बारहों अंगोंका एकभाग जानना चाहिये. द्वितीय द्रेष्काणका उदय होय तो कंठ कंधा, बाहु, पार्श्व, वक्षस्थल, पेट. नाभी यह द्वितीय भाग हैं और जो तीसरे द्रेष्काणका उदय होय ॥ १६ ॥ तो पेडू, लिंग, गुदा, ऊरू, जांघे, चरण दोनों तृतीय भाग हैं वह क्रम करके छः छः अंगोंके भाग [illegible] दहिने अंग चक्रमें कल्पना करना चाहिये ॥ १७ ॥

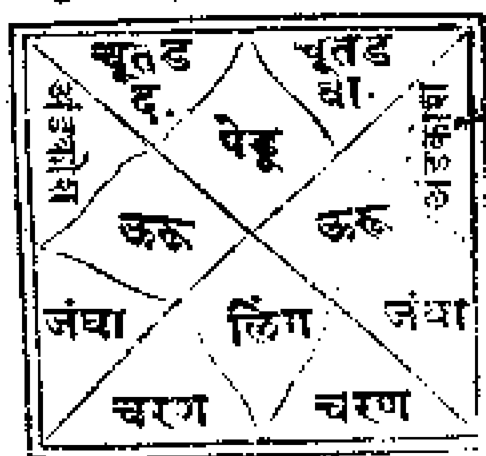
प्रथमद्रेष्काणचक्रम् ।



द्वितीयद्रेष्काणचक्रम् ।



तृतीयद्रेष्काणचक्रम् ।



अथ व्रणमशकादिज्ञानम् ।

मत्स्यं तिलं लक्ष्म बलानुसारं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः॥
स्वांशस्वभागस्थिरगाश्च लक्ष्म युक्तेक्षिताः सौम्यनभश्चरैर्द्रैः १८॥

मस्सा, तिल, लहसन, ग्रहोंके बलके समान कहना चाहिये जो शुभग्रह होय तो पूर्वोक्त चिह्न कहना चाहिये और जो पापग्रह जिस अंगमें बलवान् होय तो व्रण कहना चाहिये जो ग्रह अपने नवांश वा अपने द्रेष्काणमें स्थिरराशिमें होय तो पूर्वोक्त चिह्न स्थिर कहना चाहिये जो शुभ ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट अंग होय उसमें मस्सा, तिल, लहसन कहना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ व्रणकारणमाह ।

स्वैर्भंगः काष्ठचतुष्पदोत्थं शृंगयाम्बुचारिप्रभवः शशाङ्कात् ॥
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चान्द्रेर्भौमः शनेश्चापि मरुद्दषद्भ्याम्॥१९॥

जो पूर्वोक्त व्रणकारक सूर्य होय तो काष्ठसे और चौपायों करके कहना चाहिये, और चंद्रमा व्रणादिकारक होय तो शींगके मारनेसे वा जलचर जीवके काटनेसे चिह्न कहना चाहिये, और मंगल करके विष अग्नि अस्त्रकृत चिह्न कहना चाहिये और बुध, मंगल, शनैश्चर करके मनुष्यकृत वा पत्थरके लगनेसे चिह्न कहना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ व्रणनिश्चयज्ञानम्।

कुर्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः ॥
ग्रहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्गे खलु राशितुल्यः॥२०॥

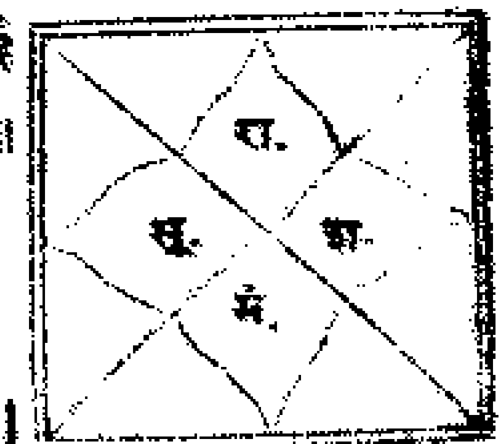
जो पापग्रह छठे बैठे होयं तो व्रणका चिह्न करते हैं और शुभग्रह छठे बैठे होयं तो लहसन वा तिल करते हैं अथवा छठे पापग्रह बैठे होंय उनको शुभग्रह देखते होंय तोभी पूर्वोक्त फल कहना यानी लहसन वा तिल कहना और जिस अंगमें तीन ग्रह बुध करके सहित बैठे होंय तो जरूरही उस अंगमें राशिके तुल्य संख्यक व्रणके चिह्न कहना चाहिये ॥२०॥

स्वबाहुवीर्येण भाग्यवानूयोगः



मेषे शशांके कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्थश्च भृगुर्मृगस्थः ॥ तातस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः ॥ २१ ॥

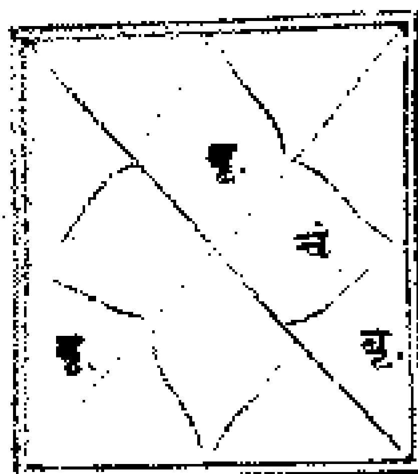
जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा और कुंभराशिमें शनैश्चर और धनराशिमें सूर्य और मकरराशिमें शुक्र बैठा होय तो वह मनुष्य पिताके धनको कभी नहीं भोगताहै अपनी भुजाके बल करके श्रेष्ठताको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥



चतुर्षु केन्द्रेषु भवंति पापा वित्तस्थिता-श्चापि च पापखेटाः ॥ नरो दरिद्रोऽतितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके चारों केंद्रमें पापग्रह बैठे होंय और धनभावमें भी पापग्रह बैठे होंय तो वह मनुष्य दरिद्री होता है और अपने कुलसे मनुष्योंके वास्ते भयंकर होता है ॥ २२ ॥

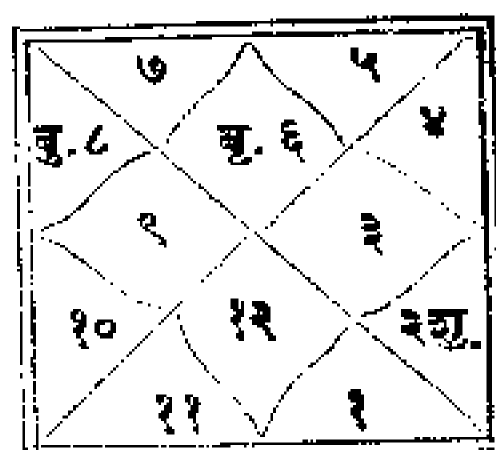
राजसी बुद्धियोग: २३



सुतास्थितो वा यदि मूर्तिवर्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः ॥ नरस्तपस्वी विजितेंद्रियश्च स्याद्राजसो बुद्धिविराजमानः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें वा लग्नमें बृहस्पति बैठा होय और दशमें चंद्रमा बैठा होय तो वह मनुष्य तपस्वी इंद्रियोंका जीतनेवाला राजसी बुद्धि करके शोभायमान होता है ॥ २३ ॥

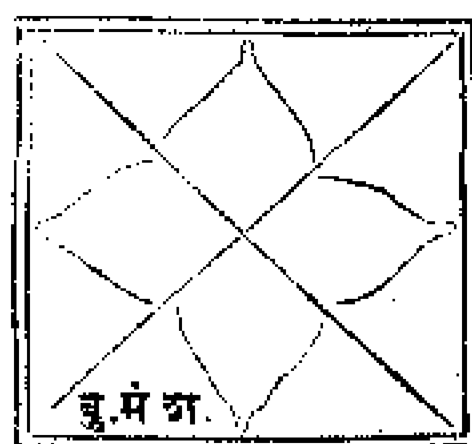
धनवान योग: २४



कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुलश्रेष्ठताम् ॥ नूनं याति नरो विचारचतुरोप्यौदार्यमानादरो नित्यानंदभरो गुणैर्वरतरो निष्ठापरो वित्तवान् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या या तुलाराशिमें बृहस्पति मेष वा वृषराशिमें शुक्र और बुध वृश्चिक राशिमें बैठे होंय और शुभग्रहोंकरके दृष्ट होंय तो कुलकी श्रेष्ठताको प्राप्त होता है वह मनुष्य विचारमें चतुर संसारमें उदार मानको प्राप्त हमेशा आनंदसहित गुणोंमें श्रेष्ठ निष्ठावान् धनवान् होता है ॥ २४ ॥

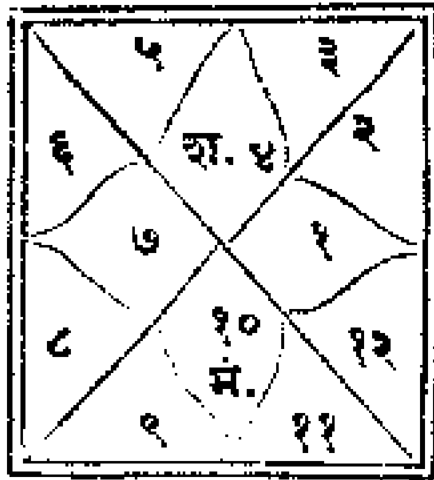
चौर्य योग: २५



षष्ठे ससौरी भवने बुधारौ नरो भवेच्चौर्यपरो नितांतम् ॥ स्वकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात्पराङ्घ्रिपाणीन्कुमुणी छिनत्ति ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्चर करके सहित बुध मंगल बैठे होंय तो वह मनुष्य चोरीमें तत्पर होता है अपने कर्मकी सामर्थ्यमें हीन होता है पराये हाथ पैर काटनेवाला कुकर्मी होता है ॥ २५ ॥

चौर्यप्रसंग योगः२६



प्रसूतिकाले किल यस्य जंतोः कर्केऽर्कजश्चेन्मकरे,महीजः॥चौर्यप्रसंगोद्भवचंडदण्डाच्छाखादिखण्डानि भवंति नूनम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें शनैश्चर और मकर राशिमें मंगल बैठा होय तो वह मनुष्य चोरोंके संगसे पैदा हुआ जो बड़ा भारी दंड तिस करके हाथ पैरके खंड होते हैं ॥ २६ ॥

वज्रेण मृत्युयोगः ।

वज्रेण मृत्युयोगः २७

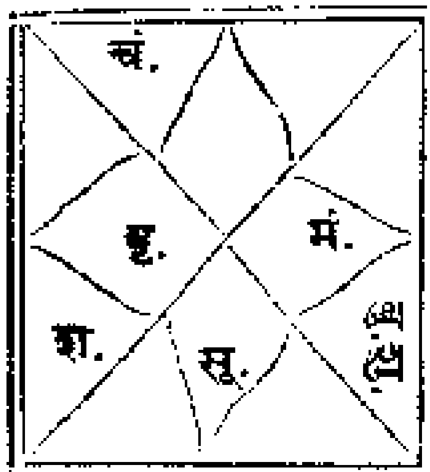


कुंभे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः ॥ कुचेष्टितः स्यात्पुरुषो नितांतं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभ, मीन, मिथुन, धनुराशिमें सब पापग्रह बैठे होंय तो वह मनुष्य बुरी चेष्टावाला निरंतर बिजलीके पातसे मरता है ॥ २७ ॥

अनेकतीर्थकृद्योगः ।

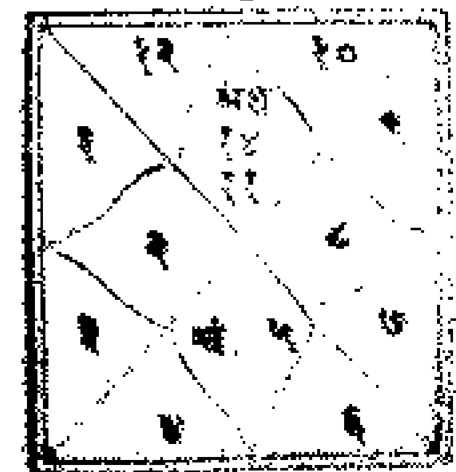
अथ अनेक तीर्थकृद्योगः २८



यस्य प्रसूतौ खलु नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च ॥ तीर्थान्यनेकानि भवंति तस्य नरस्य सम्यङ्मतिसंयुतश्च ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुभग्रह बैठे होंय और उनको शुभग्रह देखते होंय तो वह मनुष्य अनेक तीर्थोंका करनेवाला श्रेष्ठ बुद्धि युक्त होता है ॥ २८ ॥

नीच कर्मकृद्योगः २९

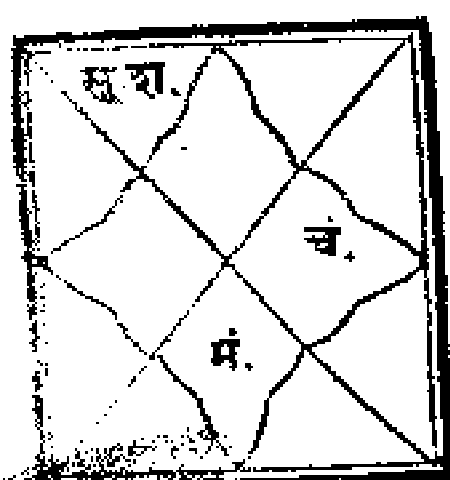


अथ नीचकर्मकृद्योगः ।

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केंद्रस्थचंद्रेण निरीक्षितश्च ॥ शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधके द्रेष्काणमें लग्नका उदय होयं और केन्द्रस्थ १ । ४ । ७ । १० चन्द्रमा करके दृष्ट होय तौ वह मनुष्य चाहे उत्तमवंशमें पैदा होय तो नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

हीनदेहयोगः ३०

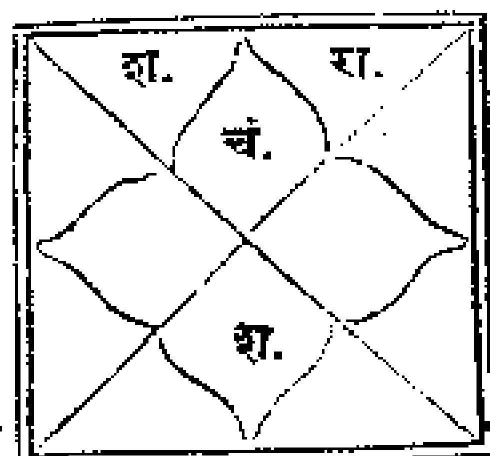


अथ हीनदेहयोगः ।

भानौ द्वितीये भवने शनिश्चेन्निशीथिनीशो गगनाश्रितश्च ॥ भूनंदने वै मदने तदानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनैश्चर दूसरे बैठे होंय और चन्द्रमा दशवें मंगल सातवें बैठा होय तो वह मनुष्य हीनदेह होता है ॥ ३० ॥

श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः ३१

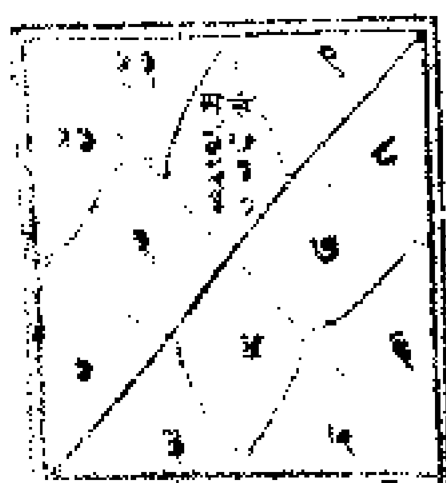


अथ श्वासक्षयप्लीहगुल्मरोगयोगः ।

पापांतराले च भवेत्कलावांस्तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः ॥ कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयप्लीहकगुल्मरोगैः ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा पापग्रहोंके बीचमें बैठा होय और शनैश्चर सातवें बैठा होय तो उस मनुष्यकी देह श्वास, क्षयी ताप, तिल्ली, गुल्मरोगसे विकल होती है ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीविहीनयोगः ३२



अथ लक्ष्मीविहीनयोगः ।

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे ॥ एकत्र संस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा होय और सूर्य चन्द्रमाके नवांशमें एक राशिमें दोनों बैठे होंय तो वह मनुष्य धनहीन होता है ॥ ३२ ॥

तेजोहीननेत्रयोगः ३३

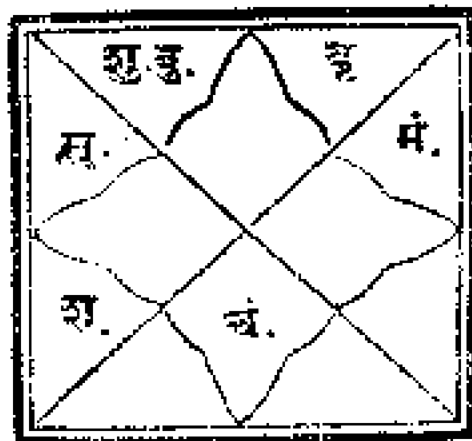


अथ तेजोहीननेत्रयोगः।

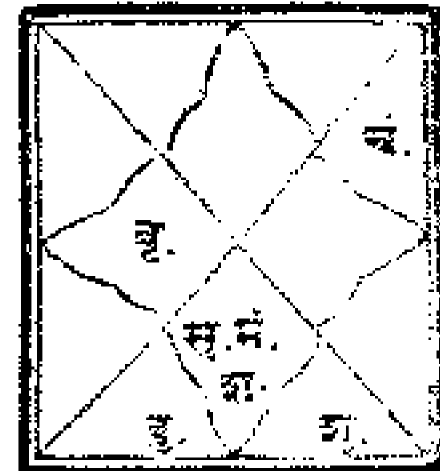
व्ययेरिभावे निधने धने च निशाकराराकैशनैश्चराः स्युः ॥ बलान्वितास्तेत्वनिलाधिकत्वात्तेजोविहीने नयने प्रकुर्युः ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहे छठे अष्टम द्वितीय स्थानोंमें चन्द्रमा सूर्य शनैश्चर बलकर सहित होंय तो वह मनुष्य तेजकरके हीन नेत्रोंवाला वातकी अधिकतासे होता है ॥ ३३ ॥

कर्णनाशयोगः ३४



कर्णनाशयोगः ३४

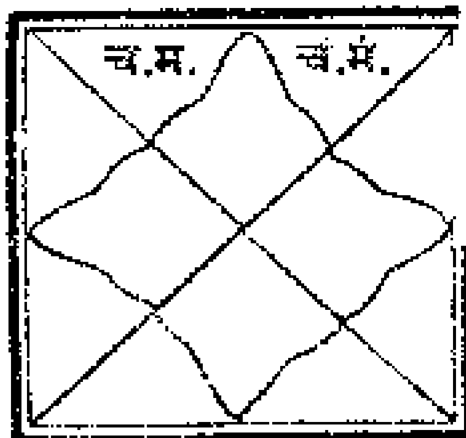


अथ कर्णनाशयोगः।

पापास्त्रिपुत्रायगता भवंति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः ॥ कुर्वंति ते कर्णविनाशनं च जामित्रपाता खलु कर्णघातम् ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह तीसरे पंचम ग्यारहवें होंय व उनको शुभग्रह नहीं देखते होंय तो उसके कानोंका नाश कहना चाहिये और जो सप्तम पापग्रह बैठे होंय तो भी निश्चय कानोंका नाश होता है ॥ ३४ ॥

नेत्रदोषयोगः ३५



नेत्रदोषयोगः ३५



अथ नेत्रदोषयोगः।

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रो वक्रोथवा कर्णरुजं करोति ॥ नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनींद्रैः ॥ ३५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे बारहवें शुक्र वा मंगल बैठा होय तो उसके कानमें रोग होता है और जो चन्द्रमा दूसरे वा बारहवें बैठा होय तो नेत्र दोष होता है ॥ ३५ ॥

एते हि योगाः कथिता मुनींद्रैः सान्द्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ॥
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्मला यस्य मतिस्तु तेन ३६

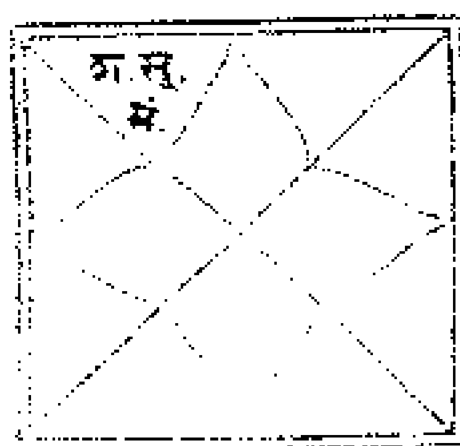
जो इतने योग मुनीश्वरों करके कहेगये हैं जो सम्पूर्ण ग्रहोंके बल करके कहाहुआ फल इन ग्रहोंकी दशामें श्रेष्ठ बुद्धिवान् पुरुष कहे ॥ ३६ ॥

अथ धनभावविचारमाह तत्र धनभवनात्किं किं चिंतनीयम् ।

स्वर्णादिधातुक्रयविक्रयश्च रत्नादि कोशोपि च संग्रहश्च ॥
एतत्समस्तं परिचिंतनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥ १ ॥

अब धनभावका विचार कहते हैं धनभावसे सुवर्ण आदि धातुओंका क्रय विक्रय रत्न और खजानेका संग्रह करना यह सम्पूर्ण धनभावसे पंडितजन विचार करें ॥ १ ॥

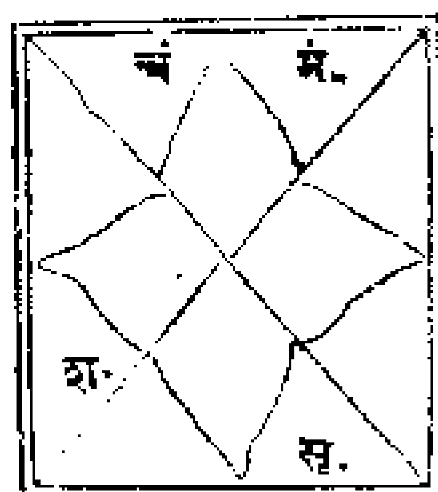
धनहीनयोगः २



अथ धनहीनयोगः ।

भानुभूतनयभानुतनूजै-
श्चेद्धनस्य भवनं युत-
दृष्टम् ॥ जायते च मनु-
जो धनहीनः किं पुनः
कृशशशीक्षितयुक्तम् ॥ २ ॥

धनहीनयोगः २



जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, मंगल और शनैश्चर धनभावमें बैठे होंय वा देखते होंय तो वह मनुष्य धनहीन होता है जो क्षीण चन्द्रमा भी देखता होय अथवा युक्त होय ॥ २ ॥

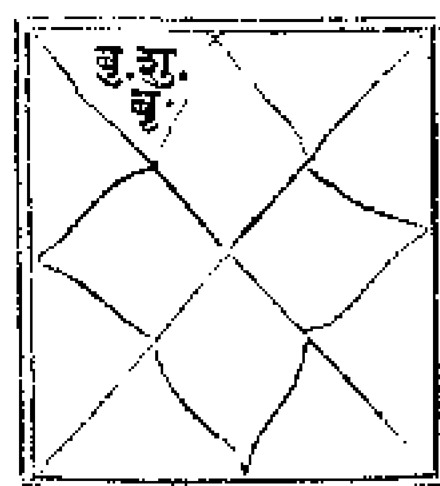
धनवान्योगः ३



धनवान्योगः ।

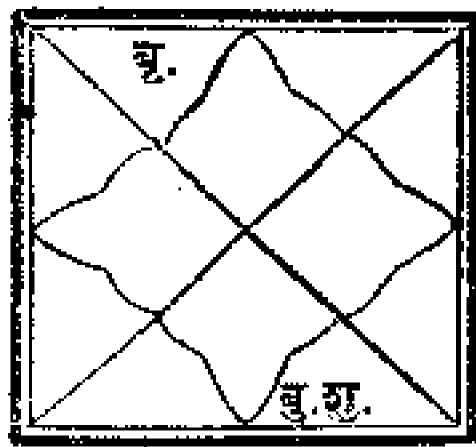
धने दिनेशोतिधनानि
नूनं करोति मन्देन न
चेक्षितश्च ॥ शुभाभि-
धाना धनभावसंस्था
नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ॥ ३ ॥

धनवान्योगः ३

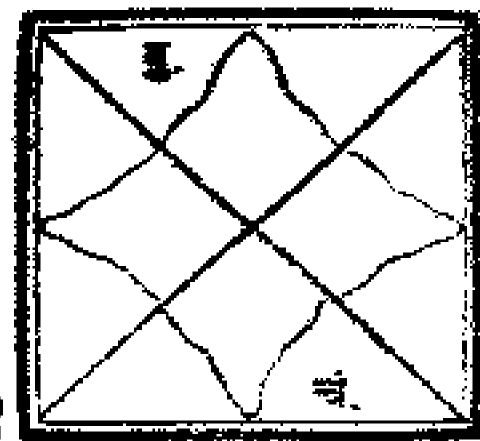


जिस मनुष्यके धनभावमें सूर्य बैठा होय और शनैश्चर देखत होय तो अतिधनवान् होता है और जो धनभावमें शुभग्रह बैठे होय तो अनेकप्रकारका धन प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

धनवानयोगः ४



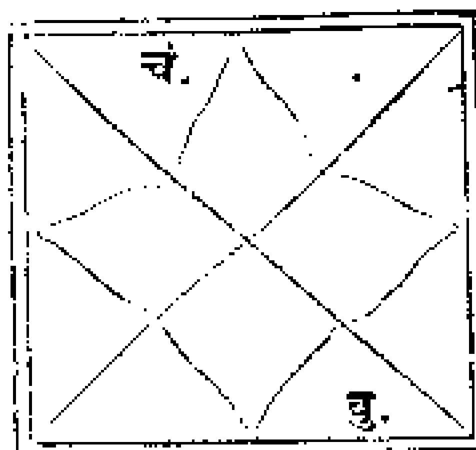
धनहानियोगः ४



गीर्वाणवंद्यो द्रविणोपयातःसौम्येक्षितश्चेद्द्रविणं करोति ॥ सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सूनुर्धनहानिदः स्यात् ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति धनभावमें बैठा होय और शुभग्रह देखते होय तो धनवान् करते हैं और जो धनभावमें बुध बैठा होय और चन्द्रमा देखता होय तो धनकी हानि करता है ॥ ४ ॥

धनप्रतिबन्धकयोगः ५

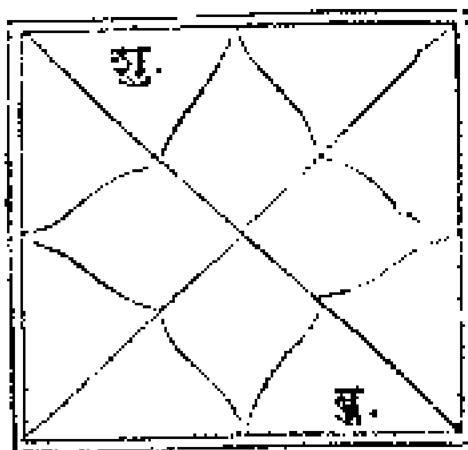


अथ धनप्रतिबन्धकयोगः ।

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशः शशांकोपि धनादिकानाम् ॥ पूर्वार्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबंधनं च ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें क्षीण चन्द्रमा बैठा होय और उसको बुध देखता होय तो पहिलेका इकट्ठा किया हुआ धनादि वस्तुओंका नाश होताहै और नये धनादिकोंका प्रतिबन्धक करता है ॥ ५ ॥

धनप्राप्तियोगः ६



धनप्राप्तियोगः ६



वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति वित्तागमं सोमसुतेन दृष्टः ॥ स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टवित्ताप्तिकरो नराणाम् ६

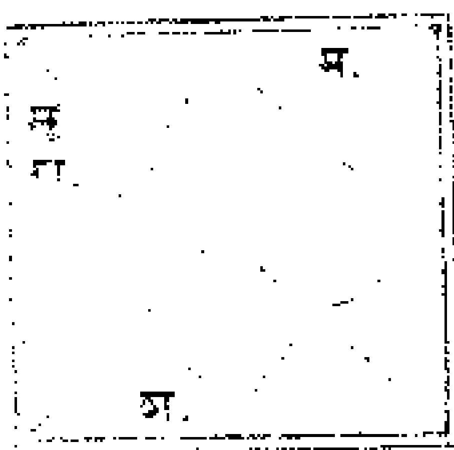
जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठा होय और बुध देखता होय तो धनकी प्राप्ति कहना और जो शुक्रको सब शुभग्रह देखते होय तो बहुत धनकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ सहजभावविचारस्तत्र सहजभावात्किं किं चिंतनीयम् ।

महोदराणामथ किंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च ॥
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्या ॥ १ ॥

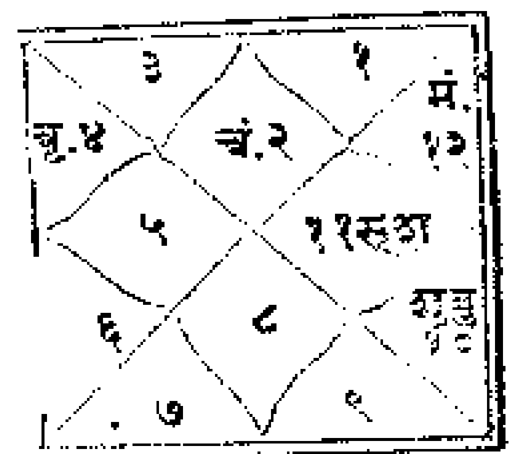
सहज भावसे क्या विचारकरना चाहिये सो कहते हैं सगे भाई और नौकर पराक्रम आजीविकाको ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले नियम करके विचार करें ॥ १ ॥

भ्रातृहीनयोगः २



पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतं प्रविलोकितं च॥भवेदभावः सहजोपलब्धिस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेव ॥ २ ॥

भ्रातृवद्योगः २



जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें पापग्रह बैठे होंय और तीसरे भावको सब पाप ग्रह देखते होंय तो उसके भ्राताओंका अभाव होता है और तीसरे भावमें शुभग्रहकी राशि होय और शुभग्रह देखते होंय तौ भ्रातृवान् होताहै ॥ २ ॥

भ्रातृनाशयोगः । क्षेपकः ॥

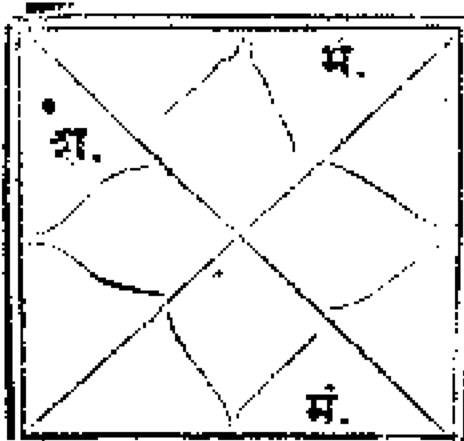
अग्रे जातं रविर्हंति पृष्ठे जातं शनैश्चरः ॥
अग्रजं पृष्ठजं हंति सहजस्थो धरासुतः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके तीसरे सूर्य बैठा होय तौ बड़े भ्राताओंको नाश करता है और जो शनैश्चर तीसरे होय तौ कनिष्ठ भ्राताओंका नाश करता है और मंगल तीसरे बैठा होय तो अगाड़ी पिछाड़ी दोनों तरफके भ्राताओंका नाश करता है ॥ ३ ॥

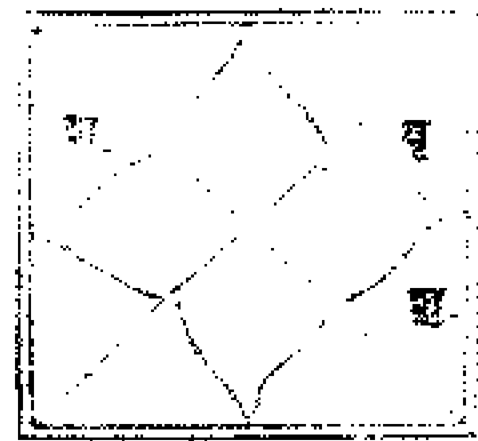
नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिः क्षोणिसुतेन दृष्टः ॥
तावन्मिताःस्युः सहजा भगिन्यस्त्वन्येक्षिता वै परिकल्पनीयाः ४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जितनी संख्याका नवांश उदय होय और चंद्रमा मंगल देखे होंय उतनी संख्याके सहोदर भाई कहना चाहिये जो और ग्रह देखते होंय तौभी कल्पना करना चाहिये ॥ ४ ॥

भ्रातृनाशयोगः ५



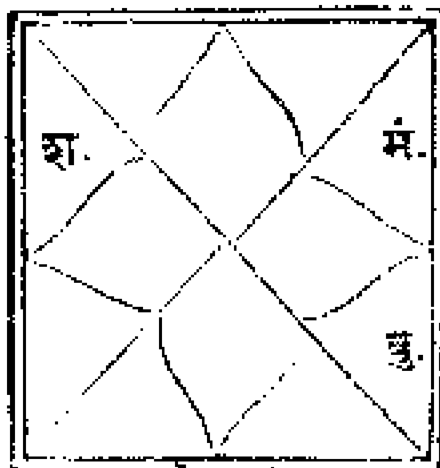
भ्रातृसौख्ययोगः ५



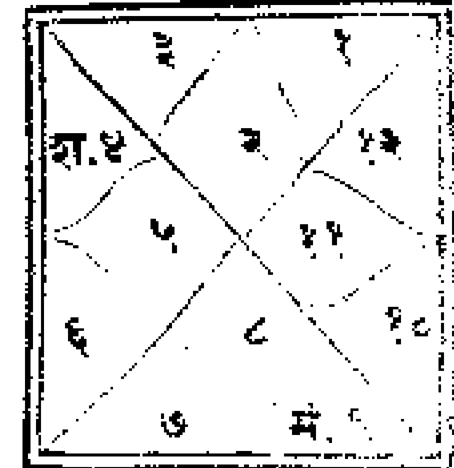
कुजेन दृष्टे रविजेनुजस्थे नश्यंति जाताः सहजाश्च तस्य ॥ दृष्टे च तस्मिन्गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें शनैश्चर बैठा होय और मंगल करके दृष्ट होय तो पैदा हुए भ्राताओंका नाश होता है और जो शुक्रबृहस्पति देखते होय तो भ्राताओंका सौख्य निरंतर होता है ॥ ५ ॥

भ्रातृनाशयोगः ६



भ्रातृणांरोगकारकयोगः ६



सौम्येन भूमीतनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोनुजानाम् ॥ शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर तीसरे बैठा होय और बुध मंगल करके दृष्ट हो तौ भ्राताओंका नाश करता है और चंद्रमाकी राशिमें शनैश्चर तीसरे बैठा होय मंगल करके दृष्ट होय तौ भ्राताओंको रोग करता है ॥ ६ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे संदेह एवानुजजीवितस्य ॥
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समानः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य नवमभावमें बैठा होय सिंहराशिका तौ भाईके जीनेमें संदेह है और जो एक भाई कदाचित दीर्घ आयुको प्राप्त हो तौ वह भ्राता राजाके समान होता है ॥ ७ ॥

चंद्रमा यदि पापानां त्रितयेन प्रदृश्यते ॥
भ्रातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा तीन पापग्रहोंकरके देखा गया होय तो भ्राताओंका नाश कहना जो शुभग्रह करके दृष्ट न होय ॥ ८ ॥

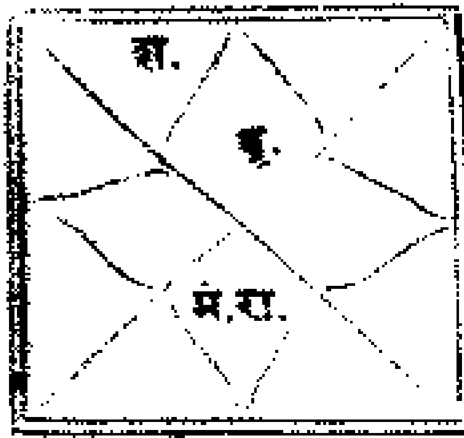
अथ सुहृद्भावविचारस्तत्रादौ चतुर्थभावात् किं किं विचारणीयम् ।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे ॥
दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रसूतिर्नियमेन तेषाम् ॥ १ ॥

अथ चतुर्थभावसे क्या विचार करना सो कहते हैं मित्र और गृह ग्राम चौपाये और खेतीका उद्यम ये चतुर्थ भावसे विचारकरना चतुर्थभावको शुभग्रह देखते होयँ वा शुभग्रहोंका योग होय तो पूर्वोक्त पदार्थोंकी अधिकता होती है ॥ १ ॥

अथ परिवारक्षयकारकयोगः ।

परिवारक्षयकारकयोगः २



लग्ने चैव यदा जीवो धने शौरिश्च संस्थितः ॥ सप्तमे भवनें पापाः परिवारक्षयंकराः ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति धनभावमें शनैश्चर बैठा होय और सातवें पापग्रह बैठे होंय तौ वह परिवारका नाश करता है ॥ २ ॥

परिवारनाशयोगः ३



माननाशयोगः ३

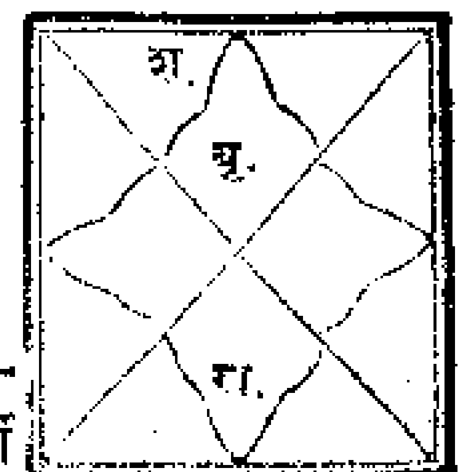
पापैस्त्रिभिश्चंद्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशःशुभदृष्टिहीने ॥ व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वंति ते वै परिवारनाशम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन पापग्रहोंकरके चन्द्रमा दृष्ट होय तौ मानका नाश कहना चाहिये जो शुभग्रह देखते होंय। एको योगः। जो बारहे सातवे लग्नके विषे पाप ग्रह बैठे होंय तो परिवार नाश करते हैं ॥ ३ ॥

अथ मातृहायोगः ।

मातृहायोगः ४

शनिर्धने संजनने यदि स्याल्लग्ने विलग्ने सुरराजमंत्री ॥ सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जंतोर्जननी न जीवेत ॥४॥



जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर दूसरे और लग्नमें बृहस्पति सातवें राहु बैठा होय तौ उस मनुष्यकी माता नहीं जीती है ॥ ४ ॥

अथ सुतभावविचारः। अथ सुतभावे किं किं चिंतनीयम्।

बुद्धिप्रबंधात्मजमंत्रविद्या विनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थाः॥
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिंतनीयाः॥ १॥

पंचमभावसे क्या क्या विचारकरना चाहिये सो कहतेहैं बुद्धिका प्रबंध, पुत्र, मंत्र, विद्या नम्रता, गर्भस्थिति और नीति ये सब बातें मनुष्योंके जन्मकालमें पंचमभावसे ज्योतिषी लोग विचार करैं॥ १॥

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथः प्रथमः सुतः स्यात्॥
तुर्यस्थितेऽस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम्॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नेश लग्न वा द्वितीय वा तृतीयस्थानमें बैठा होय तो पहिले पुत्र पैदा होता है जो लग्नेश चतुर्थ बैठा होय तो पहिले कन्या पीछे पुत्र पैदा होय इसीतर-हसे पुत्र कन्या कन्या पुत्रोंका विचार करना चाहिये॥ २॥

सुताभिधानं भवनं शुभानां योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य॥
संतानयोगं प्रवदेन्मनीषी विपर्ययत्वे हि विपर्ययः स्यात्॥ ३॥

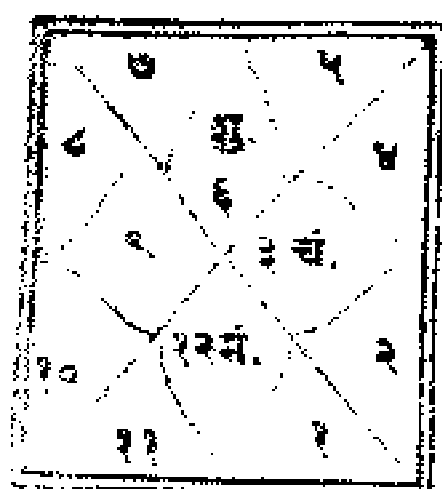
जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचभावमें शुभग्रहोंकी राशि होय उसमें शुभग्रह बैठे होंय और शुभग्रह देखते होंय तौ संतानवान् करता है जो पंचमभाव पापग्रहोंकरके युक्त और दृष्ट होय तौ संतानहीन कहना चाहिये॥ ३॥

संतानभावो निजनाथदृष्टः संतानलब्धिं शुभदृष्टियुक्तः॥
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव॥ ४॥

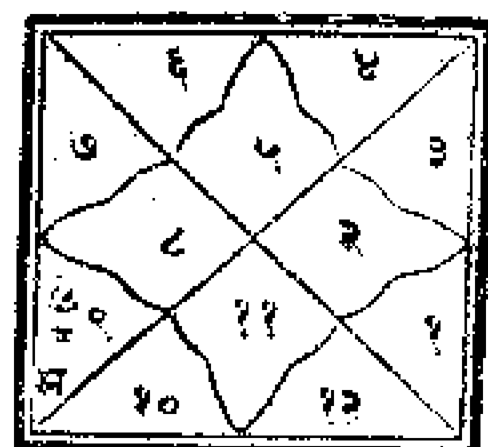
जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभाव पंचमेश करके दृष्ट होय और शुभग्रहोंकरके दृष्ट होय संतानकी प्राप्ति कहना चाहिये और पंचमभाव पापग्रहों करके दृष्ट वा युक्त हो और अपने स्वामी करकेभी दृष्ट होय तो संतानहीन कहना चाहिये॥ ४॥

लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्नेशो पत्यमग्रिमम्॥
तुर्ये जन्म द्वितीयस्य पुरः पुत्र्यादिजन्म च॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न द्वितीय, तृतीय भावमें लग्नेश बैठा होय तो पहिले पुत्र पीछे कन्या पैदा होय लग्नेश चतुर्थमें होयतो पहिले कन्या पीछे पुत्र पैदा होय १। ३। ३ ।५।७।९।११ भावस्थित लग्नेस होय तो पहिले पुत्र पीछे कन्या और चतुर्थ ६।८।१०।१२ यह भावोंमें लग्नेश बैठा होय तो पहिले कन्या पीछे पुत्र पैदा होता है॥ ५॥



द्विदेहसंस्थाभृगुभौमचंद्राः संतानमादौ जनयंति नूनम् ॥ एते पुनर्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितं महद्भिः ॥ ६ ॥



जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र, मंगल, चंद्रमा, मिथुन, कन्या, मीन राशिमें बैठे होंय तो पहिले पुत्रसंतानको पैदा करें और पूर्वोक्त ग्रह धनमें बैठे होंय तो आदि अंतमें संतान नहीं होती है ॥ ६ ॥

संतानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ॥ स्यात्संततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञैः नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें जितने ग्रहोंकी दृष्टि होय उतनी संख्याकी संतान कहना चाहिये जो पुरुष संज्ञक ग्रह देखते होंय तो उतने पुत्र कहना और स्त्रीसंज्ञक ग्रह देखते होंय तो उतनी कन्या कहनी चाहियें ॥ ७ ॥

संतानभावांकसमानसंख्या स्यात्संततिर्वेति वदंति केचित् ॥ नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्टया शुभं वा शुभमर्भकानाम्॥८॥

पंचमभावमें जितनी संख्याकी राशि होय उतने प्रमाण करके संतान कहना चाहिये ये किसी किसीका मत है और जो नीच उच्च मित्रक्षेत्रीय स्वक्षेत्रीय ग्रह बैठे होंय व उनको शुभग्रह देखते होंय तो शुभसंतान कहनी चाहिये ॥ ८ ॥

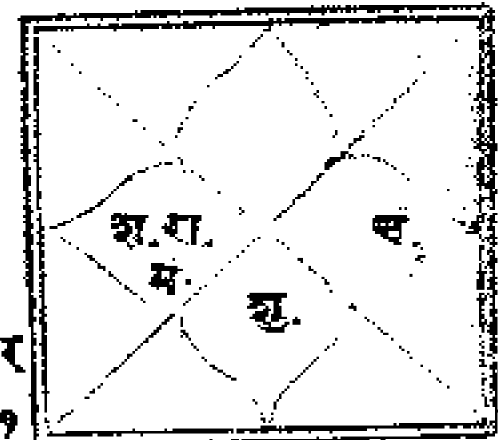
नवांशतुल्या प्रभवात्र संख्या दृष्टया शुभानां द्विगुणावगम्या ॥ क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोत्र ॥ ९ ॥

पंचमभावमें जितनी संख्याका नवांश होय उतनी संख्याकी संतान कहना चाहिये उस नवांशको पापग्रह देखते होंय तो संतानको द्विगुणा कहना चाहिये उस नवांशको पापग्रह देखते होंय वा युक्त होंय तो दुःख करके संतान कहना चाहिये और जो शुभ पाप दोनोंतरहके ग्रह बैठे होंय तो मिश्रितफल कहना चाहिये ॥ ९ ॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः ॥ सौम्यग्रहालोकनवर्जितश्च संतानहीनो मनुजस्तदानीम् ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें पापग्रहोंकी राशि होय और पापग्रहयुक्त होय और शुभग्रह नहीं देखते होंय तो वह मनुष्य संतानहीन होता है ॥ १० ॥

संतानहीनयोग: ११



कविः कलत्रे दशमे मृगांकः पातालयाताश्च खला भवंति ॥ प्रसूतिकाले यदि मानवं ते संतानहीनं जनयंति नूनम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें और दशवें चंद्रमा और चतुर्थ भावमें पापग्रह बैठे होंय तो वह मनुष्य संतानहीन होता है॥ ११

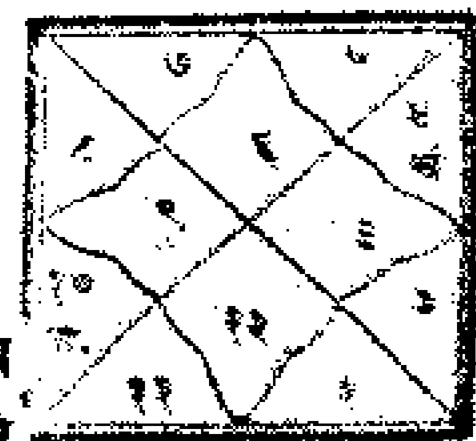
सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम् ॥ दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंशे शिशुसंमतिःस्यात् १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्रका नवांश होय और शुक्र देखता होय तो बहुत संतान होती हैं और चंद्रमाका नवांश होय तो भी विशेष संतान कहना चाहिये और पंचम भावका स्वामी जितनी संख्याके नवांशमें होय उतनी संख्याके दासीजातपुत्र कहना चाहिये ॥ १२ ॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचंद्रमोभ्याम् ॥ भवंति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र वा चंद्रमाका वर्ग होय और शुक्र वा चंद्रमा करके युक्त वा दृष्ट होय तो समराशिके वर्ग होनेसे कन्यासंतान कहना विषमसंज्ञक राशि होय तो पुत्रसंतान कहना चाहिये ॥ १३ ॥

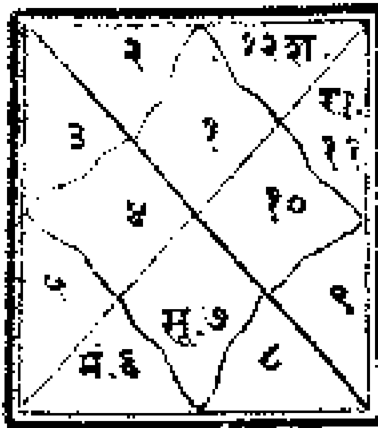
क्रीतपुत्रलाभयोग: १४



मंदस्य राशिः सुतभावसंस्थो मंदेन युक्तः शशिनेक्षितश्च ॥ दत्तप्रजातिः शशिवद्युधेपि क्रीतः सुतस्तस्य नरस्य वाच्यः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर वा कुंभ राशि पंचम होय और शनैश्चर करके युक्त होय उसको चंद्रमा देखता होय तो उस मनुष्यको दत्तकपुत्र प्राप्ति होती है और चंद्रमाके समान बुधयोग करता होयतो उसको मोल लिया पुत्र प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

सुतभंगयोगः १५

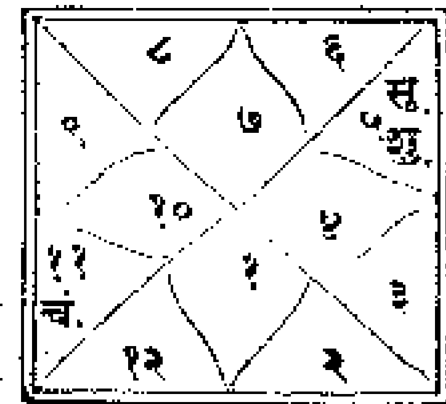


संतानाधिपतेः पंचषष्ठरिःफस्थिते खले ॥ पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभवनका स्वामी जहां बैठा होय वहांसे पंचम छठे बारहें पापग्रह बैठे होंय तो उस मनुष्यके पुत्रका अभाव होता है जो पैदा होय तो जीवे नहीं ॥ १५ ॥

अथ पुनर्भूपुत्रलाभयोगः ।

पुनर्भूपुत्रलाभयोगः



मंदस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेपि च वीक्षितेस्मिन् ॥ दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासंभवसूनुलब्धिः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका वर्ग होय उसमें चंद्रमा बैठा होय और उसको सूर्य और शुक्र देखते होंय तो उस मनुष्यके करी हुई आरतसे पुत्रलाभ होता है ॥ १६ ॥

अथ क्षेत्रजपुत्रलाभयोगः ।

शनेर्गणः सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते यो रविभूमिजाभ्याम् ॥ पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोथ बौधैर्गणोपि गेहे रविजेन दृष्टः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चरका षड्वर्ग होय और बुध देखता होय और सूर्य मंगल ग्रह देखते होंय तो उस मनुष्यके स्त्रीमें अन्य करके पुत्र पैदा होता है और जो पंचमभावमें बुधका षड्वर्ग होय उसको शनैश्चर देखता होय तो भी पूर्वोक्त फल कहना चाहिये ॥ १७ ॥

नवांशकाः पंचमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः ॥ नश्यंति गर्भाः खलु तत्प्रमाणा श्चेद्वीक्षितं नो शुभखेचराणाम् १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो नवांश पंचमभावमें होय और उसको जितने पापग्रह देखते होंय तो उस मनुष्यके उतनेही गर्भ नाशको प्राप्त होते हैं जो शुभग्रह नहीं देखते होंय ॥ १८ ॥

भूनंदनो नंदनभावयातो जातं च जातं तनयं निहंति ॥ दृष्टे यदा मित्रराशिसण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम् ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल पांचवें बैठा होय तो उसके जितने पुत्र पैदा होंय वो सब नाशको प्राप्त होते हैं जो केतु देखता होय और जो शुक्र देखता होय पहिले पैदा हुआ ही पुत्र नाश होता है ॥ १९ ॥

अथ रिपुभावविचारः।

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिंता शंका मातुलानां विचारः ॥
होरापारावारपारं प्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥ १ ॥

छठे भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं दुश्मन और क्रूरकर्म, रोग-चिंता और शंका मामाका विचार करना चाहिये ज्योतिषशास्त्रके पार जानेवाले पंडित विचार करें ॥ १ ॥

दृष्टिर्युतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेरिविनाशनं स्यात् ॥
शुभग्रहाणां प्रतिदृष्टितोत्र शत्रूद्गमोप्यामयसंभवः स्यात् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठाभाव पापग्रहों करके दृष्ट वा युक्त होय तो शत्रुओंका तथा रोगोंका नाश होता है और जो छठाभाव शुभग्रहों करके युक्त वा दृष्ट होय तो शत्रुओंकी उत्पत्ति रोगोंकी प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

अथ जायाभावविचारः।

रणाङ्गने चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम् ॥
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥ १ ॥

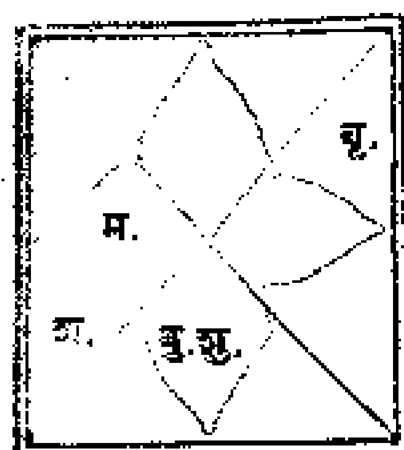
अब सप्तमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये संग्राम, स्त्री, व्यापार यात्राका प्रमाण इन सब बातोंको सातवें भावसे ज्योतिषीलोग विचार करें ॥ १ ॥

स्त्रीलाभयोगः।

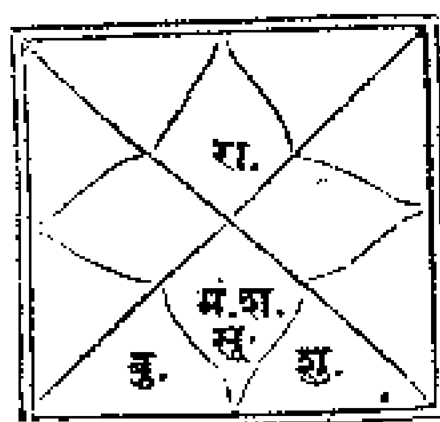
मूर्तौ कलत्रस्य नवांशको वा द्विषड्भावस्त्रिलवः शुभानाम् ॥
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिरादवाप्तिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न और सप्तमभावमें जो शुभग्रहोंका नवांश वा द्वादशांश वा द्रेष्काणका उदय होय तो उस मनुष्यको शीघ्रही स्त्रीका लाभ होता है ॥ २ ॥

स्त्रीप्राप्तियोग: ३



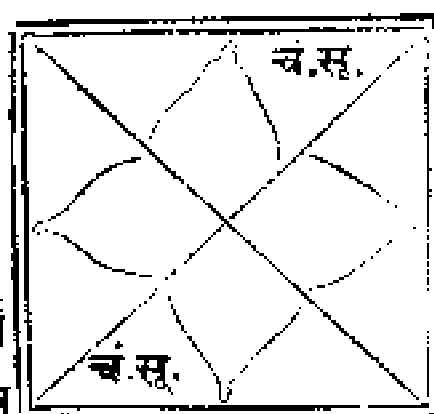
स्त्रीहानियोग:३



सौम्यैर्युतं सौम्यमसौम्यदृष्टं जायागेहं देहिनामङ्गनाप्तिम् ॥ कुर्य्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मिश्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभाव शुभग्रहों करके युक्त होय और शुभग्रह पापग्रहों करके दृष्ट होय तो मनुष्यको स्त्री प्राप्ति होती है और जो सप्तमभाव पापग्रहोंकरके युक्त होय और मिश्रग्रहोंकरके दृष्ट होय तो स्त्रीके प्राप्त होनेके समय स्त्री नहीं प्राप्त होती है ॥ ३ ॥

एकस्त्र्यैकपुत्रयोग: ४



लग्नाद्व्यये वा रिपुमंदिरे वा दिवाकरेंदू भवतस्तदानीम् ॥ स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्य्यापि चैकेति वदंति संतः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे बारहे वा छठे भावमें सूर्य चंद्रमा बैठे होंय तो उस मनुष्यको एकही स्त्री करके एकही पुत्र लाभ होता है ॥ ४ ॥

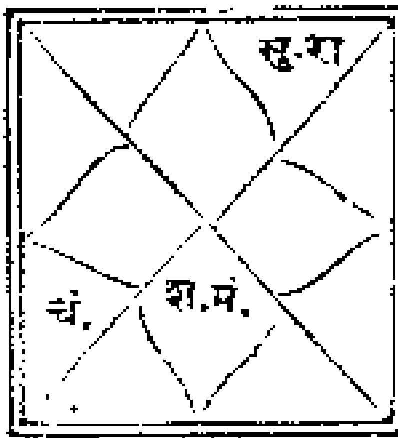
वंध्यापतियोग: ५



गंडांतकालेपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेर्कजाते ॥ वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें गंडांत लग्न होय और शुक्र सातवें बैठा होय और लग्नमें शनैश्वर बैठा होय तो वह मनुष्य बांझस्त्रीका पति होता है जो सप्तमभाव शुभग्रहों करके दृष्ट न होय और सप्तमभावमें पापग्रहोंकी राशि होय ॥ ५ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोगः ६



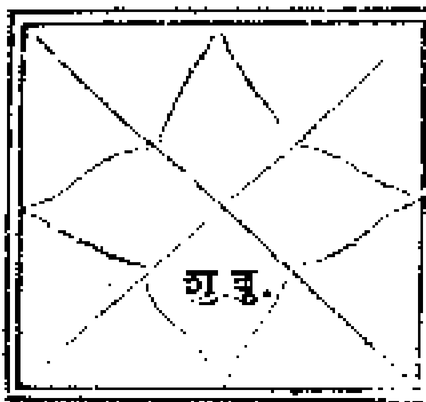
व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु कुद्ध्याल-
यगे हिमांशौ ॥ कलत्रहीनो मनुजस्तनूजै
र्विवर्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें सातवें स्थानमें पापग्रह बैठे होंय और पंचमभावमें चंद्रमा बैठा होय तो वह मनुष्य स्त्रीपुत्र करके हीन होता है ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ॥
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापि तस्या व्यभिचारकर्ता ७॥

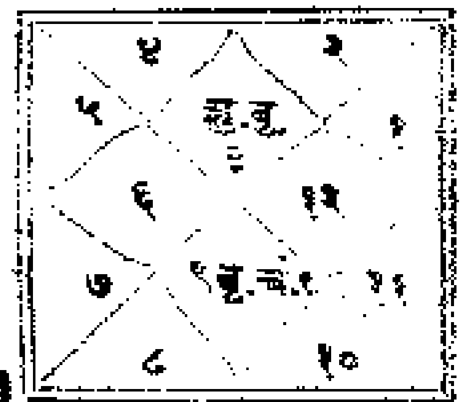
जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें शनैश्चर मंगलका षड्वर्ग होय और शनैश्चर मंगल करके दृष्ट होय तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और वह उसका पतिभी व्यभिचारी होता है ॥ ७ ॥

कलत्रहीनयोगः ८



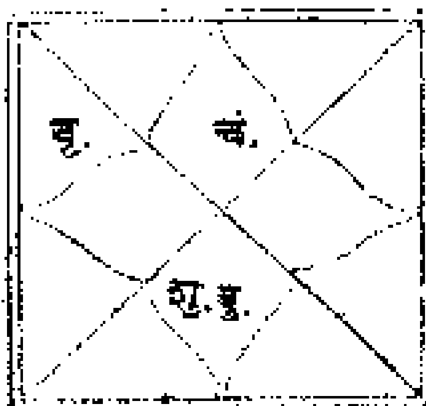
शुक्रेंदुपुत्रौ च कलत्रसं-
स्थौ कलत्रहीनं कुरुतो
नरं तौ ॥ शुभेक्षितौ तौ
वयसो विरामे कामं च
रामां लभते मनुष्यः॥८॥

स्त्रीलाभयोगः ८



जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र और बुध सातवें बैठे होंय तो उसका विवाह नहीं होता है और पूर्वोक्त योग होते शुभग्रह देखते होंय तो उसको अंत्य अवस्थामें स्त्रीका लाभ होता है ॥ ८ ॥

स्त्रीबाधायोगः ९



शुक्रेंदुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च द्वाभ्यां
कलत्रभवने च तथैककेन॥ एषां गृहे विषम-
भैवरलोकिते वा संति स्त्रियो भवनवर्गखग-
स्य भावाः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र चंद्र बृहस्पति बुध चारों वा तीन दो वा एक ग्रह सातवें बैठे होंय और इन्हीं ग्रहोंकी राशि विषम सातवें बैठी होय और यदि ग्रह सप्तमभावको देखते होंय तो उतनी स्त्री कहना चाहिये ॥ ९ ॥

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ॥
एकैकभौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें जितनी संख्याके नवांशका उदय होय और जितने ग्रह देखते होंय तो पुरुषके उतनेही विवाह कहना औरभी मंगल सूर्यका नवांश सातवें होय और सूर्य बुध बैठे होंय तो एकही विवाह कहना चाहिये ॥ १० ॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वंगनाभिर्भृगुवीक्षणेन ॥
शुक्रेक्षिते सौम्यगणोऽङ्गनानां बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ॥ ११ ॥

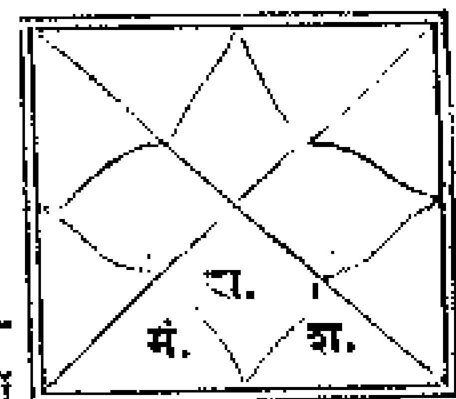
जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम भावमें शुक्र ग्रहका वर्ग होय और शुक्र देखता होय तो वह बहुत स्त्रियोंवाला होता है और शुभ ग्रहका वर्ग सातवें होय और शुक्र देखता होय तौभी बहुत स्त्रियोंवाला होता है और जो पापग्रह देखते होंय तो विवाह नहीं होता है ११

महीसुते सप्तमभावयाते कांताविमुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ॥
मन्देन दृष्टे म्रियतेपि लब्धा शुभग्रहालोकनवर्जितेऽस्मिन् १२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा होय तो वह मनुष्य स्त्रीहीन होता है और सातवें भावको शनैश्चर देखता होय तो स्त्री प्राप्त होनेके बाद मरजाती है जो शुभग्रह नहीं देखताहो ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ॥
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियतेऽचिरात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तमभावमें राहु बैठा होय और दो पापग्रह देखते होंय तो स्त्री नाश होतीहै और जो प्राप्त भी होय तो बहुत दिनोंतक नहीं जीतीहै ॥ १३ ॥



षष्ठे च भवने भौमः सप्तमो राहुसंभवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल और सातवें राहु और आठवें शनैश्चर बैठे होंय उसकी औरत नहीं जीती है ॥ १४ ॥

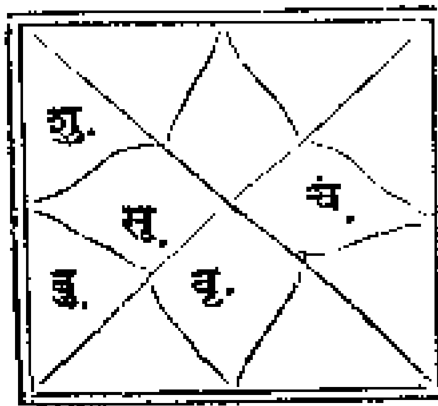
अथ संक्षेपतोऽष्टमभावविचारः।

नद्युत्तारात्यंतवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटे चेति सर्वम्॥
रंध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञयाजातकज्ञैः॥१॥

अब अष्टमस्थानसे क्या क्या विचारना चाहिये नदीका पार उतरना अत्यंत भयंकर स्थान किला, शस्त्र, आयु, संकट ये सब बातें अष्टमभावसे हमेशा ज्योतिषीलोग विचार करें यह प्राचीन आचार्योंने कहा है॥ १॥

अथ मरणयोगः।

मरणयोगः २



तुर्यस्थाने यदा भानुः शशिना च विलोकितः॥
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणं तत्र निर्दिशेत्॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें सूर्य बैठा होय उसको शनैश्चर देखता होय और कोई शुभग्रह नहीं देखते होंय तो मनुष्यका मरण कहना चाहिये॥ २॥

होराविद्भिश्चाष्टमस्थानपाते नानाभेदैर्यत्फलं तत्प्रदिष्टम्॥
रिष्टाध्यायश्चापि निर्याणके वा यत्नान्नूनं प्रोच्यते तच्च सर्वम्॥३॥

ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंने अष्टमस्थानके अनेक भेदों करके जो फल कहे हैं सो सब रिष्टाध्यायके विषे वा निर्य्याणके विषे यत्नसे निश्चय करके कहैंगे॥ ३॥

अथ भाग्यभावविचारः।

धर्मक्रियाया हि भवेत्प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्विमलं च शीलम्॥
तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम्॥ १॥

अब नवमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये धर्मके कामोंमें प्रवृत्ति और भाग्योदय, श्रेष्ठ शील, तीर्थोंकी यात्रा, नीति और पुराण ये सब नवमभावसे विचार करना चाहिये॥ १॥

विहाय सर्वं गणकैर्विचिंत्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात्॥
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवंति धन्याः॥२॥

ज्योतिषी लोग सब विषयोंको छोड़ कर यहां यत्नसे पहिले भाग्यका विचार करें क्यों कि जो दीर्घायु मनुष्य माता पिताके वंशमें भाग्यवान् होय तो वह धन्य होता है॥ २॥

मूर्त्तेश्चापि निशापतेश्च नवमं भाग्यालये कीर्तितं तत्तत्स्वा-
मियुतेक्षिते प्रकुरुते भाग्यस्य देशोद्भवम्॥ चेदन्यैर्विषयान्त-

रेत्र शुभदाः स्वोच्चाधिपाः सर्वदा कुर्युर्भाग्यमलाघवेति वि-बला दुःखोपलब्धिं पराम् ॥ ३ ॥

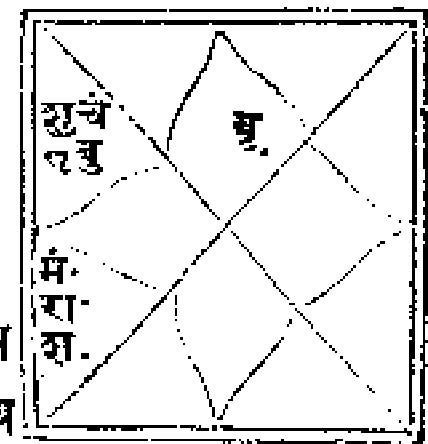
जन्म लग्नसे वा चंद्रमासे जो नवमस्थान है वह भाग्यभाव कहाता है जो नवमभाव स्वामी-करके युक्त वा दृष्ट होंय तो उसका अपने देशमें भाग्योदय होता है और जो नवमभावको शुभग्रह देखते होंय और अपना स्वामी न देखता होय तो उसका भाग्य परदेशमें उदय होताहै और जो भाग्येश अपने उच्चमें होय तो उसका हमेशा भाग्योदय होता है और जो भाग्यभावका स्वामी निर्बल होय और भाग्यभावको पापी ग्रह देखते होंय तो दुःखसे भाग्यकी प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यमतोऽस्ति किं वा सुस्थानगः सारविराजमानः ॥ भाग्याश्रितः कोस्ति विधार्य सर्वमत्यल्पमल्पं परिकल्पनीयम् ४

जो नवमभावका स्वामी नवममें बैठा होय अथवा केंद्र१।४।७।१०। त्रिकोण५।९में बैठा होय तो वह भाग्यवान् होता है नवमेशके बलाबलसे अधिक सम न्यून भाग्य कहना चाहिये४

अथ भाग्यवद्योगः ।

भाग्यवद्योगः ५



तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्या नवमं प्रपश्येत ॥ यस्य प्रसूतौ स तु भाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ॥५॥

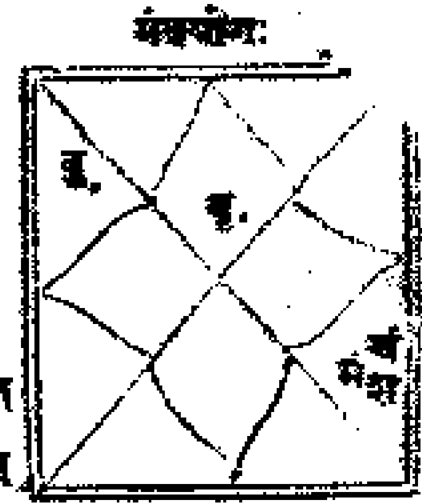
जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, पंचम, तीसरे ग्रह बैठे होंय और अधिक बल करके नवम भावको देखते होंय तो वह मनुष्य भाग्यवान् विलासमें शीलवाला बहुत धन करके सहित होता है ॥ ५ ॥

कुलावतंसयोगः ६



चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ॥ भाग्याधिशाली स्वकु-लावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ॥ ६ ॥

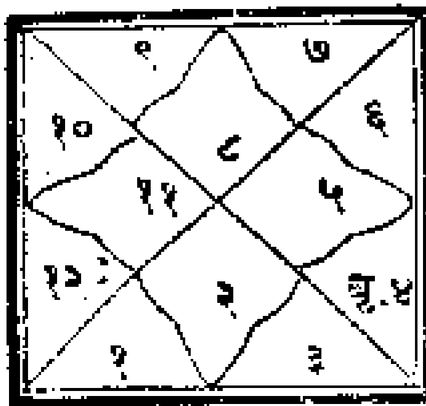
जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो भाग्यभवनमें अपने घरका ग्रह बैठा होय और शुभग्रह करके दृष्ट होय तो वह मनुष्य भाग्यवान् अपने कुलमें भाग्यवान् होता है जैसे हंस मानससरोवरमें सुख पाताहै ॥ ६ ॥



पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च ॥ वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्वंति ते सौम्यदृशं विशेषात् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा सूर्य मंगल करके सहित नवममें बल सहित बैठे होंय तो वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका मंत्री या राजा होताहै जो नवमभावको शुभग्रह देखते होंय ॥ ७ ॥

लक्ष्मीयोगः ७



स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगं कुरुते सुलक्ष्म्याः॥ सौम्येक्षितोसौ यदि सौम्यपालं दंतावलोत्कृष्टविलासशीलः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत कोई ग्रह नवमभावमें बैठा होय तो उस मनुष्यका लक्ष्मीयोग करता है और नवमभावको शुभग्रह देखते होंय तो वह मनुष्य हाथियोंके विलासको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ दशमभावविचारः ।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव ॥ महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥ १ ॥

अब दशमभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये सो कहते हैं । व्यापारः रुपयाः राज्यमान्य और राजकीय प्रयोजन और पिता और बड़े पदकी प्राप्ति ये सब निश्चयकरके दशमभावसे विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानां प्रयत्नादिह हि दशमभावे सर्वकर्म प्रकामम्॥गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्य भावैः सकलमपि विचिंत्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः ॥ २ ॥

प्राचीन ऋषियोंने कहाहै दशमभावसे यत्नपूर्वक सम्पूर्ण कर्मोंका साधन ग्रहोंकी दृष्टि राशिग्रहस्थ भाव करके सम्पूर्ण बलाबलसे पंडितजन विचार करें ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ॥ नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्वोद्यमैः साहसकर्मभिश्च ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे चंद्रमा दशमभावमें बैठा होय तो उस मनुष्यकी वृत्ति अनेककलाओंकी कुशलता करके और वाग्विलास और सर्वोद्यम साहसकर्म करके धन पैदा करनेकी होती है ॥ ३ ॥

तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान्स्याज्जीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या ॥
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ॥ ४ ॥

और जन्म लग्नसे वा चंद्रमासे जो दशममें ग्रह बलवान बैठा होय तो उस मनुष्यकी वृत्ति और आजीविका उसीग्रहके समान कहना अथवा षड्वर्ग पति जो बलवान होय तो उसी ग्रहकी वृत्तिको उसकी दशामें कहना चाहिये ॥ ४ ॥

दिवामणिः कर्मणि चंद्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात् ॥
सत्त्वाधिकत्वं नरनायकत्वं पुष्टत्वमंगे मनसः प्रसादः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा वा लग्नसे दशममें सूर्य बैठा होय तो वह मनुष्य अनेक उद्यम करके अनेक योगोंसे अनेक धनोंको प्राप्त करता है और जो सूर्य बलवान होय तो वह राजा पुष्ट शरीर प्रसन्न मन होता है ॥ ५ ॥

लग्नेंदुतः कर्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसः क्रौर्यनिषादवृत्तिः ॥
नूनं नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे दशमभावमें मंगल बैठा होय तो वह मनुष्य साहस करके क्रोधसे निषादवृत्ति करके धनलाभ करता है और वह मनुष्य विषयोंमें आसक्त परदेशमें वास करनेवाला साहसी होता है ॥ ६ ॥

लग्नेंदुभ्यां कर्मगो रौहिणेयः कुर्याद्द्रव्यं नायकत्वं बहूनाम् ॥
शिल्पेभ्यासः साहसं सर्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम् ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशम भावमें बुध बैठा होय तो वह मनुष्य अनेक धन और अनेक पुरुषोंका स्वामी शिल्पविद्यामें अभ्यास करनेवाला साहसी सब कामोंमें विद्वानोंकी वृत्ति करके आजीविका करनेवाला होताहै ॥ ७ ॥

त्रिलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनः सचिवो यदा स्यात् ॥
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवं च ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशमभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य अनेक प्रकारसे धनका लाभ करनेवाला विचित्र वृत्ति करके राजा करके गौरवको प्राप्त होताहै ८

होरायाश्च निशाकराद्भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो नानाशास्त्र-
कलाकलापविलसद्वृत्त्यादिशेज्जीवनम् ॥ दाने साधुमतिं तथा
विनयतां कामं धनाभ्यागमं मानं मानवनायकादविरलं शीलं
विशालं यदा ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे दशममें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य अनेक शास्त्रकी कलाओंके समूहसे विलासवृत्तिसे आजीविका करनेवाला दान करनेमें साधुबुद्धि उत्तम शील काम करके धनको प्राप्त राजासे प्रतिष्ठा पानेवाला श्रेष्ठ विशाल शीलयुक्त होताहै ॥ ९ ॥

होरायाश्च सुधाकराद्रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितो वृत्तिं हीन-
नरांतरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ॥ खेदं वादभयं च धान्य-
धनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मनश्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च
नो निर्मलम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे शनिश्चर दशम बैठा होय तो वह मनुष्य हीनवृत्ति करनेवाला दुर्बल रहै खेदयुक्त विवाद करनेवाला धन धान्य करके हीन मलिन चित्तमें उद्वेग पैदा होनेसे चपल शील निर्मल नहीं होताहै ॥ १० ॥

सूर्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्नादिंदोः स्वपाके क्रमशो विकल्प्या ॥
अर्थोपलब्धिर्जनकाज्जनन्याः शत्रोर्हिताद्भ्रातृकलत्रभृत्यात् ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमासे सूर्य दशममें बैठा होय तो पितासे धनलाभ कहना और चंद्रमा दशममें होय तो मातासे धनलाभ कहना चाहिये और मंगल दशममें बैठा होय तो शत्रुसे धनलाभ कहना बुध दशममें बैठा होय तो मित्रसे धनलाभ कहना और बृहस्पति होय तो भाईसे धनलाभ कहना शुक्र दशममें होय तो स्त्रीसे धनलाभ कहना और शनिश्चर दशममें होय तो नौकरसे धनलाभ कहना चाहिये ॥ ११ ॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशपतेस्तु वृत्त्या परिकल्पयेत्ताम् ॥
सदौषधोर्णादितृणैः सुवर्णैर्द्विवामाणिर्वृत्तिविधिं विदध्यात् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा, लग्न इन तीनोंमें जो बली होय उस दशमभावमें जो नवांशका उदय होय उस नवांशपतिसे वृत्तिका विचार करना चाहिये जो दशमस्थित नवांशपति सूर्य होय तो श्रेष्ठ औषधी और ऊर्ण, तृण सुवर्ण करके वृत्ति कहना ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियादेः ॥
कुजोग्निसत्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः १३॥

जो दशमनवांशपति चंद्रमा होय तो स्त्रीकरके जलाशय करके उत्पन्न खेती करके आजीविका कहनी चाहिये और जो मंगल नवांशपति होय तो साहस और धातु शस्त्र करके आजीविका कहनी और बुध नवांशपति होय तो काव्यकी कलाओंके समूह करके आजीविका करनेवाला होताहै ॥ १३ ॥

जीवो द्विजान्मोचितदेवधर्मैः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ॥
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम्॥१४॥
कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्तते ॥ तत्तुल्यकर्मणो वृत्तिं
निर्दिशंति मनीषिणः ॥ १५ ॥

और जो दशमनवांशपति बृहस्पति होय तो ब्राह्मणों करके श्रेष्ठ धर्म और देवाराधन करके वृत्ति कहना और शुक्र नवांशपति होयतो महिषी चांदी तथा रत्नों करके आजीविका करनेवाला होता है और शनैश्चर होय तो नीचकर्मोंसे धनकी आजीविका करता है ॥१४ ॥ दशमभावका स्वामी जिस नवांशमें बैठा होय उसीके समान कर्मोंकरके अपनी आजीविका करनेवाला होता है ये बुद्धिमानोंने कहाहै ॥ १५ ॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्ततोर्थः परिकल्पनीयः ॥
तुंगे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात्॥१६॥
लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्यैः शुभैर्भवेद्भूधनसौख्यमुच्चैः ॥
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिंतनीयम् ॥ १७ ॥

जो मित्र शत्रुके घरमें ग्रह बैठे होंय तो उन्हींसे धनलाभ कहना और उच्चमें वा स्वक्षेत्र मूलत्रिकोणमें सूर्य होय तो अपने बाहुबलसे धन पैदा करता है ॥ १६ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न, धन लाभस्थानोंमें शुभग्रह बलसहित बैठे होंय तो वह मनुष्य धरतीके सौख्य सहित होता है ये पूर्वाचार्योंने कहा है ग्रहोंके बलसे विचारकर फल कहना ॥ १७ ॥

अथ लाभभावविचारः ।

गजाश्वहेमांबररत्नजातमान्दोलिकामङ्गलमण्डनानि ॥
लाभः किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तुलाभस्य गृहे गृहज्ञैः ॥ १ ॥

अब ग्यारहें भावसे क्या क्या विचार करना चाहिये हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, रत्न, पालकी, मंगल, मकान और लाभ ये सब बातें निश्चय कर ग्यारहें घरसे ज्योतिषी विचारकरे १

सूर्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोत्र चे-
त्स्यात् ॥ भूपालतश्चौरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा ध-
नाप्तिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य करके युक्त वा दृष्ट ग्यारहवाँ भाव होय अथवा ग्यारहवें भावके षड्वर्गमें होय तो राजा वा चोर वा कलहसे चौपायों करके बहुत प्रकार कर धनकी प्राप्ति कहना चाहिये ॥ २ ॥

चंद्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालयं चंद्रगणाश्रितं चेत् ॥
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवाँ भाव चंद्रमा करके युक्त वा दृष्ट होय और चंद्रमा षड्वर्गी होय तो वह मनुष्य जलाशय, स्त्री (गज) हाथी; घोड़ोंकी वृद्धि करता है जो पूर्ण-चंद्रमा होय तो और क्षीणचंद्रमासे पूर्वोक्त पदार्थोंका नाश कहना ॥ ३ ॥

लाभालयं मङ्गलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहेमलब्धिः ॥
विचित्रयात्रा बहुसाहसं स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहवाँ भाव मंगल करके युक्त वा दृष्ट होय और मंगल षड्वर्गी होय तो आभूषण सोनाकी प्राप्ति और विचित्र यात्रा बहुत साहस अनेक कलाओंमें कुशलता बुद्धि करके होती है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते नानाका-
व्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम् ॥ युक्तिद्रव्य-
मयीभवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः सख्यं चापि वणिग्जनैर्ब-
हुतरं क्लीबैर्नृणां कीर्तितम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें बुध बैठा होय वा युक्त होय और बुधका षड्वर्ग होय तो वह मनुष्य अनेक काव्योंके समूहसे शिल्प करके लिखनेसे बहुत सुख धन पाता है मिले हुऐ पदार्थों करके धनका संग्रह करनेवाला श्रेष्ठ साहस और उद्यम करके वणियोंसे मित्रता करके अथवा नपुंसकोंसे धनका लाभवाला कहना चाहिये ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टरूपो नरः स्यात्॥
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्वर्गयुगीक्षणं चेत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति ग्यारहें भावमें बैठा होय वा युक्त होय और बृहस्पतिका षड्वर्ग होय तो वह मनुष्य यज्ञ कियासे सत्पुरुषोंके संगसे राजाके आश्रयसे बहुत धन पैदा करनेवाला द्रव्य सुवर्ण करके सहित होता है ॥ ६ ॥

लाभालये भार्गववर्गयातं युतेक्षितं वा यदि भार्गवेण ॥
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरस्वलब्धिः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें शुक्रका षड्वर्ग होय और शुक्र करके युक्त वा दृष्ट होय तो उसको रंडियों करके परदेश जाने आनेसे श्रेष्ठ चांदी मोती धन बहुत प्राप्त होती है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितयुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ॥
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृंदपुरगौरवमिश्रः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें शनैश्चरका षड्वर्ग होय शनैश्चर करके युक्त वा दृष्ट होय तो उस मनुष्यको नील, लोहा, महिषी, हाथी, घोड़ोंका लाभ ग्रामोंके समूहसे धनका लाभ कहना चाहिये ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थितेपि ॥
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन्सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ॥ ९ ॥

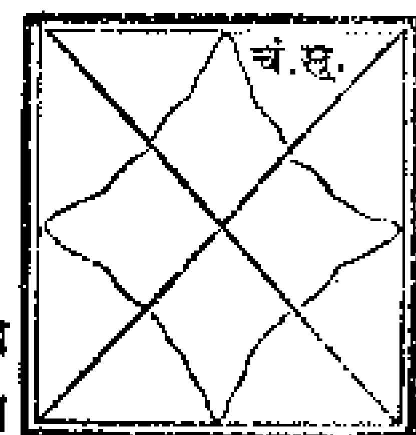
जो लाभस्थान शुभ ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय और शुभग्रहोंका षड्वर्ग होय और सब ग्रह लाभभावमें बैठे होयँ अथवा देखते होयँ तो बहुत प्रकारसे धनलाभ होता है ॥ ९ ॥

अथ व्ययभावविचारः ।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बंध एव च ॥
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिंतनीयं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

व्ययभावसे क्या क्या विचार करना चाहिये हानि और दान, खर्च, दंड, बंधन यह सब बारहें स्थानसे विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

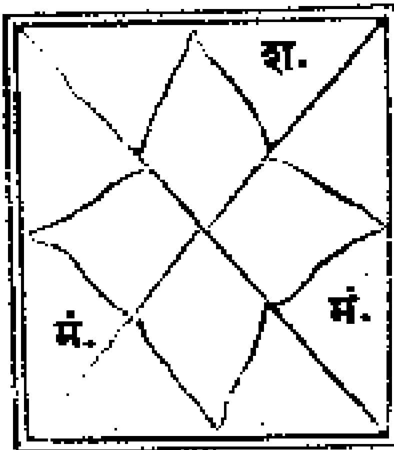
द्रव्यहरणयोगः २



व्ययालये क्षीणकरः कलावान्सूर्योथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ॥ द्रव्यं हरिद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें घरमें क्षीण चंद्रमा अथवा सूर्य चंद्रमा दोनों बैठे होयं और मंगल देखता होय तो उसका धन राजा हरण करता है ॥ २ ॥

धननाशयोगः

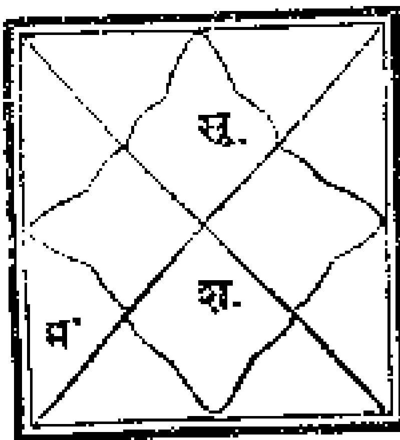


पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिता व्ययस्थाः कुर्वंति संस्थां धनसंचयस्य ॥ प्रांत्यस्थिते सूर्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें पूर्ण चंद्रमा और बुध बृहस्पति शुक्र बारहें बैठे होंय तौ वह धनका संग्रह करनेवाला होता है और जो बारहें शनैश्चर बैठा होय और मंगल करके दृष्ट होय वा युक्त होय तो धनका नाश कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ भावफलोपयुक्तत्वेन रिष्टाध्यायो निरूप्यते।

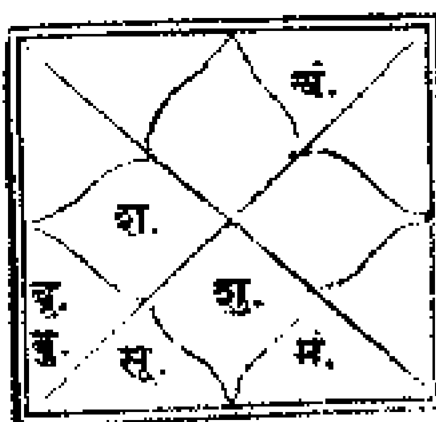
पुत्रस्त्रीनाशयोगः १



लग्नेन्द्वोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यैर्ग्रहैर्युक्ते वाथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी ॥ लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो मृत्युकृज्जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नसे वा चंद्रमासे सप्तम पंचमभाव अपने स्वामी करके वा शुभग्रह करके युक्त वा दृष्ट होंय तौ पुत्र वा स्त्रीप्राप्ति अवश्य कहना चाहिये और जो लग्नमें सूर्य बैठा होय और शनैश्चर सातवें बैठा होय तो स्त्रीकी मृत्यु कहना चाहिये और जो पंचमभावमें मंगल बैठा होय तो पुत्रोंका नाश करता है ॥ १ ॥

स्त्रीनाशयोगः २

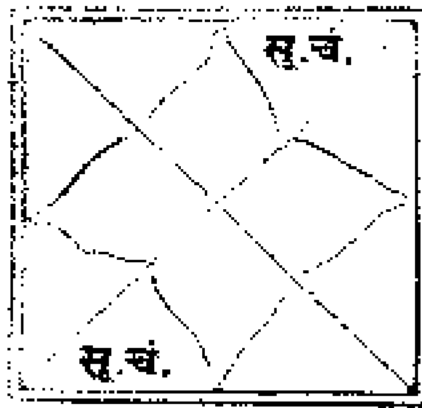


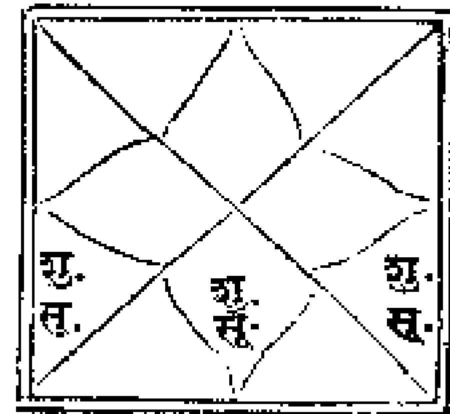
असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरंध्रे खलखेटयुक्ते ॥ सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः ॥ २ ॥

जो पापग्रहोंके बीचमें शुक्र बैठा होय और चतुर्थ और अष्टम भावमें पापग्रह बैठे होंय और शुभग्रहों करके शुक्र अदृष्ट होय तो उसकी स्त्री फांसी करके वा अग्निकरके मरतीहै ॥ २ ॥

दंपतीकाणयोगः २

स्त्रीहीनयोगः । ३ ।





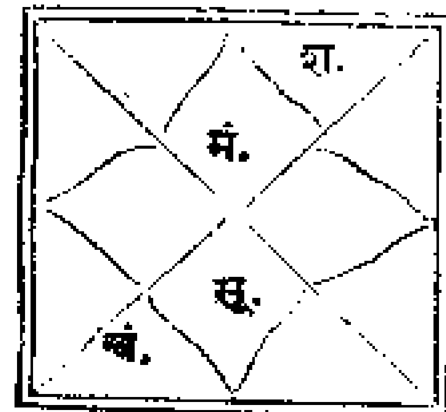
दिवाकरेंदू व्ययवैरियाता जायापती चैकविलोचनौ स्तः ॥ कलत्रधर्मात्मजगौ सिताकौं पुमान्भवेत्क्षीणकलत्र एव ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा बारहें या छठे बैठे होय तो वह स्त्री पती दोनों काण होते हैं और जो सप्तम, नवम, पश्चम भावोंमें शुक्र, सूर्य बैठे होंय तो वह मनुष्य स्त्री हीन होता है ॥ ३ ॥

भसंधियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रयत्नेन तु भानुसूनौ ॥
वंध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयं नो शुभदृष्टयुक्तम् ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र राशिकी संधिमें बैठा होय और लग्नमें शनैश्चर बैठा होय और पंचमभावमें कोई शुभग्रह नहीं बैठा होय न देखता होय तौ वह मनुष्य बांझस्त्रीका पति होता है ॥ ४ ॥

स्त्रीपुत्रहीनयोग ५

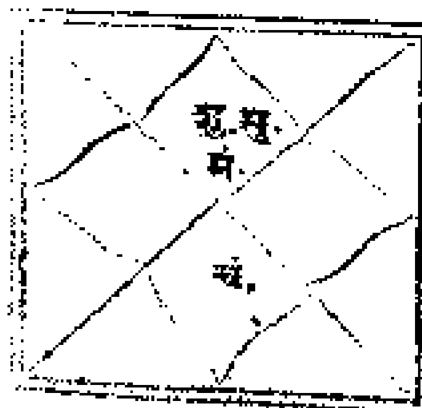


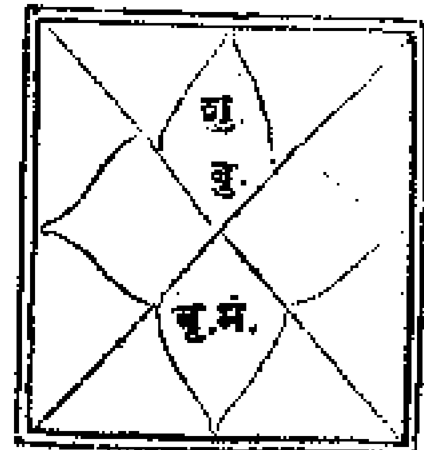
क्रूराश्च होरास्मररिःफयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् ॥ एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्स भार्यातनयैर्विहीनः ॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्न, सप्तम, व्ययभावमें बैठे होंय और पंचममें हीन बली चंद्रमा बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य स्त्री पुत्र करके हीन होताहै ॥ ५ ॥

पुत्रजायाहीनयोगः ६

स्त्रीसौख्ययोगः ६



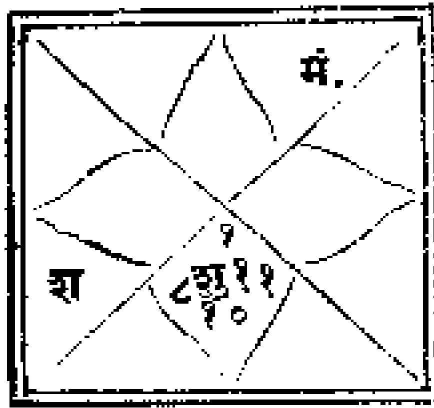


द्यूनेऽर्कआरौ सभृगू शशांकादपुत्रभार्यं कुरुतो नरं तौ ॥ स्यातां नृनार्योश्च खगौ स्मरस्थौ सौम्येक्षितौ तौ शुभदौ नृनार्योः ॥ ६ ॥

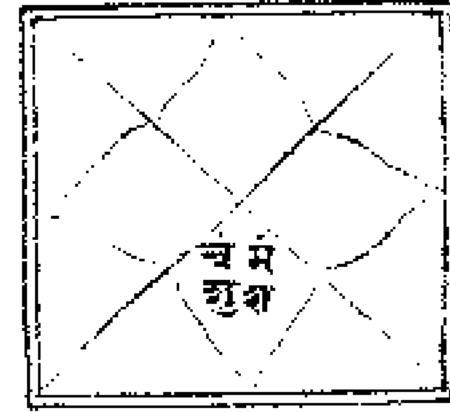
जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे सातवें स्थानमें सूर्य, मंगल, शुक्र बैठे होंय तो वह मनुष्य स्त्री पुत्र करके हीन होता है जो सप्तम भावमें पुरुषग्रह बैठे होंय और शुभग्रह देखते होंय तो पुरुषको स्त्रीका सौख्य कहना और जो स्त्रीके सातवें स्त्रीग्रह बैठे होंय और शुभग्रह देखते होंय तो स्त्रीको पुरुषका सुख होता है ॥ ६ ॥

अथ व्यभिचारियोगः।

परस्त्रीरतयोगः ७



उभयव्यभिचारियोगः ८



सितेस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी ॥ मंदारचंद्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः ॥ ७ ॥

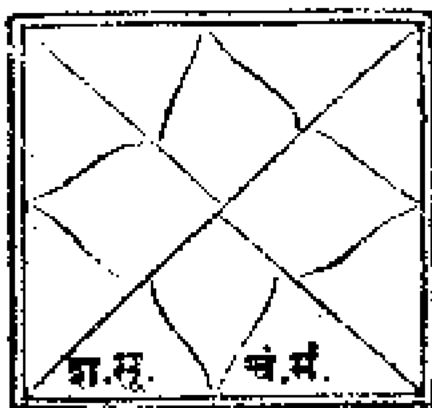
जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र सातवें बैठा होय मकर कुंभ, मेष, वृश्चिकराशिमें और उसको मंगल शनि देखते होंय तो वह मनुष्य पराई स्त्रीमें रत रहता है ॥

और जो सातवें भावमें शनैश्चर, चंद्रमा, मंगल बैठे होंय और शुक्र करके युक्त होंय तो वह स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होते हैं ॥ ७ ॥

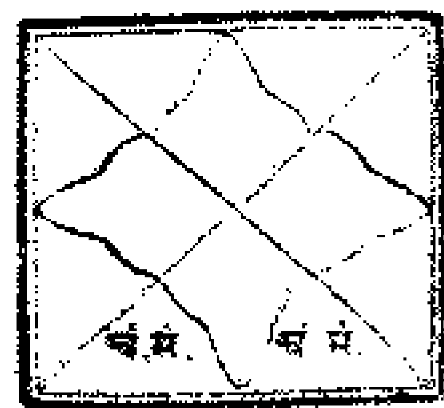
परस्परांशोपगतौ रवीन्दू रोषामयं तौ कुरुतो नराणाम् ॥
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा परस्पर नवांशमें बैठे होंय तो स्त्री पुरुष दोनों क्रोधी होते हैं और केवल सूर्य चंद्रमाके नवांशमें बैठा होय तो पुरुष रोगी क्रोधी होता है और केवल चंद्रमा सूर्यके नवांशमें बैठा होय तो स्त्री रोगिणी होतीहै ॥ ८ ॥

अंधयोगः ९



अंधयोगः ९



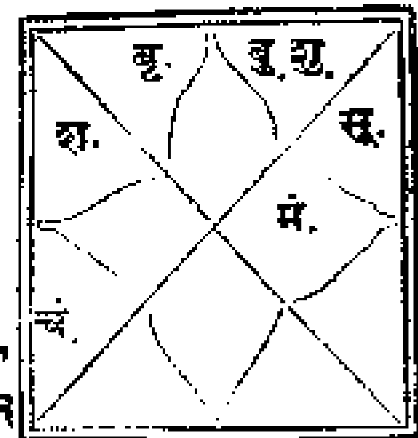
मंदावनीसूनुरवीन्दवश्चेद्रन्ध्रारिवित्तव्ययभावसंस्थाः ॥ आंध्यं भवेत्सा-रसमन्वितस्य खेटस्य दोषात्पुरुषस्य नूनम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर, मंगल, सूर्य, चंद्रमा अष्टम, छठे, दूसरे, बारहें बैठे होंय तो वह मनुष्य अंधा होता है और केवल मंगल करके सहित होंय तो ग्रहके योगसे पुरुष अंधा होता है ॥ ९ ॥

मृगालिगोकर्कटकास्त्रिकोणे प्रसूतिकाले खलखेटयुक्ताः ॥ निरीक्षिता वा जनयंति जातं कुष्ठेन युक्तं प्रवदंति संतः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर, वृश्चिक, कर्क, वृष यह राशि नवम, पंचममें बैठे होंय वा पापग्रह देखते होंय वा युक्त होंय तो वह मनुष्य कुष्ठरोगवाला होता है ॥ १० ॥

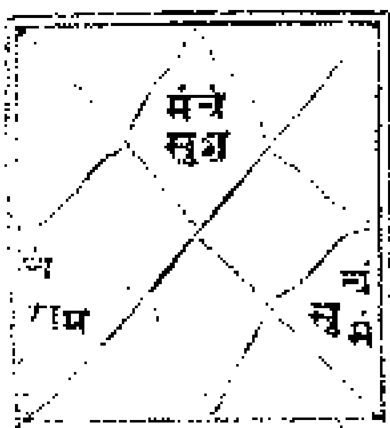
कर्णनाशयोगः ११



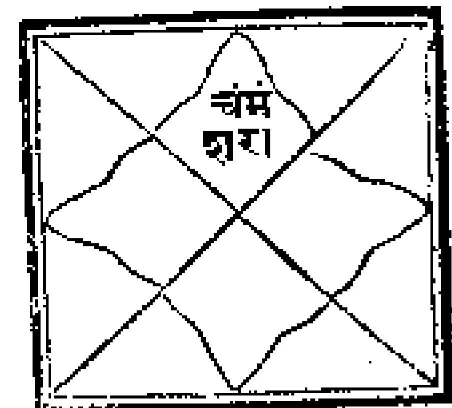
मंदार्कचंद्रास्त्रिसुतायधर्मे सौम्येन युक्ता न च वीक्षिताश्चेत् ॥ कर्णप्रणाशं जनयंति नूनं स्मरस्थितास्ते दशनाभिघातम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर सूर्य, चंद्रमा तीसरे, पंचम, ग्यारहें, नवममें बैठे होंय और कोई शुभग्रह न तो साथ होय न देखता होय तो उस मनुष्यके कर्ण नाश होते हैं और पूर्वोक्त योग सातवें होंय तो उसके दांतोंका नाश होता है ॥ ११ ॥

पिशाचस्वभावयोगः १२



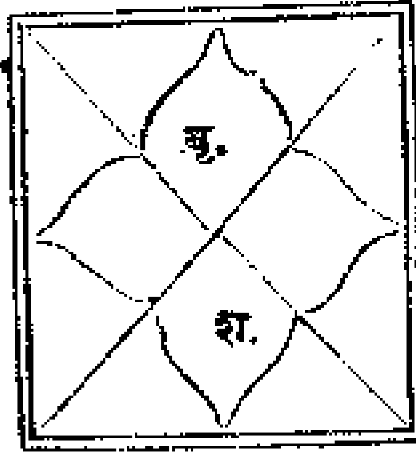
नेत्रोपघातयोगः १२



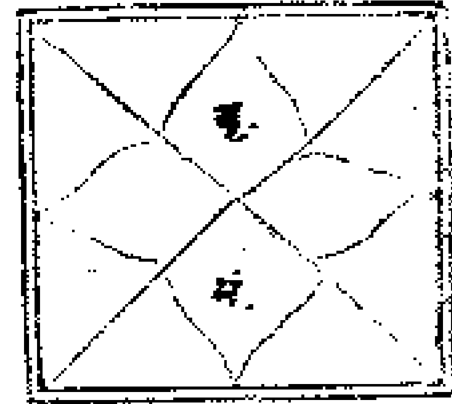
ग्रस्ते विधौ लग्नगताश्च पापास्त्रिकोणगा जन्म पिशाचकस्य ॥ ग्रस्ते विधौ लग्नगते तथैव नेत्रोपघातः खलु कल्पनीयः १२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहोंके साथ बैठा होय और लग्न, पंचम, नवममें पापग्रह बैठे होंय तो वह पिशाचस्वभाववाला होता है और जो पापग्रहयुक्त चंद्रमा लग्नमें बैठा होय तो नेत्रोंका विघात कहना चाहिये ॥ १२ ॥

वातरोगयोगः १३



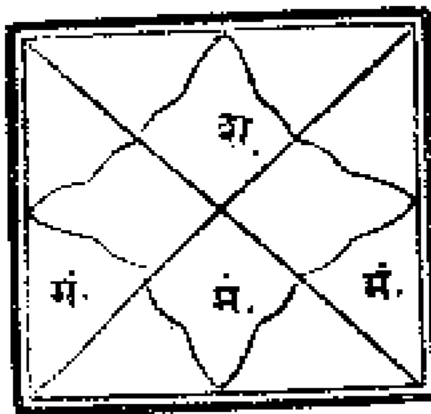
वीर्यविकारयोगः १३



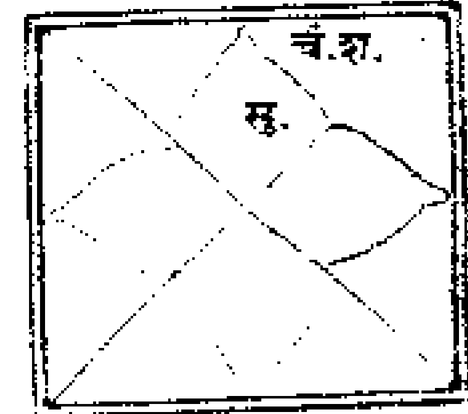
लग्नस्थिते देवपुरोहिते स्ते शनौ च वाताधिकता नितांतम् ॥ जीवे विलग्नेवनिनन्दनेस्ते मदोद्धतः स्यात्पुरुषो विशेषात् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें बृहस्पति व सातवें शनैश्वर बैठा होय तो उस मनुष्यके शरीरमें वातरोग होता है और बृहस्पति लग्नमें और मंगल सातवें बैठा होय तो वह मनुष्य वीर्यविकारवाला होता है ॥ १३ ॥

वाताधिकयोगः १४



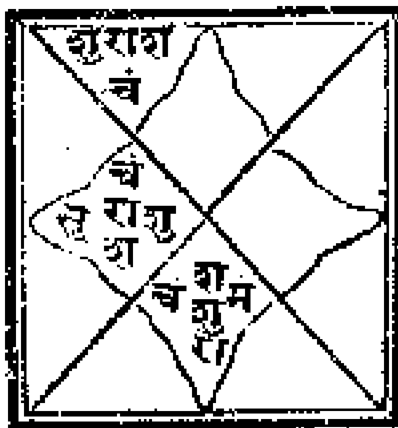
वाताधिकयोगः १४



स्मरे त्रिकोणे धरणीतनूजे शनौ तनौ वा पवनप्रकोपः ॥ क्षीणेन्दुमंदौ व्ययभावयाता तदापि वाताधिकता नराणाम् ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें नवम; पंचममें मंगल बैठा होय और शनैश्वर लग्नमें बैठा होय तो वातविकार मनुष्यको कहना और क्षीणचंद्रमा शनैश्चर बारहें बैठा होय तोभी वातरोगकी अधिकता कहनी चाहिये ॥ १४ ॥

वंशनाशयोगः १५



नीचयोगः १५



वंशच्छेदकरः शशांकभृगुजः क्रूरैः स्वकामाम्बुगैः शिल्पी केंद्रगतार्किणा बुधयुतत्र्यंशे समालोकित ॥ अंते देवगुरौ दिनेश्वरयुतस्यांशे च दासीयुतो नीचः कामगयोः खरांशुशशिनोः सौरेण संदृष्टयोः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र पापग्रहोंसहित द्वितीय सप्तम चतुर्थमें बैठे होंय तो वह मनुष्य वंशनाश करनेवाला होता है और केंद्रमें शनैश्चर बैठा होय बुधके द्रेष्काणमें और बुध करके दृष्ट होय तो शिल्पी होता है और जिसके बारहें बृहस्पति सूर्यके नवांशमें बैठा होय तो वह दासी करके सहित होता है और जिसके सातवें सूर्य चंद्रमा बैठे होंय और शनैश्चर करके दृष्ट होंय तो वह मनुष्य नीच होता है ॥ १५ ॥

वयो राशिस्वनक्षत्रमेकीकृत्य पृथक्पृथक् ॥
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् ॥ १६ ॥
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्ये शून्यं धनक्षयः ॥
स्थानत्रयेप्यशेषं तु मृत्युः साङ्केषु वै जयी ॥ १७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भावो-
पयोगारिष्टाध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

उमर और राशि और जन्मनक्षत्र इन तीनोंके अंकोंको एकत्रित कर अलग अलग तीन जगह स्थापित करना पहिली जगहमें दोसे गुणै, दूसरी जगहमें चारसे गुणै, और तीसरी जगहमें तीनसे गुणै, पहिली जगहके गुणे अंकोंमें सातका भाग देवे और दूसरी जगहके अंकोंमें आठका भाग देवे और तीसरी जगहके अंकोंमें छःका भाग देवे ॥ १६ ॥ जो पहिले और अंतके गुणे हुए अंकोंमें शून्य आवें तो दुःख कहना चाहिये और बीचके अंकमें शून्य आवे तो धनका क्षय कहना चाहिये और जो तीनों स्थानोंमें शून्य आवें तो उसी वर्षमें मृत्यु कहना चाहिये और तीनों जगह अंक शेष रहें तो उस वर्षमें जय कहना चाहिये ॥ १७ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां भावोपयुक्तारिष्टाध्यायः ॥ २ ॥

श्रीः ।

अथ रव्यादिग्रहभावफलाध्यायप्रारंभः ।

अथ लग्नभावस्थितसूर्यफलम् ॥

लग्नेऽर्केऽल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतो मानी लोचनरुक्षसुकर्कशतनुः शूरो क्षमी निर्घृणः ॥ फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थितिहरः सिंहे निशांधः पुमान्दारिद्र्योपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञिके ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य थोड़े केशवाला काम करनेमें आलसी बड़ाक्रोधी ऊँचाशरीर खुजलीका रोगसहित नेत्रोंका रोगी शूर वीर दयावान निर्दय होताहै जिस्के कर्कराशिवर्ती सूर्य लग्नमें होय तो उसके कमलसरीखे नेत्र होतेहैं और मेषराशिवर्ती सूर्य होय तो न्यायमार्गकी स्थितिको हरणकरताहै और सिंहराशिवर्ती सूर्य होय तो उस्को रतौंधी आती है और तुलाराशिवर्ती सूर्य होय तो वह मनुष्य दरिद्री पुत्रहीन होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम् ।

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ॥
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणौ द्रविणे यदि संस्थितिः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें सूर्य बैठाहोय तो वह मनुष्य धन और पुत्र अच्छी सवारी करके रहित बुद्धिनष्ट मित्रतासे हीन पराये घरमें वास करता है ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितसूर्यफलम् ।

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्मचित्तोनुचरान्वितश्च ॥
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान्दिनाधिनाथे सहजेऽभिसंस्थे ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें सूर्य बैठा होय तो वह मनुष्य मीठी वाणी बोलनेवाला धन और वाहनों करके सहित अच्छे कर्मोंमें मनको लगानेवाला नौकरों करके सहित थोड़े भाइयोंवाला अधिक बलवान होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम् ।

सौख्येन यानेन धनेन हीनं तातस्य चित्तोपहतप्रवृत्तम् ॥
चलन्निवासं कुरुते पुमांसं पातालशाली नलिनीविलासी ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें सूर्य बैठा होय तो वह मनुष्य सौख्य और सवारी तथा धनकरके हीन बापसे वैर करनेवाला एक जगह नहीं वास करनेवाला होताहै॥४॥

अथ पंचमभावस्थितसूर्यफलम् ।

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तं सौख्यैर्युक्तं सत्क्रियार्थैर्विमुक्तम् ॥
भ्रान्तस्वांतं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनुस्थाने भानुमान्वर्तमानः॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य थोडी सन्तानवाला पार्वती और शिवका भक्त सौख्यरहित अच्छे कर्मों तथा धनकरके हीन भ्रमित चित्तवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितसूर्यफलम् ।

शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहंता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महौजाः ॥
पृथ्वीभर्तुः स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंस्था यदि स्यात् ६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य निरंतर सौख्य सहित वैरियोंका मारनेवाला बलवान् अच्छे रथ वा सवारी करके सहित बहुततेजवान् राजाका मंत्री होता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितसूर्यफलम् ।

श्रिया विमुक्तो हतकायकांतिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः ॥
नृपप्रकोपात्तिकृशो मनुष्यः सीमंतिनीसद्मनि पद्मिनीशे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें सूर्य बैठा होय तो वह मनुष्य धनहीन देहकी शोभा करके रहित भय और रोगों करके सहित दुष्ट स्वभाववाला राजाके क्रोधकरके दुःखको प्राप्त कृश होता है ॥ ७ ॥

अथ अष्टमभावस्थितसूर्यफलम् ।

नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः ॥
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमंगे विशेषादायुःस्थाने पद्मिनीप्राणनाथे ॥८

जिस मनुष्यके अष्टमभावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य छोटे नेत्रोंवाला वा मंदद्दष्टिवाला शत्रुकी वृद्धिसहित बुद्धिहीन बडा क्रोधी थोडेधनवाला विशेषकरके दुर्बल देहवाला होताहै ८॥

अथ नवमभावस्थितसूर्यफलम् ।

धर्मकर्मनिरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा ॥
मातृवर्गविषमो भवेन्नरस्त्रित्रिकोणभवने दिवामणौ ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य धर्मकर्म में तत्पर श्रेष्ठ बुद्धिवाला पुत्र और मित्रों करके उत्पन्न जो सुख तिसकरके हमेशा सुखी मातृपक्षी लोगोंसे वैर करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि ॥ साधूपकारकरणं मणिभूषणानि मेषूरणे दिनमणिः कुरुते नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठबुद्धिवाला श्रेष्ठ वाहन और धनकरके निश्चय करके सहित राजाकी कृपा और पुत्रोंके सौख्यसहित साधुओंका उपकार करनेवाला मणियोंकरके युक्त आभूषणोंवाला होता है ॥ १० ॥

अथ एकादशभावस्थितसूर्यफलम् ।

गीतिप्रीतिं चारुकर्मप्रवृत्तिं चंचत्कीर्तिं वित्तपूर्तिं नितान्तम् ॥
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ११

जिसके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें सूर्य बैठा होय वह मनुष्य गानेमें प्रीति करनेवाला श्रेष्ठ कर्मोंमें प्रवृत्ति जिस्की बडे यशवाला निरंतर धनकरके पूर्ण राजाकरके नित्यही धनलाभ करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितसूर्यफलम् ।

तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं गतचित्तवृत्तिः ॥
विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयाते कांते नलिन्याः फलमुक्तमार्यैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य नेत्रोंके तेजसे रहित पितासे वैरकरनेवाला सबसे विरुद्ध बुद्धिवाला होताहै ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितचंद्रफलम् ।

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्यश्चंद्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ॥ उन्मत्तनीचबधिरोविकलोथ मूकः शेषेषु ना भवति हीनतनुर्विशेषात् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क, वृष, मेष, राशिवर्ती चंद्रमा लग्नमें बैठाहोय वह मनुष्य सुन्दर रूपवान धन और भोगमें श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित होताहै और जो कर्क वृष, मेष,राशिके बिना अन्यराशियोंमें चंद्रमा लग्नमें बैठाहोय तो वह मनुष्य उन्मत्त यानी मतवाला नीच बहिरा विकलदेह गूंगा होताहै ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितचंद्रफलम् ।

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधुर्द्वितीये ॥
क्षीणेस्खलद्वाग्विधनोल्पबुद्धिः न्यूनाधिकत्वे फल-
तारतम्यम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमा धनभावमें बैठाहो वह मनुष्य सुख और पुत्र धन करके सहित नम्रताकरके युक्त श्रेष्ठ होताहै और जो क्षीणचंद्रमा धनभावमें हो तो वह मनुष्य तोतला धनरहित थोड़ी बुद्धिवाला होताहै और जो चंद्रमा न तो पूर्णबली होय और न हीनबली होय पूर्ण और हीनके अंतर्गतका होय तो उसका फल कमबढ़ती विचारकरके कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितचंद्रफलम् ।

हिंस्रः सगर्वः कृपणोल्पबुद्धिर्भवेन्नरो बंधुजनाश्रयश्च ॥
दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें चंद्रमा बैठाहोय [illegible] मनुष्य हिंसा करनेवाला बड़ा अभिमानी कृपण अल्प बुद्धि बंधुजनोंका आश्रय करनेवाला [illegible] भयसे हीन होताहै

अथ चतुर्थभावस्थितचंद्रफ[illegible]

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यंगनावाहन[illegible]सौख्यम् ॥
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान्पातालसंस्थो [illegible]भक्तिम्॥ ४ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें चंद्रमा बैठाहोय वह [illegible] करके उत्पन्न धनको प्राप्त करनेवाला खेती और स्त्री तथा सवारी और पुत्रों [illegible]ण और देवताओंका भक्त होताहै ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थचंद्रफलम् [illegible]

जितेंद्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजाव[illegible]ख्यः ॥
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले [illegible]॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य इन्द्रियोंका जीतनेवाला सत्यवादी प्रसन्न धन और पुत्रोंकरके सब सुखको प्राप्त श्रेष्ठ संग्रहकरनेवाला शीलवान होताहै ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितचंद्रफलम् ।

मंदाग्निः स्यान्निर्दयःक्रौर्ययुक्तोऽनल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः ॥
रोषावेषोत्यंतसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य मंदाग्निरोगवाला दयारहित क्रूरतासहित बड़ा आलसी कठोर दुष्टचित्त क्रोधवान बहुत शत्रुओंवाला होताहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितचंद्रफलम् ।

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ॥
धनेन हीनो विनयेन चैवं चंद्रेऽगनास्थानविराजमाने ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें चंद्रमा बैठाहोय वह मनुष्य बड़ा अभिमानी कामातुर दुर्बल देह वाला धन और नम्रतारहित होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितचंद्रफलम् ।

नानारोगैः क्षीणदेहोतिनिस्वश्चौरारातिक्षोणिपालाभितप्तः ॥
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवःस्यादायुःस्थाने वर्तमाने हिमांशौ ८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें आठवें भावमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य अनेकरोगों करके दुर्बलदेहवाला धनहीन चोर और शत्रु तथा राजाकरके संतापप्राप्त मनके उद्वेगकरके व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितचंद्रफलम् ।

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्ताश्रवणानुरक्तः ॥
सुकर्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदाकलावान्नवमालयस्थः ॥ ९ ॥

जिसके जन्मकालमें चंद्रमा नवम भावमें बैठा होय वह मनुष्य स्त्री पुत्र धन करके सहित पुराणकथाके सुननेमें तत्पर अच्छे कर्म और श्रेष्ठतीर्थकरनेमें युक्त होताहै ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितचंद्रफलम् ।

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्तिर्मूर्तिस्सत्त्वसंतोषयुक्ता ॥
चंचल्लक्ष्मीः शीलसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें चंद्रमा बैठाहोय वह मनुष्य राजाओंकरके धन प्राप्तकरनेवाला बडे यशवाला सुंदर रूप और बल संतोषकरके सहित बडी लक्ष्मी और शील-वती स्त्रियोंवाला होताहै ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितचंद्रफलम् ॥

सन्माननानाधनवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ॥
प्रसन्नतालाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य अनेकप्रकारके सन्मान और धन वाहनोंको प्राप्त करनेवाला यश और श्रेष्ठभोग तथा गुणोंको प्राप्त करनेवाला प्रसन्नताको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितचंद्रफलम् ।

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यंस्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ॥
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठशील और मित्रोंकरके रहित और आंखोंमें विकलताको प्राप्त शत्रुओंकी वृद्धिको प्राप्त और क्रोधित होताहै ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितभौमफलम् ।

अतिमतिभ्रमतां च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहसमुन्नताम् ॥
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च ॥१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें मंगल बैठा होय वह मनुष्यकी बुद्धिमें भ्रम और घावयुक्त देहवाला हठकरके सहित जानेआनेका काम करता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितभौमफलम् ।

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ॥
तनुभृतो विदधाति विरोधतां धननिकेतनगोऽवनिनंदनः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दूसरे भावमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य धनहीन दुष्टजनोंका आश्रय करनेवाला दुष्टबुद्धि कृपारहित होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितभौमफलम् ।

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ॥
धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य राजाकी कृपासे उत्तम सौख्यको प्राप्त उदारता सहित श्रेष्ठ है पराक्रम जिसका धनवान भाइयोंके सुखसे हीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितभौमफलम्।

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासो कलेवरे रुग्बलताऽबलत्वम् ॥
प्रसूतिकाले किल मंगलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें मंगल बैठाहोय तो वह मनुष्य मित्रजनों करके और सवारीसे दुःखको प्राप्त परदेशमें रहनेवाला अधिक रोगों करके शरीरसहित निर्बल देह होता है यह श्रेष्ठ जनोंने कहा है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थभौमफलम्।

कफानिलाद्व्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ॥
मतिर्विलोमा विपुलात्मजेस्मिन्प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें मंगल बैठाहोय वह मनुष्य कफ और वातरोग करके पीडित स्त्री मित्र पुत्रोंके सुखको नहीं प्राप्त उलटी बुद्धिवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितभौमफलम्।

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोषावेशः शत्रुवर्गोपशांतिः ॥
सद्भिः संगोनंगबुद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें मंगल बैठाहोय उस मनुष्यकी जठराग्नि अधिक प्रबल होतीहै क्रोधित स्वरूप शत्रुओंका नाशकरनेवाला सज्जनपुरुषोंका संग करनेवाला कामकलामें बुद्धि हमेशा रखता है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम् ॥

नानानर्थैर्व्यर्थचिंतोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम् ॥
दारारागात्यंतदुःखप्रतप्तं दारागारेऽगारकोयं करोति ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें मंगल बैठाहोय वह मनुष्य अनेक अनर्थों-करके व्यर्थ चिंता करके और शत्रुसमूहकरके पीड़ित होता है और स्त्रीजनित दुःखकरके संतापित होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम्।

वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्मप्रवृत्तिः ॥
बुद्धेरांध्यं सज्जनानां च निंदा रंध्रस्थाने मेदिनीनंदनेऽस्मिन् ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें मंगल बैठाहोय उस मनुष्यके आंखोंमें विकल-ता होतीहै और दुर्भगताको प्राप्त वह रक्तविकारकरके पीडित नीचकर्मोंमें उसकी प्रवृत्ति और बुद्धिका अंधा होता है॥ ८॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम्।

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिं भूमीपतेर्गौरवतोल्पलब्धिम्॥
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य हिंसा करनेमें मनकी प्रवृत्ति करनेवाला राजाकरके गौरवताको थोडी प्राप्त पुण्य और धनको नाश करनेवाला होता है॥ ९॥

अथ दशमभावस्थितभौमफलम्।

विश्वंभरापतिसमत्वमतीव तोषं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रय-त्नम्॥ चंचद्विभूषणमणिद्विविधागमांश्च मेषूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम्॥ १०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य राजाके समान अत्यंत आनंदको प्राप्त श्रेष्ठ साहस करनेवाला पराया उपकार यत्नसे करे सुंदर आभूषण मणि अच्छे बुरे प्रकारसे लाभ करता है॥ १०॥

अथैकादशभावस्थितभौमफलम्।

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि॥ भूपप्रसादसुकुतूहलमंगलानि दद्याद्वाप्तिभवने हि सदावनेयः॥ ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य ताँबा और मूँगा; सोना और वस्त्रोंको प्राप्त और सुंदर सवारी सहित राजाकी कृपासे श्रेष्ठ कौतुक मंगलोंको प्राप्त होता है॥ ११॥

अथ द्वादशभावस्थितभौमफलम्।

स्वमित्रवैरं नयनातिबाधां क्रोधाभिभूतं विकलत्वमंगे॥
धनव्ययं बंधनमल्पतेजो व्यये धराजो विदधाति नूनम्॥ १२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें मंगल बैठा होय वह मनुष्य अपने मित्रोंसे वैर करने वाला नेत्रोंकी बीमारी सहित क्रोधयुक्त शरीरमें विकलताको प्राप्त धनका नाश करनेवाला बंधनका भागी थोडे तेजवाला होता है॥ १२॥

अथ लग्नभावस्थितबुधफलम्।

शांतो विनीतः सुतरामुदारो नरः सदाचारपरोऽतिधीरः ॥
विद्वान्कलाज्ञो विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य शांत और नम्रतास-हित निरंतर उदार हमेशा आचारमें तत्पर धैर्यवान विद्वान कलाओंको जाननेवाला बहुत पुत्रोंवाला होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम्।

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः ॥
विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनंदने ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य निर्मल शीलवाला बडों-का प्यारा कुशलतासहित बड़े सुखको प्राप्त बड़ी शोभा करके उन्नतिको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम्।

साहसान्निजजनैः परियुक्तः चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ॥
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शीलभानुतनयेनुजसंस्थे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य हठकरके अपने संबं-धियोंके साथ रहता है चित्तशुद्धिहीन सौख्य रहित अपने दिलके माफिक काम करनेमें चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम्।

सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतः संगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः ॥
विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और अन्न धनसहित गानविद्या और नृत्यमें रुचि रखनेवाला विद्या और भूषणोंका प्राप्त करने-वाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितबुधफलम्।

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रं मंत्रवादकुशलं च सुशीलम् ॥
मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके पंचम भावमें बुध बैठाहो वह मनुष्य पुत्रोंके सौख्यसहित बहुत मित्रोंवाला मंत्रवादमें चतुर श्रेष्ठशीलवाला लीलाकरके सहित होता है ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितबुधफलम् ।

वादप्रीतिः सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसंतप्तचित्तः ॥ नित्यालस्यव्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथात्मजेऽस्मिन् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य झगड़ा करनेमें प्रीतिवाला रोगयुक्त कठोर हृदय अनेकशत्रुओंके उपद्रवकरके संतप्तचित्त हमेशा आलसी व्याकुल होता है ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम् ।

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत् ॥ कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनींदुजे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ शीलवाला वैभव करके शोभित सत्य बोलनेमें तत्पर स्त्री सुवर्ण पुत्र करके सहित होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम् ।

भूतप्रसादात्समस्तसंपन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः ॥ सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्ता रंध्रे भवेच्चंद्रसुतः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य भूतप्रेतोंकी कृपासे सम्पूर्ण संपत्तियोंको प्राप्त बहु विरोध करनेवाला निरंतर अभिमानसहित सम्पूर्ण यत्नोंकरके अन्यकर्मक्रियाको हरनेवाला होताहै ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितबुधफलम् ।

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादरः स्यादनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षो विशेषात् ॥ वितरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चेदमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागतोयम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवम भावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य उपकारकरनेवाली श्रेष्ठ विद्याका जाननेवाला और आदरकरनेवाला नौकर धनपुत्रोंकरके हर्षको प्राप्त संसारसे अनेकप्र उद्यम करनेवाला होताहै ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितबुधफलम् ।

ज्ञानप्रज्ञः श्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासंपत्संयुतो राजमान्यः ॥ नम्रश्लीलावाग्विलासादिशाली मानस्थाने बोधने वर्तमाने ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके दशमभावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य ज्ञानमें चतुर श्रेष्ठ कर्म करनेवाला अनेक प्रकारकी संपत्तियोंकरके संयुक्त राजमान्य सुंदरलीलाओंकरके सहित वाणीके विलासमें श्रेष्ठ होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितबुधफलम्।

भोगासक्तोऽत्यंतवित्तो विनीतो नित्यानंदश्चारुशीलो बलिष्ठः ॥
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नंदने शीतभानोः ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें बुध बैठा होय वह मनुष्य भोगमें आसक्त अत्यंत धनवाला नम्रतासहित नित्यही आनंदको प्राप्त श्रेष्ठ शील बलवान् अनेक विद्याओंका अभ्यास करनेवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम्।

दयाविहीनः स्वजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ॥
धूर्तो नितांतं मलिनो नरः स्याद्व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें बुध बैठा होय वह मनुष्य दयारहित अपने जनोंकरके रहित और अपने कार्यमें चतुर और अपने पक्षको जीतनेवाला निरंतर धूर्त और मलीन होता है ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितगुरुफलम्।

विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ॥
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखंडिसूनौ ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य विद्याकरके सहित राजाओंका प्यारा चतुर कृतज्ञ निरंतर उदार सुंदर शरीरवाला होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितगुरुफलम्।

सद्रूपविद्यागुणकीर्तियुक्तः संत्यक्तवैरोपि नरो गरीयान् ॥
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ रूप विद्या गुण यश करके सहित वैरको छोड़नेवाला त्यागी शीलवान् धनकरके पूर्ण होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितगुरुफलम्।

सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च ॥
नरोग्निमांद्याबलतासमेतः पराक्रमे शक्रपुरोहितेस्मिन् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे भावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य मित्रता करके रहित कृपण और कृतघ्न स्त्री तथा पुत्रकरके प्रीति रहित और मंदाग्नि रोगकरके बलहीन होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजातहर्षः पुरुषः सदैव ॥
नृपानुकंपासमुपात्तसंपद्भोलिभुन्मंत्रिणि भूतलस्थे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य सन्मान सहित अनेक प्रकारके धनवाहनादिकों करके सहित हमेशा आनंदको प्राप्त राजाकी कृपाकरके संपदाको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितगुरुफलम् ।

सन्मित्रमंत्रोत्तममंत्रशास्त्रमुख्यानि नानाधनवाहनानि ॥
दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और श्रेष्ठ पुत्र मंत्रशास्त्र और अनेक प्रकारके धन वाहनोंको प्राप्त कोमलवाणी बोलनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽरातिजनप्रहर्ता ॥
प्रारब्धकार्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेंद्रमंत्री यदि शत्रुसंस्थः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और श्रेष्ठ-विद्याकरके हीन अर्थात् दुष्ट गान और खोटी विद्याओंमें तत्पर अपना यश जिसको प्यारा शत्रु-ओंका नाश करनेवाला प्रारब्धकार्यमें आलसी होताहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितगुरुफलम् ।

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कांतावित्तात्यंतसंजात-सौख्यः ॥ मंत्री मर्त्यः काव्यकर्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवा-भिवंद्ये ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य शास्त्रमें अभ्यास करनेवाला नम्रतासहित स्त्री और धनकरके अत्यंत सौख्यको प्राप्त राजाका मंत्री काव्य करनेवाला होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितगुरुफलम् ।

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोतिदीनो विवेकहीनोविनयोज्झितश्च ॥
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य दूत अर्थात् हलकारेकी वृत्ति करनेवाला मलीन अत्यंत दीन विवेकरहित नम्रताहीन हमेशा आलसी दुर्बलदेह होताहै ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितगुरुफलम् ।

नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः ॥
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसि स्थिते ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य राजाका मंत्री श्रेष्ठ कर्मकरनेवाला सर्वशास्त्रोंके विचारमें मनको लगानेवाला व्रत करनेवाला ब्राह्मणोंकी सेवामें तत्पर होताहै ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितगुरुफलम् ।

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ॥
यशोभिवृद्धिं बहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्ये विजये नराणाम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ राजाके चिह्न छत्रचामरादि और उत्तम वाहनों करके सहित मित्र,पुत्र, लक्ष्मी और स्त्रीके सुखसहित बहुधा यशकी वृद्धिको धारण करताहै ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितगुरुफलम् ।

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि ॥
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवन्द्यो यदि लाभसंस्थः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य सामर्थ्यसहित धनको निश्चय लाभ करनेवाला श्रेष्ठवस्त्र उत्तम रत्न और वाहनोंको प्राप्तकरनेवाला राजाकी कृपासहित होताहै ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितगुरुफलम् ।

नानाचित्तोद्वेगसंजातकोपं पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम् ॥ बुद्ध्या हीनं मानवं मानहीनं वागीशोयं द्वादशस्थः करोति ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें भावमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य अनेकप्रकारके चित्त-के उद्वेगों करके क्रोधसहित पापी आलसी त्याग करीहै लज्जा जिसने बुद्धिकरके हीन मानरहित होताहै ॥ १२ ॥

अथ लग्नभावस्थितशुक्रफलम् ।

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवः पुमान् ॥
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य बहुतकलाओंमें चतुर सुंदर-वाणीवाला श्रेष्ठस्त्रीकरके कामकलासहित राजाकरके मान और धनसहित होताहै ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशुक्रफलम् ।

सदन्नपानाभिरतं नितांतं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम् ॥
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनंदनोयम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न और पानकरनेमें तत्पर श्रेष्ठ वस्त्र और भूषणधनवाहनों करके युक्त और विचित्रकार्यका जाननेवाला होताहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशुक्रफलम् ।

कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनानुतप्तः ॥
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य दुर्बल अंगोंवाला कृपण दुष्टात्मा धनहीन कामदेवकरके संतापित सत्पुरुषोंको दुःख देनेवाला बहुत दुष्ट चेष्टावाला होताहै ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम् ।

मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानां नानासौख्यं वंदनं देवतानाम् ॥
नित्यानंदं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोयम् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थभावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य मित्र और स्थान ग्राम और वाहनोंका अनेक सौख्य पानेवाला और देवताओंकी वंदना करनेवाला हमेशा आनंदको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशुक्रफलम् ।

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ॥
नरपतेर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शुक्र बैठाहोय वह सम्पूर्ण कान्यकलाओंकरके सहित पुत्र और वाहन अन्नकरके सहित राजाकरके बड़े गौरवको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

अथ शत्रुभावस्थितशुक्रफलम् ।

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ॥
विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेरिगतेरिभयान्वितः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य स्त्रियोंका प्यारा नहीं निश्चयकरके कामदेवकरके हीन निर्बलताकरके सहित शत्रुओंके भयकरके युक्त होताहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशुक्रफलम् ।

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ॥
अतितरां नटिनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनंदने ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य बहुत कलाओंमें चतुर जलक्रीडा करनेवाला विषयकरनेमें बड़ा चतुर अत्यंत चंचल स्त्रियोंसे मित्रता करनेवाला होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशुक्रफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिर्नृपमानलब्धः शठोतिनिःशंकतरः सगर्वः ॥
स्त्रीपुत्रचिंतासहितः कदाचिन्नरोष्टमस्थानगते सिताख्ये ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य प्रसन्नरूप राजाकरके मानको प्राप्त शठ निर्भय अभिमानी स्त्री और पुत्रोंकी चिंता कभी करनेवाला होताहै ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितशुक्रफलम् ।

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः प्रतिदिनधनयानात्यंतसंजातहर्षः ॥ मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो भवति नवमभावे संभवे भार्गवेस्मिन् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शुक्र बैठाहोय वह मनुष्य अतिथि गुरु देवताओंका पूजनकरनेवाला तीर्थयात्रामें खर्चकियाहै धन जिसने हरएक दिन धन और वाहनोंकरके हर्षको प्राप्त मुनीश्वरोंके समान वेष धारणकरनेवाला क्रोधरहित होताहै ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितशुक्रफलम् ।

सौभाग्यसम्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमनः धनाढ्यः ॥
कांतासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्यगते नरस्य ॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक दशममें बैठा होय वह मनुष्य सौभाग्य और सम्मानकरके विराजमान स्नान पूजन ध्यानसे मनको लगानेवाला धनवान् स्त्रीपुत्रोंमें अत्यंत प्रीति नित्यही करनेवाला होताहै ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितशुक्रफलम् ।

सङ्गीतनृत्यादरता नितांतं नित्यं च चिंतागमनानि नूनम् ॥
सत्कर्मधर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लोभगतो यदि स्यात् ११॥

जिस मनुष्यके एकादशभावमें शुक बैठाहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत और नृत्यमें प्रीति करनेवाला नित्य ही यात्राकी चिंता करनेवाला श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें चित्तको लगानेवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितशुक्रफलम् ।

संत्यक्तसत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ॥
दयालुतासत्यविवर्जितश्च काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें शुक बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठकर्मके मार्गको त्यागनेवाला कामदेवके विषे चित्तको लगानेवाला दया और सत्यरहित होताहै ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितशनिफलम् ।

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चे त्रिकोणर्क्षगते विलग्ने ॥
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें तुला, मकर, कुंभ राशिगत शनैश्चर बैठाहोय वह मनुष्य देश नगरका स्वामी राजा होताहै और अन्यराशिगत शनैश्चर लग्नमें बैठाहोय तो वह मनुष्य दुःखी रोगसहित दारिद्री होताहै ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितशनिफलम् ।

अन्यालयस्थो व्यसनाभितप्तो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात् ॥
देशान्तरे वाहनराजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें शनिश्चर बैठाहोय वह मनुष्य व्यसनों करके सहित मनुष्यों करके त्यागाहुआ होताहै जो उच्चस्वक्षेत्रके विना अन्यराशियोंमें शनि बैठा होय तो और जो तुला मकर कुंभराशिवर्ती शनैश्चर होय तो वह मनुष्य परदेशमें वाहन और राजसमान्यताको प्राप्त होताहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम् ।

राजमान्यशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ॥
पालको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें शनैश्चर बैठाहोय वह मनुष्य राजाकरके माननीय श्रेष्ठ वाहनोंकरके सहित ग्रामपति बड़ा बलवान बहुत आदमियोंका पालनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम् ।

पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलांगम् ॥
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलनीशजन्मा॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर चतुर्थभावमें बैठाहोय वह मनुष्य पित्त वात करके क्षीणबल वाला दुष्टशीलवान् आलस्यसहित झगड़ाकरनेवाला दुर्बलदेह दारिद्र्यका भागी होताहै ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशनिफलम् ।

सदा गदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनंगहानिम् ॥
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितः पुत्रभयं करोति ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें शनैश्चर बैठाहोय वह मनुष्य हमेशा रोगकरके दुर्बलदेहवाला धनहीन और कामदेवकी हानिकरनेवाला पुत्रोंको भय करताहै ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितशनैश्चरफलम् ।

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुज्ञाभ्यनुज्ञापरिपालकः स्यात् ॥
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निरर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठेभावमें शनैश्चर बैठाहोय वह मनुष्य शत्रुदलको जीतनेवाला गुणोंका जाननेवाला श्रेष्ठ कर्मोंको जाननेवाला और बहुतोंको पालनेवाला पुष्टदेहकी संधिवाला बलवान्है जठराग्नि जिसकी और श्रेष्ठ होताहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम् ।

आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः ॥
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें शनैश्चर बैठाहोय वह मनुष्य रोगकरके निर्बलताको प्राप्त और आजीविका तथा मनुष्योंसे मित्रतारहित स्त्री घर और अन्नकरके दुःखित होताहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम् ।

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतो भयतोषविवर्जितः ॥
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते स्थिते॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य दुर्बलदेह निश्चयकर दद्रोग और फुड़ियोंकी बीमारीवाला भय और संतोषकरके हीन आलस्यसहित होताहै ॥ ८॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम् ।

धर्मकर्मसहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजोतिमनोज्ञः ॥
संभवस्य समये किल कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थः॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य धर्मकर्म करके सहित विकलदेह दुष्टबुद्धि अत्यंत सुंदर होता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितशनिफलम् ।

राज्ञः प्रधानमतिर्नीतियुतं विनीतं संग्रामवृंदपुरभेदनकाधिकारम् ॥ कुर्य्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्ण मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें शनैश्चर बैठा होय तो वह मनुष्य राजाका मंत्री नीतियुक्त बुद्धिवाला नम्रता सहित श्रेष्ठ ग्राम और नगरके भेदकरनेका अधिकारी चतुर धनकरके सहित होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितशनिफलम् ।

कृष्णाश्वानामिंद्रनीलोर्णकानां नानाचंचद्धस्तुदंतावलानाम् ॥
प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां बलीयान्प्राप्तिस्थाने वर्तमानोर्कसूनुः ११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य काले घोड़े और इन्द्रनील मणि पूर्ण वस्त्र बड़े हाथियोंके लाभको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावस्थितशनिफलम् ।

दयाविहीनो विधनो व्ययार्तः सदालसो नीचजनानुयातः ॥
नरोंगभंगोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहवें भावमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य दयारहित धनहीन खर्च करके दुःखी हमेशा आलसी नीच मनुष्योंका साथी अंगभंगसे सर्व सौख्य रहित होता है ॥ १२ ॥

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं पञ्चभावोद्भवं फलम् ॥
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि संमतम् ॥ १३ ॥

जो तन्वादिभावस्थ भावजनित फल शनैश्चरका कहा है सो शनिश्चरके समान राहुकाभी फल जानना चाहिये यह निश्चैकर मुनीश्वरोंकी सम्मति है ॥ १३ ॥

अथ फलमानमाह ।

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं हि धत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्द्धमेव ॥
फलांघ्रिमात्रं रिपुमंदिरस्थः चास्तंप्रयातः खचरो न किंचित् १४

जो ग्रह अपने उच्चमें बैठा हो वह पूर्ण फल देताहै जो ग्रह स्वक्षेत्र वा मित्रराशिमें बैठा होय तो वह ग्रह आधा फल देता है जो ग्रह शत्रु क्षेत्रमें बैठा होय वह चतुर्थांश फल देताहै जो ग्रह अस्तंगत है वह कुछभी फल नहीं देता है ॥ १४ ॥

अथ तनुभावस्थितराहुफलम् ।

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावं नरं च कुर्यात्स्वजनानुवंचकम् ॥
शीर्षेऽव्यथाकामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य दुष्ट बुद्धि खोटे स्वभाववाला अपने संबंधियोंको ठगनेवाला शिरमें रोग वीर्य करके सहित झगड़ेमें जीतको प्राप्त रोग सहित होता है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितराहुफलम् ।

धनगतो रविचंद्रविमर्दनो मुखरतांकितभावमथो भवेत् ॥
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोऽटनम् २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा होय तो वह मनुष्य अप्रिय वाणी बोलनेवालेके भावको प्राप्त धनका नाश करनेवाला दरिद्री भ्रमण करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सहजभावस्थितराहुफलम् ।

दुश्चिक्येरिभवं भयं परिहरंल्लोके यशस्वी नरः श्रेयो वादि-भवं तदा हि लभते सौख्यं विलासादिकम् ॥ भ्रातॄणां नि-धनं पशोश्च मरणं दारिद्र्यभावैर्युतं नित्यं सौख्यगणैः पराक्र-मयुतं कुर्याच्च राहुः सदा ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे राहु बैठा होय तो वह मनुष्य शत्रुओंसे होनेवाले भयको नाश करनेवाला संसारमें यश वा कल्याण और ऐश्वर्यको प्राप्त और सौख्यविलासादि-कोंका लाभ करनेवाला भ्राताओंकी मृत्युकर्ता पशुओंकी मृत्यु करनेवाला दारिद्र करके और नित्यही सौख्य समूह व बल करके सहित होता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम् ।

सुखगते रविचंद्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत् ॥
स्वजनतां सुतामित्रसुखं नरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम् ४॥

जिस मनुष्यके चतुर्थभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य सुखके नाशको प्राप्त स्वजनता और मित्रोंकरके सुखको नहीं प्राप्त हमेशा भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितराहुफलम् ।

गतसुखो न हि मित्रविवर्धनं ह्युदरशूलविलासनिपीडनम् ॥
खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचंद्रविमर्दने ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य सुखहीन मित्ररहित पेटमें दर्दको प्राप्त विलासकी हानिको प्राप्त निश्चय करके भ्रमको लाभ करता है ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितराहुफलम् ।

शत्रुक्षयं द्रव्यसमागमं च पशुप्रपीडां कटिपीडनं च ॥
समागमं म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जंतुर्यदि षष्ठगस्तमः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य वैरियोंका नाश करने वाला धनका लाभ करता पशुओंको पीडा करनेवाला कमरमें दर्दको प्राप्त म्लेच्छोंसे समागमको प्राप्त बडा बलवान् होताहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितराहुफलम् ।

जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचंडरूपामथ कोपयुक्ताम् ॥
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जंतुर्मदने तमे च ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें राहु बैठाहोय वह मनुष्य स्त्रीसे विरोध करने-वाला अथवा स्त्रीको नाश करनेवाला प्रचंडरूप क्रोधसहित झगडा करनेवाली रोगसहित भार्याको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितराहुफलम् ।

अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम् ॥
प्राप्नोति जंतुर्विकलाखिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य अनिष्टनाशको प्राप्त निश्चयकरके लिंग गुदामें पीडाको प्राप्त प्रमेहरोगवाला अंडवृद्धिसहित विकलताको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितराहुफलम्।

धर्मार्थनाशः किल धर्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य ॥
दरिद्रता बंधुसुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें राहु बैठा होय तौ वह मनुष्य धर्म अर्थके नाश-को प्राप्त सुखकी अल्पता भ्रमण करनेवाला दरिद्री भाइयोंके सुखको थोड़ा करता है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितराहुफलम्।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ॥
रुजो वाहने वातपीडां च जंतोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् १०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य पिताके सुखको नहीं प्राप्त आपभी दुष्ट भाग्यवाला वैरियोंका नाश करनेवाला वाहनोंको रोगदाता वातकी पीडा सहित होता है औरजो वृष वा मीनराशिवर्ती राहु होय तौ सौख्य और कष्टका भागी होता है १०

अथैकादशभावस्थितराहुफलम्।

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधञ्च मानम् ॥ वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं प्राप्नोति सौख्यविजयो च मनोरथं च ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्यारहें भावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य सब प्रकारके धनको लाभ करनेवाला अधिक सौख्यको प्राप्त राजाओंके समूहकरके अनेक प्रकारके मानसहित वस्त्रादिक सुवर्ण चौपायोंके सौख्यका भागी सौख्य विजय और मनोरथको प्राप्त होताहै॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम्।

नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपंचभावं किल वत्सलत्वम् ॥
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति जातं व्ययगे तमे वा ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें व्ययभावमें राहु बैठाहोय वह मनुष्य नेत्रोंका रोगी पैरोंमें घाव प्रपंच करनेवाला प्रीतियुक्त दुष्ट जनोंमें रति जिसकी मध्यमपुरुषोंकी सेवा करताहै ॥ १२ ॥

अथ तनुभावस्थितकेतुफलम्।

यदा लग्नगश्चेच्छिखी मूत्रकर्त्ता सरोगादिभोगो भयव्यग्रता-च ॥ कलत्रादिचिंता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें केतु बैठा होय वह मनुष्य सूत्रकर्ता होताहै रोगा- देकों करके सहित भय से व्यग्रचित्त स्त्रियोंकी चिंता उद्वेगसहित वातविकार युक्त शरीर होताहै ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितकेतुफलम् ।

धने चेच्छिखी धान्यनाशो धनं च कुटुंबाद्विरोधो नृपाद्द्रव्यचिंता॥
मुखे रोगता संततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहेतिसौख्यम् २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें राहु बैठा होय वह मनुष्य धन धान्यका नाश करनेवाला कुटुंबसे विरोध करनेवाला राजासे धनकी चिंता करनेवाला मुखमें रोग हमेशा होवे और जो केतु अपनी राशिमें वा शुभग्रहकी राशिमें वा धनभावमें बैठा होवे तो अत्यंत सौख्यको पाताहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ॥
भवेद्बंधुनाशः सदा बाहुपीड़ा सुखं स्वोच्चगेहे भवोद्वेगता च॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तृतीयभावमें केतु बैठा होय वह मनुष्य शत्रुओंका नाश कर- नेवाला शत्रुओंसे झगडा करनेवाला धनभोग ऐश्वर्यके तेजको अधिक प्राप्त भ्राताओंका नाश- करनेवाला हमेशा बांहोंमें पीड़ा करनेवाला होता है और अपने उच्चमें केतु बैठा होय तौ सुखको करता व उद्वेग देता है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितकेतुफलम् ।

चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति ॥
शिखी बंधुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें केतु बैठा होय वह मनुष्य माताका सुख कभी नहीं पाता मित्रवर्ग और पितासे नाशको प्राप्त भ्राता हीन होताहै और जो उच्चराशिमें केतु बैठा होय तो वह पूर्वोक्त सब प्रकारके सौख्योंको प्राप्त थोड़ा सुखी हमेशा व्यग्रचित्त होताहै ४॥

अथ पंचमभावस्थितकेतुफलम् ।

यदा पंचमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे घातपातादिकष्टम् ॥
स बंधुप्रियः संततिः स्वल्पपुत्राः सदा स्वं भवेद्वीर्ययुक्तो नरश्च ५॥

जिस मनुष्यके पंचमभावमें केतु बैठा होय वह मनुष्य अपने उदरमें क्षत और गिरनेसे कष्टको प्राप्त और भाइयोंसे प्यारकरनेवाला थोड़े पुत्रवाला हमेशा बलसहित होताहै ॥ ५ ॥

अथ रिपुभावस्थितकेतुफलम्।

शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातृपक्षाच्च तन्मानभंगः॥ चतुष्पात्सुखं द्रव्यलाभो नितांतं न रोगोस्य देहे सदा व्याधिनाशः॥ ६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे भावमें केतु बैठा होय वह मनुष्य शत्रुओंका नाश करनेवाला और मामाके पक्षसे मानभंगको प्राप्त चौपायोंकरके सुखी हमेशा धनका लाभ करनेवाला नीरोगी देहव्याधिको नाश करता है॥ ६॥

अथ सप्तमभावस्थितकेतुफलम्।

शिखी सप्तमे मार्गतश्चित्रवृत्तिं सदा वित्तनाशोऽथवा वारिभूतः॥ भवेत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययेत्युग्रता च॥७॥

जिस मनुष्यके सातवें भावमें केतु बैठा होय वह मनुष्यकी मार्गकी चिंतामें चित्तकी वृत्ति रखनेवाला हमेशा धनका नाश शत्रुओंकरके होताहै और वृश्चिकराशिवर्ती केतु होय तो हमेशा लाभ करनेवाला कलत्रादिकोंको पीड़ा और चित्तको विकार होताहै॥ ७॥

अथाष्टमभावस्थितकेतुफलम्।

गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभो यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा॥ भवेच्छिद्रगे राहुछाया यदा स्यादजे गोलिगे जायते चातिलाभः॥ ८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टमभावमें केतु बैठाहोय तौ उस मनुष्यकी गुदामें पीड़ा होती है और जो केतु कर्ककन्या मिथुनराशिका होय तौ वाहन और धनका लाभ करताहै और जो वृश्चिक मेष वृष राशिवर्ती होय तो अत्यंत लाभ कराता है॥ ८॥

अथ नवमभावस्थितकेतुफलम्।

यदा धर्मगः केतवः क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः॥सहेत व्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्य वृद्धिं करोति॥ ९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नवमभावमें केतु बैठा होय वह मनुष्य क्लेशका नाश करनेवाला पुत्रकी इच्छा रखनेवाला म्लेच्छों करके जिसकी भाग्यवृद्धि होती है और म्लेच्छों करके पीडाभी होती है और बांहोंमें रोगवाला तप और दान करके हास्यवृद्धिको प्राप्त होता है॥ ९॥

अथ दशमभावस्थितकेतुफलम् ।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति॥ रुजो वाहने वातपीड़ा च जंतोर्यदा कन्यकास्थः सुखी कष्ट भाक्च !! १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें केतु बैठा होय उस मनुष्यको पिताका सौख्य नहीं दुष्टभाग्यवाला वैरियोंका नाश करनेवाला रोगयुक्त वाहनोंकी पीडाप्राप्त वातरोग सहित करता है और जो वही केतु कन्याराशिवर्ती होय तो सुख और दुःख दोनोंका भागी होता है ॥ १० ॥

अथैकादशभावस्थितकेतुफलम् ।

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रो पि यस्य ॥ गुदे पीड्यते संततेर्दुर्भगत्वं शिखी लाभगः सर्व- कालं करोति ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकादशभावमें केतु बैठा होय तो वह मनुष्य श्रेष्ठवाणी बोल- नेवाला श्रेष्ठ विद्यावाला अधिक दर्शनीय स्वरूप जिसका श्रेष्ठ भोगोंकरके युक्त श्रेष्ठ तेज- वाला सुंदर वस्त्रोंसहित होता है गुदामें रोगवाला दुष्टपुत्रोंवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ व्ययभावस्थितकेतुफलम् ।

शिखी रिःफगः पादनेत्रेषु पीड़ा स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति ॥ रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्म रुजा पीड्यते वस्ति- गुह्यं सरोगम् ॥ १२ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते तन्वादिद्वादशभावस्थितग्रह- भावफलाऽध्यायः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केतु बारहें बैठा होय वह मनुष्य पैर और नेत्रोंमें पीडा राज तुल्य वैभवको खर्च करनेवाला शत्रुओंका नाश करता मनमें सुखी नहीं वस्ति और गुदाके रोग करके पीडित होता है ॥ १२ ॥

इति श्रीगंगाकलेवंशगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक पण्डितश्यामलाल- कृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां तन्वादिभावस्थितग्रहभावफलाध्यायः ॥ ३ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगोवर्द्धनधारिणे नमः ॥

अथ दृष्टिशीलाध्यायप्रारंभः ।

अथ ग्रहाणां दृष्टिमाह ।

दृष्टिर्दिक् १० त्रितये ३ गृहे नव ९ शरे ५ वेदा ४ ष्टके ८ कामभे ७ पश्यंत्यर्कविधुज्ञदेवगुरवः पादाभिवृद्ध्या क्रमात् ॥ मंदेज्यक्षोणिभूनां चरणद्विचरणावह्निपादं तथैव पूर्णाः पश्यंति भावं मुनिवरभणितिः सर्वतन्त्रेषु धीरा ॥ १ ॥

अथ ग्रहोंकी दृष्टि कहतेहैं सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक, क्रमकरके चरणवृद्धिकरके इन स्थानोंको देखतेहैं अर्थात् ३ । १० एकचरण ९ । ५ दो चरण ४ । ८ तीन चरण ७ पूर्ण चारोंचरणसे देखतेहैं । इसीतरह शनैश्चर, मंगळ, बृहस्पति, एकचरण, दोचरण, तीनचरण, चारों चरण देखतेहैं सब ग्रंथोंमें धीर मुनीश्वर कहतेहैं । अर्थात्, शनिश्चर, १० । ३ । पूर्ण ९ । ५ एक चरण ४ । ९ दोचरण ७ तीनचरण । बृहस्पति ९ । ५ पूर्ण ४ । ८ एक चरण । ७ । दोचरण १० । ३ तीनचरण मंगल ४ । ८ पूर्ण ७ एकचरण १० । ३ दोचरण ९ । ५ तीन चरणसे देखता है ॥ १ ॥

अथ ग्रहाणां दृष्टिचक्रम् ।

राशी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सू.चं.बु.शु.	०	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०
श.	०	०	४	२	१	०	३	२	१	४	०	०
बृ.	०	०	३	१	४	०	२	१	४	३	०	०
मं.	०	०	२	४	३	०	१	४	३	२	०	०

अथ मेषादिगृहे रवौ ग्रहदृष्टिफलमाह

तत्र-भौमगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम् ।

दानधर्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्गृहप्रियः ॥ आवनेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते सति ॥ २ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिकराशिमें स्थित सूर्यको चंद्रमा देखताहोय तो वह मनुष्य दान और धर्म सहित बहुत नौकरोंवाला कोमल और निर्मल देहवाला अपना घर उस्को बड़ प्यारा होताहै ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

क्रूरो नरः संगरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलं बलीयान् ॥
भवेदवश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिगत बैठाहोय और उस्को मंगल देखता होय वह मनुष्य क्रूर संग्राममें धीर और आंखें पैर जिस्के लालवर्ण और पूर्ण बलवान् होताहै ॥ ३ ॥

अथ भौमगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ॥
भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिक राशिमें बैठाहोय और उसको बुध देखता होय वह मनुष्य सुख और पराक्रम तथा धनकरके हीन दूतोंका काम करनेवाला परदेशमें वास करे हमेशा मलीन शत्रुओंकरके सहित होताहै ॥ ४ ॥

अथ भौमगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमंत्री कुलधुर्यवर्यः ॥
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेषवृश्चिक राशिमें बैठाहोय उसको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य राजाका मंत्री दाता दयावान् बहुत धनवाला अपने कुलमें अग्रणीय (श्रेष्ठ) होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

हीनाङ्गनाप्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ॥
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेभिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेष वृश्चिकराशिमें बैठाहोय और उस्को शुक्र देखताहोय वह मनुष्य हीनवर्णकी स्त्रीके साथ प्रीतिकरनेवाला अत्यंत दीन धनकरके हीन दुष्टमित्रोंवाला और उस्की त्वचामें विकार होताहै ॥ ६ ॥

अथ भौमगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

उत्साहहीनो मलिनोति दीनो दुःखान्वितो वै विमतिर्नरः स्यात्॥
कर्ते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मेषवृश्चिक राशिमें बैठाहोय उसको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य उत्साहरहित मलीन अत्यंत दीन दुःखसहित बुद्धिहीन होताहै ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम्।

वराङ्गनाप्रीतिकरो नितांतं स्याद्भूरिभार्यः सलिलोपजीवी ॥
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुला राशिमें बैठाहोय और उसको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठस्त्रियोंसे प्रीतिकरनेवाला बहुत स्त्रियोंवाला जलके व्यापारसे आजीविका करनेवाला होताहै ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामधीरोनितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्तिः ॥
क्षीणो नरः स्याद्भृगुमंदिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठाहोय उसको मंगल देखताहोय वह मनुष्य संग्राममें धीरजवाला अत्यंत तेजवाला श्रेष्ठसाहसकरके धनको प्राप्तकरनेवाला और यशवान् होताहै ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

संगीतसत्काव्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात् ॥
प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलराशिमें बैठा होय और उसको बुध देखत होय तौ वह मनुष्य संगीत विद्या और सत्काव्यकी कलाओंके समूहको करनेवाला और लेखक्रियामें कुशल प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

वंशानुमानं नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा ॥
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रयाते दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य वृष वा तुलाराशिमें बैठा होय और उसको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य अपने वंशके समान राजाका प्रधानमंत्री श्रेष्ठरत्न और भूषण तथा धन सहित डरपोक होताहै ॥ ११ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः ॥
भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको गुरु देखता होय वह मनुष्य सुंदरनेत्रोंवाला शोभायमान देह व प्रधान होताहै और शत्रु मित्रोंकरके सहित चिंतायुक्त होताहै ॥ १२ ॥

अथ शुक्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

दीनोर्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः ॥
असाधुवृत्तामयपुरः स्याच्छुक्रालयेर्केर्कसुतेन दृष्टे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य दीन धनहीन आलस्यसहित और स्त्रीके साथ भिन्नमनवाला दुष्ट आजीविका करनेवाला रोग युक्त होताहै ॥ १३ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ॥
निरंतरोद्वेगकरो नरः स्यात्सौम्यालयेर्के हरिणांकदृष्टे ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्या राशिमें सूर्य बैठा होय और उसको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य मित्र और शत्रुओंकरके परिपीड़ित परदेश जानेवाला धनहीन हमेशा उदास रहनेवाला होताहै ॥ १४ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोत्यंतदीनो रणजयविधिहीनोऽत्यंतसंजातलज्जः ॥ भवति ननु मनुष्यः सालसश्चापि हंसे बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको मंगल देखता होय वह मनुष्य शत्रुओंकरके भयभीत कलहादिकरके युक्त अत्यंत दीन संग्राममें हारनेवाला अत्यंत लज्जाको प्राप्त आलसी होताहै ॥ १५ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

भूपप्रसादोन्नतिमात्मजानां सहंति नो शत्रुजनास्तमित्राः ॥
प्रसूतिकाले नलिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थे च बुधेन दृष्टे ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिगत सूर्य बुधकरके दृष्ट होय तो वह मनुष्य राजाकी कृपाकरके पुत्रोंके ऐश्वर्यसे उसके मित्र और शत्रु हमेशा संतापको प्राप्त होते हैं ॥ १६ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम्।

सुगुप्तमंत्रोतितरां स्वतंत्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ॥
भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य छिपे हुए मंत्रवाला अत्यंत स्वतंत्र स्त्री पुत्रादिकोंके गर्व सहित होता है ॥ १७ ॥

अथ सौम्यगृहे भृगुदृष्टिफलम्।

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्राङ्कितमूर्तिवर्ती ॥
पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य परदेशका वासकरनेवाला चपल विलास करनेवाला जिस्का देह विष-अग्नि शस्त्रकरके अंकित हो राजाका दूत होताहै ॥ १८ ॥

अथ सौम्यगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

धूर्तोतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें सूर्य बैठा होय उसको शनिश्चर देखता होय वह मनुष्य धूर्त बहुत नौकरोंवाला बुद्धिहीन उद्विग्नचित्त होताहै ॥ १९ ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम्।

पण्यैश्च पानीयभवैर्महार्थी पृथ्वीपतिर्वा सचिवश्च रौद्रः ॥
भवेन्नरो जन्मनि चण्डरश्मौ कर्कटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा होय उसको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य जलसंबंधी व्यापारकरके बड़ा धनवान् राजा वा राज मंत्री बड़ा उग्र होताहै ॥ २० ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

स्वबन्धुवर्गे गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगंदरैर्वा ॥
पीड़ा नराणां हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको मंगल देखताहोय वह मनुष्य अपने बंधु वर्गोंसे चित्तको दूरकरनेवाला सूजनके रोग वा भगंदर रोगकरके पीडित होताहै ॥ २१ ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

विद्यायशोमानविराजमानो भूपानुकंपाप्तमनोभिलाषः ॥
निरस्तशत्रुश्च बुधे न दृष्टे कर्कटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् ॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बुध देखता होय वह मनुष्य विद्या और यश तथा मानकरके विराजमान राजाकी कृपासे मनकी अभिलाषाको प्राप्त शत्रुओंकरके रहित होताहै ॥ २२ ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपालसंप्राप्तमहापदार्थः ॥
भवेन्नरः शीतकरर्क्षपाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥ २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित सूर्यको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य अपने कुलमें श्रेष्ठ निर्मलयशवाला राजाकरके बड़े पदको प्राप्त होताहै ॥ २३ ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ॥
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे ॥ २४ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठाहोय और उसको शुक्र देखताहोय तो वह मनुष्य स्त्रीके आश्रयसे वस्त्र और धनको प्राप्तकरनेवाला और पराये काममें हृदयसे विषादपैदा-करताहै ॥ २४ ॥

अथ चंद्रगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

कफानिलार्तः पिशुनोन्यकार्ये स्यादंतरायश्चपलस्वभावः ॥
क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मंदनिरीक्ष्यमाणे ॥२५॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य बैठा होय और उसको शनिश्चर देखता होय वह मनुष्य कफ और वातकरके दुःखी और पराये कार्यमें विघ्नडालनेवाला चपलस्वभाव-वाला क्लेशी होताहै ॥ २५ ॥

अथ निजागारगते रवौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

धूर्तो गभीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्धार्थयुतः प्रसिद्धः ॥
मित्र निजक्षेत्रयुते प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २६ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठाहोय और उसको चंद्रमा देखताहोय तो वह मनुष्य धूर्त और गंभीर राजाकरके मानको प्राप्त धनकी प्राप्तिसे धनवान् प्रसिद्ध होताहै ॥ २६ ॥

अथ निजागारगते रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः ॥
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेर्के कुसुतेन दृष्टे ॥ २७ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठाहोय और उसको मंगल देखता होय वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला अत्यंत धूर्त कफप्रकृतिवाला बड़ा शूरवीर उद्यमी होता है ॥ २७ ॥

अथ निजागारगते रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

धूर्तो नृपानुव्रजनः सुसत्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च ॥
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्यनिरीक्ष्यमाणे ॥ २८ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठाहोय और उसको बुध देखताहोय वह मनुष्य धूर्त राजाकी आज्ञामें चलनेवाला बलवान् पंडितोंमें प्रीतिकरनेवाला लेखकरनेमें तत्पर होताहै ॥ २८ ॥

अथ निजागारगते रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्ता स्वजने प्रियश्च ॥
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेर्के मृगराजसंस्थे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठाहोय उसको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य देवताओंके स्थान और तालाव बावड़ीका बनानेवाला अपने जनोंसे प्रीति करनेवाला होताहै ॥ २९ ॥

अथ निजागारगते रवौ भृगुदृष्टिफलम्

त्वग्दोषरोषापयशोभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ॥
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेर्के भृगुजेन दृष्टे ॥ ३० ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठाहोय और उसको शुक्र देखताहोय तो वह मनुष्य त्वचाके दोषवाला क्रोधसहित अपयशका भागी उत्सवरहित अपने जनोंकरके त्यागा हुआ सत्य और दयारहित होताहै ॥ ३० ॥

अथ निजागारगते रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

शठो नरः कार्यविघातकर्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ॥
नरो मृगेंद्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ २१ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें बैठाहोय और उसको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य शठ कामका बिगाड़नेवाला अपने मनुष्योंकरके संतापको प्राप्तहोताहै ॥ २१ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

कामकांतिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली ॥
स्यान्नरः सुरपुरोहितभस्थे भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ॥२२॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें सूर्य धन मीन राशिमें बैठाहोय और उसको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य शोभायमान देहवाला पुत्र सौख्यसहित वाणीके विलासमें कुशल कुलवान् होताहै ॥ २२ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसङ्गः ॥
स्थिराश्रमोजीवगृहस्थितेर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥२३॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठाहोय और उसको मंगल देखताहोय तो वह मनुष्य संग्राममें विशेष यशको पानेवाला वक्ता होताहै और अपने मनुष्योंके संगसे रहित स्थिरआजीविका करनेवाला प्रचण्ड होताहै ॥ २३ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम् ।

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमंत्रादिविधिप्रवीणः ॥
सतांमतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥२४॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें बृहस्पति बैठाहोय और उसको बुध देखता होय तो वह मनुष्य धातुक्रिया और काव्य कला और कथाओंका जाननेवाला श्रेष्ठवाक्य और श्रेष्ठ मंत्रादिकी विधिमें चतुर सत्पुरुषोंकी संमतिसहित होताहै ॥ २४ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपालमंत्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः ॥
विद्वान्पुमान्भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ २५ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें सूर्य बैठाहोय और बृहस्पतिकरके दृष्टहोय तो वह मनुष्य राजाका मंत्री अपने कुलमें राजा कलाकी विधि जाननेवाला धनधान्यसहित विद्वान् होताहै ॥ २५ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम्।

सुगंधमाल्यांबरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवात्सौख्यः ॥
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ॥ ३६ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें धन और मीन राशिमें सूर्य बैठाहोय उसको शुक्र देखताहोय तो वह मनुष्य सुगंधिवाली माला और सुगंधित वस्त्र धारणकरनेवाला सुंदर स्त्री और आभूषणोंका सौख्य भोगताहै ॥ ३६ ॥

अथ गुरुगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम्।

परान्नभुङ्नीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरो नरः स्यात् ॥
सूर्ये सुराचार्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ ३७ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें धन और मीनराशिमें सूर्य बैठाहोय और उसको शनिश्वर देखता होय तो वह मनुष्य पराये अन्नको भोजनकरनेवाला नीचपुरुषोंमें प्रवृत्ति करनेवाला चौपायोंसे प्रीतिकरनेवाला होताहै ॥ ३७ ॥

अथ शनिगृहे रवौ चन्द्रदृष्टिफलम्।

नारीप्रसङ्गेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चंचलचित्तवृत्तिः ॥
भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मयाते सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर और कुंभ राशिमें सूर्य बैठाहोय और उसको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य स्त्रीके संगकरके धन और सौख्यका नाशकरनेवाला मायाकरनेमें चतुर चंचल-चित्तवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भौमदृष्टिफलम्।

परकलहहतार्थो व्याधिवैरप्रतप्तस्त्वतिविकलशरीरोऽत्यंतचिं-
तासमेतः॥भवति ननु मनुष्यो संभवे तिग्मरश्मौ गतवति सु-
तगेहे दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा होय और उसको मंगल देखता होय वह मनुष्य शत्रुओंसे झगड़ाकरके धनको नाशकरनेवाला और व्याधि वैरकरके संतापित अत्यंत व्याकुलदेह बहुत चिंतावाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिगृहे रवौ बुधदृष्टिफलम्।

क्लीबस्वभावः परचित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात् ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमंदिरस्थे ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर व कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा होय उसको बुध देखता होय

मनुष्य हिंसकोंकेसा स्वभाववाला पराये वित्तको हरणकरनेवाला साधुओं करके रहित शूर होता है ॥ ४० ॥

अथ शनिगृहे रवौ गुरुदृष्टिफलम् ।

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चारुयशा मनस्वी ॥
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे ४१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर और कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा होय उसको बृहस्पति देखता हो वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करनेवाला बुद्धिमान् बहुत पुरुषोंका पालनेवाला श्रेष्ठ यशवाला है ॥ ४१ ॥

अथ शनिगृहे रवौ भृगुदृष्टिफलम् ।

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वराङ्गनाभ्योपि धनोपलब्धिम् ॥
करोति भानुर्ननु मानवानां शून्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिमें सूर्य बैठा होय उसको शुक्र देखता होय मनुष्य शंख मूगा निर्मल रत्न धन सुंदर स्त्रियोंकरके धनकी प्राप्ति करनेवाला होताहै ४२

अथ शनिगृहे रवौ शनिदृष्टिफलम् ।

प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीतिमहाप्रतिष्ठः ॥
प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेर्के शनिना प्रदृष्टे ॥४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिमें सूर्य बैठा होय और उसको शनैश्चर देखता हो वह मनुष्य बड़े प्रतापसे शत्रुओंको जीतनेवाला और राजाकी प्रीतिसे बड़ी प्रतिष्ठाको प्राप्त प्रसन्नमूर्ति होता है ॥ ४३ ॥

इति मेषादिगृहे रवौ दृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिगृहे चंद्रप्रतिग्रहदृष्टिफलम् । तत्रादौ-
मेषे शशाङ्के सूर्यदृष्टिफलम् ।

उग्रस्वभावोपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः ॥
नरो भवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा होय उसको सूर्य देखता होय तौ वह मनुष्य उग्रस्वभाववाला नम्र जनोंसे नम्र धैर्यवान् राजाकरके गौरवसहित संग्राममें डरपोक होता है ॥ १ ॥

अथ मेषगे चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

विषाग्निशस्त्राभ्रमयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च ॥
दन्ताक्षिपीडा निबिडा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा होय और उसको मंगल देखताहोय तो वह मनुष्य विष, अग्नि, वात, वा हथियारसे भयको प्राप्त कभी कभी मूत्रकृच्छ्र रोगवाला बंद आश्रयसहित दांत और नेत्रोंकी पीडा करके सहित होता है ॥ २ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् ॥ भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशांके शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें चंद्रमा बैठा होय और उसको बुध देखताहोय वह मनुष्य प्रकाशवान् निर्मल यशको प्राप्त करनेवाला सर्व विद्याओंमें प्रवीण और धन तथा गुणोंके समूहकरके युक्त सज्जनपुरुषोंकी सम्मति सहित श्रेष्ठ संपत्ति करके प्रतिष्ठित होता है ॥ ३ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा कुलानुभावाद्बहुसंपदाढ्यः ॥ भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य राजाका मंत्री अथवा फौजका स्वामी होताहै और अपने कुलके समान बहुत संपदाओं करके युक्त होता है ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यो भोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः ॥ स्यात्पुरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय तो वह मनुष्य स्त्री और आभूषण धन और पुत्रके सौख्यको भोगनेवाला श्रेष्ठ वक्ता क्रोधरहित गुणोंका जाननेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ मेषराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्सुतम् ॥ क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमाको शनैश्वर देखताहोय तो वह मनुष्य रोगसहित चित्तकी उन्नती करके नष्ट धनहीन झूठ बोलनेवाला दुष्टपुत्रोंवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मांत्रिको वाहनधान्य-
युक्तः ॥ नरो नितांतं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे
शशाङ्के ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखताहोय तौ वह मनुष्य खेती-के कामकरनेमें तत्पर और खेतीकी विधिको जाननेवाला मंत्री वाहन और धान्यकरके युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ॥
प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता होय वह मनुष्य कामातुर स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाला सत्पुरुषोंका मित्र निरंतर पवित्र प्रसन्नमूर्ति होताहै ॥ ८ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ॥
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद्वृषे शशांके शशिजेन दृष्टे ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य चतुर विधियोंका जाननेवाला कृपासहित हर्षयुक्त जीवोंके हितकरनेमें तत्पर गुणोंकरके सहित होताहै ॥ ९ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ॥
भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद्वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य स्त्री और पुत्रोंके आनंदसहित श्रेष्ठकीर्तिवाला धर्मक्रियामें तत्पर मातापिताकी भक्तिमें आसक्तचित्त होताहै ॥ १० ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

भूषणाम्बरगृहासनशय्यागंधमाल्यचतुरंग्रिसुखानि ॥
आप्नोति सततं मनुजानां चंद्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य आभूषण वस्त्र गृह भोजन सुगंधितवाला चौपायोंके सुखसहित होताहै ॥ ११ ॥

अथ वृषराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम्।

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः ॥
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथा परार्धे खलु तातघातम् ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिके पूर्वभागमें चंद्रमा बैठाहोय और उसको शनैश्चर देखताहोय उस मनुष्यकी माता मृत्युको प्राप्तहोतीहै और जो वृषराशिके परार्द्धभागमें चंद्रमा बैठाहोय और उसको शनैश्चर देखताहोय तो उसके पिताको नाशकरताहै यह मुनीश्वरोंने कहाहै ॥ १२ ॥

अथ मिथुनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम्।

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति ॥
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितो भानुमता च दृष्टः ॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखताहोय तो वह मनुष्य चतुर श्रेष्ठ शीलवाला धनहीन निरंतर क्लेशसहित सम्पूर्ण उत्सवोंको प्राप्त होताहै ॥ १३ ॥

अथ मिथुनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम्।

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः ॥
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन ॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाको मंगल देखताहोय वह मनुष्य उदारचित्तवाला चतुर शूरवीर बुद्धिमान् सुज्ञ धनवाहनादिकरके युक्त होताहै ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम्।

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेंद्राप्तधनं करोति ॥
निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगतचंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य धैर्यवान् हमेशा आचारसहित उदार राजाकरके धनको प्राप्तकरताहै ॥ १५ ॥

अथ मिथुनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्।

विद्याविवेकान्वितमर्थवंतं ख्यातं विनीतं सुदरं सुपुण्यम् ॥
करोति मर्त्यं मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य विद्या और विवेकसहित धनवान् प्रसिद्ध नम्रतासहित निरंतर पुण्यवान् होताहै ॥ १६ ॥

अथ मिथुनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

वस्त्रप्रसूनान्नवराङ्गनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः ॥
करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वस्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य वस्त्र पुष्प अन्न श्रेष्ठ स्त्रीकरके सहित श्रेष्ठवाहन और आभूषणोंका सौख्यलाभ करताहै ॥ १७ ॥

अथ मिथुनराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम्।

धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विश्लेषमायाति विगर्हितत्वम् ॥
नरो हि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य धन और स्त्री तथा वाहन पुत्रादिपदार्थोंसे हीन निंदाकरनेवाला होताहै ॥ १८ ॥

अथ कर्कराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

निरर्थकक्लेशकरं विकीर्णैर्नृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम् ॥
कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य निरर्थ-योंमन नीच जातिके मनुष्योंसे क्लेश करनेवाला राजाके आश्रयसे किलेपर अधिकारकरने-वाला होताहै ॥ १९ ॥

अथ कर्कगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणाङ्गयष्टिं मनुजं करोति ॥
कुलीरसंस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान्किल मङ्गलेन॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको मंगल देखताहोय वह मनुष्य चतुर शूरवीर माताके विरुद्ध दुर्बलदेहवाला होताहै ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

दारार्थपुत्रोत्रनिर्भीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवं मनुष्यम् ॥
कर्काश्रिसंस्थे कुरुते हिमांशौ हिमांशुपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः २१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य धन पुत्रकी उन्नति नीतिके सौख्यसहित फौजका मालिक वा राजाका मंत्री होताहै ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते चन्द्रे गुरुदृष्टिफलम्।

नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारुपराक्रमं च ॥
करोति जातं यदि चक्रवर्ती पीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चन्द्रको बृहस्पति देखता होय तो वह मनुष्य राजाकरके अधिकारको प्राप्त गुणवान नीतिका जाननेवाला सुखसहित श्रेष्ठ पराक्रमवाला राजा होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावराङ्गनासौख्ययुतं नितान्तम् ॥
नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्रनिरीक्ष्यमाणः ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ रत्न और सुवर्णकरके सहित और रत्नयुक्त भूषणोंकाव श्रेष्ठ स्त्रीका निरंतर सौख्य पाता है॥२३॥

अथ कर्कराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम्।

सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनं पापरतं गतार्थम् ॥
करोति जातं निजगेहगामी चेद्यामिनीशो रविजेन दृष्टः ॥ २४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता होय तो वह मनुष्य सत्यरहित माताका विरोधी हमेशा भ्रमणकरनेवाला पापमें तत्पर धनहीन होता है ॥२४॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम्।

गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं नरपदं च विलंबितसंततिम् ॥
हरिगतो वितनोति निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य गुणोंकरि निरंतर राजाका प्यारा श्रेष्ठ अधिकारको प्राप्त देरसे संतानको प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम्।

नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखो हि भवेन्नरः ॥
हरिणलक्ष्मणि केसरिणि स्थिते क्षितिसुतेन ननु प्रविलोकिते २६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको भौम देखताहोय वह मनुष्य राजाका प्रो धन वाहन पुत्र स्त्रीके सुखसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति ॥
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य धन और स्त्री तथा वाहन पुत्रादिकोंके सुखकरके पूर्ण होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

बहुश्रुतं विस्मृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम् ॥
चंद्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेंद्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको गुरु देखताहोय वह मनुष्य बहुश्रुत साधुवृत्तको भूलनेवाला राजाका मंत्री होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

स्त्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम् ॥
पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य स्त्रीयुक्त वैभवसहित गुणवान गुणोंका जाननेवाला चतुर विधियोंका जाननेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ॥

कांतावियुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोल्पकार्थः ॥
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगतचंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य स्त्रीरहित खेती करनेमें चतुर राजाके किलेका स्वामी थोड़े धनवाला होता है ॥ ३० ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्यावियुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् ॥
जातं च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जंतुं खररश्मिदृष्टः ॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय और उसको सूर्य देखता होय वह मनुष्य राजाके खजानेका मालिक श्रेष्ठ वृत्तिवाला स्त्रीरहित गुरुकी भक्तिमें तत्पर होता है ॥ ३१ ॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम्।

हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ॥
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति॥ ३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय उसको मंगल देखता होय वह मनुष्य हिंसामें तत्पर शूरवीर क्रोधसहित राजाका आश्रय करनेवाला संग्राममें जयको प्राप्त होता है॥ ३२॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम्।

ज्योतिर्विद्याकाव्यसंगीतविद्यं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम्॥
कुर्यान्नूनं मानवं मानवंतं कन्यास्थोऽब्जश्चेंदुजेन प्रदृष्टः॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय उसको बुध देखता होय वह मनुष्य ज्योतिषशास्त्र और काव्य तथा संगीत विद्याओंका जाननेवाला चतुर संग्राममें यशको प्राप्त नम्रता सहित होता है॥ ३३॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्।

भूरिबंधुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम्॥
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः॥ ३४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय उसको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य बहुत भाइयोंवाला राजाका प्यारा श्रेष्ठ वृत्ति करके सुंदर यशवाला होता है ३४॥

अथ कन्याराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम्।

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कांताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम्॥
कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां स्थितः सितेन प्रविलोकितश्च॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय उसको शुक्र देखता होय तो वह मनुष्य वेश्याके साथ विलास करनेमें चित्तवाला स्त्रीका आश्रित राजाकरके धनको प्राप्त करता है॥ ३५॥

अथ कन्याराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम्।

निष्किञ्चनं हीनमतिं नितांतं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या॥
हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगांकोऽर्कसुतेन दृष्टः॥३६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य धन-हीन बुद्धिरहित निरंतर स्त्रीके आश्रयसे धनको प्राप्त करनेवाला माताकरके हीन होताहै॥ ३६॥

अथ तुलाराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम् ।

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः ॥
मित्रैरमित्रैश्च नरोऽतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगतचंद्रमाको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य हमेशा भ्रमण करनेवाला सुख और धनकरके हीन श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रों करके रहित मित्र और शत्रुओंकरके संतापको प्राप्त होताहै ॥ ३७ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

बुद्ध्या परार्थीकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम् ॥
करोति जातं हि तुलागतेंदुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगतचंद्रमाको मंगल देखता होय वह मनुष्य बुद्धिकरके दूसरेके धनमें चित्त करनेवाला मायासहित विषयोंकरके संतापको प्राप्त होताहै ॥ ३८ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य कलाओंकी विधिका जाननेवाला धनधान्यसहित बोलनेकी विद्या और वैभवसहित होताहै ॥ ३९ ॥

अथ तुलाराशिगे चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

विचक्षणो वस्त्रविभूषणेषु क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने ॥
तुलाधरे शीतकरो नरः स्याद्दृष्टः शुनासीरपुरोहितेन ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता होय तो वह मनुष्य वस्त्र और आभूषणोंके कार्यमें चतुर तथा वस्त्र और आभूषणोंके खरीदने और बेचनेमें चतुर होताहै ॥ ४० ॥

अथ तुलराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थैः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः ॥
हृष्टो नरः पीनकलेवरश्च जूके मृगांके भृगुजेन दृष्टे ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य चतुर अनेक उद्यमकरके अर्थसिद्धि करनेवाला और राजाओंकी कृपाकरके सहित प्रसन्नचित्त पुष्ट देहवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ तुलाराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम्।

धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोपि हीनो विषयोपभोगैः ॥
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूजदृष्टे ॥ ४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य धन और धान्य तथा श्रेष्ठवाहनोंकरके सहित विषयभोगसे रहित होताहै ॥ ४२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चन्द्रे रविदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तिहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यंतकृतप्रयासम् ॥
सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्य्यात्ताराधिपः कौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ-वृत्तिरहित धनवान् मनुष्योंको असह्य अत्यंत उद्यमकरनेवाला सेनामें रहनेवाला होताहै॥४३॥

अथ वृश्चिकराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम्।

रणाङ्गनावाप्तयशोविशेषो गभीरतागौरवसंयुतश्च ॥
भूपानुकंपासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनींदौ क्षितिजेन दृष्टे ॥४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता होय वह मनुष्य युद्धमें विशेषकरके यशको प्राप्त गंभीरता और गौरवताकरके सहित राजाकी कृपाकरके धनको पैदा करनेवाला होताहै ॥ ४४ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम्।

वाग्विलासकुशली रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितांतम् ॥
कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद्वृश्चिके शशिनि चंद्रजदृष्टे॥४५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य बोलनेमें चतुर युद्धकरनेवाला गीत और नृत्यमें तत्पर निरंतर झूठे कर्मोंमें चतुर होताहै ॥ ४५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम्।

लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः ॥
स्यान्मानवो जन्मनि शीतरश्मौ संस्थेऽलिनीज्येन निरीक्ष्यमाणे४६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य संसारकी इच्छाके समान चलनेवाला सुंदर रूपवान् श्रेष्ठ कर्मोंका करनेवाला धन और आभूषणोंकरके सहित होताहै ॥ ४६ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिः समुदारकीर्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः ॥
कांताहतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥ ४७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगतचंद्रमाको शुक्र देखता होय वह मनुष्य प्रसन्न मूर्ति उदारयशवाला छलछिद्रको जाननेवाला धनवाहनोंकरके सहित स्त्रियोंकरके उस्का धन नष्ट होताहै ॥ ४७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्त्वयक्ष्मप्रकोपम् ॥
कुर्याच्चंद्रः सूतिकालेऽलिसंस्थ श्छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः॥४८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य स्थानभ्रष्ट दीनताका नाशकरनेवाला थोड़े धनवाला नीचसंतानवाला बलहीन राजयक्ष्मा रोगवाला होताहै ॥ ४८ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसंपत्सद्वाहनान्याहवजं जयं च ॥
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य बड़े प्रताप वाला उत्तम यशवाला संपदाकरके सहित श्रेष्ठ वाहनोंवाला संग्राममें यशको पानेवाला राज-कृपासहित होताहै ॥ ४९ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

सेनापतित्वं च महत्प्रतापं पद्मालयालंकरणोपलब्धिम् ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको मंगल देखताहोय वह मनुष्य फौजका मालिक बड़े प्रतापवाला लक्ष्मीका स्थान आभूषणोंका लाभकरनेवाला होताहै ॥ ५० ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविद्यम् ॥
तुरंगजंघे हि कुरङ्गजन्मा कुरङ्गलक्ष्मप्रभवेण दृष्टः ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठवाणीके विलास और बहुत नौकरोंवाला ज्योतिष और शिल्पविद्याका जाननेवाला होताहै ॥ ५१ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

महापदस्थो धनवान्सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः ॥
धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य बडे अधिकारको प्राप्त धनवान् श्रेष्ठवृत्तिवाला सुंदर शरीरवाला होताहै ॥ ५२ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

संतानार्थात्यन्तसंजातधर्मः शश्वत्सौख्येनान्वितो मानवः स्यात् ॥ तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥ ५३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको शुक देखताहोय वह मनुष्य संतान और धन तथा धर्मको प्राप्त निरंतर सौख्यसहित होताहै ॥ ५३ ॥

अथ धनराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम् ॥
कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिः करोति ५४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य बलकरके सहित नित्यही शास्त्रमें आसक्त श्रेष्ठवक्ता प्रचंड प्रतापी होताहै ॥ ५४ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः ॥
हिमकरे मकरे च दिवाकरे क्षितितनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ॥५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य धनहीन मलीन भ्रमणकरनेमें प्रीतिकरनेवाला बुद्धिहीन निश्चयकरके दुःखित होताहै ॥ ५५ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ॥

अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितांतं मृगे मृगांकेऽवनिजेन दृष्टे ॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको मंगल देखताहो वह मनुष्य अत्यंत प्रचंड धन और वाहनकरके सहित चतुर स्त्री और पुत्रोंके सुखसहित निरंतर वैभवकरके सहित होताहै ॥ ५६ ॥

अथ मकरराशिगते चन्द्रे बुधदृष्टिफलम् ।

बुद्ध्या हीनो निर्धनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झितः पूरुषः स्यात्
आर्क्ककेरः स्थावरे शीतरश्मौ पीयूषांशोरात्मजेन प्रदृष्टे ॥५७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको बुध देखता होय वह मनुष्य बुद्धिहीन नरहित घरका त्यागनेवाला स्त्रीपुत्रोंकरके त्यागाजाता है ॥ ५७ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपात्मजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नरः स्यात् ॥
मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे ५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य राज-त्र सत्यसहित गुणोंका जाननेवाला स्त्रीपुत्रसहित होता है ॥ ५८ ॥

अथ मकरराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूषणवस्त्रसुखी नरः ॥
कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जनो ननु वीक्षिते ॥५९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता होय वह मनुष्य सुंदरनेत्रों-वाला धन और वाहनसहित पुत्र और भूषण वस्त्रोंके सुखसहित होता है ॥ ५९ ॥

अथ मकराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

महालसो मंदधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः॥
पीयूषमूर्तिर्यदि नक्रवर्त्ती त्रिमूर्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥ ६० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य बड़ा आलसी धनहीन सत्यरहित मलीन व्यसनोंकरके सहित होता है ॥ ६० ॥

अथ कुंभराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्मरतो नरः स्यात् ॥
पीयूषमूर्तिर्यदि कुंभगामी त्वम्भोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः६१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य खेतीके बल-सहित जुआ खेलनेवाला राजाके आश्रित धर्ममें तत्पर होता है ॥ ६१ ॥

अथ कुंभराशि गते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो विषमतमपदार्थोत्पादकोन-ल्पजल्पः ॥ भवति मलिनचित्तोत्यंतधूर्तो हि मर्त्यः शशिनि-कलशयाने वीक्षिते भूसुतेन ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता होय वह मनुष्य मकान और धन तथा मातापिताके वियोगको प्राप्त और बडे कठिनपदार्थोंको पैदा करनेवाला बहुत बोलनेवाला मलिनचित्त अत्यंत धूर्त होताहै ॥ ६२ ॥

अथ कुंभराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विषयसौख्यरतोशनसंविधारुचिरतीव शुचिः प्रियभाषणः ॥
युवतिगीतसुनीतिकृतादरो घटगतेंदुरिह ज्ञनिरीक्षितः ॥ ६३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको बुध देखता होय वह मनुष्य विषय और सौख्यसहित भोजनविधानका जाननेवाला अत्यंत पवित्र प्यारी वाणी बोलनेवाला स्त्रियोंके गीत जाननेवाला श्रेष्ठ नीतिसे स्त्रियोंका आदर करनेवाला होता है ॥ ६३ ॥

अथ कुंभराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

महीपुरग्रामसुखादिसौख्यं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम् ॥
कुर्यान्नरं श्रेष्ठतरं घटस्थो निशाकरः शक्रगुरुप्रदृष्टः ॥ ६४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको गुरु देखताहोय वह मनुष्य धरती नगर ग्रामादिके सुखोंकरके सहित भोगों करके युक्त सत्पुरुषोंमें प्रवृत्तिकरनेवाला श्रेष्ठ पुरुष होताहै ॥ ६४ ॥

अथ कुंभराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनो जनोत्सारितगौरवः स्यात् ॥
निशाकरे कुंभधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन ॥ ६५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य मित्र और पुत्र स्त्री तथा मकानके सौख्यसे रहित दीन गौरवरहित होताहै ॥ ६५ ॥

अथ कुंभराशिगते चंद्रे शनिदृष्टिफलम् ।

खरोष्ट्रबालाश्वतरादिलाभं कुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम् ॥
करोति मर्त्यं हि घटेधितिष्ठन्निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः ॥ ६६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य गधा ऊंट नवीन घोडोंको लाभकरनेवाला खोटीस्त्रीमें तत्पर धर्मके विरुद्ध वृत्तिवाला होताहै ॥ ६६ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे रविदृष्टिफलम् ।

मनोद्भवोत्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वं बहुवित्तवृद्धिम् ॥
सत्कर्मसिद्धिं कुरुते हिमांशौ झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ६७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य कामदेवके सौख्यको अत्यंत प्राप्तकरनेवाला फौजका मालिक बहुत धनकी वृद्धिसहित श्रेष्ठकर्मोंकी सिद्धिको प्राप्त होताहै ॥ ६७ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भौमदृष्टिफलम् ।

पराभिभूतं कुलटाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतं नितान्तम् ॥
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः ६८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको मंगल देखता होय वह मनुष्य शत्रुओं करके सहित कुलटाओंसे मित्रता करनेवाला सुखसे रहित निरंतर पापमें तत्पर होताहै ॥ ६८ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे बुधदृष्टिफलम् ।

वराङ्गनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्क एष वैसारिणस्थो ज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥ ६९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको बुध देखताहोय तो वह मनुष्य श्रेष्ठस्त्री पुत्रोंके सुखोंको प्राप्त मान और धन राजाकी कृपासे प्राप्त करताहै ॥ ६९ ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्देहिनीसूनुधनादिसौख्यम् ॥
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ॥ ७० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य उदार चित्त सुकुमारशरीर श्रेष्ठ स्त्री और पुत्रधनादिका सौख्यपानेवाला राजा होताहै ॥ ७० ॥

अथ मीनराशिगते चंद्रे भृगुदृष्टिफलम् ।

सद्गीतविद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ॥
करोति मर्त्यं तिमियुग्मराशौ शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥ ७१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको शुक्र देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत श्रेष्ठ विद्यादिमें तत्पर श्रेष्ठवृत्तिवाला स्त्रीके साथ विलासकरनेमें शील जिसका ऐसा होताहै ७१ ॥

अथ मीनराशिगते चन्द्रे शनिदृष्टिफलम् ।

कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचाङ्गनासख्यमविक्रमं च ॥
नीहाररश्मिः शफरं प्रपन्नो नरं विदध्याद्रविसूनुदृष्टः ॥ ७२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमाको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य कामातुर स्त्री और पुत्रोंकरके रहित नीचस्त्रियोंके साथ मित्रताकरनेवाला बलहीन होताहै ॥ ७२ ॥

इति मेषादिराशौ चंद्रमसि ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशौ भौमप्रतिग्रहदृष्टिफलम्—
तत्र स्वभे भौमे रविदृष्टिफलम्।

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनी प्रधानोऽतितरामुदारः॥
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे॥ १॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिकराशिमें मंगल बैठा होय और उसको सूर्य देखता होय वह मनुष्य चतुर श्रेष्ठवक्ता पिता माताका भक्त धनवानोंमें प्रधान अत्यंत उदार होताहै १

अथ स्वभे भौमे चंद्रदृष्टिफलम्।

अन्याङ्गनासक्तमतीव शूरं कृपाविहीनं हतचौरवर्गम्॥
नरं प्रकुर्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः॥ २॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठाहोय और उसको चन्द्रमा देखता होय तौ वह मनुष्य पराई स्त्रीमें आसक्त बड़ा शूरवीर कृपारहित चोरोंका मारनेवाला होताहै २

अथ स्वभे भौमे बुधदृष्टिफलम्।

पण्याङ्गनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी॥
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे॥ ३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिकराशिमें मंगल बैठाहोय और उसको बुध देखता होय तौ वह मनुष्य वेश्यास्त्रीके अलंकार और वस्त्रबनवानेमें एकचित्त रखनेवाला बड़ा चतुर पराया धन हरनेवाला होताहै॥ ३॥

अथ स्वभे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

वंशेवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचौरसख्यः॥
आरे निजागारगते नरः स्यात्सूतौ सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणे॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिक राशिमें मंगल बैठाहोय और उसको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य अपने वंशमें राजा धनवान क्रोधसहित राजचिह्नोंसहित चोरोंसे मित्रताकरनेवाला होताहै॥ ४॥

अथ स्वभे भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

भूयोभूयो भोजनौत्सुक्ययुक्तः कांताहेतोर्यानचिन्ता नितांतम्॥
प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे॥ ५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा होय उसको शुक्र देखता होय तौ वह मनुष्य वारंवार भोजनकी इच्छा करनेवाला स्त्रीके निमित्त सफरकी हमेशा चिंताकरता है॥ ५॥

अथ स्वभे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तं कृशाङ्गयष्टिं विषमं कुटुंबे ॥
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें मंगल बैठा होय वह मनुष्य मित्रोंकरके त्यागाहुआ माताके वियोगसे संतापको प्राप्त दुर्बलदेहवाला कुटुंबका विरोधी बहुत ईर्ष्यासहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कांतामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ॥
प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य स्त्रीके मनकी वृत्तिसे रहित बडेबडे वन और पर्वतोंमें रहनेकी इच्छा करनेवाला शत्रुहीन बडा क्रोधी होता है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च ॥
स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मंगल बैठा होय व उसको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य माताके विरुद्ध निश्चयकर संग्राममें डरपोक बहुत स्त्रियोंका स्वामी होताहै ॥ ८ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोल्पधनागमश्च ॥
सत्कायकांतिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मंगल बैठा होय उसको बुध देखता होय वह मनुष्य शास्त्रमें प्रवृत्तिवाला लडाई जिसको प्यारी बहुत बोलनेवाला थोडे धनका आगम होय उसकी देह शोभायमान होती है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

बंधुप्रियः स्यान्नितरांतिभाग्यः सद्गीतिनृत्यादिविधिप्रवीणः ॥
क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते निरीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें स्थितमंगलको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य भाइयोंकी प्रीतिमें तत्पर अत्यंत भाग्यवान् गीतनृत्यादिविधिमें चतुर होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

श्लाघ्यनामा क्षितिपालमंत्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुते सितेन ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें मंगल बैठा होय उसको शुक्र देखता होय वह मनुष्य प्रशंसाके योग्य राजाका मंत्री अथवा फौजका मालिक बहुत सौख्यसहित होता है ११

अथ शुक्रगृहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम्।

ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः ॥
नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनंदने भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष वा तुलाराशिमें मंगल बैठा होय तौ वह मनुष्य प्रसिद्ध नम्रता सहित धनवान् श्रेष्ठमित्रोंवाला. पवित्रबुद्धि शास्त्रमें यत्नकरनेवाला नगर वा ग्रामका पति होता है ॥ १२ ॥

अथ बुधगृहे भौमे रविदृष्टिफलम्।

विद्याधनैश्वर्ययुतः ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम् ॥
कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि मिथुन कन्यामें मंगल बैठा होय उसको सूर्य देखता होय वह मनुष्य विद्या धन ऐश्वर्यकरके सहित बलयुक्त वनपर्वतोंमें तथा किलेमें रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधगृहे भौमे चंद्रदृष्टिफलम्।

संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कांतारतिं सत्त्वयुतं सतोषम् ॥
भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या मिथुन राशिमें मंगल बैठा होय उसको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य राजाने अपनी रक्षाके लिये नियुक्तकिया हुआ स्त्रीमें तत्पर बलसहित संतोषवाला होताहै ॥ १४ ॥

अथ बुधगृहे भौमे बुधदृष्टिफलम्।

अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं चानृतचारुवाक्यम् ॥
दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरातनूजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा होय व उसको बुध देखता होय वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला गणितशास्त्रमें चतुर काव्य जिसको प्यारा झूठी रचनाकरके सुंदरवाणी बोलनेवाला दूतोंके कामकरनेमें बडा उद्यमी होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगृहे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः ॥
सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेन च दृष्टः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिमें मंगल बैठा होय उसको बृहस्पति देखता होय तो वह मनुष्य परदेशका भ्रमण करनेवाला व्यसनों करके सहित उच्चस्थानको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधगृहे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कांताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम् ॥
कुर्यान्नरो भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनंदनेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन वा कन्याराशिमें मंगल बैठा होय उसको शुक्र देखता होय वह मनुष्य वस्त्र अन्नपानोंके सुखकरके सहित स्त्रीमें आसक्त निरंतर समृद्धियों सहित होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधगृहे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

अतीव शूरो मलिनोलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः ॥
भवेन्नरो भास्करपुत्रदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधकी राशि मिथुन वा कन्यामें मंगल बैठा होय और उसको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य बड़ा शूरवीर मलिन आलसी किला कोट पर्वत जंगलोंमें विलासकरनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे रविदृष्टिफलम् ।

पित्तप्रकोपार्तियुतोतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः ॥
भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल कर्क राशिमें बैठाहोय उसको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य पित्तप्रकोपसे दुःखी अत्यंत धैर्यवान् फौजदारीका अधिष्ठाता निरंतर बड़े यशवाला होता है १९

अथ कर्कस्थे भौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

गदाभिभूतो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः ॥
भवेन्नरः कर्कटगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठाहोय व उसको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य रोगकरके सहित गईचीजका शोच करनेवाला कुरूपवान् साधुवृत्तिसे हीन होताहै॥२०॥

अथ कर्कस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

मित्रैर्विमुक्तोल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ॥
बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठाहोय उसको बुध देखताहोय वह मनुष्य मित्रोंकरके रहित थोड़े कुटुंबवाला पापका प्रचार करै दुष्टचित्तवाला होताहै ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रमंत्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ॥
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन॥२२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठाहोय उसको बृहस्पति देखताहोय तो वह मनुष्य राजाका मंत्री गुण और गौरवसहित बड़े मानकरके युक्त प्रसिद्ध होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरंतरानर्थसमुद्भवः स्यात् ॥
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वङ्गारके कर्कटराशिसंस्थे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें मंगल बैठाहोय व उसको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य बुरे कामोंमें धनका नाशकरनेवाला और रातदिन बुरे कामोंका विचारकरता है ॥२३॥

अथ कर्कस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कीलालधान्यादिधनः सुकीर्तिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ॥
महीसुते कर्कटराशिसंस्थे निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क राशिमें मंगल बैठाहोय उसको शनैश्चर देखताहोय तो वह मनुष्य जलोत्पन्न धान्यकरके धनको प्राप्त श्रेष्ठ कीर्तिवाला राजाकरके धन प्राप्तकरनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थभौमे रविदृष्टिफलम् ।

हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ॥
वनाद्रिकुञ्जेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य अपने प्यारोंसे प्रीति करनेवाला और शत्रुओंसे वैरकरनेवाला वनपर्वत कुञ्जोंमें रहनेवाला होता है ॥२५॥

अथ सिंहस्थभौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

प्रपुष्टमूर्तिः कठिनस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्वकार्ये ॥
तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें मंगल बैठाहोय उसको चंद्रमा देखता होय तो वह मनुष्य पुष्टस्वरूप कठिनस्वभाव मातासे नम्र अपने कार्यमें चतुर तीव्र सुंदर बुद्धिवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थभौमे बुधदृष्टिफलम् ।

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे विज्ञोपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः ॥
स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बुध देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ काव्य और शिल्पादिकलाओंके समूहको जाननेवाला लोभी चंचल चित्तवृत्तिवाला अपने कार्यके साधनमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोभिमतो बहूनाम् ॥
विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवाला राजाका मित्र फौजका मालिक बहुत मनुष्योंके मनोरथ करनेवाला पूर्ण विद्यामें प्रवीण होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

गर्वोन्नतोत्यन्तशरीरकांतिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः ॥
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतौ निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य अभिमानकरके ऊंचा अत्यंत सुंदर शोभायमान देहवाला अनेक स्त्रियोंके साथ भोगकरनेवाला सम्पूर्णसमृद्धि सहित होताहै ॥ २९ ॥

अथ सिंहस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

भवेन्निवासोन्यगृहेतिचिंता वृद्धाकृतिर्वं द्रविणोज्झितस्त्वम् ॥
मनेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगलको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य पराये घर वासकरनेवाला अत्यंत चिंताकरके युक्त बूढ़ोंके समान स्वरूपवाला धनहीन होताहै॥ २० ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे रविदृष्टिफलम्।

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ॥
करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बृहस्पति बैठाहोय वह मनुष्य वन पर्वत किला कोटमें वासकरनेवाला क्रूरस्वभाववाला मनुष्यों करके पूजनीय होताहै ॥ २१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे चंद्रदृष्टिफलम्।

विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसह्यं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ॥
प्राज्ञं प्रकुर्य्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठाहोय वह मनुष्य पंडितोंकी विधिका जाननेवाला राजाको नहीं माननेवाला लड़ाई जिस्को प्यारी जनोंकरके त्यागकिया होताहै २२

अथ गुरुभवनस्थे भौमे बुधदृष्टिफलम्।

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ॥
करोति जातं खलु लोहितांगः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती मंगलको बुध देखताहोय वह मनुष्य चतुर शिल्पविद्यामें निपुण श्रेष्ठ शीलवाला सब विद्याओंमें चतुर नम्रतायुक्त होताहै ॥ २३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे भृगुदृष्टिफलम्।

उदारचेता विषयानुसक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ॥
भाग्यान्वितः स्यात्पुरुषोवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा होय उस्को शुक्र देखताहोय तो वह मनुष्य उदारचित्त विषयोंमें आसक्त अनेक प्रकारके गहनोंकरके भूषित भाग्यवान् होताहै ॥ २४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे गुरुदृष्टिफलम्।

कांतातिचिंतासहितं नितांतमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम् ॥
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्य्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः २५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा होय और बृहस्पति करके दृष्ट होय वह मनुष्य स्त्रीकी अत्यंत चिंता करनेवाला निरंतर दुशमनोंसे लड़ाई करनेवाला स्थानसे भ्रष्ट होताहै ॥ २५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

कायकांतिरहितश्च नितांतं स्थानसंचलरतोपि च दुःखी ॥
अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुसुतेर्कजदृष्टे ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें मंगल बैठा होय और शनिकरके दृष्ट होय तो वह मनुष्य देहकी कांति करके रहित अनेक स्थानोंमें भ्रमणकरै दुःखी हो पराये कार्यमें तत्पर होताहै ॥ २६ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे रविदृष्टिफलम् ।

कलत्रपुत्रार्थसुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम् ॥
कुर्यान्नरं भूतनयोर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य स्त्रीपुत्रधनके सुखकरके सहित तरुणस्वरूप तीक्ष्ण निरंतर बड़ा शूर वीर होताहै ॥ २७ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे चंद्रदृष्टिफलम् ।

सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च ॥
उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोर्कजस्थः शशिना प्रदृष्टः॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ आभूषणोंकरके सहित माताके सुखसे हीन स्थानभ्रष्ट चंचलमित्रतावाला उदार चित्त होताहै ॥ २८ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे बुधदृष्टिफलम् ।

प्रियोक्तियुक्तोटनवित्तलब्धः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ॥
अभीनरो मंदगृहं प्रयाते पृथ्वीसुते चंद्रसुतेन दृष्टे ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको बुध देखताहोय वह मनुष्य प्रियवाणी बोलनेवाला भ्रमण करनेसे धन प्राप्त करनेवाला बलसहित जुएकरके सहित भयरहित होताहै ॥ २९ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे गुरुदृष्टिफलम् ।

दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बंधुप्रियं चारुशरीरकांतिम् ॥
कार्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके मकर कुंभ राशिवर्ती मंगलको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य बड़ी उमर वाला राजाकी कृपाकरके सहित गुणकरके युक्त भाइयोंको प्यारा सुंदर देहकी कांतिवाला कार्यमें बहुत बोलनेवाला होताहै ॥ ४० ॥

अथ शून्यागारगते भौमे भृगुदृष्टिफलम् ।

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कांताप्रियोऽत्यंतकलिप्रियश्च ॥
क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणा नरः स्यात् ४१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत मंगलको शुक देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ भोग सौभाग्य सुखकरके सहित स्त्रियोंका प्यारा कलह जिसको प्यारा ऐसा होताहै ॥ ४१ ॥

अथ शून्यागारगते भौमे शनिदृष्टिफलम् ।

नृपाप्तवित्तो वनिताविपक्षी बहुश्रुतोत्यंतमतिः सकष्टः ॥
रणप्रियः स्याद्धरणीतनूजे मंदेक्षिते मंदगृहं प्रयाते ॥ ४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भराशिगत मंगलको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य राजाकरके धनको प्राप्त करनेवाला स्त्रीके साथ वैर करनेवाला बहुश्रुत बड़ी बुद्धिवाला कष्टसहित संग्राम जिसको प्यारा लगताहै ऐसा होवे ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगे भौमे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशिगते बुधे ग्रहदृष्टिफलम्-
तत्र भौमगेहे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

बंधुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतं च ॥
करोति जातं क्षितिसूनुगेहे संस्थो बुधो भानुमता प्रदृष्टः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य भाइयोंका प्यारा सत्य बोलनेवाला विलास युक्त राजा श्रेष्ठ गौरव सहित होताहै ॥ १ ॥

अथ भौमगृहे बुधे चंद्रदृष्टिफलम् ।

सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः ॥
कौटिल्यभावस्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे ॥२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा होय उसको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ गीत नृत्यादिमें प्रीति करनेवाला कामसहित स्त्रीमें प्रीतिकरनेवाला वाहन और नौकरोंकरके सहित चुगल होताहै ॥ २ ॥

अथ भौमगृहे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च ॥
क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको मंगल देखताहो वह मनुष्य राजाका प्यारा बहुत धनवाला शूरवीर कलाओंमें चतुर लड़ाई करनेमें उद्यत क्षुधाकरके सहित होताहै ॥ ३ ॥

अथ भौमगेहे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम् ॥
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः ॥४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बुधको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य सुखकरके सहित चतुर श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला स्त्री पुत्रादि सहित प्रसन्न चित्त होताहै ॥ ४ ॥

अथ भौमगेहे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

कांताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम् ॥
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ॥५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा होय उसको शुक्र देखता होय वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ विलास करनेवाला गुण और गौरवसहित मित्रोंका प्यारा सुंदर बुद्धिवाला नम्रतासहित होताहै ॥ ५ ॥

अथ भौमगेहे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम् ॥
करोति मर्त्यं हरिणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बुध बैठा होय उसको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ साहसवाला क्रूरस्वभाववाला कुलसे कलहकरनेवाला प्रीति और श्रेष्ठवृत्तिरहित होता है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रगेहे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकाराभिरतं नितांतम् ॥
शांतं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बुध बैठा होय और सूर्यकरके दृष्ट होय वह मनुष्य दरिद्र और दुःख तथा रोगोंकरके संतापितदेहवाला पराया उपकारकरनेमें निरंतर तत्पर शांतस्वभाव शुद्धचित्त होताहै ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे चंद्रदृष्टिफलम् ।

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ॥
ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बुध बैठा होय और चंद्रमाकरके दृष्ट होय वह मनुष्य बहुत प्रपंच करनेवाला धनधान्यसहित दृढप्रतिज्ञावाला राजाका मंत्री प्रख्यात होता है ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयैश्च नूनम् ॥
कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्रको वृष तुला राशिगत बुधको मंगल देखता होय वह मनुष्य राजा करके अपमान किया हुआ रोगकरके संतापित मित्र और विषयोंकरके रहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम् ॥
कुर्य्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षसंस्थः सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः १०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य उत्तम देश ग्राम तथा उत्तम नगरोंका स्वामी राजा चतुरगुणोंका जाननेवाला गुणवान् श्रेष्ठशीलवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषैर्युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम्॥अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्याद्भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषतुला राशिमें बुध बैठा होय और शुक्रकरके दृष्ट होय तौ वह मनुष्य अत्यंत सुंदर वेषवाला वस्त्र और भूषणोंकरके युक्त स्त्रियोंको कामदेव और कामकरके बड़े हर्षको प्राप्त अत्यंत चतुर उदार श्रेष्ठभाग्यवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ शुक्रर्क्षे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ॥
कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितो ज्ञः सितधामगामी ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बुधको शनिश्चर देखता होय वह मनुष्य स्त्री पुत्र मित्र और वाहनके दुःख संतप्तचित्त सुख और धनकरके हीन होताहै ॥ १२ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

सत्योपेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च ॥
चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यः स्वक्षेत्रस्थश्चंद्रपुत्रोर्कदृष्टः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको सूर्य देखता होय वह मनुष्य सत्यसहित सुंदरलीलाका विलास करनेवाला राजाकरके मान और उन्नतिको प्राप्त चंचलतार-हित होता है ॥ १३ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे चंद्रदृष्टिफलम् ।

अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती ॥
भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणे मृगलाञ्छनेन ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध मिथुन कन्या राशिमें बैठा होय और चंद्रमाकरके देखागया होय तौ वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला बहुत मीठी वाणी बोले लड़ाई जिसको प्यारी राजाके पास रहनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेंद्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ॥
जनप्रियं संजनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितो ज्ञः स्वगृहेधिसंस्थः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्या मिथुन राशिगत बुधको मंगल देखता होय वह मनुष्य प्रसन्न देह कुगलखोर कलाओंका जाननेवाला राजाके कार्यमें निरंतर प्रवीण मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ १५ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

वस्त्रार्थसामर्थ्यविराजमानं सद्राजमानाप्तपदाधिकारम् ॥
सुखं प्रकुर्यान्निजमंदिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन ॥ १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बुधको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य बहुत धनवाला सामर्थ्यकरके सहित श्रेष्ठ राजाके मानसे अधिकारको प्राप्त बहुत होता है ॥ १६ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

नरेंद्रदूतो विजितारिवर्गः संधिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः ॥
वाराङ्गनासक्तमनोभिलाषः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात् १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शुक्र देखता होय वह मनुष्य राजाका दूत वैरियोंको जीतनेवाला दोनोंकी संधिकरानेमें चतुर वेश्याओंमें आसक्त मनकी अभिलाषाको प्राप्त होताहै ॥ १७ ॥

अथ स्वक्षेत्रस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः ॥
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमंदिरस्थो रविसूनुदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बुधको शनिश्चर देखता होय वह मनुष्य प्रारंभकार्यको सिद्ध करनेवाला नम्रतासहित श्रेष्ठ वस्त्र और आभूषणादि समृद्धियोंसहित होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे चंद्रादृष्टिफलम्।

कांतानिमित्तात्तमहाव्यलीको द्रव्यव्ययात्यंतकृशांगयष्टिः ॥
बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाको सूर्य देखता होय वह मनुष्य स्त्रीके निमित्तसे पूर्ण पीडाको प्राप्त धनका व्ययकरनेवाला अत्यंत दुर्बल देह और बहुत उत्पातोंसहित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्।

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्रसूनमालाग्रथनेपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य वस्त्रादिकोंकी शुद्धि और मणियोंके संग्रहकरनेवाला और मकानादिस्थानोंके बनवानेमें चतुर और फलोंकी माला गूंथनेमें चतुर होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थेवनिसूनुदृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको मंगल देखता होय वह मनुष्य थोडा शास्त्रका जाननेवाला अर्थमें तत्पर शूर वीर प्यारी वाणी बोलनेवाला झूठ बात बोलनेमें चतुर होता है ॥ २१ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः ॥
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनुः कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे २२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य चतुर विधिका जाननेवाला बडा भाग्यवान श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक् च सङ्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः ॥
स्यान्मानवो दानववंद्यदृष्टे कर्काटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य प्यारी वाणी बोलनेवाला सुंदर शरीरवाला श्रेष्ठ गीत और बाजोंकी विधिमें चतुर होताहै ॥ २३ ॥

अथ कर्कस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदंभानुरतं कृतघ्नम् ॥
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुधको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य गुणों करके हीन अपने मित्र तथा भाई बंधुओं करके रहित झूठबोलनेवाला दंभमें तत्पर कृतघ्न होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे रविदृष्टिफलम्।

कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम् ॥
क्षुद्रं प्रकुर्य्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य कृपारहित चंचल स्वभाववाला ईर्षासहित हिंसाकरनेमें तत्पर क्रूर और क्षुद्र होता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहस्थे बुधे चंद्रदृष्टिफलम्।

रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितांतम्॥
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चंद्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य रूपवान् सुंदर बुद्धिवाला नम्रतासहित गीत और नृत्यमें निरंतर तत्पर श्रेष्ठ वृत्तिका करनेवाला होता है॥ २६॥

अथ सिंहस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षतांकितं हीनमतिं विचित्रम्॥
सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतः शशीजः॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको मंगल देखताहोय वह मनुष्य कामदेव और पराक्रम रहित वृत्तिहीन घावों करके अंकित बुद्धिहीन विचित्र दुःखसहित होता है २७

अथ सिंहस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम्।

कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः॥
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे॥ २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य कोमल निर्मल रुचिवाला कुलमें श्रेष्ठ सुंदर नेत्र सामर्थ्यवान् उत्तम वाहन और धनवान होता है॥२८॥

अथ सिंहस्थे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः॥
भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंहस्थिते दानववंद्यदृष्टे॥ २९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें सिंहराशिगत बुधको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला मिष्ट वाणी बोलनेवाला विलासयुक्त राजाका आश्रित वाहन और धनसहित होताहै॥ २९॥

अथ सिंहस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम्॥
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्यान्मंदेक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुधको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्यकी देहमें पसीने करके दुर्गंध आती है बड़ी देहवाला कुरूप उग्र सुखहीन होता है॥ ३०॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे रविदृष्टिफलम् ।

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो भङ्गोज्झितः शांतिमुपागतश्च ॥
स्यात्पुरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थे निशीथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य शूल पथरी और प्रमेहरोगसे पीडित मनकी तरंगसे रहित शांतिको प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे चंद्रदृष्टिफलम् ।

लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम् ॥
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चंद्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य लेख क्रियामें बडा चतुर श्रेष्ठ संगत करनेवाला साधु और मित्रोंका संगकरे सुखी होताहै ॥ २२ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे भौमदृष्टिफलम् ।

परम्पराचोरवनस्थितानां स्युर्लेखका धान्यधनैर्विहीनाः ॥
नरास्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको मंगल देखताहोय वह मनुष्य बापदादेसे लेकर चोर होतेहैं और वनमें रहतेहैं और उनके नाम राजमें लिखेजातेहैं अन्नधनकरके रहित होतेहैं ॥ २३ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्ता ॥
भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिमें बुध बैठा होय और उसको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य ज्ञानवान् अपने कुलमें शिरोमणि और राजाके खजानेमें लिखनेवाला बहुत जनोंका स्वामी होताहै ॥ २४ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे गुरुदृष्टिफलम् ।

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तम् ॥
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बुधको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य राजाका मंत्री लेखके अधिकारको प्राप्त चोरोंमें आसक्त सुन्दरताकरके सहित धनवान् होताहै ॥ २५ ॥

अथ गुरुभवनस्थे बुधे शनिदृष्टिफलम्।

बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कांतारदुर्गाचलवासशीलः ॥
कार्योपयुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगो ज्ञोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगतबुधको शनिश्चर देखता होय वह मनुष्य बहुत अन्न खानेवाला मलीन दुष्टवृत्ति करनेवाला वन और पर्वतोंमें वासकरनेवाला कामके लायक नहीं होता है ॥ ३६ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे रविदृष्टिफलम्।

प्रारब्धकार्याकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम् ॥
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बुधको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य अपने प्रारब्ध करके प्रतापसहित श्रेष्ठ मल्लविद्यामें कुशल दुष्टशील कुटुम्बी होताहै ॥ ३७ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे चंद्रदृष्टिफलम्।

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यमतत्परश्च ॥
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरकुंभराशिमें बुध बैठाहोय उसको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य जलसंबंधी कार्यसे आजीविका करनेवाला धनवान् डरपोक फूल और कंदकरके उद्यम करनेवाला होता है ॥ ३८ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भौमदृष्टिफलम्।

व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखीवाक्चपलोऽर्थयुक्तः ॥
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽब्जसूनौ क्षितिनंदनेन ॥३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बुधको मंगल देखताहोय वह मनुष्य लज्जा और आलस्य करके सहित कठोरस्वभाववाला सौम्यमूर्ति सुखी चपलवाणी बोलनेवाला धनवान् होता है ॥ ३९ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भृगुदृष्टिफलम्।

धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः ॥
भानुसूनुभवनेऽब्जनंदने देवदेवसचिवेक्षिते नरः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बुधको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य अन्न और वाहन तथा धनकरके सहित सुखी ग्राम और नगरका स्वामी बड़ा बुद्धिमान् होताहै ॥ ४० ॥

अथ शन्यालयगे बुधे भृगुदृष्टिफलम् ।

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् ॥
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बुधको शुक्र देखता होय वह मनुष्य बहुत सन्तानका पिता कुरूप चतुरता रहित नीचजनोंका साथी अधिक कामी होता है ॥ ४१ ॥

अथ शन्यालयगे बुधे शनिदृष्टिफलम् ।

सुखोज्झितं पापरतं च दीनमकिंचनं हीनजनानुयातम् ॥
करोति मर्त्यं शनिधामसंस्थः सौम्यस्तमोहंतृसुतेन दृष्टः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभरा शिगत बुधको शनिश्चर देखता होय तौ वह मनुष्य सुखरहित पापमें तत्पर दीन धनरहित हीनजनोंका संग करनेवाला होता है ॥४२ ॥

इति मेषादिराशिगे बुधे ग्रहदृष्टिफलम् ।

अथ मेषादिराशिगे गुरौ ग्रहदृष्टिफलम्-

तत्र भौमर्क्षगे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्त्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः ॥
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य असत्यसे डरनेवाला बहुत धर्म करनेवाला विख्यात श्रेष्ठ भाग्यसहित नम्र होताहै ॥ १ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशांतः ॥
जातो भवेद्भूमिसुतर्क्षयाते वाचां पतौ शीतकरेण दृष्टे ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिमें बृहस्पति बैठा होय और चंद्रमाकरके दृष्ट होय वह मनुष्य प्रसिद्ध नम्रतासहित स्त्रीका प्यारा श्रेष्ठपुरुषोंकी सलाह लेनेवाला धर्ममें तत्पर शांतस्वभाव होता है ॥ २ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

क्रूरोतिधूर्तः परगर्वहर्त्ता नृपाश्रयाज्जीवनवृत्तिकर्त्ता ॥
भर्त्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखताहोय वह मनुष्य क्रूर बड़ा धूर्त दूसरोंके अभिमानको नष्टकरनेवाला राजाके आश्रयसे आजीविका करनेवाला बहुत मनुष्योंका स्वामी होताहै ॥ ३ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः ॥
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको बुध देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठवृत्ति और सत्य उत्तमवाणी करके रहित दूसरेका छिद्र देखनेवाला नम्र मनुष्योंका साथी धूर्त होताहै ॥ ४ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम् ॥
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य गंध, माला, शय्या, भोजन, आभूषण स्त्री वस्त्र स्थान, इन सब चीजोंके सौख्यको पाताहै ॥ ५ ॥

अथ भौमर्क्षगे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितञ्च ॥
कुर्यान्मंत्रे निष्ठुरं देवमंत्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मंददृष्टः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य लोभी क्रूर हठसहित मित्र और संतानके सुखसे रहित और सलाह करनेमें कठोर होताहै ॥ ६ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

संगरातविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ॥
मंत्रिणं हि कुरुते सुरमंत्री दैत्यमंत्रिगृहगो रविदृष्टः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिमें बृहस्पति बैठा होय और सूर्यकरके दृष्टहोय वह मनुष्य युद्धमें जयको प्राप्त भावसहित शरीर रोगसहित बहुत वाहन और नौकरोंवाला राजाका मंत्री होताहै ॥ ७ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

सत्येन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं शुचिस्तम् ॥
सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य सत्यसहित निरंतर नम्रतायुक्त पराया उपकार करनेवाला श्रेष्ठचित्त व श्रेष्ठभाग्यवाला होताहै ॥ ८ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम् ॥
नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखताहोय वह मनुष्य भाग्यसहित पुत्रसौख्यको प्राप्त मीठी वाणी बोलनेवाला राजा करके प्राप्त किया है मान जिसने हमेशा आचार सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

सन्मंत्रविद्यानिरतं नितांतं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ॥
चंचत्कलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगुक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिमें बृहस्पति बुधकरके दृष्ट होय वह मनुष्य श्रेष्ठ मंत्र और श्रेष्ठविद्यामें तत्पर निरंतर भाग्यसहित राजाकरके धन प्राप्त करनेवाला सुंदर कलाओं-का जाननेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम् ॥
करोति मर्त्यं सुरराजमंत्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य धन और भूषणसहित श्रेष्ठ वृत्तिमें चित्त जिसका ऐश्वर्यवान् होताहै ॥ ११ ॥

अथ शुक्रर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् ॥
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखताहोय वह मनु-ष्य श्रेष्ठ पुत्र श्रेष्ठ स्त्रियोंके सुखकरके सहित चतुर नगर और ग्राममें उत्सव करके सहित चतुर होताहै ॥ १२ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमंत्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मसंस्थः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्री धन तथा मित्र सौख्य सहित श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त शोभायमान् होताहै १३॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम्।

गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण ॥
कुर्यान्नरं देवगुरुर्बुधर्क्षसंस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पति चंद्रमाकरके दृष्ट होय वह मनुष्य गुणोंसे युक्त ग्राम और नगरोंमें उपकार करनेवाला बहुत गौरव करके शोभायमान् होताहै ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामसंप्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च ॥
करोति जातं विबुधेन्द्रमंत्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखताहोय वह मनुष्य संग्राममें जयको प्राप्त घावसहित देहवाला धन तथा पराक्रमकरके सहित होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ॥
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टः ॥१६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको बुध देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ और स्त्री पुत्र धन सौख्यसहित चतुर ज्योतिष और शिल्पशास्त्रका जाननेवाला सुंदर वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ भृगुदृष्टिफलम्।

धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रासादवापीकृषिकर्मचित्तः ॥
भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य धन और स्त्री पुत्रोंके सुखसहित मकान बावडी और खेतीके काममें चित्त लगानेवाला प्रसन्न पुरुष होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

नरेंद्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं पूर्णगुणाभिरामम् ॥
नरं पुरग्रामपतिं करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य राजा करके श्रेष्ठ गौरवको प्राप्त नित्यही उत्सवसहित गुणों करके पूर्ण नगर तथा ग्रामोंका पति होता है ॥ १८ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिः पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि ॥
कुर्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता होय वह मनुष्य स्त्री और पुत्र धन करके उत्पन्नसौख्यको पहिले नाश करता है और पिछली अवस्थामें पूर्वोक्त पदार्थोंका सौख्य होता है ॥ १९ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

नरेंद्रकोशाधिकृतं सुकांतं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् ॥
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शशिना हि दृष्टः॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्क राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य राजाके खजानेका स्वामी श्रेष्ठकांतिवाला श्रेष्ठवाहन और धनके सुखसहित श्रेष्ठवृत्तिमें चित्त करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

कुमारदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् ॥
प्राज्ञं क्षताङ्गं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता होय वह मनुष्य बालक और स्त्री तथा वस्त्र सुंदर भूषणों करके सहित गुणवान् शूरवीर और व्रणरोगवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तिबुद्धिर्विलसत्प्रतापः ॥
मंत्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये शशिसूनुदृष्टे ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता होय वह मनुष्य मित्रोंके आश्रय करके सर्वसिद्धियोंको प्राप्त श्रेष्ठ वृत्तिवाला श्रेष्ठ बुद्धि बड़े प्रतापवाला राजाका मंत्री होता है ॥ २२ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

बह्वङ्गनावैभवमङ्गनानां नानासुखानामुपलब्धयः स्युः ॥
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता होय वह मनुष्य बहुत स्त्रियोंके वैभवको भोगनेवाला और स्त्रियोंके अनेक सौख्योंको प्राप्त करता है ॥ २३ ॥

अथ कुलीरस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सन्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात् ॥
अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य सन्मान और भूषण तथा गुणोंकरके सहित श्रेष्ठशीलवाला फौज नगर ग्रामका स्वामी बहुत बोलनेवाला होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्तं नृपात्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता होय वह मनुष्य खर्च करनेवाला प्रसिद्ध बड़ा धूर्त राजासे धनलाभ करनेवाला श्रेष्ठ कर्ममें चित्त देनेवाला होता है २५ ॥

अथ सिंहस्थगुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ॥
कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशांकदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति और चित्त शुद्धिसे हीन स्त्रीके कारणसे धन लाभकरनेवाला होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहस्थे गुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

मान्यो गुरूणां गुरुगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन्नङ्गिरोनन्दनेऽवनिजेन दृष्टे॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको मंगल देखता होय वह मनुष्य बड़े मान और बड़े गौरवकरके सहित श्रेष्ठ कर्मके निर्माण करनेमें चतुर होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहस्थगुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ ज्ञदृष्टे ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको बुध देखता होय वह मनुष्य मकानादिकोंके बनवानेके काममें चतुर गुणोंमें अग्रणी राजाका मंत्री वाणीविलासमें चतुर होता है ॥ २८ ॥

अथ सिंहस्थगुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

भूमीपतिप्राप्तमहापदस्थः कांताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः ॥
भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता होय वह मनुष्य राजा करके दियेहुये बडे पदको प्राप्त स्त्रियोंमें प्रीति करनेवाला गुणोंका जाननेवाला होता है ॥२९॥

अथ सिंहस्थगुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च ॥
करोति मर्त्यं मरुताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य सुख-करके हीन मलीन श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला दुर्बल देह उत्सवरहित होता है ॥ ३० ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

राज्ञा विरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम् ॥
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखता होय तो वह मनुष्य राजाके विरुद्ध अत्यंत मित्रोंसे वैर करनेवाला वैरी जिसके हमेशा रहते हैं ऐसा होवे ॥३१॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात् ॥
करोति जातं सुखिनं विनीतं चंद्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः॥ ३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य भाग्य और धनवृद्धिसे अभिमानको प्राप्त और स्त्रीका प्यारा सुखयुक्त नम्रतासहित होताहै ३२॥

अथ स्वगेहस्थगुरौ भौमदृष्टिफलम् ।

व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ॥
परोपकाराभिरतं प्रकुर्य्याद्गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥२३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखताहोय वह मनुष्य फोड़े करके अंकित युद्धमें चतुर हिंसा करनेवाला क्रूर स्वभाव पराये उपकार करनेवाला होताहै ॥ २३ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ बुधदृष्टिफलम् ।

नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः ॥
परोपकारादरतैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पति बुध करके दृष्ट होय वह मनुष्य राजाके आश्रय करके बड़े अधिकारको प्राप्त स्त्री और धन ऐश्वर्य सुखसहित पराये उपकार करनेमें एकचित्त होताहै ॥ २४ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ भृगुदृष्टिफलम् ।

सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ॥
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमंदिरस्थः ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखता होय वह मनुष्य सुखकरके सहित धनसहित प्रसन्न चतुर हमेशा ऐश्वर्यसहित विराजमान होताहै ॥ २५ ॥

अथ स्वगेहस्थे गुरौ शनिदृष्टिफलम् ।

पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवं च ॥
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य अधिकारसे पतित सुख और पुत्रोंसे रहित युद्धमें पराजयको प्राप्तहोताहै ॥ २६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ रविदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नकीर्तिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ॥
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मंदालयस्थो यदि भानुदृष्टः ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बृहस्पतिको सूर्य देखताहोय तौ वह मनुष्य प्रसन्न कांतिवान् श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला पराया उपकार आदरसे करनेवाला राजाके कुलमें पैदा होताहै ॥ २७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ चंद्रदृष्टिफलम्।

कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः॥
नरोभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेंदुदृष्टे॥ ३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चरकी राशि १०। ११ में बृहस्पति बैठाहोय और चंद्रमा करके दृष्ट होंय वह मनुष्य कुलको धारणकरनेवाला तीव्र बुद्धि शीलवान् धर्मक्रियाकर्ममें उदार अभिमानी माता पिताका भक्त होताहै॥ ३८॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भौमदृष्टिफलम्।

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव॥
मूतौ सुरेज्ये शनिमंदिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन॥ ३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बृहस्पतिको मंगल देखताहोय वह मनुष्य राजाकी कृपासे धनकी सिद्धिको प्राप्त और सुखकी प्राप्तिकरनेवाला होताहै॥ ३९॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ बुधदृष्टिफलम्।

शांतं नितांतं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थे निरतं नितांतम्॥
करोति मर्त्यं महतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमंदिरस्थः॥ ४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बृहस्पतिको बुध देखताहोय वह मनुष्य शांत स्वभाव निरंतर स्त्रीके वशीभूत धर्मक्रियाओंमें निरंतर तत्पर होताहै॥ ४०॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ भृगुदृष्टिफलम्।

विद्याविवेकार्थगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलाषः॥
स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे॥ ४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बृहस्पतिको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य विद्या विवेक धन गुणोंकरके सहित राजा करके मनकी अभिलाषाको प्राप्त करताहै॥ ४१॥

अथ शनिक्षेत्रगते गुरौ शनिदृष्टिफलम्।

कामं सकामं सुगुणाभिरामं सदार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम्॥
ख्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मंदेक्षितो मंदगृहस्थजीवः॥ ४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत बृहस्पतिको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य कामनाको प्राप्त श्रेष्ठ गुणोंसहित मकान और अर्थकी प्राप्तिसहित धनधान्ययुक्त प्रसिद्ध नम्रतासहित होताहै॥ ४२॥

इति शनिक्षेत्रगते गुरौ ग्रहदृष्टिफलम्।

अथ मेषादिराशिगे भृगौ ग्रहदृष्टिफलम्-तत्रादौ भौमर्क्षगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

कृपाविशेषं नृपतेर्नितांतमतीव जायाजनितव्यलीकम् ॥
कुर्य्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य विशेषकरके निरंतर राजाकी कृपावाला अत्यंत स्त्रीकरके किये हुये कपटसे दुःखी होताहै

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

श्रेष्ठप्रतिष्ठं चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम् ॥
करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको चंद्रमा देखताहोय तो वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठावाला चंचल चित्तवृत्तिवाला कामातुरतासे विकारको प्राप्तहोताहै ॥ २ ॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनं करोति ॥
नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको मंगल देखताहोय वह मनुष्य धन और मान तथा सुख करके रहित विशेष दीन और मलीन होता है ॥ ३ ॥

अथ कुजर्क्षगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च ॥
क्रूरं परार्थापहरं नरं हि करोति शुक्रः कुजभे ज्ञदृष्टः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बुध देखताहोय वह मनुष्य खोटा और धन तथा अपने संबंधियोंसे रहित अपनी बुद्धि और सामर्थ्यसे रहित क्रूर पराये धनको हरनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतं सत्कायकांतिं सुतरां विनीतम् ॥
उदारचित्तं प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षितो दैत्यगुरुः कुजर्क्षे ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य स्त्री और पुत्रादिकोंके सुखसहित श्रेष्ठ देह शोभायमान निरंतर नम्रतासहित उदार चित्त होताहै ॥ ५ ॥

अथ भौमर्क्षगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सुगुप्तवित्ताभिमतं प्रशांतं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम् ॥
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य गुप्तधनवाला शांतस्वभाव माननीय श्रेष्ठ अपने जनोंकी संमति सहित होताहै ॥ ६ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः ॥
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ स्त्रियोंकरके धन वाहनोंकरके निश्चय सुखको लाभकरताहै ॥ ७ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम् ।

विलासिनीकेलिविलासुसक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली ॥
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्वीयालयस्थास्फुजितीन्दुदृष्टे ॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य वेश्याओंके विलासमें आसक्त अपने कुलका पालनेवाला निर्मल बुद्धिवाला सुशील श्रेष्ठ वाणीके विलासमें चतुर होताहै ॥ ८ ॥

अथ स्वगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

गृहादिसौख्योपहतं नितांतं कलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् ॥
कुर्यान्नराणां दनुजेंद्रमंत्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको मंगल देखताहोय वह मनुष्य गृहादि सौख्योंसे रहित लड़ाईमें अपमानको प्राप्त होताहै ॥ ९ ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च ॥
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शुक्रको बुध देखताहोय वह मनुष्य गुणवान् श्रेष्ठ भाग्यवाला कामसहित सौम्यस्वभाव बलवान् धैर्य सहित होताहै ॥ १० ॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

सद्वाहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम्॥
करोति लब्धिं निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन और स्त्री तथा गुण श्रेष्ठ मित्र पुत्र धनादिक सम्पूर्ण वस्तुओंको लाभ करताहै॥११॥

अथ स्वक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोतिदीनः॥
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य रोगोंसहित साधुवृत्तिसे हीन सौख्य और धनहीन होताहै॥१२॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम्॥
कुर्य्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः॥१३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय तौ वह मनुष्य राजाके रनवासकी ड्योढ़ीका अफसर नम्रतासहित गुणयुक्त शास्त्रका जाननेवाला होताहै॥१३॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम्॥
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिंदुदृष्टः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ अन्न और वस्त्रादि सुखसहित नीलकमलके समान श्याम सुंदर नेत्रोंवाला सुंदर बालोंवाला होताहै॥१४॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः कांतानिमित्तं द्रविणव्ययः स्यात्॥ कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसुतेन दृष्टः॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको मंगल देखताहोय वह मनुष्य भाग्यसहित कामकलामें चतुर स्त्रीके निमित्त धनका व्यय करनेवाला कामी होताहै॥१५॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञं महावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ॥
कुर्यान्नराणामुशनाः प्रवीणं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बुध देखताहोय वह मनुष्य चतुर बड़ा भारी वाहन और धनकी वृद्धिवाला फौजका मालिक परिवारके सौख्यसहित बुद्धिवान् होताहै ॥ १६ ॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम् ।

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ॥
मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिवृद्धिसहित बहुत वैभव करके सहित प्रसन्न चित्त निरंतर नम्र होताहै॥ १७॥

अथ बुधवेश्मगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

पराभिभूतं चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च ॥
मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य अपमान करके सहित चपळ स्वभाव दुःखसहित मनुष्यों करके त्यागा हुआ होता है ॥ १८ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

सरोपयोषाकृतहर्षनाशः स्यात्पुरुषः शत्रुजनाभिभूतः ॥
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य क्रोध करके स्त्रीकृत हर्षका नाश करनेवाला वैरियों करके पीडित होता है ॥ १९ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम् ।

कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको चन्द्रमा देखता होय तो वह मनुष्य पहिले लड़की पीछेसे लड़का पैदा करता है और माता व विमाताका मान करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ॥
परंतु कांताकृतचिंतयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको मंगल देखता होय वह मनुष्य कलाओंमें चतुर शत्रुओंका नाश करनेवाला बुद्धिकरके सौख्यसहित स्त्रीकरके चिंताको प्राप्त होता है २१

अथ कर्कराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम्।
जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः२२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बुध देखताहोय वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण गुणवान् गुणोंका जाननेवाला स्त्री पुत्रोंकरके अत्यंत दुःखसे संतापको प्राप्त मनुष्योंकरके त्यागाजाता है ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीतमतिविभवसमेतं कामिनी-
सूनुसौख्यम् ॥ प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते सुरपतिगु-
रुदृष्टो भार्गवः कर्कटस्थः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य अत्यंत चतुर उदार सुंदरवृत्तिवाला नम्रतासहित मति और वैभवसहित स्त्री पुत्रोंके सौख्यसहित प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तसौख्योपहतं गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितं च ॥
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मंदेक्षितः कर्कगतः सितास्यः २४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्ति और सौख्यरहित धनहीन व्यर्थ परिश्रम करनेवाला स्त्रीकरके जीतागया स्थानसे पतित होता है ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कांताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ॥
क्रमेलकाद्यैर्यदि वा युतः स्यादर्केक्षिते सिंहगते सितास्ये॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंह राशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य स्पर्द्धाकरके चित्तवृत्तिको बढ़ानेवाला स्त्रीके आश्रयसे धनको लाभकरनेवाला अथवा ऊंट गधे घोडों करके धन लाभ करता है ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च ॥
यस्य प्रसूतौ दनुजेंद्रमंत्री चंद्रेक्षितः सिंहगतो यदि स्यात् ॥२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको चंद्रमा देखताहोय उस मनुष्यकी माता दो होती हैं और वह स्त्रीसे विरोध करनेवाला ऐश्वर्यसहित होता है ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कंदर्पजातव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः ॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको मंगल देखता होय वह मनुष्य राजाका प्यारा अन्न धन सहित कामकलाके व्यसनोंसहित होता है ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लुब्धं स्मराधिक्यविकारनिंद्यम् ॥
दैत्येंद्रमंत्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बुध देखताहोय वह मनुष्य धनसहित संग्रह करनेमें चित्तकी वृत्तिवाला लोभी कामदेवकी अधिकतासे बुरे विकारोंको प्राप्त होता है २८

अथ सिंहराशिगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

नरेंद्रमंत्री धनवाहनाढ्यो बह्वङ्गनानंदनभृत्यसौख्यः ॥
विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् ॥२९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य राजाका मंत्री धन वाहन सहित बहुत स्त्री पुत्र नौकरोंके सौख्यवाला प्रसिद्धकामोंका करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

नृपोपमं सर्वसमृद्धिभाजं दंडाधिकारेष्वथ वा नियुक्तम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य राजाके समान सम्पूर्णसमृद्धियोंका भागी फौजदारीके महकमेंका अफसर होता है ॥ २० ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे रविदृष्टिफलम्।

रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवंतं विशेषात् ॥
नानादेशप्राप्तयानं मनुष्यं कुर्य्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र सूर्य करके दृष्ट होय वह मनुष्य क्रूर चतुर भाग्य और सौभाग्यका भागी बलसहित विशेष धनवान् होता है अनेक देशोंकी यात्रा करनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम्।

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् ॥
धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरु क्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ राजमान करके विराजमान प्रसिद्ध नम्रतासहित बहुत भोगसहित धीर बलवान् होताहै ॥ २२ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम्।

द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कांताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम् ॥
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः ॥ २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको मंगल देखता होय वह मनुष्य वैरियोंको नहीं संहारनेवाला धनवान् प्रसन्न स्त्रीकृतप्रेमसे सहित श्रेष्ठ पुण्यवान् श्रेष्ठवाहनोंकरके सहित होता है ॥ २३ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम्।

सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् ॥
कुर्य्यान्नराणां गुरुमंदिरस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः ॥२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको बुध देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहन धन वस्त्र आभूषणका लाभकरनेवाला श्रेष्ठ अन्नोंके सुखसहित होता है ॥ २४ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

तुरंगहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् ॥
करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ॥ २५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्र बृहस्पति करके दृष्ट होय वह मनुष्य घोड़े सोना वस्त्र आभूषण बड़े हाथी स्त्रियोंके सुखोंसहित होताहै ॥ ३५ ॥

अथ गुरुगेहगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम् ।

सद्भोगसौख्योत्तमकर्मभाजं नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ॥
करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठभोग और उत्तम सौख्य और कर्मोंका भागी नित्य उत्सवसहित बड़े धनवाला होताहै ॥ ३६ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे रविदृष्टिफलम् ।

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारविराजमानम् ॥
कांताविलासैः सहितं प्रकुर्य्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतोर्कदृष्टः ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य स्थिर स्वभाववाला वैभवसहित मणियुक्त धनसहित बलकरके विराजमान होताहै ॥ ३७ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे चंद्रदृष्टिफलम् ।

ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्त्वं धनवाहनाढ्यम् ॥
करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य तेजस्वी सुंदर शरीरवाला बड़ा बलवान् धन और वाहनोंसहित होताहै ॥ ३८ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे भौमदृष्टिफलम् ।

श्रमामयाभ्यामतितप्तमूर्तिमनर्थतोर्थक्षतिसंयुतं च ॥
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखता होय वह मनुष्य श्रम और रोगकरके अत्यंत तप्तस्वरूपवाला और अनर्थसे धनका नाश करनेवाला होता है ॥ ३९ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे बुधदृष्टिफलम् ।

विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुलप्रपंचम् ॥
महागिरालापं मनुजं प्रकुर्य्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको बुध देखता होय वह मनुष्य पंडितोंकी विधिका जाननेवाला धनी संतुष्ट चतुर बलसहित बड़ा प्रपंची श्रेष्ठ वाणीका विलास करनेवाला होता है ॥ ४० ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे गुरुदृष्टिफलम्।

सद्गन्धमाल्यांबरचारुवाद्यसंजातसङ्गीतरुचिः शुचिश्च ॥
स्यान्मानवो दानवराजपूज्ये सुरेज्यदृष्टे शनिमंदिरस्थे ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको बृहस्पति देखता होय तो वह मनुष्य श्रेष्ठ गंध और माला वस्त्र सुंदर बाजे सहित संगीतविद्याका जाननेवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ शनिक्षेत्रगते शुक्रे शनिदृष्टिफलम्।

प्रसन्नगात्रं च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ॥
कुर्यान्नरं दानववृन्ददेवो मंदेक्षितो मन्दगृहाधिसंस्थः ॥ ४२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शुक्रको शनिश्चर देखताहोय वह मनुष्य प्रसन्न देह अनेक वस्तु लाभकरनेवाला धन और स्त्रीपुत्रोंके सौख्य सहित वाहनवाला होताहै ॥ ४२ ॥

इति मेषादिराशिगते शुक्रे ग्रहदृष्टिफलम् ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्।

लुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ॥
सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य भैंस गैया बकरी भेड़की समृद्धिवाला खेतीके काममें हमेशा तत्पर श्रेष्ठ कर्ममें आसक्त होता है ॥ १ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ चंद्रदृष्टिफलम्।

नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितं च ॥
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य नीचोंकी संगतिवाला चपल दुष्टशील खल सुख और धनरहित होता है ॥ २ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम्।

अनल्पजल्पं गतसत्पदार्थं कार्यक्षतिं जातविशेषवित्तम् ॥
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको मङ्गल देखताहोय वह मनुष्य बहुत बोलनेवाला धन संपदाकरके रहित कार्य नाश करनेवाला विशेष धनहीन होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

चौर्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम् ॥
ज्ञेक्षितो हि कुरुतेऽर्कनंदनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको बुध देखताहोय वह मनुष्य चोरी करनेवाला कलहमें तत्पर स्त्री और उत्सव रहित होताहै ॥ ४ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

सुखधनैः सहितं नृपमंत्रिणं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् ॥
सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य सुख और धनकरके सहित राजाका मंत्री और राजाके आश्रयकरके मुख्यताको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

अथ भौमालयस्थे शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

बहुप्रयाणाभिरतं विकांतिं पापाङ्गनासक्तमतिं विचित्तम् ॥
करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगुजेन दृष्टः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य बहुत यात्राकरनेवाला कांतिरहित पापिनी स्त्रीमें आसक्त बुद्धिकरके दुःखी होताहै ॥ ६ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ रविदृष्टिफलम् ।

विद्याविचारे प्रचुरोतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शांतः ॥
भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्यात्मजे भार्गववेश्मसंस्थे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुलाराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता होय वह मनुष्य विद्याके विचारमें अधिक बड़ा वक्ता पराया अन्न खानेवाला धनहीन शांत होता है ॥ ७ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

नृपप्रसादात्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम् ॥
बलान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं मंदः सितर्क्षे हरिणांकदृष्टे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शुक्रको शनैश्चर देखताहोय वह मनुष्य राजाकी कृपाकरके बड़े अधिकारको प्राप्त स्त्री और भूषण तथा वस्त्रोंके सौख्यको प्राप्त बलवान होता है ॥ ८ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ भौमदृष्टिफलम्।

संग्रामकार्याभिरतं नितांतमनल्पजल्पं च महत्प्रसादम् ॥
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको मंगल देखताहोय वह मनुष्य युद्धके काममें तत्पर निरंतर बहुत बोलनेवाला बडी कृपावाला होता है ॥ ९ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ बुधदृष्टिफलम्।

कांतारतो नीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतो गतार्थः ॥
क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको बुध देखताहोय वह मनुष्य स्त्रीमें तत्पर नीचपुरुषोंका साथी विनोद और हास्यमें तत्पर धनहीन हिजडोंसे मित्रता करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

परोपकारे कृतचित्तवृत्तिः परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च ॥
दाताधर्मी सर्वजनप्रियश्च मंदे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य पराये उपकारमें चित्त करनेवाला पराये दुःख करके आप दुःखी दाता और धर्मी होताहै ॥ ११ ॥

अथ भृगुजालयस्थे शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

रत्नादिलाभं वनिताविलासं जलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् ॥
कुर्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृष तुला राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य रत्नादिपदार्थोंका लाभ करनेवाला स्त्रीके विलासमें तत्पर पानीकी अधिकतावाला राजाओंके गौरवको प्राप्त होताहै ॥ १२ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ रविदृष्टिफलम्।

सुखोज्झितं नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् ॥
कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमंदिरस्थः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चर बैठा होय व उसको सूर्य देखता होय वह मनुष्य सुख रहित नीचोंमें तत्पर क्रोधसहित अधर्मी वैर करनेवाला धैर्यवान् होता है ॥ १३ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

प्रसन्नमूर्त्तिर्नृपतिप्रसादात्प्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः ॥
कांताधिकारो यदि वा नरः स्यान्मंदे ज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य प्रसन्नमूर्ति राजाकी कृपाकरके अधिकारको प्राप्त ऊंचे कर्योंमें वृत्तिकरनेवाला स्त्रियोंके अधिकारको प्राप्त होताहै ॥ १४ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति ॥
सोमात्मजक्षेत्रगतोऽर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्याराशिगत शनैश्चरको मंगल देखताहोय वह मनुष्य बडा बुद्धिमान् निरंतर विधिका जाननेवाला प्रसिद्ध व गंभीर होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् ॥
शिल्पेष्वभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितः सौम्यगृहस्थमंदः ॥ १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बुध देखताहोय वह मनुष्य धनसहित सुंदर बुद्धिवाला नम्रतासहित गीत जिसको प्रिय संग्रामके कार्यमें चतुर शिल्पका जाननेवाला होताहै ॥ १६ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ॥
भवेन्नरो मंदचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य राजाका आश्रय करनेवाला सुंदर गुणोंकरके सहित सत्पुरुषोंका प्यारा गुप्तधनवान् होताहै ॥ १७ ॥

अथ बुधर्क्षे शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितांतम् ॥
स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञदृष्टः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन कन्या राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य स्त्रीके आभूषण बनवानेमें चतुर श्रेष्ठ कर्म और धर्ममें निरंतर तत्पर स्त्रियोंमें आसक्तचित्त होताहै ॥ १८ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ रविदृष्टिफलम्।

आनंददारद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि वोज्झितश्च ॥
मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य आनंद और स्त्री धन करके हीन हमेशा अन्न भोगकरके हीन माताको बड़ा क्लेश देनेवाला होताहै ॥ १९ ॥

अथ कर्कस्थे शनौ चंद्रदृष्टिफलम्।

निपीडिनं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च ॥
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य बंधुजनोंको पीड़ा देनेवाला और माताको दुःख देनेवाला धनकी वृद्धिसहित होताहै ॥ २० ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

गलद्बलः क्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोपि ॥
स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको मंगल देखताहोय वह मनुष्य बल करके हीन क्षीणदेह राजाकरके दियेहुए धन करके वैभववाला होताहै ॥ २१ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम्।

वाग्विलासकठिनोटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः ॥
दम्भवृत्तिचतुरोपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बुध देखताहोय वह मनुष्य वाग्विलासमें कठिन और भ्रमणकरनेमें बुद्धि जिसकी और मनवांछित फलको प्राप्त पाखंडकरनेमें चतुर होताहै ॥ २२ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि ॥
संयुतो भवति मानवो जनो जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य धरती और पुत्र मकान स्त्री धन रत्न और वाहन आभूषणोंकरके सहित होताहै ॥ २३ ॥

अथ कर्कराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्यवर्योमलवाग्विलासैः ॥
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेर्कपुत्रे ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चरको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य उदारता करके सहित गौरव करके युक्त सुंदर मानकरके सहित और सौंदर्यता तथा निर्मल वाणी विलास करके हीन होताहै ॥ २४ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ रविदृष्टिफलम् ।

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च ॥
भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेर्कदृष्टे ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको सूर्य देखताहोय वह मनुष्य धन अन्न करके और वाहन करके श्रेष्ठ वृत्तिकरके सत्य और उत्तम चारित्रोंकरके हीन होताहै ॥ २५ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् ॥
प्रसन्नमूर्तिं कुरुतेर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणांकदृष्टः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको चंद्रमा देखताहोय वह मनुष्य श्रेष्ठ रत्न और आभूषण वस्त्र सुंदर यश स्त्री मित्र पुत्रादिकोंके सुखसे पूर्ण प्रसन्नमूर्ति होताहै ॥ २६ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

संग्रामकर्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः ॥
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ सिंहस्थिते भूमिसुतेक्षिते च ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको मंगल देखताहोय वह मनुष्य संग्रामकर्ममें अत्यंत निपुण करुणाहीन क्रोधसहित क्रूरस्वभाववाला होताहै ॥ २७ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको बुध देखताहोय वह मनुष्य धन और स्त्री पुत्र सुख करके हीन दीनतासहित नीचव्यसनोंकरके युक्त होताहै ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ गुरुदृष्टिफलम्।

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम् ॥
नरं पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ मित्र और पुत्रादि युक्त गुणोंसहित प्रसिद्ध श्रेष्ठवृत्तिवाला निरंतर नम्रतासहित पुर और ग्रामका पति होता है ॥ २९ ॥

अथ सिंहराशिगते शनौ भृगुदृष्टिफलम्।

धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्रतप्तम् ॥
कुर्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चरको शुक्र देखता होय वह मनुष्य धन और अन्न तथा वाहनके सुखकरके सहित स्त्रीसे संतापको प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम्।

ख्यातिं धनाप्तिं बहुगौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनंदनेषु ॥
लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको सूर्य देखता होय वह मनुष्य प्रसिद्धता करके सहित धनको प्राप्तकरनेवाला बहुत गौरवको प्राप्त पराये पुत्रमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ चंद्रदृष्टिफलम्।

सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालंकरणप्रयातः ॥
सुतार्थभार्यासुखभाङ्नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला माता करके रहित और दो नामोंकरके शोभित पुत्र धन स्त्रीके सुख भोगनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम्।

वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दीनतरं करोति ॥
नरं धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमंत्रिणो भे ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्चरको मंगल देखता होय वह मनुष्य वातरोगसहित संसारमें मनुष्योंके विपरीत चलनेवाला परदेशमें रहनेवाला दीन होता है ॥ ३३ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

गुणाभिरामो धनवान्प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः ॥
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमंदिरस्थे ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्वरको बुध देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ गुणोंकरके सहित धनवान् कामी राजा करके बडे अधिकारको प्राप्त हमेशा आचारसहित होता है ॥ ३४ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वाधिशाली बलवान्सुशीलः ॥
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिगत शनैश्वरको बृहस्पति देखता होय वह मनुष्य राजाका मंत्री अथवा फौजका स्वामी अनरल सब कार्योंको करनेवाला बलवान् सुशील होता है ॥ ३५ ॥

अथ गुरुगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

विदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतरां पवित्रः ॥
स्यान्मानवो दानवमंत्रिदृष्टे मंदेमराचार्यगृहं प्रयाते ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धन मीन राशिवर्ती शनैश्वरको शुक्र देखता होय वह मनुष्य परदेशका वासी बहुकार्योंमें आसक्त दो माताका पुत्र निरंतर पवित्र होता है ॥ ३६ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ रविदृष्टिफलम् ।

कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च ॥
विदेशवासी प्रभवेन्मनुष्यो मंदे निजागारगतेर्कदृष्टे ॥ ३७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्वरको सूर्य देखता होय वह मनुष्य बुरे रूपवाली स्त्रीका पति पराया अन्न खानेवाला अनेक प्रयाससहित रोगसहित परदेशका वासी होता है ॥ ३७ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ चंद्रदृष्टिफलम् ।

धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलस्वभावं जननीविरुद्धम् ॥
कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मदः स्वभस्थोमृतरश्मिदृष्टः ॥३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्वरको चंद्रमा देखता होय वह मनुष्य धन और स्त्रीसहित दुःख करके पैदा हुआ चपल स्वभाव माताके विरुद्ध कामातुर होता है ॥ ३८ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भौमदृष्टिफलम् ।

शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदा हृष्टचित्तः ॥
ख्यातो मर्त्यश्चात्मजस्थेर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयाते ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको मंगळ देखता होय वह मनुष्य शूरवीर क्रूर अच्छे गुणोंकरके सहित सर्वजनोंमें उत्कृष्ट हमेशा प्रसन्नचित्त प्रसिद्ध होता है ॥ ३९ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ बुधदृष्टिफलम् ।

सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्ता-
न् ॥ करोति मर्त्याननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्र-
दृष्टः ॥ ४० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको बुध देखता होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वाहनसहित उत्साहसहित बलवान् धीर अनेक कार्योंमें आसक्त होता है ॥ ४० ॥

अथ स्वगेहगते शनौ गुरुदृष्टिफलम् ।

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम् ॥
कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चंडांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ॥ ४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुंभ राशिगत शनैश्चरको बृहस्पति देखताहोय वह मनुष्य गुणोंसहित राजाका मंत्री रोगरहित सुंदर शरीरवाला होता है ॥ ४१ ॥

अथ स्वगेहगते शनौ भृगुदृष्टिफलम् ।

कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम् ॥
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेः सुतो भार्गवसूनुदृष्टः ॥ ४२ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे ग्रह-
दृष्टिफलाध्यायः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर कुम्भ राशिगत शनैश्चरको शुक्र देखताहोय वह मनुष्य कामातुर श्रेष्ठ नियमरहित भाग्यसहित सुखवान् धनवान् भोग भोगनेवाला लक्ष्मीका स्वामी होता है ॥ ४२ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडितश्यामलाल-
लकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ग्रहदृष्टिफलवर्णनोध्यायः ॥ ४ ॥

अथ राशिफलानि–तत्र मेषराशिगतसूर्यफलम् ।

भवति साहसकर्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ॥
क्षितिपतिर्मतिमान्सहितस्तदा सुमहसामहसामधिपे क्रिये ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य बैठा होय वह मनुष्य साहसके काम करनेवाला रुधिर और पित्तविकारयुक्त देहवाला धरतीका मालिक बुद्धिमान् साहसी होताहै ॥ १ ॥

अथ वृषराशिगतसूर्यफलम् ।

परिमलैर्विमलैः कुसुमाशनैः सुवसनैः पशुभिस्सुखमद्भुतम् ॥
गवि गतो हि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत सूर्य बैठा होय वह मनुष्य दूर जानेवाली गंधयुक्त पुष्प और शय्या और उत्तम वस्त्र और पशुओंके अद्भुत सौख्यको प्राप्त जलसे डरनेवाला मनुष्योंको उनका योग्य और हित उपदेश करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिगतसूर्यफलम् ।

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक्प्रथितो भवेत् ॥
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत सूर्य बैठा होय वह मनुष्य गणितशास्त्रकी कलाको जाननेवाला श्रेष्ठ शील शोभायमान अद्भुतवाणी बोलनेवालोंमें अग्रणीय विनयसहित अतिशयकरके नीतियुक्त होता है ॥ ३ ॥

अथ कर्कराशिगतसूर्यफलम् ।

सुजनतारहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ॥
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत्सधनताधनतासहिताधिकः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत सूर्य बैठा होय वह मनुष्य मनुष्यतारहित कालका जाननेवाला पिताके वाक्यको नाशकरनेवाला धनवान् और धनवानोंमें अग्रणीय होता है ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिगतसूर्यफलम् ।

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिको विभुतयाद्भुतकीर्तिसमन्वितः ॥
दिनकरे करिवैरिगते नरो नृपरतो परतोषकरो भवेत् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य स्थिर बुद्धि अधिक पराक्रमी स्वामी अद्भुत कीर्तिसहित राजामें रत पराया संतोष करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिगतसूर्यफलम् ।

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरो लभेत् ॥
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमामहिमापहिताहितः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य राजासे धन प्राप्त करनेवाला कोमल वाणी बोलनेवाला गाना सुननेवाला बडे महत्त्वको पानेवाला होताहै ॥ ६ ॥

अथ तुलाराशिगतसूर्यफलम् ।

नरपतेरतिभीरुरहर्निशं जनविरोधविधानमवं दिशेत् ॥
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिद्रविणादिकम् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य राजामें भीति और रात दिन भयको प्राप्त मनुष्योंसे विरोध करनेवाला पापकर्म करनेवाला कलहमें मन जिसका पराये कर्ममें प्रीति करनेवाला होताहै उसको द्रव्यादिक मणियें नहीं होती हैं ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतसूर्यफलम् ।

कृपणतां कलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत् ॥
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम् ८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत सूर्य बैठाहोय तौ वह मनुष्य कृपण अतिशय करके कलह करनेवाला विष अग्नि शस्त्रसे भयको प्राप्त पिता माताका विरोधी उन्नति नहीं करता है ॥ ८ ॥

अथ धनराशिगतसूर्यफलम् ।

स्वजनकोपमतीव महामतिं बहुधनं हि धनुर्धरगो रविः ॥
स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत सूर्य बैठा होय वह मनुष्य अपने मित्रोंसे क्रोध करनेवाला बड़ा बुद्धिवान् बहुत धनवाला मित्रोंका पूजन करनेवाला और बुद्धिकरके संतोषका बढ़ानेवाला होता है ॥ ९ ॥

अथ मकरराशिगतसूर्यफलम् ।

अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम् ॥
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत् १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य भ्रमण करनेवाला अपने जनोंसे विरोध रखनेवाला निरंतर धनहीन उत्सवरहित विभुत्वका सुख नहीं पाताहै ॥

अथ कुंभराशिगतसूर्यफलम् ।

कलशगामिनि पंकजिनीपतौ शठतरो हि नरो गतसौहृदः ॥
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयात्तसुखी भवेत् ११

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भराशिमें सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य शठतासहित मित्रता रहित मलिनतायुक्त करुणाहीन रुधिर प्रकोपवाला सुखी होता है ॥ ११ ॥

अथ मीनराशिगतसूर्यफलम् ।

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गुह्यमहाभयम् ॥
दिनपतौ गुरुभेभिमतो भवेत्सुजनतो जनतोषदसन्मतिः ॥१२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत सूर्य बैठाहोय वह मनुष्य क्रय विक्रय करके बहुत धन पानेवाला अपने मनुष्योंसे भयको प्राप्त श्रेष्ठ जनों करके मनुष्योंको तोषकरनेवाला श्रेष्ठबुद्धि होता है ॥ १२ ॥

अथ मेषराशिगतचंद्रफलम् ।

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत् ॥
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् १३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य धनका संग्रह और श्रेष्ठ जनोंकरके रहित पुत्र सहित स्त्री करके जीताहुआ वह अद्भुत वैभवसे अच्छी कीर्ति पाताहै ॥ १३ ॥

अथ वृषराशिगतचंद्रफलम् ।

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ॥
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत्सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च १४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य स्थिर गति श्रेष्ठ बुद्धिवाला सौभाग्यमान् कुशलताको प्राप्त बहुत नौकरोंवाला श्रेष्ठ कार्योंसे और कुशलतासे सौख्य पाताहै ॥ १४ ॥

अथ मिथुनराशिगतचंद्रफलम् ।

प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतिप्रियः ॥
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः ॥१५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य प्रिय करने-वाला हाथोंमें मछलीके आकारवाली रेखावाला मैथुनके सौख्यसहित अतिशय करके स्त्रियोंका प्यारा सज्जनतासहित हो मनुष्य उसका गौरव करते हैं ॥ १५ ॥

अथ कर्कराशिगतचंद्रफलम्।

श्रुतकलाबलनिर्म्मलवृत्तयः कुसुमगंधजलाशयकेलयः॥
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमती सुमतीऽस्मितलब्धयः १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य शास्त्रमें कुशल बलवान् शुद्धचित्त पुष्पोंसे गंध सूंघनेवाला जलमें क्रीड़ा करनेवाला धरती करके सहित श्रेष्ठ बुद्धिसे मनोरथको प्राप्त करनेवाला होताहै॥ १६॥

अथ सिंहराशिगतचंद्रफलम्।

अचलकाननपानमनोरथं गृहकलिश्च गलोदरपीड़नम्॥
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम्॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य पर्वत और जंगलकी यात्राका मनोरथ करनेवाला घरमें कलह गले और पेटमें पीडाको प्राप्त और शरीरके तेज रहित होताहै॥ १७॥

अथ कन्याराशिगतचंद्रफलम्।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः॥
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिना विधिना सहितः पुमान्॥ १८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य स्त्रियोंके साथ अधिक विलास करनेवाला कुतूहल करके श्रेष्ठ शील कन्याकी संतानके उत्सव सहित श्रेष्ठ भाग्यवान् और उत्तम कृत्यवाला होताहै॥ १८॥

अथ तुलाराशिगतचंद्रफलम्।

वृषतुरंगमविक्रमविक्रमद्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान्॥
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसञ्चितविक्रमः॥१९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य बल और कांति सहित देवता और ब्राह्मणोंको पूजन करनेवाला बहुत स्त्रियोंवाला वैभव और प्रतिष्ठा करके प्राप्त किया है पराक्रम जिसने॥ १९॥

अथ वृश्चिकराशिगतचंद्रफलम्।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः॥
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत् २०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत चंद्रमा बैठा होय राजा जुए करके उसका धन नाश होताहै कलहमें प्रीति जिसकी निर्बल देह दुष्ट मनुष्य दुर्बल देह शांति रहित होताहै ॥ २० ॥

अथ धनराशिगतचंद्रफलम् ।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ॥
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ॥२१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य बहुत कामोंमें चतुर अधिक बलवान् निर्मलता करके सहित सीधी वाणी जिसकी, धनवान् बहुत खर्च नहीं करताहै ॥ २१ ॥

अथ मकरराशिगतचंद्रफलम् ।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषासहितो मदनातुरः ॥
निजकुलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य पानी करके डरनेवाला गानविद्याका जाननेवाला रूखा शरीर, कामातुर अपने कुलमें उत्तम वृत्ति करनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

अथ कुंभराशिगतचंद्रफलम् ।

अलसतासहितोन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोतिविचक्षणः ॥
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः २३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य आलस्य सहित पराये पुत्रमें प्रीति करनेवाला कुशलतासहित अत्यंत चतुर वैरियोंका नाश करनेवाला होताहै ॥ २३ ॥

अथ मीनराशिगतचंद्रफलम् ।

शशिनि मीनगते विजितेंद्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः ॥
विमलधीः किल शास्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितो नरः२४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य इंद्रियोंका जीतनेवाला बहुत गुणवाला कुशल जलकी लालसा निर्मल बुद्धि शास्त्रविद्यामें प्रवीण निर्बल देहवाला होताहै ॥ २४ ॥

अथ मेषराशिगतभौमफलम् ।

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसा महसा बहुसाहसैः ॥
अवनिजः कुरुते सततं युतं त्वजगतो जगतोभिमतन्नरम् ॥२५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य राजा करके धरती और मान धनको प्राप्त करनेवाला श्रेष्ठवाणीवाला बहुत साहसी संसारका प्यारा होताहै ॥ २५ ॥

अथ वृषराशिगतभौमफलम् ।

गृहधनाल्पसुखञ्च रिपूदयं परगृहस्थितिमादिशते नृणाम् ॥
अनयाग्निरुजौ वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् २६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य घर और धनका थोड़ा सुख पानेवाला शत्रुओंसहित पराये घरमें वास करनेवाला अत्यंत पुत्रजनित पीड़ाको प्राप्त अनीति और अग्निरोगसहित होताहै ॥ २६ ॥

अथ मिथुनराशिगतभौमफलम् ।

बहुकलाकलनं कुलजोत्कलिं प्रचलनप्रियताञ्च निजस्थलात् ॥
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् २७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य बहुत कलाओंकी रचना करनेवाला कुटुंबी पुरुषोंसे कलह करनेवाला अपने स्थानसे यात्रा प्रिय पुत्रादिकोंसे सौख्य पानेवाला होताहै ॥ २७ ॥

अथ कर्कराशिगतभौमफलम् ।

परगृहास्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमिताञ्च रिपूद्यम् ॥
हिमकरालयगे किल मंगले प्रबलयाबलया कलहं व्रजेत् ॥ २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य पराये घरमें वास करनेवाला अत्यंत दीन, बुद्धिहीन शत्रुओंके उपद्रवसे शांत बलवान् स्त्रीसे कलह करनेवाला होताहै ॥ २८ ॥

अथ सिंहराशिगतभौमफलम् ।

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ॥
अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयताभियुतो भवेत् ॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य अत्यंत पुत्र और स्त्रीके सौख्यकी प्राप्ति व शत्रुओंका नाश करनेवाला, बड़ा उद्यमी और साहसी अनीति और नीतिसहित होताहै ॥ २९ ॥

अथ कन्याराशिगतभौमफलम् ।

सुजनपूजनताजनताधिको यजनयाजनकर्मरतो भवेत् ॥
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते त्ववनितो वनितोत्सवतःसुखी ३०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ जनोंकरके पूजनीय मनुष्योंके साथ सौख्य सहित यज्ञ करै और करावे स्त्रियोंके उत्सवकर्मसे सुखी होताहै ॥ ३० ॥

अथ तुलाराशिगतभौमफलम् ।

बहुधनव्ययतांगविहीनतागतगुरुप्रियतापरितापितः ॥
वणिजि भूमिसुते विकलः पुमानवनितोवनितोद्भवदुःखितः॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य बहुत धन खर्च करनेवाला अंग विहीन बड़े जनोंसे प्रेमरहित संतापको प्राप्त विकलतासहित स्त्रियोंसे दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतभौमफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखम् ॥
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य विष और अग्नि तथा शस्त्रके भयको प्राप्त लड़का लडकीके बड़े सौख्यको प्राप्त राजामें रत शत्रुओंसे जयको प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ धनराशिगतभौमफलम् ।

रथतुरंगमगौरवसंयुतः परमरातितनुक्षतिदुःखितः ॥
भवति नावनिजे धनुषिस्थिते सुवनितावनिताभ्रमणप्रियः॥३३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य रथ और घोड़े तथा गौरवसहित व्रणरोगसे पीडित श्रेष्ठ स्त्रीवाला स्त्रीके साथ भ्रमणकरनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ मकरराशिगतभौमफलम् ।

रणपराक्रमतावनितासुखं निजजनप्रतिकूलतया श्रमः ॥
विभवता मनुजस्य धरात्मजे मकरगेकरगेव रमा भवेत् ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य युद्धमें पराक्रम करनेवाला स्त्रीके सौख्यको प्राप्त अपने कुटुंबियोंके प्रतिकूल बड़े परिश्रमको पानेवाला वैभव-सहित हस्तगत लक्ष्मीवाला होताहै ॥ ३४ ॥

अथ कुंभराशिगतभौमफलम् ।

विनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलङ्कलम् ॥
प्रकुरते मनुजङ्कलशाश्रितः क्षितिसुतोतिसुतोद्भवदुःखितः ॥३५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य नम्रतारहित रोगसहित अपने कुटुंबियोंकी प्रतिकूल परिपूर्ण खलताको प्राप्त पुत्रजनित दुःखको प्राप्त होताहै ॥ ३५ ॥

अथ मीनराशिगतभौमफलम् ।

व्यसनतां खलतामदयालुतां विकलतां चलनं च निजालयात् ॥
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितो विमतिनामतिनाशनमादिशेत् ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत मंगल बैठा होय वह मनुष्य व्यसनसहित दुष्टतासहित दयारहित विकलतासहित अपने स्थानसे चलनेवाला कुबुद्धिसे उनका नाश होय ॥ ३६ ॥

अथ मेषराशिगतबुधफलम् ।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो ह्यविरतं कलहाकुलितो नरः ॥
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगते क्षितिसाधनः ॥ ३७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य दुष्ट बुद्धि चंचल स्वभाव निरंतर कलहकरके आकुल बहुत खानेवाला करुणारहित धरतीका साधनरहित होताहै ॥ ३७ ॥

अथ वृषराशिगतबुधफलम् ।

वितरणप्रणयं गुणिनं दिशेद्बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ॥
धनिनमिंदुसुतो वृषभस्थितो तनुजतोनुजतोतिसुखं नरम् ॥ ३८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत बुध बैठा होय वह मनुष्य दान और नम्रतासहित गुणवान् बहुत कलाओंमें कुशल मैथुनकी लालसा करनेवाला धनवान पुत्र और भ्राताओंके सुखको पाताहै ॥ ३८ ॥

अथ मिथुनराशिगतबुधफलम् ।

प्रियवचोरचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ॥
मिथुनगे जनने शशिनंदने सदनतोऽदनतोपि सुखी नरः ॥ ३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुन राशिगत बुध बैठा होय वह मनुष्य प्यारके वचन बोलनेकी रचनामें चतुर हो माताका पुत्र शुभ वेषवाला भोगी स्थान और भोजन करके सुखी होताहै ॥ ३९ ॥

अथ कर्कराशिगतबुधफलम् ।

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ॥
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितरां भवेत् ॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य खोटे चरित्र करनेवाला गीत और कथाका निरादर करनेवाला राजसेवी परदेश जानेवाला निरंतर स्त्रियोंके साथ भोग करनेकी इच्छावाला होताहै ॥ ४० ॥

अथ सिंहराशिगतबुधफलम् ।

अनृततासहितं विमतिं परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ॥
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम् ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत बुध बैठा होय वह मनुष्य झूठ बोलनेवाला हीनबुद्धि बंधुगणोंसे वैर करनेवाला स्त्रियोंके साथ आनंद करनेवाला उन्नतिरहित दुःखित होता है ॥ ४१ ॥

अथ कन्याराशिगतबुधफलम् ।

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरो हि वरोन्नतिः ॥
शशिसुते युवतौ च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलचेष्टितैः ॥४२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ वचन बोलनेमें तत्पर चतुर लिखाई करनेमें तत्पर श्रेष्ठ उन्नतिवाला सुखी सुंदरनेत्रोंवाली स्त्रीके अंचलकी इच्छारखने-वाला होता है ॥ ४२ ॥

अथ तुलाराशिगतबुधफलम् ।

अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित्कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ॥
व्यसनयुङ्मनुजःसहिते बुधेऽत्र तुलयातुलयात्वसता युतः ॥४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य झूंठ बोलनेवाला खर्च-करनेवाला शिल्पविद्याका जाननेवाला खोटे चरित्रोंमें प्रीतिकरनेवाला बहुत बोलनेवाला व्यसनस-हित गानेबजानेके समय और पापयुक्त होता है ॥ ४३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतबुधफलम् ।

कृपणतातिगतिप्रणयश्रमो विहितकर्मसुखोपहतिर्भवेत् ॥
शशिजभानुसुतेऽलिगते क्षतिरमलसतो लसतोपि च वस्तुनः ४४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बुध बैठा होय वह मनुष्य कृपणतामें अत्यंत प्रीतिकरनेवाला बडा मेहनती अशुकार्य और सुखकरके हीन हानि और आलस्यसहित गुणोंमें दोष देनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ धनराशिगतबुधफलम् ।

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ॥
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः॥४५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य दान और नम्रता युक्त बहुत वैभवकरके सहित कुलका स्वामी कलाओंमें कुशल योग्य स्त्रियोंके साथ रमण करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ मकरराशिगतबुधफलम् ।

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ॥
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतः स नतः पुरुषो भवेत् ४६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें बुध बैठा होय वह मनुष्य शत्रुभयसहित खोटीबुद्धि काम कलारहित पराये कर्मकरनेवाला व्यसनोंकरके नम्र होता है ॥ ४६ ॥

अथ कुंभराशिगतबुधफलम् ।

गृहकलिं कलशे शशिनंदनो वितनुते तनुतां ननु दीनताम् ॥
धनपराक्रमधर्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः॥ ४७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत बुध बैठा होय वह मनुष्य घरमें क्लेश करनेवाला दीनताको बढानेवाला धन पराक्रम धर्मरहित बुद्धिहीन शत्रुओंकरके संतापित होता है॥४७॥

अथ मीनराशिगतबुधफलम् ।

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ॥
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः ॥ ४८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिका बुध बैठा होय वह मनुष्य पराया धन और जायदादकी रक्षाकरनेवाला ब्राह्मण और देवताओंका सेवक श्रेष्ठ स्त्रियोंके अंगको देखनेवाला होता है ॥ ४८ ॥

अथ मेषराशिगतगुरुफलम् ।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम् ॥
विभवतां च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोयगतोरुमतिप्रदः ॥४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिका बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य बडा उदार चित्त शत्रुओंकी उन्नतिसहित भाग्यवान् देवताओंसे पूजित बडी बुद्धिवाला होता है ॥४९॥

अथ वृषराशिगतगुरुफलम् ।

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलुब्धयः ॥
सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिका बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य ब्राह्मण देवताओंके पूजन और भक्तिसहित धन,वाहन,गौरवताका लोभी बहुत वैरियोंवाला युद्धको भाग संग्राममें वीर पराक्रमवाला होता है ॥ ५० ॥

अथ मिथुनराशिगतगुरुफलम् ।

कवितया सहितः प्रियवाक्छुचिर्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ॥ मिथुनगे सति देवपुरोहिते सहितता हिततासहितैर्भवेत् ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिका बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य काव्य करके सहित प्यारी वाणी बोलनेवाला सुंदर शील रुचि चतुर हितकरके सहित होता है ॥ ५१ ॥

अथ कर्कराशिगतगुरुफलम् ।

बहुधनागमनो मदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ॥
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ॥ ५२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशीमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य बहुत धनवाला कामदेवकी उन्नतिसहित अनेक शास्त्रोंकी कलामें कुशल मिष्टभाषी चतुरताकरके घोडे और हाथियोंकरके सहित होता है ॥ ५२ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुफलम् ।

अचलदुर्गवनप्रभुतोर्जितो दृढतनुर्ननु दानपरो भवेत् ॥
अरिविभूतिहरो हि नरो युतः सुवचसा वचसामधिपे हरौ॥५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशीमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य पर्वत, किला, कोट वनका स्वामी मजबूत शरीर दानकरनेवाला शत्रुओंके वैभवको हरण करनेवाला श्रेष्ठवाणी बोलनेवाला होता है ॥ ५३ ॥

अथ कन्याराशिगतगुरुफलम् ।

कुसुमगंधसदम्बरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ॥
गुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ॥ ५४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य पुष्पोंकी माला और उत्तम गंध श्रेष्ठ वस्त्र करके सहित निर्मलता धन और दानमें बुद्धिवाला रुचिर बहुतकालतक शत्रुताकरनेवाला होता है ॥ ५४ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुफलम् ।

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ॥
वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरतातुरताहितताऽरिता ५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य वेद और तप, जप, होम बड़े उत्सवमेंतत्पर ब्राह्मण देवताओंके पूजन और दानमें बुद्धिवाला चतुरतासहित आतुर अहित करनेवाला शत्रुओंसहित होताहै ॥ ५५ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुफलम् ।

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः ॥
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक्५६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य धनका नाश करनेवाला दोषोंकरके उत्पन्न दुर्बल देह बड़ा पाखंडी भवन तथा वनकरके दुःखका भागी होता है ॥ ५६ ॥

अथ धनराशिगतगुरुफलम् ।

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसंचयः ॥
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सुरुचिरा रुचिराभरणानि च ॥५७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिगत बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य दान और नम्रता बहुत वैभव और धन वाहनोंसहित बुद्धिवान् श्रेष्ठ रुचिकरके सुंदर आभूषणोंवाला होता है५७

अथ मकरराशिगतगुरुफलम् ।

हतमतिः परकर्मकरो नरः स्मरविहीनतरो बहुरोषभाक् ॥
सुरगुरौ मकरे विदधाति नो जनमनो न मनोरथसाधनम् ॥५८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य नष्टबुद्धि पराया कर्म करनेवाला कामदेवरहित क्रोधसहित मनुष्योंके कामको नाश करनेवाला अपना मनोरथ साधनकरनेवाला होता है ॥ ५८ ॥

अथ कुंभराशिगतगुरुफलम् ।

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ॥
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ॥ ५९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य रोगसहित दुष्ट-बुद्धि धनहीन कृपणतामें तत्पर पापकरनेवाला दुष्ट भोजनकरनेवाला दाँत और पेटमें पीड़ा युक्त होता है ॥ ५९ ॥

अथ मीनराशिगतगुरुफलम् ।

नृपकृपात्तधनो मदनोन्नतिः सदनसाधनदानपरो नरः ॥
सुरगुरौ तिमिना सहिते सतामनुमतोनुमतोत्सवदो भवेत् ॥६०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य राजाकी कृपा-करके धनको प्राप्त कामकी उन्नतिवाला घरका साधन करनेवाला दानमें तत्पर सत्पुरुषोंका प्यारा और मित्रोंको सौख्य देनेवाला होताहै ॥ ६० ॥

अथ मेषराशिगतभृगुफलम् ।

भवनवाहनवृंदपुराधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ॥
यदि च संजनने हि भवेद्भृगुः कवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः ६१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य मकान, वाहनसमूह और नगरका स्वामी यात्रा प्रिय आदर रहित कवियोंसे युक्त शत्रुओंकरके रहित होताहै ६१॥

अथ वृषराशिगतशुक्रफलम् ।

बहुकलत्रयुतोत्सवगौरवं कुसुमगंधरुचिः कृषिनिर्मितः ॥
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमंडली ॥ ६२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य बहुत स्त्री और उत्सव तथा गौरव सहित पुष्पोंकी गंधमें रुचि जिसकी खेती करनेवाला बहुत धनवाला थोड़े शत्रु-ओंवाला होता है ॥ ६२ ॥

अथ मिथुनराशिगतशुक्रफलम् ।

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ॥
सुरलता ललिता किल भारती सुमधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत् ॥६३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शुक्र बैठा होय वह मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्रोंकी कलाओंमें चालाक सीधी शोभायमान वाणी जिसकी मीठा खानेमें रुचि जिसकी ऐसा होता है ६३

अथ कर्कराशिगतशुक्रफलम्।

द्विजपतेः सदने भृगुनंदने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ॥
जनमलं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः॥६४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य श्रेष्ठ कर्ममें बुद्धिवाला गुणोंसहित सब आदमियोंको वशमें करनेवाला अच्छी चातुर्यतासे मधुर वाणी सहित होता है ॥ ६४ ॥

अथ सिंहराशिगतशुक्रफलम्।

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च ॥
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषमनुव्रजेत् ६५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य स्त्रियोंसे धन मान और सुख पानेवाला अपने मनुष्योंमें व्यसनको प्राप्त मित्रोंको संतोष करनेवाला व शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

अथ कन्याराशिगतशुक्रफलम्।

भृगुसुते सति कन्यकयान्विते बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः ॥
कमलया पुरुषोतिविभूषितस्त्वमितया मितयापि गिरान्वितः६६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य बड़ा धनवान् तीर्थमें मनोरथ करनेवाला लक्ष्मी करके शोभायमान और बड़ी भारी वाणी करके सहित होता है ॥ ६६ ॥

अथ तुलाराशिगतशुक्रफलम्।

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ॥
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां व्रजेत्६७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य पुष्प और विचित्र वस्त्र धनसहित बहुत आने जाने करके सहित कवियोंका स्वामी उत्तम कविराज होता है ॥ ६७ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशुक्रफलम्।

कलहघातमतिं जननिंद्यतां भजननामयतां नियतं नृणाम् ॥
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ६८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शुक्र बैठा होय वह मनुष्य कलह तथा घात करनेमें बुद्धिवाला मनुष्योंकरके निंद्य जन्मसे रोगवाला व्यसन सहित अत्यंत थोड़ा धनवाला होता है ॥ ६८ ॥

अथ धनराशिगतशुक्रफलम् ।

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ॥
जनुषि कार्मुकगः कुरुते कविं कविरतिं विरतिं चिरतो नृणाम् ६९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य स्त्री पुत्र धनका आगमन व उत्सवसहित राजाका मंत्री श्रेष्ठ शीलवाला राजाका वजीर कवियोंमें प्रेम करनेवाला बहुत कालतक विरतिको प्राप्त होता है ॥ ६९ ॥

अथ मकरराशिगतशुक्रफलम् ।

अभिरतिस्तु जराङ्गनया नृणां व्ययभयं कृशता मतिचिंतया ॥
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेपि मनो भवेत् ॥७०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिमें शुक्र बैठा होय वह मनुष्य वृद्ध स्त्रीमें प्रीति करनेवाला व्यय करनेवाला भयसहित दुर्बलदेह अत्यंत चिंतासहित कवीश्वर जंगलमें प्रीति करनेवाला होताहै ॥ ७० ॥

अथ कुंभराशिगतशुक्रफलम् ।

उशनसः कलशे जनुषि स्थितौ वसनभूषणभोगविहीनता ॥
विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगता विरमा भवेत् ॥ ७१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिगत शुक्र बैठा होय वह मनुष्य वस्त्र और आभूषण भोगरहित अच्छे कर्मोंमें आलस्यको प्राप्त धन नाशक होताहै ॥ ७१ ॥

अथ मीनराशिगतशुक्रफलम् ।

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता विनता भवेत् ॥
रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् ॥७२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शुक्र बैठा होय वह मनुष्य राजाकी कृपासे वैभवको प्राप्त नम्रतासहित शत्रुओंपर हमला करनेवाला धनको प्राप्त दान करनेमें तैरनेमें प्रीतिवाला होताहै ॥ ७२ ॥

अथ मेषराशिगतशनिफलम् ।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम् ॥
क्रियगतेर्कसुते स्वजनैर्नृणां विषमताशमताशमनं भवेत् ॥ ७३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य धनकी हीनता करके दुर्बल देहवाला मनुष्योंसे वैर करके मनोरथको नाश करनेवाला अपने मित्रोंसे विरोधको प्राप्त शांतिरहित होताहै ॥ ७३ ॥

अथ वृषराशिगतशनिफलम्।

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिं मतिविच्युतिम् ॥
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत्॥७४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य स्त्रीके सुखको नाश करनेवाला अतिशय दुष्ट मनुष्योंका संग करनेवाला बुद्धिहीन पुत्रोत्सवसे रहित होता है ॥ ७४ ॥

अथ मिथुनराशिगतशनिफलम्।

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम् ॥
व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभोलभते सुखम् ७५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य ज्यादे चलने से और निर्मलतासे रहित मकानके बाहर हास्य विलास आनंद करनेवाला सुखको नहीं लाभ करता है ॥ ७५ ॥

अथ कर्कराशिगतशनिफलम्।

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमंबया ॥
वरविलासकरा कमला भवेदविकलं विकलं रिपुमण्डलम्॥७६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य दुर्बलदेह माता करके रहित श्रेष्ठ विलासका करनेवाला धनवान् शत्रुओंका नाश करनेवाला होताहै ॥ ७६ ॥

अथ सिंहराशिगतशनिफलम्।

लिपिकलाकुशलैश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः ॥
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्तिभाक्॥७७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य लेखक्रियामें कुशल कलह जिसको प्यारी निर्मलशीलरहित नम्रता हीन पुत्र स्त्रीसे पीडाको प्राप्त होताहै ॥ ७७ ॥

अथ कन्याराशिगतशनिफलम्।

विहितकर्मणि शर्म कदापि नो विनयतोपहतिश्चलसौहृदम् ॥
रविसुते सति कन्यकयान्विते विमलता बलतासहितो भवेत्७८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य जो कुछ काम करे उसमें कल्पना नहीं नम्रताहीन चलायमान मान मिन्नतावाला हमेशा निर्बल होताहै ७८॥

अथ तुलाराशिगतशनिफलम् ।

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः ॥
जलजिनीशसुते हि तुलान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत् ७९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत शनैश्चर बैठा होय: वह मनुष्य अपने कुलमें राजा बलसहित कामदेवकरके सहित बहुत दान देनेवाला राजाकरके सन्मानको प्राप्त होताहै ॥ ७९ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशनिफलम् ।

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ॥
विकलता कलिता च समन्विते रविसुते विसुतेष्टसुखो नरः॥८०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृश्चिकराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य विष अग्नि, शस्त्रसे भय प्राप्त धनका नाश करनेवाला शत्रुओंसहित रोगकरके युक्त विकलतायुक्त पुत्रहीन होता है ॥ ८० ॥

अथ धनराशिगतशनिफलम् ।

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः ॥
प्रथितकीर्तिसुवृत्तपरो नरो विभवतो भवतोषयुतो भवेत्॥ ८१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनराशिमें शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य पुत्रगण करके परिपूर्ण अग्रणीय यशवाला श्रेष्ठ वृत्तिमें तत्पर वैभव और संतोषसहित होता है ॥ ८१ ॥

अथ मकरराशिगतशनिफलम् ।

नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ॥
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम्८२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य राजाके समान गौरवताको प्राप्त अगर और पुष्प कस्तूरी तथा चंदनादि सुगंधोंका भोगनेवाला होताहै ॥८२॥

अथ कुंभराशिगतशनिफलम् ।

ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृतो विहितकर्मपराङ्मुखतान्वितः ॥
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितः प्रचयैर्नरः ॥८३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुम्भ राशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य शत्रुओंकरके जीता हुआ व्यसन और झूंठ सहित श्रेष्ठ कर्मोंसे रहित श्रेष्ठ मित्रोंवाला बड़ा धनवान् होता है ॥ ८३ ॥

अथ मीनराशिगतशनिफलम्।

विनयता व्यवहारसुशीलतासकललोकगृहीतगुणो नरः ॥
उपकृतौ निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः ८४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत शनैश्चर बैठा होय वह मनुष्य नम्रता और व्यवहार सुशीलता सहित सब संसार उसके गुणोंको ग्रहण करता है और वह सबका उपकार करनेवाला होता है ॥ ८४ ॥

अथ राशिपतौ विचारः ।

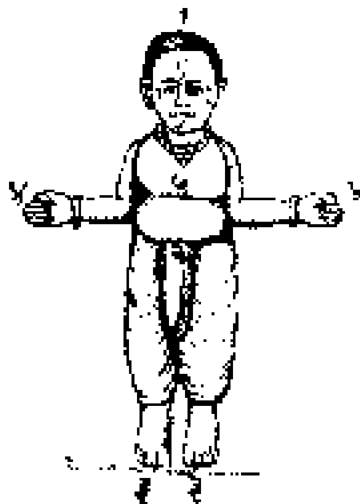
बलान्विते राशिपतौ च राशौ खेटेथ वा राशिफलं समग्रम् ॥
नीचोच्चगेहास्तमयादिभावैर्न्यूनाधिकत्वं परिकल्पनीयम् ॥८५॥

जिस राशिका स्वामी राशि या बलसहित राशिगत ग्रह होय तो वह ग्रह राशिका पूरा फल देता है और जो राशिपति नीच उच्च अस्त होकर बैठा होय तो वह कमती बढ़ती फल करता है अर्थात् उच्चमें श्रेष्ठ वा नेष्ट फल पूरा नीचमें फल हीन बीच राशियोंमें त्रैराशिक गणित करके जान लेना चाहिये ॥ ८५ ॥

इति राशिफलानि ।

अथ शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रं विलिख्यते।

अथ नराकारशनिचक्रस्वरूपम्



नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रं तदुच्यते ॥ वेदितव्यं फलं तस्मान्मानवानां शुभाशुभम् ॥ १ ॥ जन्मर्क्षतो यत्र च कुत्र संस्थं मित्रस्थपुत्रं प्रथमं विदित्वा ॥ चक्रे नराख्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्विन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि २॥

अब अच्छा बुरा फल जाननेके वास्ते शनिचक्र लिखते हैं मनुष्याकार चक्र लिखे उसको शनिचक्र कहते हैं उस शनिचक्रसे मनुष्योंका अच्छा बुरा फल जानना चाहिये ॥ १ ॥ जन्म नक्षत्रसे गणना करके जिस नक्षत्रपर शनैश्चर

होय वह नक्षत्र कहीं स्थित होय जिस अंगमें शनिनक्षत्र आवे वैसाही निम्न लिखित फल जानो मित्रको और पुत्रको भी ज्ञान करे नराकार चक्रमें जन्म नक्षत्रसे अंगोंमें निम्न लिखित स्थापन करके फल कहना चाहिये ॥ २ ॥

अथ नराकारशनिचक्रे नक्षत्रन्यासमाह ।

नक्षत्रमेकं च शिरोविभागे मुखे लिखेत्रीणि युगं च गुह्ये ॥
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं भपंचकं वामकरे चतुष्कम् ॥ ३ ॥
वामे च पादे त्रितयं हि भानां भानां त्रयं दक्षिणपादसंस्थम् ॥
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणाख्ये पाणौ प्रणीतं मुनिनारदेन ४॥

उस नराकार शनिचक्र पर एक नक्षत्र १ शिरपर लिखे और ३ तीन नक्षत्र मुखपर और दो २ नक्षत्र लिंगपर और नेत्रोंपर दो २ दो २ नक्षत्र धर पाँच नक्षत्र हृदयपर स्थापित करे बायें हाथपर ४ चार ॥ ३ ॥ बायें पैरपर ३ दहिने पैरपर ३ दहिने हाथपर ४ चार नक्षत्र स्थापन करना चाहिये ये नारद मुनिने कहा है ॥ ४ ॥

अथ नक्षत्रन्यासेन शनिनक्षत्रफलम् ।

रोगो लाभो हानिरार्तिश्च सौख्यं बन्धः पीडा सप्रमाणं च लाभः ॥ मन्दे चक्रे मार्गगे कल्पनीयं तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्युः फलानि ॥ ५ ॥

अब नराकार शनिचक्रमें नक्षत्रोंका फल कहते हैं जो शनि नक्षत्र शिरपर आवे तो रोगकरे मुखमें परे तो लाभ गुह्य स्थानमें पडे तो हानि नेत्रोंमें पडे तो धनलाभ हृदयमें पडे तो सुखी रहै बांये हाथमें पडे तो बंधन पावे बांये पैरमें पडे तो पीडा दहिने पैरमें पडे तो यात्रा करावे दहिने हाथमें पडे तो लाभ कराता है ॥ ५ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ १ ॥

अब इसके बाद तीनों लोकोंका प्रकाश करनेवाला शीघ्रही विश्वास करानेवाला सर्वतोभद्र चक्र कहते हैं ॥ १ ॥

अथ चक्रप्रकारमाह ।

याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ॥
स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाच्च मया निरुक्तम् ॥ २ ॥

अब सर्वतोभद्र बनानेका प्रकार कहते हैं दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिम नौ कोष्ठका चक्र पंडितजन विधान करें उस चक्रमें अपने वर्णस्वर और जन्म नक्षत्र लिखकर जो ग्रह जिस नक्षत्र पर होय वह ग्रह नक्षत्रपर वेधित होवे उस करके भावसे प्रसिद्ध अच्छा बुरा फल मैं कहता हूं ॥ २ ॥

अथ वेधफलमाह।

भ्रमो भवेद्भेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता॥
राशौ च वेधे सति विघ्नमेवं जन्तुः कथं जीवति पञ्चवेधे ॥ ३ ॥

अब ग्रहोंके वेधका फल कहते हैं जो जन्म नक्षत्रपर पापग्रहोंका वेध होय तो भ्रम करते हैं और जन्म अक्षरपर पापग्रहोंका वेध होय तो हानि कहना और जन्म स्वर पर पापग्रहका वेध होय तो व्याधि कहना चाहिये और जन्म तिथिपर ग्रहोंका वेध होय तो भय कहना और जन्म राशिपर वेध होय तो विघ्न कहना चाहिये और जन्म नक्षत्र अक्षर स्वर तिथि राशि इन पाँचोंको पापग्रह वेधे तो वह जीव नहीं जीताहै ॥ ३ ॥

अथ वेधप्रकारमाह।

भरण्यकारौ वृषभं च नंदां भद्रां तकारं श्रवणं विशाखाम् ॥
तुलां च विध्येदनलर्क्षसंस्थो ग्रहोत्र चक्रे गदितं स्वरज्ञैः॥ ४ ॥
वकारमौकारमुकारदास्रे स्वातीं रकारम्मिथुनञ्च कन्याम् ॥
तथाभिजित्संज्ञकभं च विध्येद्ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ॥५॥
कर्कं ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ॥
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगो मृगस्थः ॥ ६ ॥

अब वेध प्रकार कहते हैं भरणी नक्षत्र और अकारका वेध और वृषराशि नंदा तिथि का वेध होता है और भद्रा तिथि तकार श्रवण विशाखा नक्षत्र तुलाराशि और कृत्तिका नक्षत्र का वेध होता है ॥ ४ ॥ वकार वर्ण औकार उकार अश्विनी नक्षत्रपर वेध होता है स्वाती नक्षत्र और रकारका वेध होता है मिथुन कन्याका वेध कहना तिसी प्रकार अभिजित्पर रोहिणी नक्षत्रका वेध होता है ॥ ५ ॥ कर्कराशि और ककारका वेध कहना सिंहराशिपर पकारका वेध होता है चित्रा और रेवतीपर लकारका वेध कहना चाहिये और अकारका प्रकार मकरराशिसे वेध होता है ॥ ६ ॥

एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यश्चिंतनीयः सुधीभिः ॥
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यंतं कष्टं दुष्टवेधः करोति ॥ ७ ॥

यस्मिनृक्षे संस्थितो वेधकर्ता पापः खेटः सोऽन्यभं याति यस्मिन्॥काले तस्मिन्मङ्गलं पीडितानां प्रोक्तं सद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ॥ ८ ॥

इस प्रकार सर्वतोभद्र चक्रमें सम्पूर्ण नक्षत्र और राशियोंका वेध पंडितजन चिंतवन करे जो शुभग्रहोंका वेध होवे तो श्रेष्ठ फलको देता है और पापग्रहोंका वेध दुष्ट फलको करता है ॥ ७ ॥ जिस नक्षत्रमें वेध करनेवाला ग्रह बैठा होय शुभग्रह तो शुभफलको देता है और पापग्रह अंत्यनक्षत्रमें प्राप्त होय और वेध करता होय तो पीड़ा करते है ॥ ८॥

॥ अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ॥

अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	ऽऽश्ले.	आ.
भ.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	लृ.	लृ.	वृ.	मि.	कर्क.	लृ.	म.	पू.
रे.	ख.	मे.	ओ.	१।६।११ सू. मं.	औ.	सिं.	ट.	उ. फ.
उ. भा.	द.	मी.	४।९।१४ शु.	५।१०–१५ श.	२।७।१२ चं.बु.	कं.	प.	ह.
पू. भा.	स.	कुं.	अ.	३।८।१३ बृ.	अं.	तु.	र.	चि.
श.	ग.	रौ.	म.	ध.	वृश्चि.	रा.	त.	स्वा.
ध.	ज्ञ.	ख.	ज.	भ.	य.	न.	ऋ.	वि.
ई.	श्र.	अ.	उ. षा.	पू. षा.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

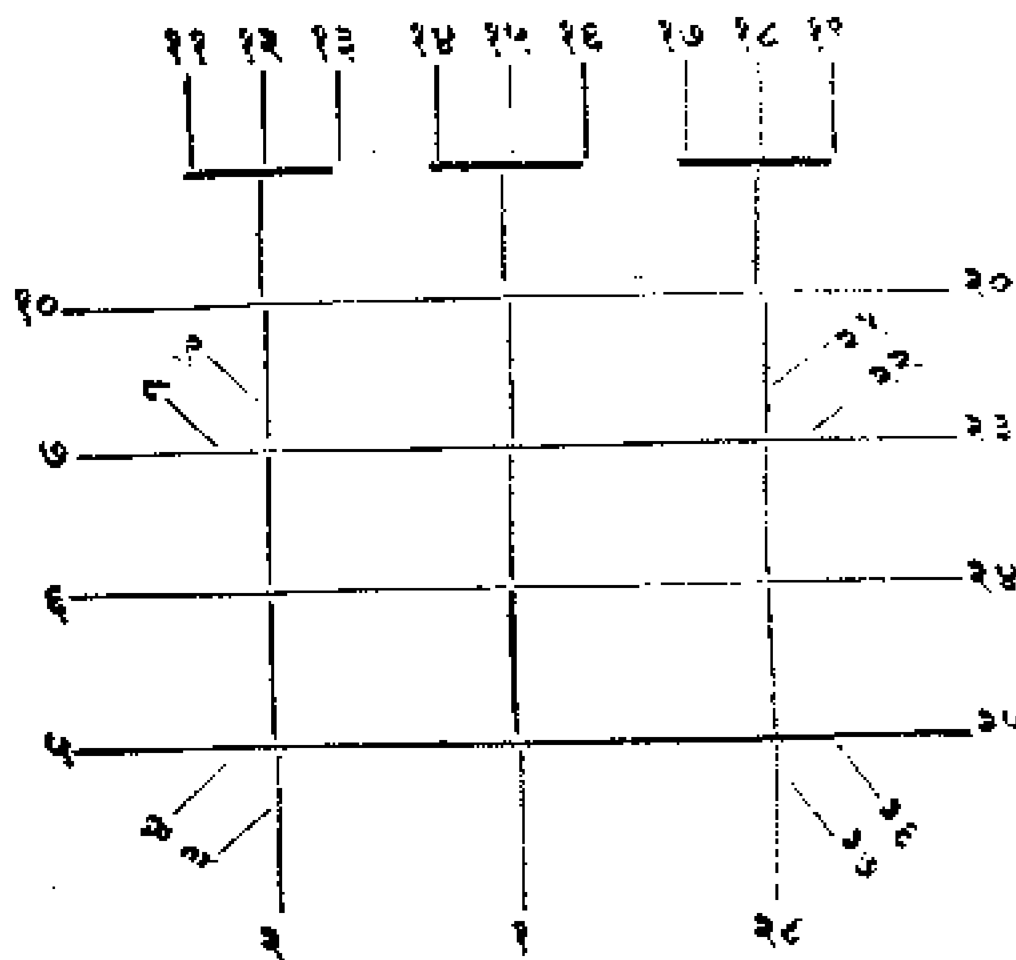
अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् ॥ तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् ॥ १ ॥ त्रिशूलकाग्राः सरलाश्च नित्रः किलोर्द्धरेखाः परिकल्पनीयाः ॥ रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वे द्वे च कोणोपरिगे विधेये ॥ २ ॥ त्रिशूलकोणा-

तरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम् ॥ मध्ये त्रिशू-
लस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ॥ ३ ॥

अब सूर्यकालानल चक्र कहते हैं स्वरशास्त्रमें कहाहुआ, जो सूर्यकालानलचक्र तिसको विस्तार करके मैं कहता हूं यह सूर्यकालानल चमत्कार करनेवाला है ॥ १ ॥ त्रिशूल हैं अग्र भागमें जिसके ऐसी सीधी रेखा तीन लिखे उनको ऊपरको मुख कर स्थापित करना और तीन रेखा उन रेखाओंके बीचमें तिरछी करे और दो दो रेखा चारों कोणोंमें करे ॥ २ ॥ त्रिशूल और कोणके बीचमें एक रेखा और करना चाहिये उस रेखाके आगे दो शृंग बनावे बीचमें जो त्रिशूलकी रेखा है उस रेखाकी जड़से लेकर दहिनी तरफको अभिजितसहित सूर्यके नक्षत्रसे ले करके अट्ठाईस नक्षत्र लिखने चाहियें ॥ ३ ॥

॥ सूर्यकालानलचक्रम् ॥



अथ सूर्यकालानलचक्रविचारः।

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ॥
तलस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिंतावधश्च प्रतिबंधनानि ॥ ४ ॥
शृंगद्वये रुक्च भवेद्धि भंगं शूलेषु मृत्युः परिकल्पनीयः ॥
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम्

॥ ५ ॥ श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्रुदे च वादे च रणप्रयाणे ॥
प्रयत्नपूर्वं ननु चिंतनीयं पुरातनानां वचनं प्रमाणम् ॥ ६ ॥

अब अपने नामका नक्षत्र जिस जगह स्थित होवे तब क्रम करके अच्छा बुरा फल विचारे नीचेके तीन नक्षत्रोंमें अपना जन्म नक्षत्र होवे तो चिंता वध बंधन क्रम करके करते हैं ॥ ४ ॥ और दोनों शृंगोंमें जन्मनक्षत्र होवे तो रोगभय होता है त्रिशूलमें जन्मनक्षत्र होवे तो मृत्यु करता है और बाकीके नक्षत्रोंमें जन्मनक्षत्र होय तो जय लाभ अभीष्टसिद्धि अनेक प्रकारोंकी होती है ॥ ५ ॥ यह सूर्यकालानलचक्रका विचार रोग, विवाद, युद्ध, यात्रामें यत्नपूर्वक विचारना चाहिये यह पूर्वाचार्य गर्ग वशिष्ठादिकोंने कहा है ॥ ६ ॥

अथ चंद्रकालानलचक्रम् ।

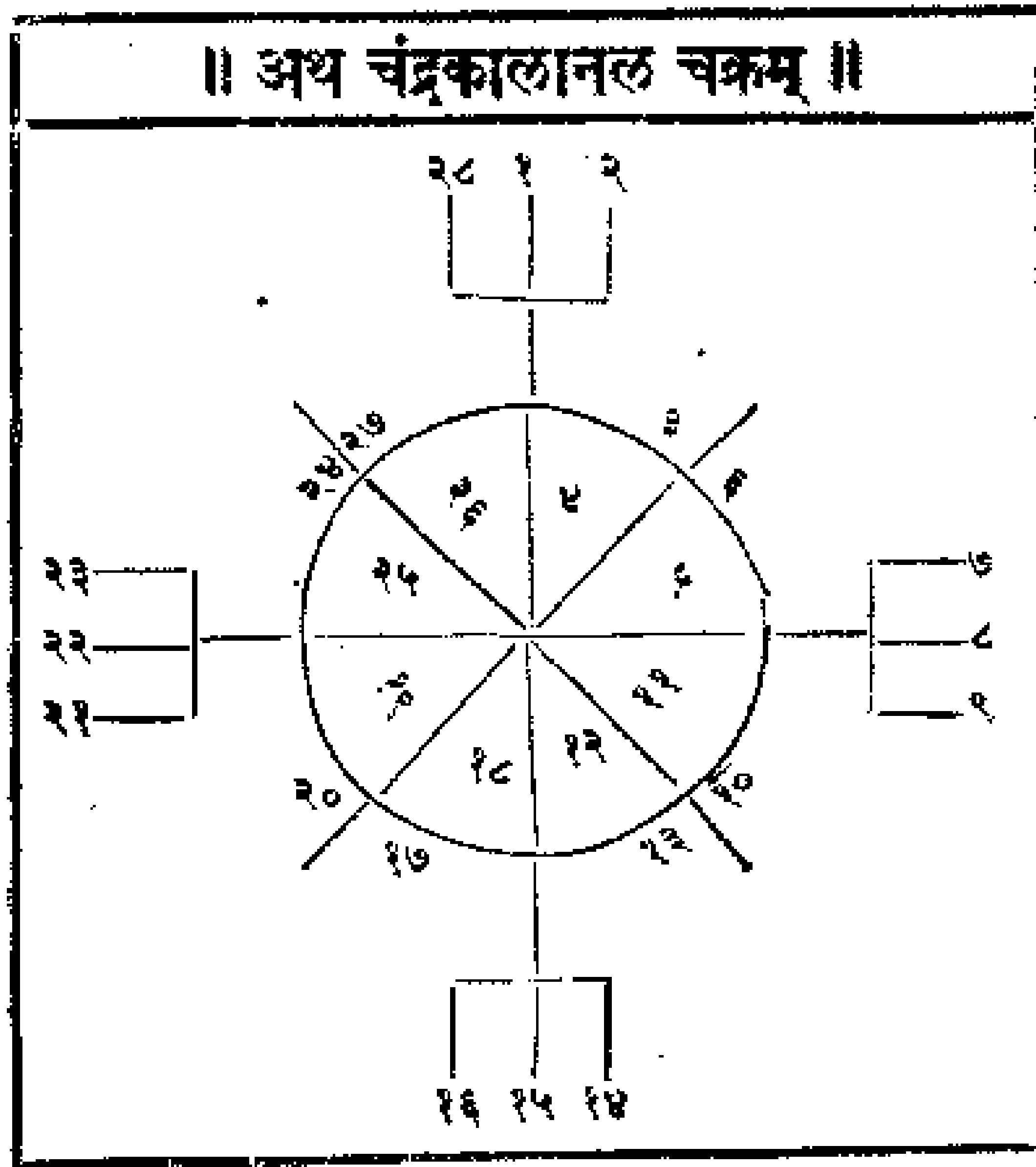
कर्कोटकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्वापरयाम्यसौम्ये ॥
वृत्ताद्बहिः संचलिते विधेये रेखे त्रिशूलानि तदग्रकेषु ॥
॥ १ ॥ कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वत्रिशूले किल म-
ध्यसंस्थम्॥ चांद्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि ब-
हिस्तदन्ते ॥ २ ॥

अब चंद्रकालानलचक्र कहते हैं पहिलेहीकी तरह गोल मण्डल बनावे उस मण्डलमें दो रेखा पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर बनावे गोल मण्डलके ये रेखा बाहिर हो जावें उन रेखाओंके अग्रभागमें त्रिशूल बनाना चाहिये ॥ १ ॥ और कोनोंके बीचमें दो रेखा खींचे ईशान नैर्ऋत्य और आग्नेय पश्चिममें करे पूर्वके त्रिशूलके, बीचमें चंद्रमाका नक्षत्र लिखे फिर क्रमकरके अभिजित्सहित दक्षिण रीतिसे नक्षत्र स्थापन करना चाहिये और बाहिर ॥ २ ॥

अथ चंद्रकालानलनक्षत्रफलम् ।

कालानलं चक्रमिदं हि चांद्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् ॥
त्रिशूलसंस्थानि धनाय नूनमंतर्बहिःस्थं त्वशुभप्रदं हि ॥ ३ ॥

ये जो चंद्रकालानलचक्र कहा है इसको युद्ध समयमें और यात्राकालमें विचारना चाहिये जो जन्मनक्षत्र त्रिशूलमें आवे तो अवश्य मृत्यु कहना चाहिये और त्रिशूलके बाहिर भीतर जन्म-नक्षत्र आवे तो शुभ फलका दाता होता है ॥ ३ ॥



अथ गोचरफलम् ।

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरैः सांहितिकैः प्रणीतम् ॥
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवच्मि बालावबोधप्रदमङ्गनानाम् ॥ १ ॥

अब गोचर फल कहते हैं मनुष्योंकी जन्मराशिसे ग्रहोंके संचारसे जो गोचर करके संहि-ताकारोंने फल कहा है सो मोटा फल बालकोंके बोधके अर्थ पहिले मैं कहता हूं ॥ १ ॥

अथ गोचरेण द्वादशधा सूर्यफलम् ।

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो पानमतीव पीडा ॥
कांतिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभोव्ययोर्कस्य फलं क्रमेण ॥ २ ॥

जन्मके सूर्यमें यात्रा दूसरे सूर्यमें भय तीसरे सूर्यमें धन लाभ होता है चौथे सूर्यमें व्यसन होता है पांचवें सूर्यमें दीनता होती है छठे सूर्यमें शत्रुनाश होता है सातवें सूर्यमें यात्रा होती है आठवेंमें अत्यंत पीड़ा होती है नवम सूर्यमें कांतिक्षय होता है दशम सूर्यमें वांछित-सिद्धि होती है ग्यारहें सूर्यमें लाभ होता है बारहें सूर्यमें खर्च होता है ॥ २ ॥

अथ गोचरेण द्वादशधा चंद्रफलम् ।

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभम् ॥
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगांकः ॥३॥

अब गोचर करके चंद्रमाका फल कहते हैं जन्मके चंद्रमामें श्रेष्ठ अन्न प्राप्त होता है दूसरे चंद्रमामें धन नाश तीसरे चंद्रमामें धनलाभ चतुर्थ चंद्रममामें कोखका रोग पांचवें चन्द्रमामें कार्यसिद्धि छठे चंद्रमामें कार्यनाश सप्तम चंद्रमामें लाभ अष्टम चंद्रमामें रोग नवम चंद्रमामें राजभय दशम चंद्रमामें सुख ग्यारहवें चंद्रमामें लाभ बारहवें चंद्रमामें शोक होताहै॥ ३॥

पुत्रधर्मधनस्थस्य चंद्रस्योक्तमसत्फलम् ॥
कलाक्षये परिज्ञेयं कलावृद्धौ तु साधु तत् ॥ ४ ॥

पंचम नवम द्वितीयस्थ चंद्रमाका नेष्ट फल कहा है सो फल कलाहीन चंद्रमाका है और जो पूर्ण चंद्र ५ । ९ । २ में होय तो श्रेष्ठफल करताहै ॥ ४ ॥

अथ गोचरे भौमफलम् ।

भीतिक्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ॥
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्ययेभूतनयस्तनोति ॥ ५ ॥

अब गोचर करके मंगलका फल कहते हैं जन्मराशिमें मंगल भय द्वितीयमें हानि तृतीयमें धनलाभ चतुर्थ शत्रुवृद्धि पंचम धननाश छठे धनलाभ सप्तम धननाश अष्टम शस्त्रसे घात नवम रोगदाता दशम रोगको प्राप्त एकादशमें लाभ बारहवां मंगल खर्च अधिक कराताहै ॥ ५ ॥

अथ गोचरे बुधफलम् ।

बंधं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ॥
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥६॥

अब गोचर करके बुधका फल कहते हैं जन्मराशिमें बुध बंध करनेवाला द्वितीय बुध धनलाभ तृतीय बुध शत्रुभय चतुर्थ बुध धनकी प्राप्ति पंचम बुध पीडा करनेवाला छठा बुध स्थिति सप्तम बुध पीडा अष्टम बुध धन लाभ नवम बुध खेद दशम बुध सुख ग्यारहवां बुध लाभ बारहवां बुध धननाशक होता है ॥ ६ ॥

अथ गोचरे गुरुफलम् ।

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ॥
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ७

अब गोचर करके बृहस्पतिका फल कहते हैं जन्मका बृहस्पति भय द्वितीय धन तृतीय पीडा चतुर्थ शत्रुवृद्धि पंचम सौख्य छठा शोक सप्तम राजमान अष्टम रोग नवम सौख्य दीनता दशम मानवृद्धि ग्यारहवाँ धनलाभ बारहवाँ बृहस्पति पीड़ा करता है ॥ ७ ॥

अथ गोचरे शुक्रफलम्।

रिपुक्षयं वित्तमतीव सौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ॥
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ॥८॥

अब गोचर करके शुक्रका फल कहते हैं जन्मका शुक्र शत्रुनाश द्वितीयमें धनलाभ तृतीयमें अतीव सौख्य चतुर्थमें धनलाभ पंचम पुत्रप्राप्ति छठे शत्रुवृद्धि सातवें शोक अष्टम धनलाभ नवम श्रेष्ठवस्त्र लाभ दशम पीड़ा ग्यारहवें स्वकीय धनलाभ बारहवें व्यय कराताहै ॥ ८ ॥

अथ गोचरे शनिफलम्।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ॥
पीडां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति॥९॥

गोचर करके शनैश्चरका फल कहते हैं जन्मका शनैश्चर भ्रष्ट करताहै द्वितीयमें क्लेश तृतीयमें कल्याण चतुर्थमें शत्रुवृद्धि पंचममें पुत्रोंसे सौख्य छठे सौख्यवृद्धि सप्तम क्रोध अष्टम पीड़ा नवम सौख्य दशम निर्धनता ग्यारहवें धनलाभ बारहवें शनैश्चर अनेक अनर्थ कराता है ॥ ९ ॥

अथ गोचरे राहुफलम्।

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम्॥
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्य्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेव ॥१०॥

अब गोचर करके राहुका फल कहते हैं जन्मके राहुमें हानि द्वितीयमें धनहीनता तृतीयमें धनलाभ चतुर्थमें वैर पंचममें शोक छठे धनप्राप्ति सातवें विवाद अष्टममें पीड़ा नवममें पाप दशममें वैर एकादशमें सौख्य बारहवेंमें धनहानि करता है इसी तरह केतुका भी फल जानना चाहिये ॥ १० ॥

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तं पूर्वैर्यत्फलं जन्मराशेः ॥
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नं भिन्नं दृश्यतेऽवश्यमेव॥११॥

राशिमें गोचर करके ग्रहोंका फल जो पूर्वाचार्योंने जन्मराशिसे लेकर कहा है सो फल एक राशिमें उत्पन्न मनुष्योंको जुदा जुदा देखनेमें आता है अवश्य करके इसमें कथा कारण है ॥ ११ ॥

यस्मिन्राशौ शीतरश्मिः प्रसूतौ संस्थः प्रोक्तो जन्मराशिः स एव ॥
एवं लग्नेनान्विताः सप्त खेटास्ते किं न स्युः प्राणिनां जन्मभानि १२
पुंसामतोऽष्टौ किल राशयः स्युः शुभाशुभान्यत्र फलानि तेभ्यः ॥
ततश्च रेखामिलनांतरालात्स्पष्टं फलं चाष्टकवर्गयुक्तम् ॥ १३ ॥

मनुष्योंके जन्मकालमें जिस राशिमें चंद्रमा बैठा होय उसीको जन्मराशि कहते हैं इसी प्रकार लग्न करके सहित सातों ग्रहोंकी राशि क्यों नहीं होती हैं ॥ १२ ॥ पुरुषोंकी निश्चय करके आठही जन्मराशि होती हैं उन आठों राशिकरके अच्छा बुरा फल करके रेखा और बिंदुओंके अंतर करके ठीक फल अष्टकवर्ग करके कहाहै ॥ १३ ॥

अथ सूर्याष्टकवर्गमाह ।

स्थानमंदात्कुजतो रविर्मृतितपोलाभार्थकेंद्र स्थितः शुक्रादस्तरिपुव्ययेषु च गुरोर्धर्मारिपुत्रातिषु ॥ चंद्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषु शशिजात्पंचत्रिनंदव्ययारिप्राप्त्यभगतस्तनोस्त्रिषु सुखोपांत्यारिरिःफे शुभे ॥ १४ ॥

अब सूर्यका अष्टकवर्ग कहते हैं: शनि मंगल सूर्य अपने स्थानसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । में शुभ फल देते हैं और शुक्र अपने स्थानसे ७ । ६ । १२ में शुभ फल देता है बृहस्पति अपने स्थानसे ५ । ६ । ९ । ११ में शुभ फल देता है चंद्रमा अपने स्थानसे ११ । ६ । ३ । १० में शुभ फल देता है बुध अपने स्थानसे ५ । ३ । ९ । १२ । ६ । ११ । १० में शुभ फल देताहै और लग्नसे ३ । ४ । ६ । ११ । १२ में स्थानमें शुभ फल देताहै ॥ १४ ॥

सूर्यशुभाष्टकम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	९	९	१२	४	६
७	११	७	१०	११		७	११
८		८	११			८	१२
९		९	१२			९	
१०		१०				१०	
११		११				११	

सूर्यानिष्टाष्टकम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	१	३	१	१	१	३	१
५	२	५	२	२	२	५	२
६	४	६	४	३	३	६	५
१२	५	१२	६	४	४	१२	७
	७		७	७	५		८
	८		८	८	८		९
	९			१०	९		१०
	१२			११	१०		
					११		

अथ चंद्राष्टकवर्गमाह ।

भौमाद्ग्लौर्नवधीधनोपचयगः षट्त्र्यायाप्तिधीस्थोर्कजाल्लग्नाच्चोपचये रवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ॥ धीरंध्रेषु चतुष्टये त्रिषु गुरोः केंद्राष्टलाभव्यये स्यादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्तांबुत्रिकोणे भृगोः ॥ १५ ॥

अब चंद्रमाष्टक वर्ग कहतहैं चंद्रमा मंगलसे २ । ३ । ५ । ६ । ९ । १० । ११ । स्थानमें शुभफल देता है और शनैश्चरसे ६ । ३ । ११ । ५में शुभफल देता है और बुधसे ३ । ६ । १० । ११ । ११ । १ । ७ । १० में शुभफल देता है सूर्यसे ३ । ६ । १० । ११ । ८ । ७ में शुभफल देता है और बुधसे ५ । ८ । ४ । ३ स्थानमें शुभफल देता है और बृहस्पतिसे १ । ४ । ७ । १० । ८ । ११ । १२ स्थानमें शुभफल देताहै और चंद्रमा अपने स्थानसे १ । ३ । ६ । १० । ११ । ७ में शुभफल देताहै और शुक्रसे ३ । १० । ११ । ७ । ४ । ९ । ५ में शुभफल देताहै ॥ १५ ॥

अथ चंद्रशुभाष्टकम्.

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	५	५	६	१०	७
७	६	५	७	७	११	११	८
१०	९	७	९	९			१०
११	१०	८	१०	१०			११
	११	१०	११	११			
		११					

अथ चंद्रानिष्टाष्टकम्.

चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.
२	१	२	२	१	१	१	१
४	४	६	३	२	२	२	२
५	७	९	६	६	४	४	४
८	८	१२	८	८	७	५	५
९	१२		१२	१२	८	७	९
१२					९	८	१२
					१०	९	
					१२	१२	

अथ भौमाष्टकवर्गः ।

स्वाद्भौमोष्टचतुष्टयायधनगो जीवात्षडायांत्यखे चंद्रादायरिपुत्रिगो भृगुसुतादष्टांत्यलाभारिगः ॥ ज्ञात्पंचायरिपुत्रिगोर्कतनयात्केंद्राष्टधर्मांत्यगः सूर्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्र्यायारिखाद्ये शुभः ॥ १६ ॥

अथ भौमाष्टकम्.

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	च.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	१२	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

अब मंगलका अष्टक वर्ग कहते हैं मंगल अपने स्थानसे १ । २ । ८ । ७ । ९ । १० । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और बृहस्पतिसे ६ । १० । ११ । १२ स्थानोंमें शुभफल देता है और चंद्रमासे ३ । ६ । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और बुधसे ३ । ५ । ६ । १२ स्थानोंमें शुभफल देताहै और शनैश्चरसे १ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ स्थानोंमें मंगल शुभ देता है और सूर्यसे ३ । ५ । ६ । १० । ११ स्थानोंमें शुभफल देताहै और लग्नसे १ । ३ । ६ । १० । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है ॥ १६ ॥

अथ भौमानिष्टाष्टकम्

म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.
३	१	१	१	३	२	१	१
५	२	२	२	३	४	२	२
६	४	३	३	५	५	४	४
९	७	४	४	६	७	७	५
१२	८	५	५	१२	८	८	७
	९	७	७		९	९	८
	१०	८	९		१२	१२	९
	११	९	१०				१०
							१२

अथ बुधाष्टकवर्गमाह ।

शुक्राद्यासुतधर्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजार्क्योस्तपः केंद्रायाष्टधने स्वतोप्युपचयांत्येकत्रिकोणे शुभः॥कोणांत्यारिभवे रवे रिपुभवाष्टान्त्ये गुरोरिंदुतः खायाष्टारिसुखार्थगः सुखभवांन्त्यैकोङ्कषट्सूदयात् ॥ १७॥

अब बुधका अष्टकवर्ग कहते हैं बुध शुक्रके स्थानसे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ स्थानमें शुभ है और मंगल शनैश्चरसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० ।११ स्थानोंमें शुभ है और अपनी राशिसे १ । ३ । ५ । ६। ९ । १० । ११ । १२ । स्थानोंमें शुभ है और सूर्यसे ५। ६ ९ । ११ । १२ शुभफल देताहै और बृहस्पतिसे । ६ । ८ ११ । १२ । शुभफल देता है और चंद्रमासे ४ । २ । ६ ८ । १० । ११ । शुभफल देताहै और लग्नसे १ । २ ४ । ६ । ८ । १० । ११ । १२ बुध शुभफल दाता होता है१७

अथ बुधाष्टकम्.

बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	९	१२	१०	८
१०		८	९	११		११	९
११		९	१०	१२			१०
१२		११	११				११

अथ बुधानिष्टाष्टकम्.

बु.	बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.
२	१	६	३	३	१	१	३
४	२	७	५	५	२	२	५
७	३	१०	६	७	३	३	६
८	४	१२	१२	८	४	५	१२
	५			१०	७	७	
	७				८	१२	
	९				१०		
	१०						

अथ गुरोरष्टकवर्गमाह ।

स्वात्स्वायाष्टत्रिकेन्द्रस्वनवदशभवारान्निधी स्थश्च शुक्राद्धयारकेन्द्रायधीषट्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेन्द्राय ईज्यः ॥ इन्दोर्धूनोर्थकोणातिषु सहजनवाष्टायकेन्द्राष्टगो कोज्ज्ञात्कोणेव्यायस्वाद्याम्बुधिरिपुषुशनेस्त्यन्त्यधीषट्सु शस्तः ॥ १८ ॥

अब बृहस्पतिका अष्टक वर्ग कहते हैं बृहस्पति अपने स्थानसे १ । २ । ३ । ४ । ७ । ८ । १० । ११ स्थानोंमें शुभफल देता है और शुक्रसे २ । ५ । ६ । ९ । १० । ११ स्थानमें शुभफल देताहै और लग्नसे १ । २ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । १० । ११ स्थानमें शुभफल देताहै और मंगलके १ । २ । ४ । ७ । ८ । १० । ११ स्थानमें शुभफल देता है और चंद्रमासे २ । ५ । ७ । ८ । ११ शुभफलको देता है और सूर्यसे १ । २ । ३ । ४ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ स्थानमें शुभफलको देता है और बुधसे १ । २ । ४ । ५ । ६ । ९ । १० । ११ भावोंमें बृहस्पति शुभफल देता है और शनैश्चरसे ३ । ५ । ६ । १२ । बृहस्पति शुभफल देता है ॥ १८ ॥

गुरोःशुभाष्टकम्.

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	८
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

गुरोरनिष्टाष्टकम्.

बृ.	शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.
५	१	१	३	५	१	३	३
६	३	२	८	६	३	५	७
९	४	४	१२	१२	४	६	९
१२	७	७			६	९	१२
	८	८			८	१२	
	१२	९			१०		
		१०			१२		
		११					

अथ शुक्राष्टकवर्गम् ।

स्वास्तांत्याहितवर्जितेषु तनुतः शुक्रो विनास्तारिखं चंद्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टासिषु ॥ मन्दाद्व्येकरिपुव्ययास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधीखे ज्ञात्कोणभवात्रिषट्सु भवधीन्त्यन्त्यारिधर्मे कुजात् ॥ १९ ॥

शुक्राष्टकवर्गचक्रम्.

शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

अब शुक्रका अष्टकवर्ग कहते हैं लग्नसे शुक्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ शुभफलको देताहै और चंद्रमासे १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । ११ । १२ शुभफलको देता है और अपने स्थानसे शुक्र १ । २ । ३ । ४ । ५ । ८ ।९। १० । ११ शुभफलको देताहै और सूर्यसे ८ । ११ । १२ शुभफल देता है और शनैश्चरसे ३ । ४ । ५ । ८ । ९ । १० । ११ । शुभफल देताहै और बृहस्पतिसे ५ । ८ । ९ । १० । ११ शुभफल देताहै और बुधसे ३ । ५ । ६ । ९ । ११ शुभफल देता है और मंगलसे शुक्र ३ । ५ । ६ । ९ । ११ । १२ शुभफलको देता है ॥ १९ ॥

शुक्रनिष्टाष्टकवर्गच०

शु.	श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.
६	१	६	१	६	१	१	१
७	२	७	२	७	२	२	२
१२	६	१०	३	१०	४	४	३
	७	१२	४		७	७	४
	१२		५		८	८	६
			६		१०	१०	७
			७			१२	१२
			९				
			१०				

अथ शनेरष्टकवर्गम् ।

स्वान्मन्दस्त्रिषडायधीषु रवितोष्टायाद्वि केन्द्रे शुभो भौमात्स्वायषडंत्यधीत्रिषु तनोः स्वायाम्बुषट्त्र्येकगः ॥ ज्ञादायारि नवांत्यखाष्टसु भृगोरंत्यायषट्संस्थितः चंद्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधी- शत्रुगः ॥ २० ॥

शनेरष्टकवर्गचक्रम्.

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	३	१	३	३	६	५	६
५	४	२	६	५	८	६	११
६	६	४	११	६	९	११	१२
११	९	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	१२		
	११	१०		१२			
		११					

शनेनिष्टाष्टकवर्गच०

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
१	१	३	१	१	१	१	१
२	२	५	२	२	२	२	२
४	५	६	४	४	३	३	३
७	७	९	५	७	४	४	४
८	८	१२	७	८	५	७	५
९	१२		८	९	७	८	७
१०			९		११	९	८
१२			१०			१०	९
			१२				१०

अब शनैश्चरका अष्टकवर्ग कहते हैं शनैश्चर अपने स्थानसे ३ । ५ । ६ । ११ शुभ है और सूर्यसे १ । २ । ४ । ७ । ८ । १० । ११में शुभ है और मंगलसे ३ । ५ । ६ । १० । ११ । १२ में शुभ है और लग्नसे ३ । ४ । ६ । ९ । १० ११में शुभ है और बुधसे ६ । ८ । ९ । १० । १२ में शुभ है और शुक्रसे ६ । ११ । १२ में शुभ है और चंद्रमासे ३ । ६ । ११में शुभ है और बृहस्पतिसे ५ । ६ । ११ । १२ में शुभफल देता है ॥ २० ॥

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानि नूनम् ॥
तयोर्वियोगादधिकं फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्ग्रहेंद्रः ॥ २१ ॥

लग्नकरके सहित सातही ग्रहोंके जो स्थान कहे हैं उन स्थानोंमें ग्रह शुभफलको देते हैं और उक्त स्थानोंके विना अन्यस्थानोमें अशुभ फल करते हैं शुभाशुभ स्थानोंका अंतर करनेसे जो अधिक स्थान होवे तो अपनी राशिसे ग्रह फलको देता है ॥ २१ ॥

अथ रेखासंख्या आह ।

भुजंगवेदा नवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च ॥
रसेषवो युग्मशरानवत्रितुल्याः क्रमेणाष्टकवर्गेलेखाः ॥ २२ ॥

अब रेखाओंकी संख्या कहते हैं सूर्यकी ४८ रेखा चंद्रमाकी ४९ मंगलकी ३९ बुधकी ५४ बृहस्पतिकी ५६ शुक्रकी ५२ शनैश्चरकी ३९ सब ग्रहोंकी रेखाओंका योग ३३७ होता है ॥ २२ ॥

विलग्ननाथाश्रितराशितोत्र भवंति रेखाः खलु यत्र यत्र ॥
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण॥२३॥

जन्मलग्नका स्वामी जिस राशिमें बैठा होय उस राशिसे जिस जिस जगह रेखा निश्चय करके होंवे वह रेखा लग्नसे लेकर उसी उसी राशिमें पंडितजन क्रम करके स्थापन करें ॥ २३ ॥

अथ प्रत्येकरेखाफलमाह ।

क्लेशोर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च ॥
सम्पत्प्रवृद्धिर्विपुलामलश्रीः प्रत्येकरेखाफलमामनंति ॥ २४ ॥
इत्येकखेटस्य हि संप्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ॥
अष्टद्विसंख्यास्तु समास्ततोपि यथाधिकोनाः सदसत्फलास्ताः॥२५

अब प्रत्येक रेखाका फल कहते हैं १ रेखासे क्लेश २ धनहानि ३ व्यसन ४ सम ५ रेखा निरंतर सुख ६ रेखा नित्य धन प्राप्ति, ७ रेखा संपदाकी वृद्धि करे ८ रेखा श्रेष्ठ लक्ष्मी प्राप्त करती हैं यह फल एकसे लेकर आठरेखाकका कहा है॥२४॥यह एक ग्रहकी रेखाका फल कहा है सम्पूर्ण ग्रहोंकी रेखा सिद्धि करके फल कहना चाहिये २८ रेखामें ग्रहोंका फल बराबर होता है जो २८ रेखासे कमती होय तो नेष्ट और २८ रेखासे अधिक होय तो श्रेष्ठ फल कहा है ॥ २५ ॥

कः कदा फलदातेत्याह ।

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात् ॥
राश्यर्द्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनींदू च सदेन्दुसूनुः ॥ २६॥

अब ग्रहोंके शुभाशुभ फल देनेका समय कहते हैं, कौन ग्रह किस समय फल देगा मंगल और सूर्य राशिके प्रवेशमें फल देते हैं और शुक्र बृहस्पति राशिके अर्द्धभाग व्यतीत होने पर फल देते हैं और शनैश्चर चंद्रमा राशिके अंतमें फल देते हैं और बुध हमेशा राशिमें फल होता है ॥ २६ ॥

अथांगविभागेन ग्रहारिष्टमाह ।

शिरः प्रदेशे वदने दिनशो वक्षःस्थले चापि गले कलावान् ॥
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ ॥ २७॥
कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्तु गुह्यस्थलमुष्कयुग्मे ॥
जानूरुदेशे नलिनीशसूनुश्चारेण वा जन्मनि चिन्तनीयम् ॥
॥ २८ ॥ यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्ती स्वाङ्गेऽस्य दोषेण करोति पीड़ाम् ॥ इदं तु पूर्वं प्रविचार्य सर्वं प्रश्नप्रसूत्यादिषु कल्पनीयम् ॥ २९ ॥

अब अंगविभागमें ग्रहोंका रिष्ट प्रकार कहते हैं सूर्य शिर और मुखमें पीड़ा करता है और छाती गलेमें चंद्रमा रिष्ट करता है और मंगल पीठ और पेटमें पीड़ा करता है और बुध हाथ पैरोंमें पीड़ा करता है ॥ २७ ॥ कमर और जंघोंमें बृहस्पति पीड़ा करता है और गुदा अंडकोशमें शुक्र पीड़ा करता है और जानु तथा पिंडलियोंमें शनैश्चर पीड़ा करता है ये ग्रहोंके चारसे विचार करना चाहिये ॥ २८ ॥ जो जो ग्रह गोचर अष्टकवर्गमें प्रतिकूल होय वह ग्रह अपने कहेहुए अंगमें अपने दोषको करता है ये पहिले सम्पूर्ण विचार करके प्रश्नकाल वा जन्मकालसे वर्षमासादिकोंमें कल्पना करना चाहिये ॥ २९ ॥

अथ द्विग्रहयोगादिवर्णनम्-

तत्र सूर्यचंद्रयोगफलम् ।

पाषाणयंत्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायां हि विचक्षणः स्यात् ॥
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्वः सर्वौषधीशेन रवौ समेते ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा एक घरमें बैठे होंय वह मनुष्य पत्थर और यंत्रोंका बेचनेवाला मायारचनेमें चतुर कामी और चाहनासहित अभिमानी होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यभौमयोगफलम्।

भवेन्महौजा बलवान्विमूढो गाढोद्धतोऽसत्यवचा मनुष्यः ॥
सुसाहसः शूरतरोतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य मंगल एकघरमें बैठे होंय वह मनुष्य बडे यशवाला बलवान् मूढ अतिशय करके उद्धत झूंठ बोलनेवाला साहसी और शूरवीर हिंसा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यबुधयोगफलम्।

प्रियवचाः सचिवो बहुसेवयार्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत् ॥
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बुध एक घरमें बैठे होंय वह मनुष्य प्यारी बोली वाला मंत्री बहुत सेवा करके धन इकट्ठा करनेवाला कलाओंमें कुशल शास्त्रमें चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ चंद्रभौमयोगफलम्।

आचारहीनः कुटिलप्रतापी पण्यानुजीवी कलहप्रियश्च ॥
स्यान्मातृशत्रुर्मनुजोरुजार्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा मंगल एक घरमें बैठे होंय वह मनुष्य आचारहीन कुटिल प्रतापी व्यापारसे आजीविका करनेवाला कलह जिसको प्यारी मातृ वैरी रोग करके दुःखी होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यगुरुयोगफलम्।

पुरोहितत्वे निपुणो नृपाणां मंत्री च मित्रात्तधनः समृद्धः ॥
परोपकारी चतुरो दिनेशे वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य बृहस्पति एक राशिमें बैठे होंय वह मनुष्य पुरोहितामें निपुण राजाका मंत्री मित्रतासे धनकी समृद्धिको प्राप्त पराया उपकार करनेवाला चतुर होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यशुक्रयोगफलम्।

संगीतवाद्यायुधचारुबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः ॥
कांतानियुक्तासुहृत्समाजः सिताऽन्विते जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शुक्र एक राशिमें बैठे होंय वह मनुष्य गाना और बजाना और शास्त्रविद्यामें सुंदरबुद्धिवाला नेत्रोंके बलसे रहित स्त्रीकरके सहित मित्रोंके समाजकरके पूर्ण होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यशनियोगफलम् ।

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ॥
सदा समृद्धोऽतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य शनि एक राशिमें बैठे हों वह मनुष्य धातुक्रिया और व्यवहारमें बुद्धि रखनेवाला गुणका माननेवाला धर्म जिस्को प्यारा पुत्र और स्त्रीसे सुख पानेवाला हमेशा अत्यंत समृद्धियोंसहित होताहै ॥ ७ ॥

अथ चंद्रबुधयोगफलम् ।

सद्वाग्विलासो धनवान्सुरूपः कृपार्द्रचेताः पुरुषो विनीतः ॥
कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता चंद्रे सचांद्रौ बहुधर्मकृत्स्यात् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बुध एक राशिमें बैठे होंय वह मनुष्य श्रेष्ठवाणीवाला धनवान् श्रेष्ठरूपवाला दयाकरके युक्तचित्त नम्रतासहित स्त्रीसे अधिक प्रीति करनेवाला बड़ा भारी वक्ता होताहै ॥ ८ ॥

अथ चंद्रगुरुयोगफलम् ।

सदा विनीतो दृढगूढमंत्रः स्वधर्मकर्माऽभिरतो नरः स्यात् ॥
परोपकारादरनैकचित्तो शीतद्युतौ वाक्पतिना समेते ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बृहस्पति एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य हमेशा नम्रतासहित मजबूत छिपी सलाह करनेवाला अपने धर्म और कर्ममें तत्पर पराये उपकार करनेमें एकचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ चंद्रभृगुयोगफलम् ।

वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनी विधिज्ञः ॥
सुगंधपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य वस्त्रादिकोंके खरीदने और बेचनेमें चतुर और व्यसनसहित विधिका माननेवाला सुगंध और उत्तम पुष्प उत्तम वस्त्रोंमें चित्त रखनेवाला होताहै ॥ १० ॥

अथ चंद्रशनियोगफलम् ।

नानाङ्गनानां परिसेवनेच्छुर्वैश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ॥
परात्मजःस्यात्पुरुषार्थहीन इंदौ समंदे प्रवदंति संतः ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा और शनिका योग होय वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंको से-वनकरनेकी इच्छावाला वैश्यवृत्ति करनेवाला साधु शीलसे रहित परपुत्र और पुरुषार्थ हीन होताहै ॥ ११ ॥

अथ भौमबुधयोगफलम् ।

बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ॥
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः संभवेद्यदि कुजेंदुजयोगः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल बुध एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य मल्लविद्यामें चतुर बहुत स्त्रियोंकी लालसा करनेवाला अनेक औषधियोंका व्यापार करनेवाला सोना और लोहेकी विधिमें बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ भौमगुरुयोगफलम् ।

मंत्रार्थशस्त्रादिकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ॥
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल बृहस्पति एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य मंत्र और शस्त्र विद्याकी कलाके समूहमें चतुर शीलवाला फौजका मालिक अथवा राजा अथवा नगर वा ग्रामका स्वामी होता है ॥ १३ ॥

अथ भौमभृगुयोगफलम् ।

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तो धूतानृतप्रीतिरतिप्रपंचः ॥
नरः सगर्वः कृतसर्ववैरो भृगोः सुते भूसुतसंयुते स्यात् ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल शुक्र एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य अनेक स्त्रियोंके भोगविधानमें चित्तकरनेवाला और झूठमें प्रीतिकरनेवाला प्रपंचमें तत्पर अभिमानसहित सबसे वैर करनेवाला होताहै ॥ १४ ॥

अथ भौमशनियोगफलम् ।

शस्त्रास्त्रवित्संगरकर्मकर्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम् ॥
सौख्येन हीनो नितरां नरः स्याद्धरासुते मंदयुतेऽतिनिंद्यः १५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल शनैश्चर एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य अस्त्र और शस्त्रोंका जाननेवाला युद्धकरनेवाला चोरी और झूठमें प्रीतिकरनेवाला निरंतर सौख्यरहित होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगुरुयोगफलम् ।

सङ्गीतविद्यानीतिपतिर्विनीतः सौख्यान्वितोत्यंतमनोभिरामः ॥
धीरो नरः स्यात्सुतरामुदारः सुगंधभाग्वाक्पतिसौम्ययोगे १६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध बृहस्पति एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य गान विद्याका जाननेवाला नम्रतासहित सौख्ययुक्त अत्यंत श्रेष्ठ धैर्यवान् निरंतर उदार सुगंधका भोग भोगनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः ॥
भर्ता बहूनां गुणवान्विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शुक्र एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य कुलमें प्रतापी श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला हमेशा हर्ष सहित श्रेष्ठ वेष नम्रतायुक्त बहुत नौकरोंवाला गुणवान चतुर होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधशनियोगफलम् ।

चलस्वभावश्च कलिप्रियश्च कलाकलापे कुशलः सुवेषः ॥
पुमान्बहूनां प्रतिपालकश्चेद्भवेत्प्रसूतौ मिलनं ज्ञशन्योः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध शनैश्चर एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य चंचलस्वभाव कलह जिसको प्यारी कलाओंके समूहमें चतुर श्रेष्ठ वेषवाला बहुत मनुष्योंका पालनेवाला होताहै ॥ १८ ॥

अथ गुरुशुक्रयोगफलम् ।

विद्यया भवति पण्डितः सदा पंडितैरपि करोति विवादम् ॥
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शुक्र एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य विद्याकरके पंडित हमेशा पंडितों करके विवाद करनेवाला पुत्र और मित्र धनके सौख्यसहित होताहै १९

अथ गुरुशनियोगफलम् ।

शूरोर्थवान्ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ॥
श्रीसंश्रयप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति शनैश्चर एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य शूरवीर धनवान् ग्राम और नगरका स्वामी यशवाला कलाओंमें कुशल स्त्रीके आश्रयसे मनोरथ प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २० ॥

अथ शुक्रशनियोगफलम् ।

शिल्पलेख्यविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत् ॥
अश्मकर्मकुशलश्च जन्मनि भार्गवे रविसुतेन संयुते ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र शनैश्चर एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य शिल्पशास्त्र और लेखन विधिमें चतुर कौतुकी घोर युद्ध करनेवाला पत्थरके काममें कुशल होता है॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडितश्यामलाल-
कृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां ग्रहदृष्टिफलवर्णनोध्यायः ॥ ४ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ सू० चं० भौ० योगफलम् ।

शूराश्च यंत्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः ॥
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्र संस्थैर्मनुजा भवंति ॥ १ ॥

अब त्रिग्रह योग कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. मं. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य शूरवीर यंत्र और अश्वविद्याका जाननेवाला लाज और कृपाकरके हीन होता है ॥ १ ॥

अथ सू० चं० बु० योगफलम् ।

भवेन्महौजा नृपकार्यकर्त्ता वार्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ॥
दिवामणिशामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवेदेकगृहं प्रयातैः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. बु. एकराशिमें बैठे होवें वह मनुष्य बड़े पराक्रमी राजाका कार्य करनेवाला बातकरने और शास्त्रकलामें चतुर होताहै ॥ २ ॥

अथ सू० चं० बु० योगफलम् ।

सेवाविधिज्ञश्च विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोतिधूर्तः ॥
नरो भवेच्चंद्रसुरेंद्रवंद्यप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. बृ. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य सेवाकी विधि जाननेवाला परदेश जानेवाला चतुर प्रवीण चपल अत्यंत धूर्त होताहै ॥ ३ ॥

अथ सू० चं० शु० योगफलम् ।

परस्वहर्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात् ॥
मृगांकपंकेरुहबंधुशुक्राश्चैकत्र भावे यदि संयुताः स्युः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य परायाधन हरने-वाला व्यसनोंमें आसक्त सत्कर्मोंकी रुचिसे रहित होताहै ॥ ४ ॥

अथ सू० चं० श० योगफलम् ।

परेङ्गितज्ञो विधनश्च मंदो धातुक्रियायां निरतो नितांतम् ॥
व्यर्थप्रयासप्रकरो नरः स्यात्क्षेत्रे यदैकत्र रवींदुमंदाः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. चं. श. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य पराये इंगितका जाननेवाला धनहीन मंदबुद्धि धातुक्रियामें निरंतर तत्पर वृथा श्रम करनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ सू० बु० भौ० योगफलम् ।

ख्यातो भवेन्मंत्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ॥
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. मं. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य प्रसिद्ध मंत्र-शास्त्रकी विधिमें प्रवीण श्रेष्ठ साहसी कठोर चित्तवाला लज्जा और धन स्त्री और पुत्रमित्रोंसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ सू० मं० बृ० योगफलम् ।

वक्तार्थयुक्तः क्षितिपालमंत्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः ॥
महामनाः सत्यवचोविलासः सूर्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं बृ. एकस्थानमें बैठे होंय वह मनुष्य वक्ता धनसहित राजाका मंत्री फौजका मालिक नीति विधानमें चतुर तेजस्वी सत्यबोलनेवाला विलास युक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ सू० मं० शु० योगफलम् ।

भाग्यान्वितोत्यंतमतिर्विनीतः कुलीनवाञ्छीलविराजमानः ॥
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्ययुतिः प्रसूतौ ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य भाग्यसहित अत्यंत बुद्धिवान् नम्रता सहित कुलीन शीलवान् थोड़ा बोलनेवाला चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ सू० मं० श० योगफलम् ।

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबन्धुवर्गैः ॥
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगे यदार्कारशनैश्चराणाम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. मं. श. एक भावमें बैठे होंय वह मनुष्य धनहीन कलहसहित त्यागी और पिता बंधुवर्ग करके वियोगी विवेक रहित होताहै ॥ ९ ॥

अथ सू० बु० बृ० योगफलम् ।

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ॥
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्तः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. बृ. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य चतुर शास्त्रोंकी कलाके समूहमें प्रवीण धन संग्रह करनेवाला बड़ा बलवान् श्रेष्ठ शील नेत्ररोगसे पीड़ित होता है ॥ १० ॥

अथ सू० बु० शु० योगफलम् ।

साधुद्वेषी निंदितोऽत्यंततप्तः कांताहेतोर्मानवः संभ्रमश्चेत् ॥
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटा वाचालः स्यादन्यदेशाटनश्च ॥ ११ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. शु. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य साधुओंका वैरी निंदा करनेवाला अत्यंत संतापको प्राप्त स्त्रीके कारणसे बहुत बोलनेवाला और परदेश गमन करनेवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथ सू० बु० श० योगफलम् ।

तिरस्कृतः स्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महादोषकरो नरः स्यात् ॥
पण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बु. श. एकभाव में बैठे होंय वह मनुष्य तिरस्कारको प्राप्त अपने जनोंकरके रहित और भी अनेक दोषकरनेवाला हिजड़ोंकी सी आकृति तथा हीन वृत्तिवाला होताहै ॥ १२ ॥

अथ सू० बृ० शु० योगफलम् ।

अप्रगल्भवचनो धनहीनोऽप्याश्रितोवनिपतेर्मनुजः स्यात् ॥
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोर्कगुरुभार्गवयोगे ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. शु. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य थोड़ा बोलनेवाला धन रहित राजाका आश्रय करनेवाला पराये कामोंमें शूरता करनेवाला होता है॥ १३॥

अथ सू० बृ० श० योगफलम् ।

नृपप्रियोमित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कांतवपुर्नरः स्यात् ॥
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः॥१४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. बृ. श. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य राजाका प्यारा मित्र और स्त्री पुत्रों करके सहित शोभायमान शरीर अच्छी नीति करके खर्च करनेवाला बड़ा निर्भय बोलनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ सू०शु०श० योगफलम् ।

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः कुचरितरुचिरेवाऽत्यंत कंडूयनार्तः ॥ निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्यात्कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सू. शु. श. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य शत्रुके भयसे युक्त श्रेष्ठ कथा और काव्यरहित खोटे कामोंमें प्रीति करनेवाला अत्यंत कंडूरोगसे पीडित अपना धन और बंधुवर्गसे हीन होता है ॥ १५ ॥

अथ चं०मं०बु०योगफलम् ।

भवंति दीना धनधान्यहीना नानाविधानात्मजनापमानाः ॥
स्युर्मानवा हीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः १६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बु. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य दीन धन धान्यरहित अपने बंधुवर्गोंसे दंभ और नीचजनोंसे साथ करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ चं०मं०बृ० योगफलम् ।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात् ॥
प्रसूतिकाले मिलिता भवंति चेदारनीहारकरामरेज्याः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. बृ. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य व्रण करके सहित कोप सहित पराया धन हरनेवाला स्त्रीमें तत्पर शोभायमान शरीर होता है ॥ १७ ॥

अथ चं० मं० शु० योगफलम् ।

दुःशीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोऽल्पशीलः ॥
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावा भौमास्फुजिच्चंद्रमसो यदि स्युः १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य दुष्टशीला स्त्रीका पति अस्थिर दुष्टशील माताका संतान थोडा शीलवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ चं० मं० श० योगफलम् ।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदाऽपि कलहान्वितो भवेत् ॥
संभवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. मं. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य बालकपनेमें माता की मृत्यु करता हमेशा कलह सहित निंदित होता है ॥ १९ ॥

अथ चं० बु० बृ० योगफलम् ।

विख्यातकीर्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः ॥
सद्वृत्तविद्योऽतितरां नरः स्यादेकत्र संस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः ॥२०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. बृ. एकभावमें बैठे होयँ वह मनुष्य प्रसिद्ध यशवाला बुद्धिमान् बडाप्रतापी विचित्र मित्रोंवाला बहुतभाग्यसहित श्रेष्ठवृत्तिवाला होता है ॥ २० ॥

अथ चं० बु० शु० योगफलम् ।

विद्याप्रवीणोऽपि च नीचवृत्तःस्पर्धाऽभिवृद्धयां च रुचिर्विशेषात् ॥ स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितां युतिश्चेत् ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. शु. एकभावमें बैठे होयँ वह मनुष्य विद्यामें प्रवीण नीचवृत्ति करनेवाला सबसे द्रोहकरनेवाला अर्थात् सबकी निंदा करनेमें प्रीति जिसकी धनका लोभी होता है ॥ २१ ॥

अथ चं० बु० श० योगफलम् ।

कलाकलापाऽमलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितांतम् ॥ नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेंदुमंदाः सहिता यदि स्युः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बु. श. एकभावमें बैठे होवें वह मनुष्य कलाओंके समूहमें निर्मल बुद्धिवाला विख्यात राजाका प्यारा नगर ग्रामका पति नम्रतासहित होता है ॥ २२

अथ चं० बृ० शु० योगफलम् ।

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्तिमतिवृत्तिसंयुतः ॥
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवंति संभवे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य भाग्यवान् हमेशा सुंदर कीर्तिवाला बुद्धिवान् श्रेष्ठवृत्तिसहित होता है ॥ २३ ॥

अथ चं० बृ० श० योगफलम् ।

विचक्षणः क्षोणिपतिप्रियश्च सन्मंत्रशास्त्राधिकृतो नितांतम् ॥
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमंदेंदुसुरेंद्रवन्द्यैः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. बृ. श. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य चतुर राजाका प्यारा श्रेष्ठ मंत्रशास्त्रमें अधिकारी उत्तम वेषवाला बड़ा प्रतापी होता है ॥ २४ ॥

अथ चं० शु० श० योगफलम् ।

पुरोधसां वेदविदां वरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च ॥
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः कवींदुमंदा मिलिता यदि स्युः २५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चं. शु. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य पुरोहित वेदके ज्ञाताओंमें श्रेष्ठ पुण्यकरनेमें तत्पर श्रेष्ठ पुस्तकोंके देखने और लिखनेवाला होता है२५॥

अथ मं० बु० बृ० योगफलम् ।

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्वसंगीतकलाप्रवीणः ॥
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं० बु० बृ० एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य अपने कुलमें जनोंका पालनेवाला राजाके समान काव्य और गाने बजानेकी कलामें प्रवीण पराया कार्य साधनेमें एकचित्त होता है ॥ २६ ॥

अथ मं० बु० शु० योगफलम् ।

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचंचलतासमेतः ॥
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्र यातैः कविभौमसौम्यैः २७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य धनसहित दुर्बल देह बहुत बोलने वाला चंचलतासहित धृष्ट निरंतर उत्साहमें तत्पर होता है ॥ २७ ॥

अथ मं० बु० श० योगफलम्।

कुलोचनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यप्रवासी बहुहास्ययुक्तः ॥
स्यान्नोसहिष्णुश्च नरोऽपराधी मंदारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ॥२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बु. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य बुरे नेत्रोंवाला दुर्बल देह वनमें वासकरनेवाला दूतका कामकरनेवाला परदेशी बहुत हास्यसहित किसीकी न सहनेने वाला अपराधी होता है ॥ २८ ॥

अथ मं० बृ० शु० योगफलम्।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः ॥
वाचस्पतिः क्षोणिसुतास्फुजिद्भिः क्षेत्रे यदैकत्र गतैर्नरःस्यात् २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बृ. शु. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य श्रेष्ठ पुत्र और स्त्रीके सुखसहित राजाकरके माननीय श्रेष्ठ जनोंके साथ रहनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ मं० बृ० श० योगफलम्।

नृपाप्तमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम् ॥
जन्यां च शन्यङ्गिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ॥३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. बृ. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य राजाकरके मानमान और कृपारहित दुर्बल खोटीवृत्ति करनेवाला मित्रोंकी मित्रता रहित होता है ॥ ३० ॥

अथ मं० शु० श० योगफलम्।

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भार्या तथैवोपहतिः सुखानाम् ॥
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य॥३१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मं. शु. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य परदेशमें वास करनेवाला और उसकी माता नीचकुलवाली तैसी उसकी औरत होती है और वह सुखोंका नाश करता है ॥ ३१ ॥

अथ बु० बृ० शु० योगफलम्।

नृपानुकंप्यो बहुगीतकीर्तिः प्रसन्नमूर्तिर्विजितारिवर्गः ॥
सौम्यामरेज्यास्फुजितां प्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरः स्यात् ३२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. बृ. शु. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य राजाकी कृपासहित बहुत यशवाला प्रसन्नचित्त शत्रुओंका जीतनेवाला बलवान् होताहै ॥ ३२ ॥

अथ बु० बृ० श० योगफलम्।

स्थानार्थसद्वैभवसंयुतः स्यादनल्पजल्पो धृतिमान्सुवृत्तः ॥
शनैश्चराचार्यशशांकपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्र गता भवंति ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. बृ. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य मकानमें धन और श्रेष्ठ वैभव सहित बहुत बोलनेवाला धृतिमान् श्रेष्ठ वृत्तिवाला होताहै ॥ २३ ॥

अथ बु० शु० श० योगफलम् ।

साधुशीलरहितोऽनृतवक्ताऽनल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्तः ॥
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बु. शु. श. एकराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य साधु शीलरहित झूठ बोलनेवाला बहुतबोलनेवाला निश्चय धूर्त बड़ी दूरकी यात्राकरनेवाला कलाओंका जाननेवाला होताहै ॥ २४ ॥

अथ बृ० शु० श० योगफलम् ।

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्तिः पृथिवीपतिः स्यात् ॥
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मंदेज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः २५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृ. शु. श. एकभावमें बैठे होंय वह मनुष्य नीच वंशमें भी चाहे पैदा होय तौभी श्रेष्ठकीर्तिवाला धरतीका स्वामी श्रेष्ठवृत्ति करनेवाला होताहै ॥ २५ ॥

अथ शुभाशुभयुक्तचंद्रसूर्यफलम् ।

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्नैधनमामनंति ॥
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्ता मिश्रे विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम् २६॥
शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोर्थभूकीर्तिविवृद्धिलाभम् ॥
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ॥ २७ ॥
एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम् ॥
दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके युक्त चंद्रमा बैठा होय तौ माताको निश्चय करके नाश करता है तिसी प्रकार सूर्य पापग्रहों करके सहित होय तौ पिताको नाश करता है मिश्रग्रहोंसे मिश्र फल करता है ॥ २६ ॥ और जो चंद्रमा शुभग्रहकरके सहित बैठा होय तौ वह मनुष्य यश और धन कीर्तिकी वृद्धिको प्राप्त होता है और वह मनुष्य श्रेष्ठ प्रतिष्ठा करके सहित राजाकरके मानको प्राप्त होताहै ॥ २७ ॥ जिसके एक घरमें तीन पापग्रह बैठे होंय तौ वह मनुष्य बुरे रूपवाला दारिद्र्य और दुःखोंकरके संतापित कभी घरमें सुख नहीं पाता है ॥ २८ ॥

इति त्रिग्रहयोगाऽध्यायः ।

अथ राजयोगाध्यायप्रारंभः ।

तत्रादौ गणेशस्तुतिः ।

मद्विलासकलगर्जनशीलः शुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम् ॥
अस्तु वः कलितभालतलेंदुर्मंगलाय किल मंगलमूर्तिः ॥ १ ॥

अब राजयोग कहते हैं तहां पहिले श्रीगणेशजीका ध्यान करते हैं कैसे हैं गणेशजी अच्छ विलासके करनेवाले मधुर स्पष्ट शब्दके गर्जन शीलवाले शुण्डको पहुंचाके समान बारंबार घुमाते हुए शोभायमान है मस्तकपर चंद्रमा जिनके ऐसे मंगलकी मूर्ति श्रीगणेशजी महाराज मंगलके वास्ते हमारे विघ्नोंका नाश करो ॥ १ ॥

अथ राजयोगकथनकारणमाह ।

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः ॥
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक्तैः सार्थकं जन्म यतो नराणाम् ॥ २ ॥

भाग्यादिभाव जो पहिले वर्णन करे हैं सो भाग्य निश्चय करके राजयोगसे होना है उन राजयोगोंको मैं भले प्रकार वर्णन करता हूं उन राजयोगोंके उत्पन्न हुएसे मनुष्योंका जन्म सार्थकहै ॥ २ ॥

अथ राजयोगः ।

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः ॥
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजा राजात्मजस्त्वन्यसुतोऽत्र मंत्री ३ ॥

राजयोगः

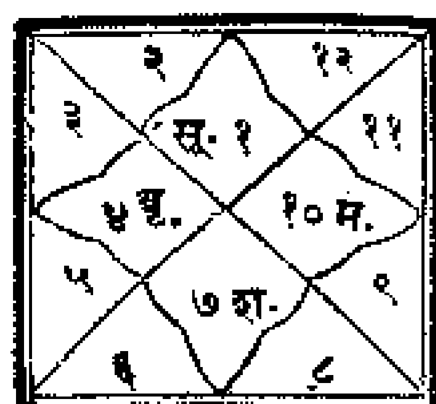


राजयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह अपनी उच्चराशिमें बैठे होंय वह मनुष्य समुद्रपर्यंत धरतीका पति सार्वभौमराजा होता है (एको योगः) और जिसके तीनग्रह अपने उच्च स्वक्षेत्र मूल त्रिकोणमें बैठे होंय वह मनुष्य राजकुलमें उत्पन्न राजा होता है और अन्यजातिमें उत्पन्न राजाका वजीर होताहै ॥ ३ ॥

राजयोगः



तुंगोपगा यस्य चतुर्नभोगा महापगासंतरणे बलानाम् ॥ दंतावलानां किल सेतुबंधा कीर्तिप्रबंधा वसुधातले ते ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चार ग्रह अपने उच्चमें बैठे होंय उस मनुष्यके साथ हाथियोंके समूह चलते हैं और वह मनुष्य पुलबांधनेमें समर्थहो उसकी धरतीपर बडी कीर्ति होतीहै ॥ ४ ॥

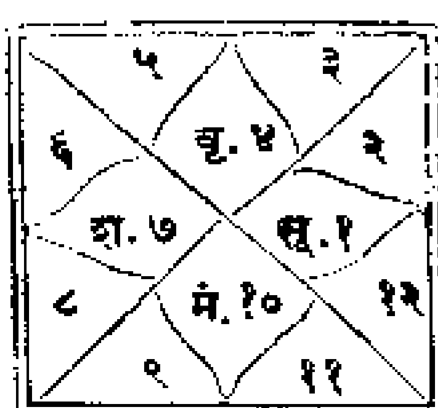
स्वोच्चे सूर्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगैस्तेषामन्यतमे हि षोड़शमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ॥ तन्मध्ये निजतुंगगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ स्वर्क्षे तुंगसमाश्रितेकखचरे लग्ने परे षोड़श ॥ ५ ॥

अब बत्तीस राजयोग कहते हैं सूर्य, शनैश्चर, बृहस्पति, मंगल, अपनी उच्चराशिमें बैठे होंय तो चार राजयोग होतेहैं अथवा पूर्वोक्त ग्रहोंमेंसे तीन ग्रह उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे होंय तो बारह राजयोग होते हैं इस तरह सोळह हुए ॥ ५ ॥

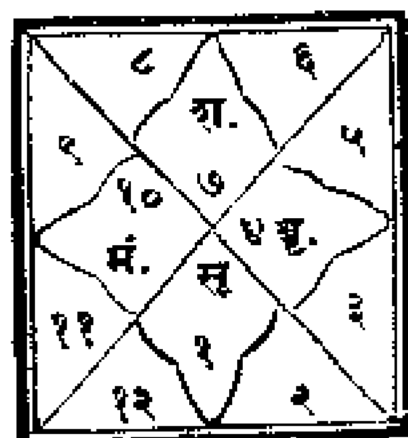
राजयोगः १



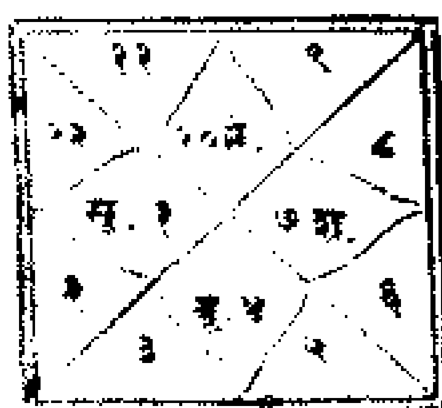
राजयोगः २



राजयोगः ३



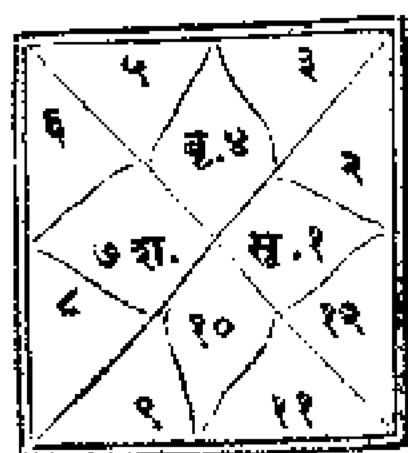
राजयोगः ४



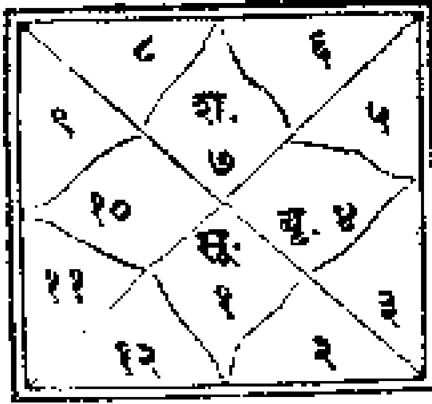
राजयोगः ५



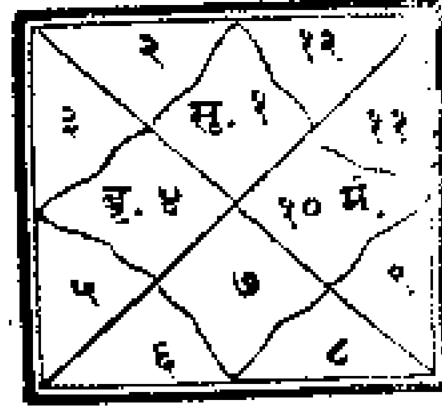
राजयोगः ६



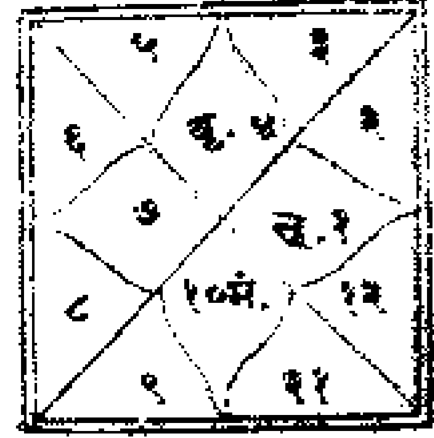
राजयोगः ७



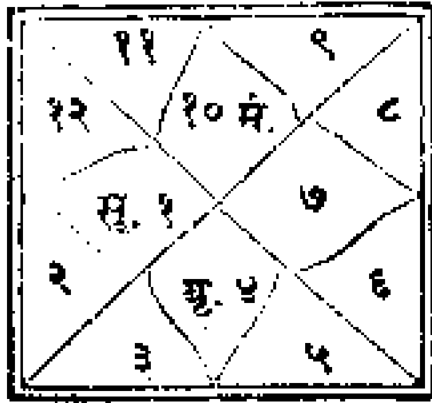
राजयोगः ८



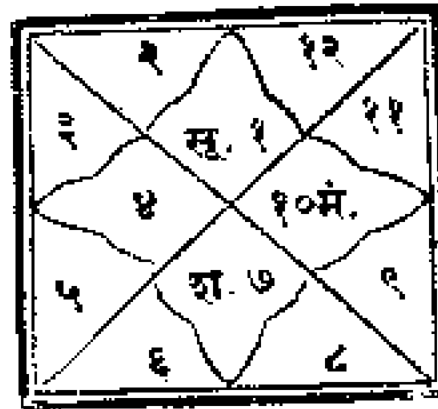
राजयोगः ९



राजयोगः १०



राजयोगः ११



राजयोगः १२



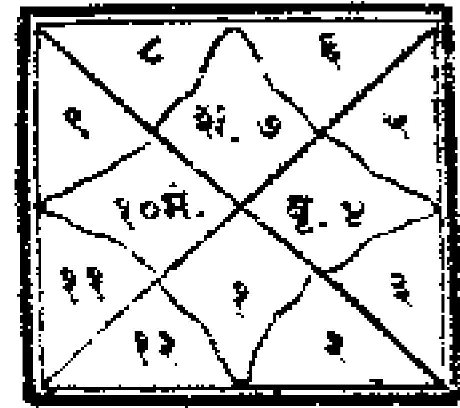
राजयोगः १३



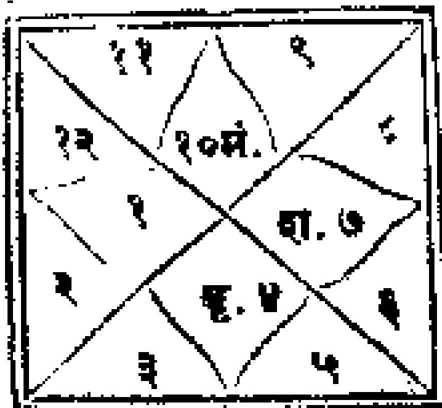
राजयोगः १४



राजयोगः १५

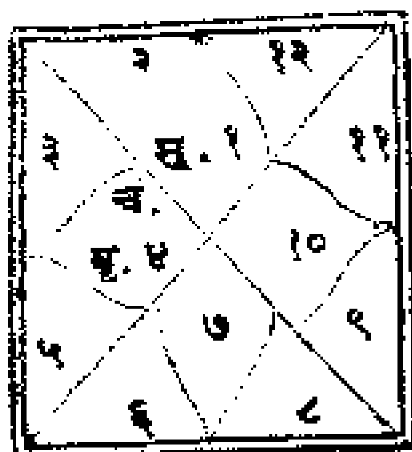


राजयोगः १६



उन्हीं पूर्वोक्त ग्रहोंमें से दो ग्रह अपनी उच्चराशिगत केन्द्रमें बैठे होंय और चंद्रमा कर्कराशिका होय तो बारह राजयोग होते हैं और उन्हीं चार ग्रहोंमेंसे एक ग्रह भी अपनी उच्च-राशिगत केन्द्रमें बैठा होय और चन्द्रमा कर्क राशिमें बैठा होय तो चार राजयोग होते हैं पूर्वोक्त बारह राजयोग मिलकर सोलह हुए ॥ ५ ॥

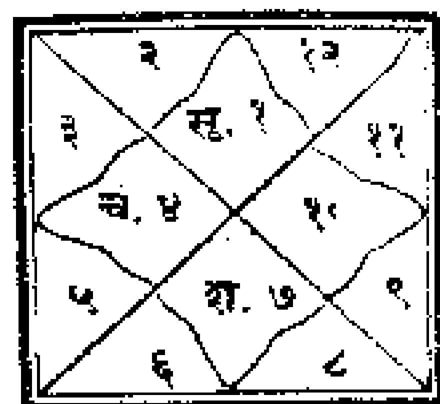
राजयोगः १७



राजयोगः १८



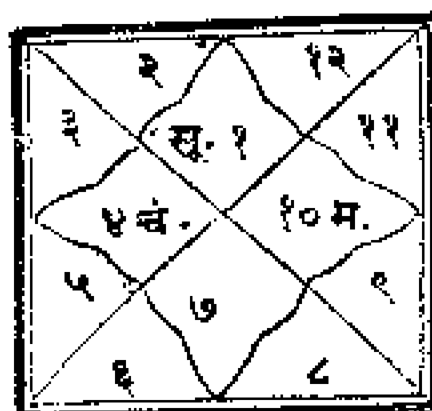
राजयोगः १९



राजयोगः २०



राजयोगः २१



राजयोगः २२



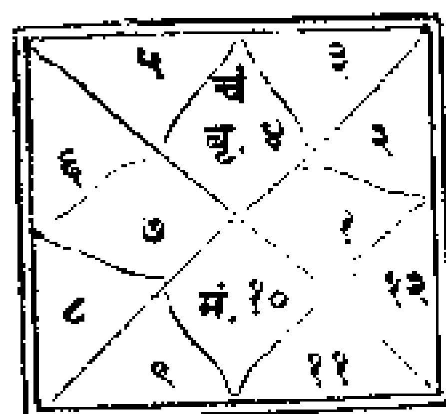
राजयोगः २३



राजयोगः २४



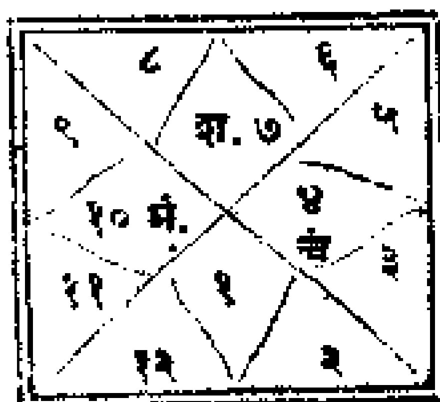
राजयोगः २५



राजयोगः २६



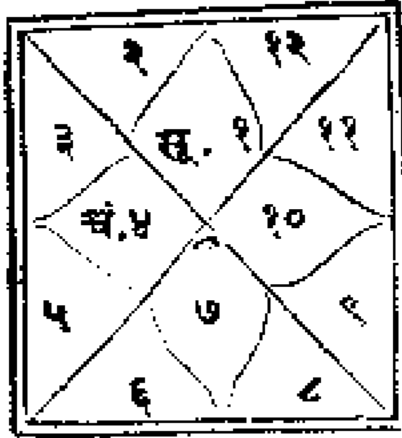
राजयोगः २७



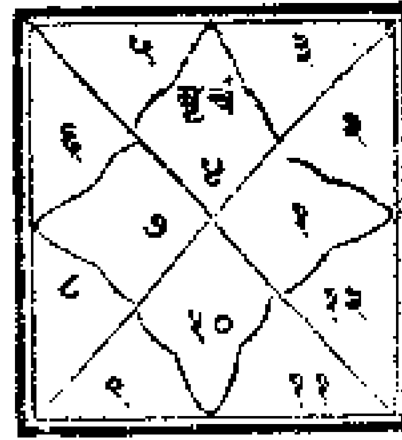
राजयोगः २८



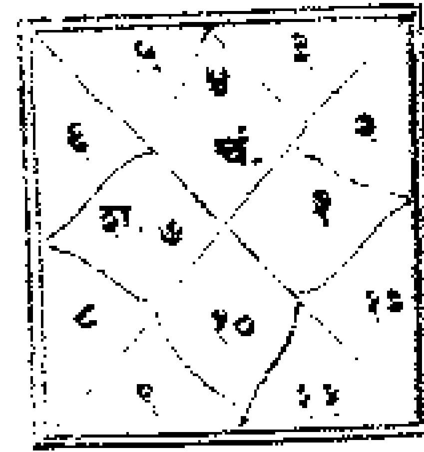
राजयोगः २९



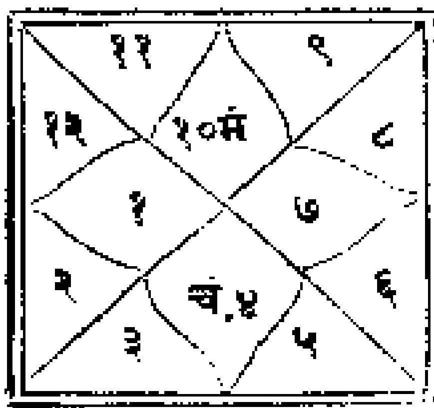
राजयोगः ३०



राजयोगः ३१



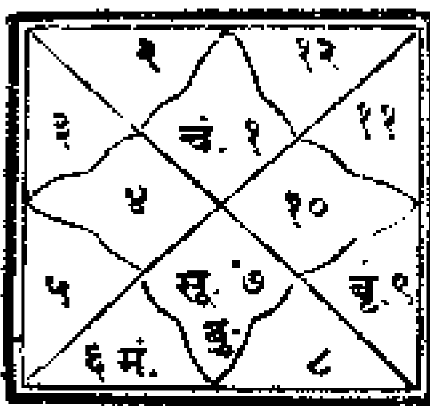
राजयोगः ३२



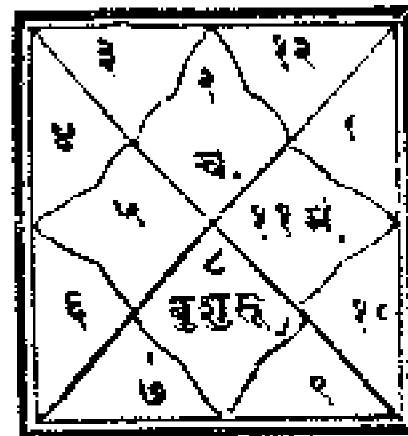
वर्गोत्तमेऽमृतकरे यदि वा शरीरे संवीक्षिते च चतुरादिभिरिंदुहीनैः ॥ द्वाविंशतिप्रमितया खलु संभवति योगाः समुद्रवलयक्षितिपालकानाम् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा वर्गोत्तम नवांशगत लग्नमें बैठा होय अथवा स्वाढी चंद्रमा लग्नमें चार ग्रहोंको आदिलेकर पांच छः ग्रह लग्नको देखते होंय तो बाइस राजयोग होते हैं इन योगोंमें पैदाहुआ मनुष्य समुद्र पर्यन्त धरतीका पालनेवाला होता है ॥ ६ ॥

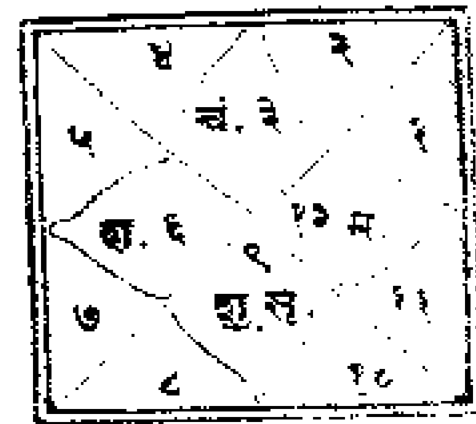
राजयोगः १



राजयोगः २



राजयोगः ३



राजयोगः ४



राजयोगः ५



राजयोगः ६



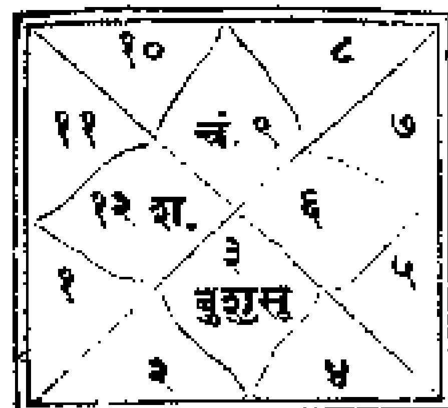
राजयोगः ७



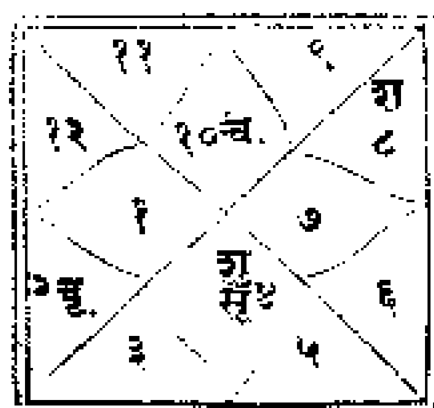
राजयोगः ८



राजयोगः ९



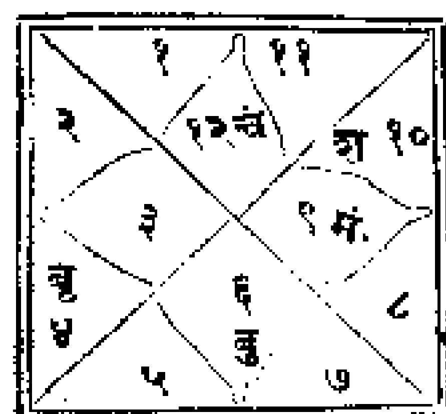
राजयोगः १०



राजयोगः ११



राजयोगः १२



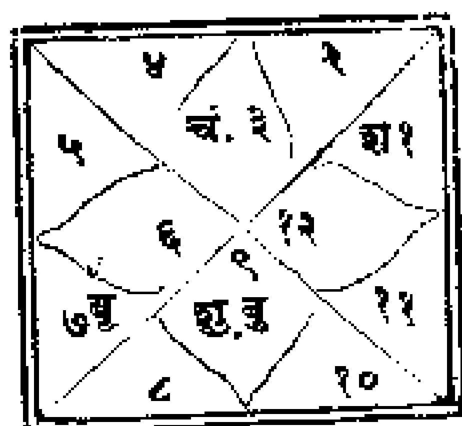
राजयोगः १३



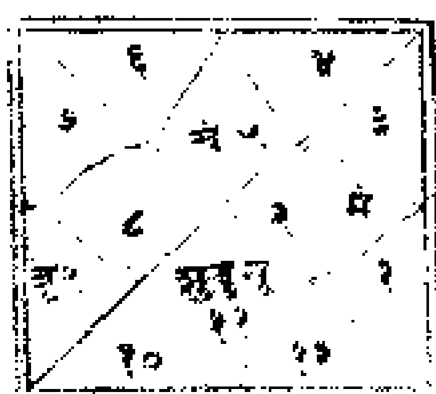
राजयोगः १४



राजयोगः १५



राजयोगः १६



राजयोगः १७



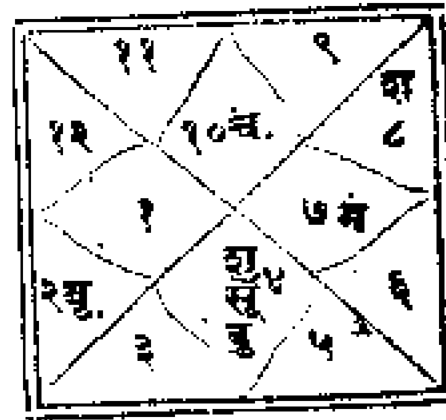
राजयोगः १८



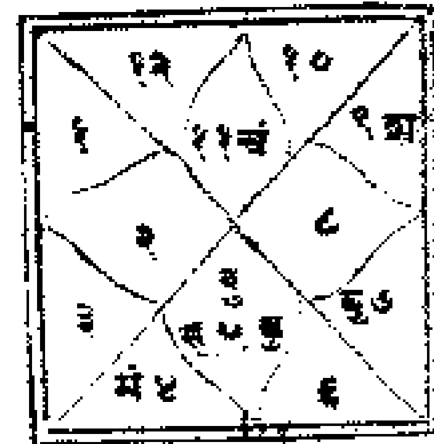
राजयोगः १९



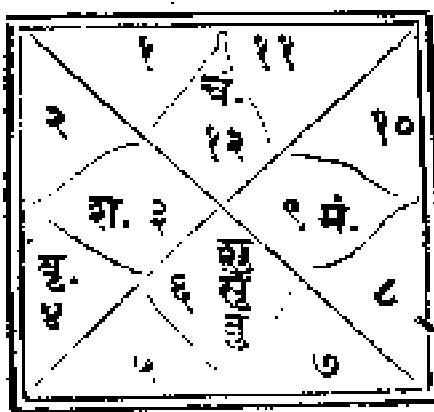
राजयोगः २०



राजयोगः २१



राजयोगः २२



इसी प्रकार चंद्रमा लग्नमें, न बैठा होय और न देखता होय और चार वा पांच वा छः ग्रह लग्नको देखते होंय तो २२ और योग होते हैं ॥

उदग्वसिष्ठो भृगुजश्च पश्चात्प्राग्वाक्पतिर्दक्षिणतस्त्वगस्त्यः ॥ प्रसूतिकाले स भवेदिलाया नाथो हि पाथोनिधिमेखलायाः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उत्तरमें वशिष्ठ और शुक्र पश्चिममें पूर्वमें बृहस्पति दक्षिणमें अगस्त्य होंय ऐसे समयमें पैदा हुआ मनुष्य समुद्र है तागड़ी जिसकी ऐसी धरतीका स्वामी होता है ॥ ७ ॥

राजयोगः



स्वोच्चे मूर्तिगतेऽमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ चापे वागधिपेंदुभार्गवयुते स्याज्जन्मभूमीपतेः ॥ स्वस्थाने ननु यस्य भूमितुरगा मत्तेभमालामिलत्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं दिग्दंतिनः कुर्वते ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उच्चराशिगत लग्नमें बुध बैठा होय और मकरराशिमें मंगल सहित शनैश्चर बैठा होय और धनराशिमें बृहस्पति चंद्रमा शुक्र करके सहित बैठा होय ऐसे

योगमें उत्पन्न हुए राजाके जन्मकालमें उस राजाके घरपर धरती घोड़े मदवाले हाथियोंके समूहकरके फौज धरतीके ऊपर दिक्पालहाथी आनंदको करते हैं ॥ ८ ॥

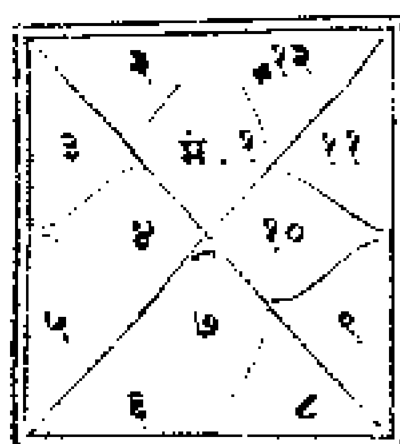
राजयोगः



दिनाधिराजे मृगराजसंस्थे नक्रे सवक्रे कलशेर्कसूनौ ॥ पाठीरलग्ने शशिना समेते महीपतेर्जन्म महौजसः स्यात् ॥ ९ ॥

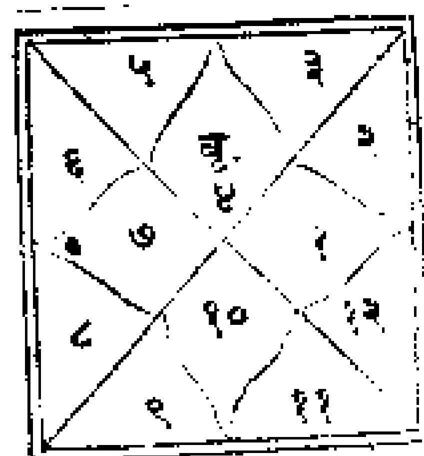
जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य सिंहराशिमें और मकरराशिमें मंगल कुंभराशिमें शनैश्चर मीनराशिमें चंद्रमा बैठा होय तो वह मनुष्य बड़ा तेजवाला राजा होता है ॥ ९ ॥

राजयोगः



महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतुंग ॥ योगे द्वयेस्मिन्नृपती भवेतां जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ ॥ १० ॥

राजयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष राशिगत मंगल लग्नमें बैठा होय(एको योगः) अथवा कर्कराशिगत बृहस्पति लग्नमें बैठा होय इन दोनों योगोंमें उत्पन्न मनुष्य शत्रुओंके जीतनेवाले नीतिशास्त्रमें राजा होते हैं ॥ १० ॥

राजयोगः



वाचस्पतिः स्वोच्चगते विलग्ने मेषे दिनेशः शनिशुक्रसौम्याः ॥ लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलस्याभरणं गृणंति ॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर लग्नमें बैठा होय मेषराशिमें सूर्य और शनैश्चर शुक्र बुध ग्यारहवें बैठे होय तो वह मनुष्य निश्चय करके धरतीका आभूषणरूपी राजा होता है ॥ ११ ॥

राजयोगः



मंदो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः ॥ स्वस्वामियुक्तं जनयंति नाथं पाथोनिधिप्रांतमहीतलस्य ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्चर मकरराशिगत लग्नमें बैठा होय और सिंहराशिगत सूर्य मिथुनमें बुध मेषमें मंगल तुलाराशिमें शुक्र कर्कराशिमें चंद्रमा बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ मनुष्य समुद्रपर्य्यन्त धरतीका स्वामी [राजा] होता है ॥ १२ ॥ यह योग किसी किसी देशमें कभी होता है ॥ १२ ॥

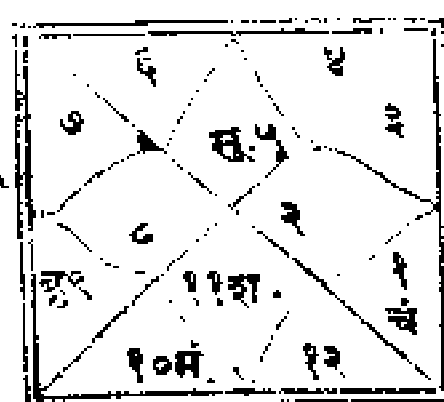
राजयोगः



द्वन्द्वेदैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्तौ च तुंगस्थिते वक्रे वक्रशनैश्चरे च शफरे चंद्रामरेज्यौ स्थितौ ॥ योगोयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्यावनीशो महान् वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पञ्चाननः केवलम् ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें शुक्र और बुध लग्नमें कन्याराशिका बैठा होय और मकरराशिमें मंगल शनैश्चर बैठा होय और मीनराशिगत चंद्रमा बृहस्पति बैठा होय जिस मनुष्यके जन्मकालमें यह योग होय वह मनुष्य बड़ाभारी राजा होता है शत्रुओंका नाशकरनेवाला जैसे हाथियोंके दलनकरनेमें सिंह होता है ॥ १३ ॥

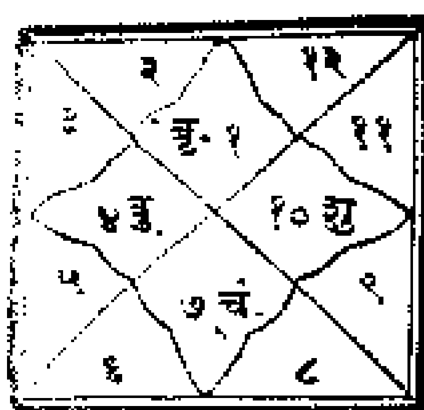
राजयोगः



सिंहोदयेर्कस्त्वजगो मृगांकः शनैश्चरे कुंभधरे सुरेज्यः ॥ धनुर्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिगत लग्नमें सूर्य बैठा होय मेषराशिमें चंद्रमा और शनैश्चर कुंभमें और धनराशिमें बृहस्पति मकरराशिमें मंगल बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य राजाओंका राजा होता है ॥ १४ ॥

राजयोगः



मेषे गतो मूर्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् ॥ रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगंतकीर्तिः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत बृहस्पति बैठा होय और सातवें चंद्रमा बैठा होय और चतुर्थ वा दशम भावमें शुक्र बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न राजाकी कीर्ति दिगंत व्यापिनी होती है अर्थात् बड़ा प्रतापी राजा होता है ॥ १५ ॥

राजयोगः



गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्मारांबुखस्था भृगुमंदभौमाः॥तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयांति ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति कर्कराशिगत लग्नमें बैठा होय और सातवें शुक्र और चतुर्थ शनैश्चर दशम मंगल बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न हुए राजाकी यात्राके समयमें समुद्रका जल नगाड़ेके शब्दसे उछलता है ॥ १६ ॥

प्रसूतिकाले स्फुरदंशुजालः षड्वर्गशुद्धोऽदितिभे स्वभे वा ॥ तुङ्गे त्रिकोणे स नभश्चरेंद्रो नरं प्रकुर्य्यात्खलु सार्वभौमम् ॥ १७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा षड्वर्गमें शुद्ध होकर पुनर्वसु नक्षत्रका कर्कराशिका बैठा होय अथवा उच्चराशिगत पंचम नवम बैठा होय वह मनुष्य निश्चय कर समुद्रपर्यंत पर्थ्वीका स्वामी होता है ॥ १७ ॥

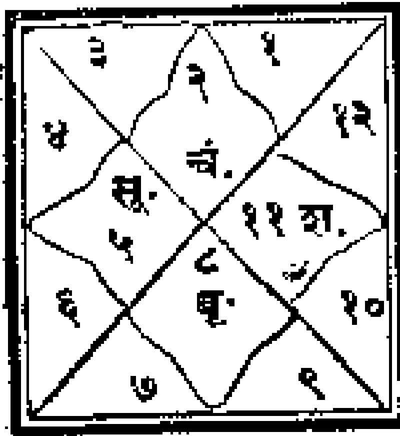
षड्वर्गशुद्धौ खचरद्वयं चेद्यथोक्तरीत्या जनने नृपस्य ॥ तस्याधिपत्यं खलु किंनरेषु द्वीपांतरे चात्र न किं धरायाम् १८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें षड्वर्गमें शुद्ध दो ग्रह पूर्वोक्त रीतिके समान बैठे होंय उस राजाका आधिपत्य किन्नरोंके विषे और द्वीपांतरोंमें और पृथ्वीपर होता है ॥ १८ ॥

तुंगत्रिकोणाद्यधिकारहीनैः षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव मंत्री ॥ राजा चतुर्भिः खलु सार्वभौमः पंचादिभिर्वाक्पतिनेककेन॥ १९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीन ग्रह उच्च और मूल त्रिकोणके अधिकारसे हीन होकर षड्वर्गमें शुद्ध बैठे होंय वह मनुष्य राजाका वजीर होता है और पूर्वोक्त रीतिके समान चार ग्रह बैठे होंय तो वह मनुष्य राजा होता है और पांच वा छः ग्रह षड्वर्गमें शुद्ध बैठे होंय तो वह मनुष्य सार्वभौम राजा होता है और बृहस्पति अकेला ही षड्वर्ग शुद्ध बैठा होय तो वह राजा होता है ॥ १९ ॥

राजयोगः



वृषे शशी लग्नगतोम्बुसतखस्था रवीज्याकेसुता भवंति ॥ तदंडयात्रासु रजोन्धकारादिनेपि रात्रिः कुरुते प्रवेशम् ॥ २० ॥

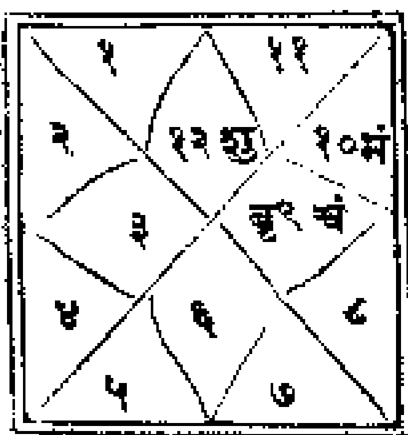
जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमा लग्नमें बैठा होय और चौथे भावमें सूर्य और सप्तम बृहस्पति और दशममें शनैश्चर बैठा होय तिस राजाकी घड़ी मात्र यात्रासे फौजके चलनेके कारण धरती रजसे अंधकार होजाता है अर्थात् दिनमें रात्रिका वेश मालूम पड़ता है ॥ २० ॥

राजयोगः

गुर्विंदुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्तित्रिधर्मायगता भवंति ॥ मृगेर्कसूनुस्तनुगोत्र नूनमेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् ॥ २१ ॥

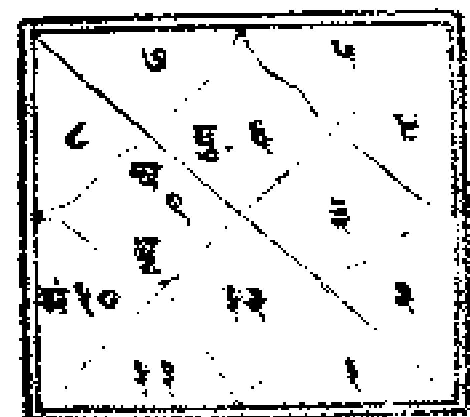
जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति और चंद्रमा बुध शुक्र लग्न तृतीय नवम एकादशमे बैठे होंय और मकरराशिमें शनैश्चर बैठा होय तो वह मनुष्य धरती पर एकछत्रधारी होकर पृथिवीका भोग करता है ॥ २१ ॥

राजयोगः



तुंगास्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च वक्रो धनुषीज्यचंद्रौ ॥ प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखंडलौ भूमितलेपि संस्थौ ॥ २२ ॥

राजयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र या बुध उच्चराशिगत लग्नमें बैठा होय मकरमें मंगल धनराशिमें बृहस्पति चंद्रमा जिस राजाके जन्मकालमें ऐसा योग होवे वह राजा इंद्रकी समान धरतीके ऊपर होता है अथवा समग्र धरतीका स्वामी होता है ॥ २२ ॥

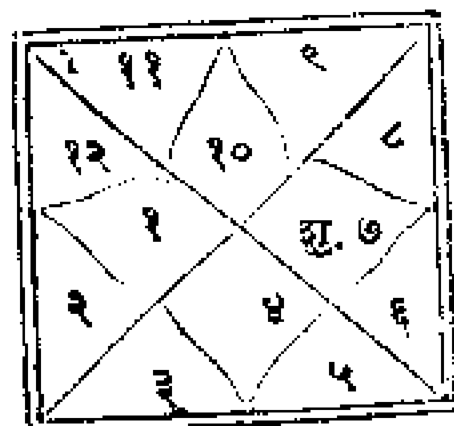
राजयोगः



कर्कऽर्कचंद्रौ सुरराजमंत्री शत्रुस्थितश्चापि बुधः स्वतुंगे ॥ कश्चिद्बली लग्नगतः स राजा राजाधिराजाभिधयालमेव ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिमें सूर्य चंद्रमा बैठे होंय और बृहस्पति छठे और बुध अपनी उच्चराशिगत होय और कोई ग्रह लग्नमें बली होकर बैठा होय वह मनुष्य राजाधिराज राजाकरके प्रसिद्ध होता है ॥ २३ ॥

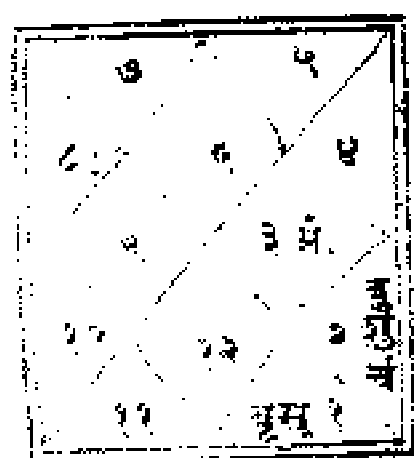
राजयोगः ।



गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः ॥ प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधि गामिनी स्यात् ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति उच्चका होकर केन्द्रमें बैठा होय दशमभावमें शुक्र बैठा होय ऐसा योग होनेसे उस राजाका रुपया और मोहर चारों समुद्रतक चलता है ॥ २४ ॥

राजयोगः ।



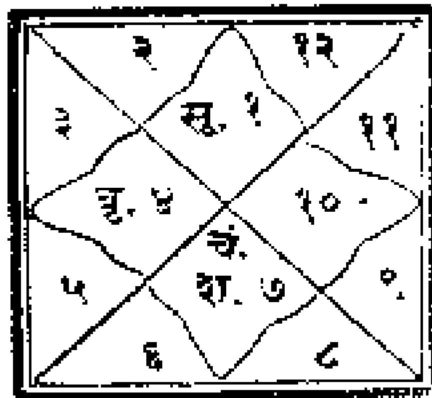
देवाचार्यदिनेश्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः ॥ नूनं दिग्विजयप्रयाणसमये सैन्यैरिला व्याकुला चिंतामुद्वहतीति का गति रहो सर्वसहाख्यास्थितेः ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति और सूर्य मेषराशिगत लग्नमें बैठे होंय और दशम भावमें मंगल बैठा होय और नवम स्थानमें शुक्र बुध चंद्रमा बैठे होंय जिसके जन्मकालमें ऐसा योग होय उस राजाकी दिग्विजय यात्राके समय फौजकरके धरती व्याकुल होजाती है और मूर्तिमान् भयसे चिंताको करके कहते हैं कि अब क्या गति होने वाली है ॥ २५ ॥

नीचारातिलवोज्झिता बलयुताः संत्यक्तवैराः परं स्फारस्फाति-धरा भवंति खचराः संस्थो वृषे भार्गवः ॥ मातृणां यदि मण्डले समुदितो जीवो भवेत्संभवे देवैस्तुल्यपराक्रमः स च नृपः कोपप्रमृष्टाहितः ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नीच और शत्रु नवांशसे रहित बैरसे हीन प्रकाशवान् कांतिको धारण करनेवाले ग्रह होवें और शुक्र वृषराशिमें बैठा होय मातृ मंडलमें उदयको प्राप्त बृहस्पति बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ राजा देवताओंके समान बलवान् क्रोधसे रहित होता है ॥ २६ ॥

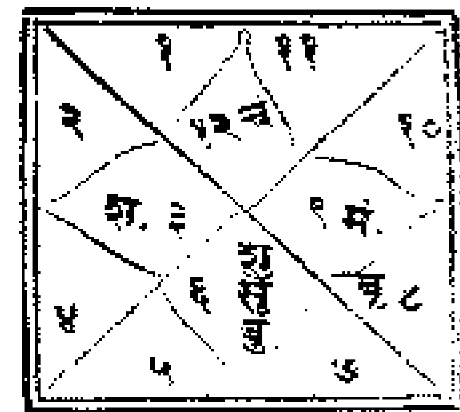
राजयोगः ।



मेषोदयेऽर्कश्च गुरुः कुलीरे तुलाधरे मंदविधू भवेताम् ॥ भवेन्नृपालोऽमलकीर्तिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः ॥ २७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य लग्नमें बैठाहोय और बृहस्पति कर्कराशिगत होय और तुलाराशिमें शनैश्चर चंद्रमा बैठाहोय ऐसे योगमें उत्पन्न राजा निर्मल यशवाला हो जिस्की आज्ञाको राजालोग पालन करते हैं ॥ २७ ॥

राजयोगः



मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षिते॥सार्वभौमं नरं कुर्यादिन्द्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत चंद्रमा पूर्ण होय उस्को सम्पूर्ण ग्रह देखतें होय ऐसे योगसे उत्पन्न राजा चक्रवर्ती इंद्रके तुल्य बलवान् होता है ॥ २८ ॥

राजयोगः

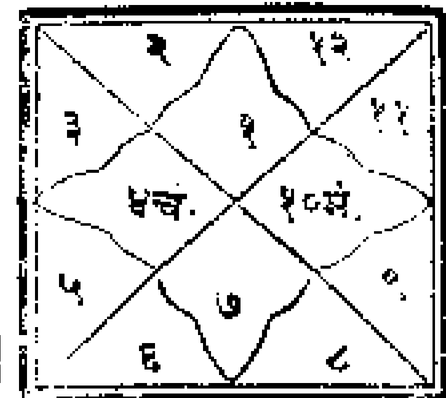


धने दिनेशाद्भृगुजीवसौम्या नास्तं गता नो रिपुदृष्टियुक्ताः ॥ स्यात्सङ्कटं तत्कटकं स्त्रियूणां यशः पटो दिग्वसनाय नूनम्॥ २९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे शुक्र बृहस्पति बुध बैठे होंय न तो अस्तके होंय और न शत्रु कोई देखताहोय ऐसे

योगमें उत्पन्न हुआ राजाके शत्रुओंकी फौज सामनेसे भागजातीहै और उन शत्रुदलके यशरूपी वस्त्रोंको नंगे करदेताहै ॥ २९ ॥

राजयोगः



सत्त्वोपेतः शुभजननपः पूर्णचंद्रं प्रपश्येद्य-
स्योत्पत्तौ भवति नृपतिर्निर्जितारातिपक्षः ॥
यात्राकाले गजहयरथात्यंततूर्यस्वनानां ब्र-
ह्मांडं नोऽखिलमपि भवेत्पूरणार्थं समर्थम् ३०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होवे उस्को पूर्ण चन्द्रमा देखताहोय ऐसे योगमें पैदा हुऐ राजा शत्रुओंको जीतनेवाले होते हैं उन राजाओंकी यात्राके समय हाथी घोडे रथोंके अत्यंत शब्दोंकरके सम्पूर्ण ब्रह्मांड पूरित होजाता है ॥ ३० ॥

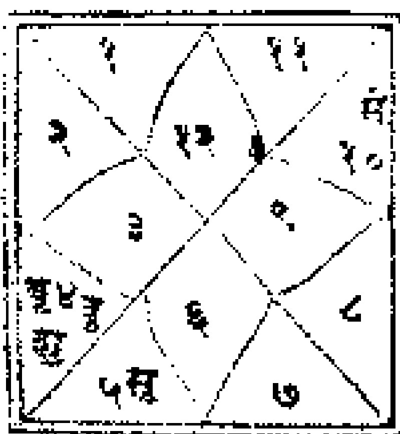
राजयोगः



स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शी
तरुचिर्निजोच्चे॥यद्यानकाले रजसो वितानं
रुणद्धि सूर्याश्वविलोचनानि॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति सूर्य शुक्र अपने उच्चमें बैठे होंय और चंद्रमाभी उच्च राशिगत शनैश्चर करके दृष्ट होय ऐसे योगमें पैदा हुए राजाकी यात्राकालमें धरतीकी रजकरके सामियाना छाया जाता है और सूर्यके अश्वोंके नेत्रोंको वह रज बंद कर देती है ॥ ३१ ॥

राजयोगः



नास्तं याताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्रामरे-
ज्या नक्रे वक्रो रविरहितगो धर्मगो यस्य
मंदः॥ यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पसं-
कोचकर्ता श्रीसूर्योपि प्रचलितदलोद्भूतधूली
कृतास्तः ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमभावमें बुध शुक्र बृहस्पति बैठे होंय परंतु अस्तंगत न होंय और सूर्यसे रहित मकरराशिमें मंगल बैठाहोय और नवमभावमें शनैश्चर होय ऐसे योगमें पैदा हुए राजाकी यात्राके समयमें कमलनी पुष्प संकोचकर्ती है अर्थात् बंदहोजाती है और श्रीसूर्यनारायणभी उस राजाकी फौजके चलनेसे धरतीकी रज करके अस्त होजाते हैं ॥ ३२ ॥

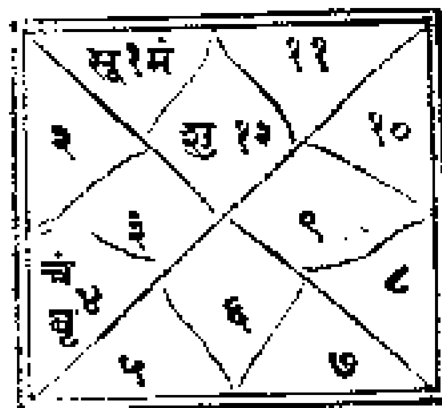
राजयोग:



कन्यालग्नगते बुधे च विबुधामात्ये च जायास्थिते भौमार्कौ सहजेर्कजेऽरिभवनेऽम्बुस्थे भृगोर्नंदने ॥ योगेस्मिन्मनुजस्य यस्य जननं तच्छासनं सर्वदा राजानः प्रवहन्त्यलं सुविमलां मालां वै मौलिस्थले ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कन्याराशिगत लग्नमें बुध बैठाहोय और बृहस्पति सातवें बैठा होय और मंगल सूर्य तीसरे बैठे होंय और शनैश्चर छठे और चतुर्थ शुक्र बैठे होंय ऐसे योगमें जिस मनुष्यका जन्म होय उस राजाके शासनमें हमेशा सब राजालोग अपने मस्तकको नवाते हैं ॥ ३३ ॥

राजयोग:



मीनोदये दानवराजपूज्यश्चंद्रामरेज्यौ भवनः कुलीरे ॥ मेषेर्कभौमौ नृपतिः किल स्यादाखण्डलेनापि तुलां प्रयाति ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनराशिगत लग्नमें शुक्र बैठा होय और चंद्रमा बृहस्पति कर्कमें बैठे होंय मेषराशिमें सूर्य मंगल बैठे होंय ऐसे योगमें उत्पन्न हुआ राजा इन्द्रके समान होता है ॥ ३४ ॥

इति निगदितयोगैर्नीचवंशोद्भवोपि भवति हि पतिरुर्व्याः किं पुना राजसूनुः ॥ नरपतिकुलजातो वक्ष्यमाणैश्च योगैर्भवति नृपतिरेवं तत्समोऽन्यस्य सूनुः ॥ ३५ ॥

यह योग मैंने कहे हैं इन योगोंमें नीच वंशमें पैदा हुआभी मनुष्य धरतीका स्वामी होताहै तौ राजाके पुत्र क्यों नहीं राजा होयंगे अर्थात् जरूर ही राजाधिराज होयंगे अब जो आगे और राजयोग कहेंगे इन योगोंमे उत्पन्न हुआ राजाकेही पुत्र राजा होते हैं और अन्यवंशमें पैदा हुए राजा नहीं होयंगे ॥ ३५ ॥

---

१ इवार्थे वशब्दः ।

राजयोगः

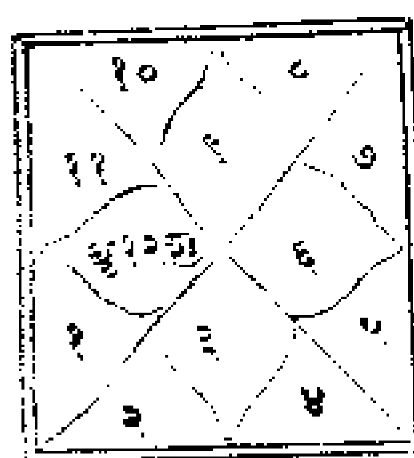


छायासुतो नक्रविलग्नवर्ती चास्ते प्रसूतौ यदि पुष्पवंतौ ॥ लाभे कुजो वै भृगुजोष्टमस्थः स्याद्भूपतिर्भूपकुलप्रसूतः ॥ ३६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्वर मकरराशिका लग्नमें बैठा होय और सातवें सूर्य चंद्रमा बैठे होंय ग्यारहवें मंगल अष्टम शुक्र बैठा होय ऐसे योगमें राजवंशमें उत्पन्न हुए मनुष्य राजा होते हैं ॥ ३६ ॥

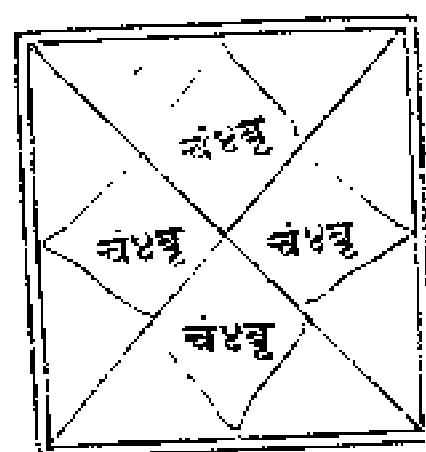
सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात् ॥
कर्कस्थितो देवगुरुः सचंद्रः काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ॥ ३७ ॥

राजयोगः

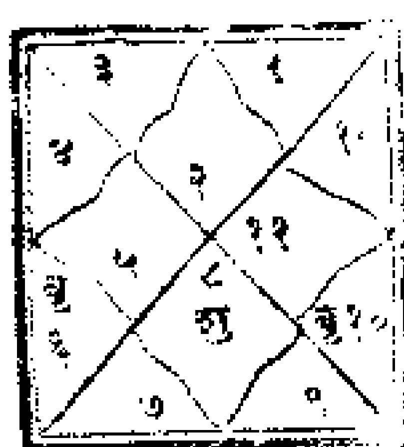


जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति, शुक्र चौथे बैठे होंय ऐसे योगमें उत्पन्न नर अत्यंत बलवान राजा होता है (एको योगः) और जिस्के कर्कराशिगत चंद्र बृहस्पति केंन्द्रमें बैठे होंय वह मनुष्य काश्मीरदेशका राजा होता है ॥ ३७ ॥

राजयोगः

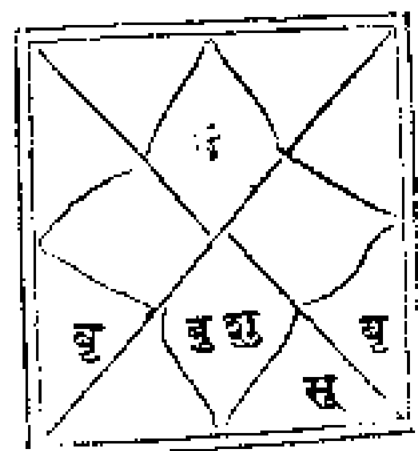


राजयोगः



सुरासुरेज्यस्थितदृष्टिरिंदुः स्वोच्चे स्थितो भूमिपतिं करोति ॥ विलोकयंतः परिपूर्णचंद्रं शुक्रज्ञजीवा जनयन्ति भूपम् ॥ ३८ ॥

राजयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिगत चंद्रमाको बृहस्पति और शुक्र देखते होंय तो वह मनुष्य राजा होता है और जो परिपूर्ण चंद्रमाको शुक्र बुध बृहस्पति तीनों देखते होंय तो वह राजकुलमें उत्पन्न पुरुष राजा होता है ॥ ३८ ॥

पश्येन्मृगांकात्मजमिंद्रमंत्री विचित्रसंपन्नृपतिं करोति ॥
एकोपि खेटो यदि पंचमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ॥ ३९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुधको बृहस्पति देखता होय तो वह राजकुलोत्पन्न राजा विचित्र संपति युक्त होता है और जिसका एकभी ग्रह पंचमनवांशमें बैठा होय तो भी वह मनुष्य राजा होता है ॥ ३९ ॥

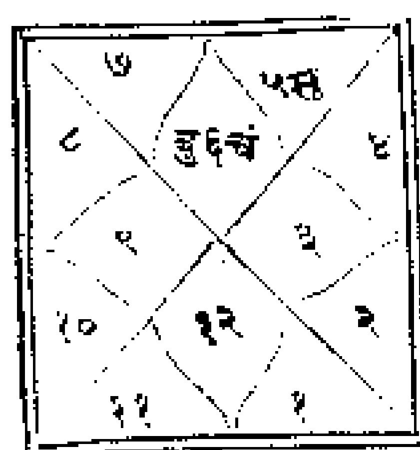
नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति ॥
स्वांशाधिमित्रांशगतोथवा स्याज्जीवेन दृष्टः कुरुते नृपालम् ॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा अपने अधिमित्रके द्वादशभावमें बैठा होय और शुक्र देखता होय तो वह राजा होताहै और जो चंद्रमा अपने नवांशा अथवा अधिमित्रके नवांशामें बैठा होय और बृहस्पति देखता होय तौभी राजा होता है ॥ ४० ॥

दिनाधिनाथोप्यधिमित्रभावे चंद्रेण सम्यक्सुविलोकितो वा ॥
स्यात्तस्कराणां निचये नृपालः सच्छीलशाली सुतरामुदारः ॥४१॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य अपने अधिमित्रके भावमें बैठा होय और उसको चंद्रमा देखता होय तो वह मनुष्य चोरोंके समूहमें श्रेष्ठ शीलवाला निरंतर उदार राजा होता है ४१॥

राजयोगः



स्वोच्चस्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्यान्नरं मागधदेशराजम् ॥ कलाधिशाली बलवान्कलावान्करोति भूपं शुभधामसंस्थः ॥ ४२ ॥

राजयोगः

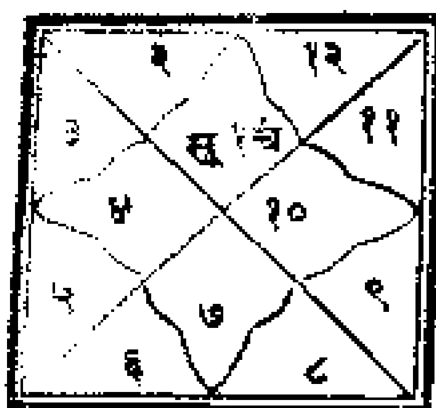


जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कन्याराशिमें चंद्रमा करके सहित बैठा होय वह मनुष्य मगधदेशका राजा होता है (एको योगः) और वही चंद्रमा कलाओं करके पूर्ण बलवान होय तो वह मनुष्य उत्तमस्थानका राजा होता है ॥ ४२ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केंद्रे बली नीचकुलेपि भूपम् ॥
कुर्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ॥ ४३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मराशि और जन्मलग्नका स्वामी केन्द्रमें बलवान होकर बैठा होय तो वह मनुष्य नीचकुलमें पैदा हुआभी राजा होता है उदार निरंतर पवित्र होता है और क्या आश्चर्य है कि राजपुत्र होवें ॥ ४३ ॥

राजयोगः



मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ॥ कर्णाटकद्राविड केरलांध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्ती ॥ ४४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषराशिगत सूर्य चंद्रमा करके सहित होय तो वह राजा होता है कर्णाटक, द्राविड, केरल अंध्र इन देशोंका स्वामी अथवा इनके राजाओंका आज्ञाकारी होताहै ॥ ४४ ॥

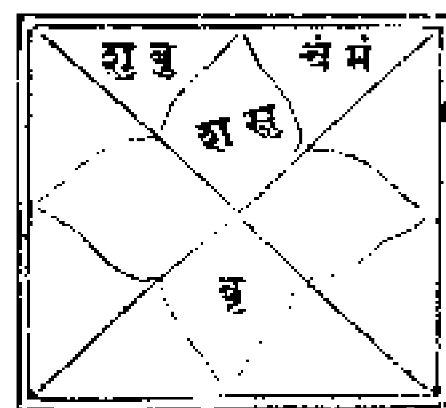
राजयोगः



स्वतुङ्गगेहोपगतौ सितेज्यौ केंद्रत्रिकोणेषुगतौ भवेताम् ॥ प्रसूतिकाले कुरुतो नृपालं नृपालजातं सचिवेंद्रमान्यम् ॥ ४५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने उच्चराशिमें केंद्र वा त्रिकोणमें शुक्र बृहस्पति बैठा होय तो वह मनुष्य राजकुलमें पैदा हुआ राजा होता है और अन्यके कुलमें उत्पन्न मंत्री होता है ॥ ४५ ॥

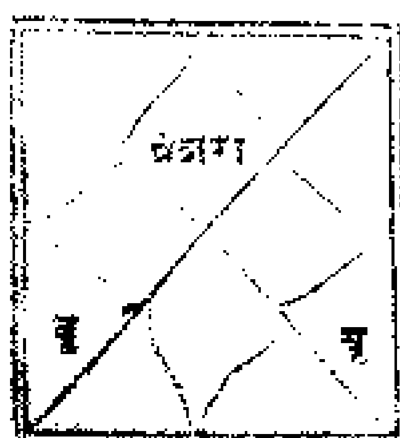
राजयोगः



प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि संति खेटाः ॥ ते छत्रयोगं जनयंति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ॥ ४६ ॥

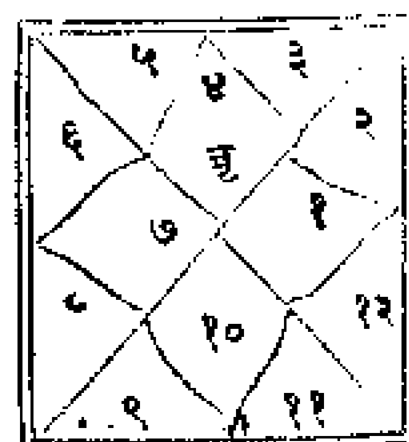
जिस मनुष्यके जन्मकालमें सप्तम, द्वितीय, बारहें और लग्नमें सम्पूर्ण ग्रह बैठे होंय तो छत्र नाम योग होता है इसमें उत्पन्न राजा होय जिसके पूर्वजन्मके पुण्योंका उदय होय वह इस योगमें पैदा होता है ॥ ४६ ॥

राजयोगः



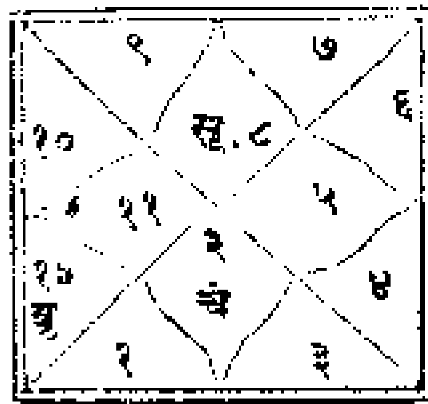
पापो विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखंडिजेन ॥ कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीपुरकृन्नरः स्यात् ४७

छत्रयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्नमें बैठा होय और बृहस्पति करके दृष्ट होय तो वह राजा होता है और जिसके कर्कराशिगत बृहस्पति लग्नमें बैठा होय वह मनुष्य मकान, बावडी, नगरका करनेवाला होता है ॥ ४७ ॥

राजयोगः



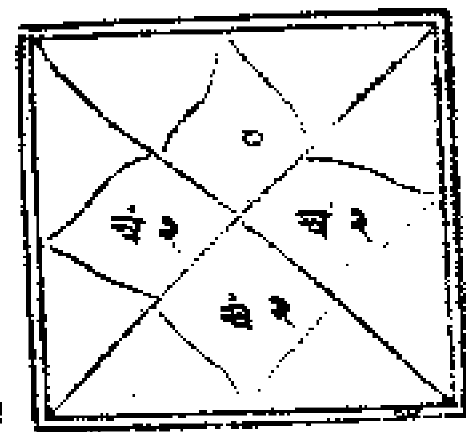
एकोपि शस्तः शुभदः स्वतुंगे केंद्रे पतङ्गो बलवान्प्रदृष्टः ॥ सुतस्थितेनामरपूजितेन चेन्मानवो मानवनायकः स्यात् ॥ ४८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक भी शुभग्रह केंद्रमें उच्चका होकर बैठा होय और बलवान सूर्य करके दृष्ट होय और पंचमभावमें बृहस्पति बैठा होय वह मनुष्य मनुष्योंका नायक होता है ॥ ४८ ॥

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ॥ करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ॥ ४९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरराशिको छोडकर बृहस्पति लग्नमें बैठा होय तो वह राजा मतवाले हाथियोंसहित होता है ॥ ४९ ॥

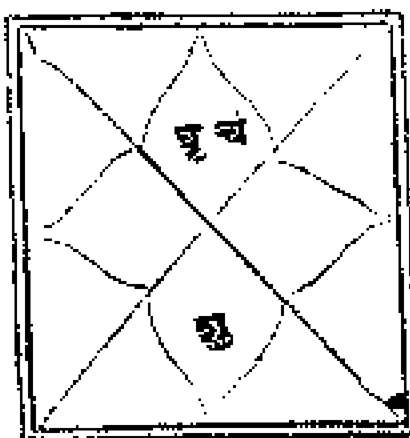
राजयोगः



कलाकलापाधिकृताधिशाली चंद्रो भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती ॥ विहाय लग्नं कुरुते नृपालं लीलाविलासाकलितारिवृंदम् ॥ ५० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परिपूर्ण चंद्रमा लग्नको छोडकर केंद्रमें उच्चका बैठा होय तो वह राजा लीला विलासादिसहित शत्रुओंको नाश करनेवाला होता है ॥ ५० ॥

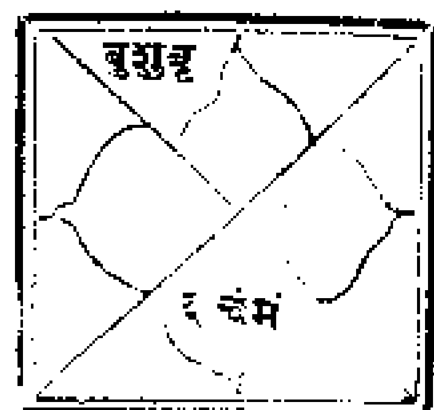
राजयोगः



केंद्रगः सुरगुरुः सशशांको यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः ॥ भूपतिर्भवति सोतुलकीर्तिर्नीचगो न यदि कश्चिदिह स्यात् ॥ ५१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासहित बृहस्पति केंद्रमें बैठा होय और शुक्रकरके दृष्ट होय तो वह मनुष्य बडा यशस्वी राजा होता है जो कोई ग्रह नीचमें न बैठा होय ॥ ५१ ॥

राजयोगः



धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मंदारचंद्रा यदि सप्तमस्थाः॥ यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदंतिक्षतिसिंह एव॥ ५२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धनभावमें बुध, शुक्र, बृहस्पति बैठे होंय और शनिश्चर, चंद्रमा, मंगल सातवें बैठे होंय वह राजा होता है शत्रुओंका नाश करनेवाला जैसे हाथियोंको सिंह नाश करता है॥ ५२॥

कुम्भाष्टमांशे शशिनि त्रिकोणे मेषेद्रिभागे धरणीसुतो वा॥ द्वंद्वैकविंशांशगतेथवा ज्ञे यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यात् ५३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिके अष्टमनवांशमें चंद्रमा त्रिकोणमें बैठा होय और मेषके सातवें भागमें मंगल बैठा होय और मिथुनराशिके इकीसवें त्रिंशांशमें बुध बैठा होय जिसके जन्मकालमें यह योग होयं वह राजा होताहै॥ ५३॥

कुंभस्य चेत्पंचदशे विभागे कर्के दशांशोपगतो विधुश्चेत्॥ तृतीयभागे धनुषींद्रवंद्यः सिंहे शशाङ्केप्यथवापि भूपः॥ ५४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कुंभराशिके पंद्रहवें भागमें और कर्कराशिके दशमभागमें चंद्रमा बैठा होय और धनके तृतीय भागमें बृहस्पति बैठा होय और सिंहके तृतीय भागमें चंद्रमा होय तो वह राजा होताहै॥ ५४॥

पुष्येऽश्विभे वाप्यथ कृत्तिकासु वर्गोत्तमे पूर्णतनुः कलावान्॥ करोति जातं खलु सार्वभौमं त्रिपुष्करोत्पन्ननरोऽपि भूपः॥५५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पुष्य नक्षत्र अथवा अश्विनी वा कृत्तिकामें वर्गोत्तम पूर्ण चंद्रमा बैठा होय इस योगमें उत्पन्न समग्र धरतीका राजा होताहै और त्रिपुष्कर योगमें उत्पन्न मनुष्यभी राजा होता है॥ ५५॥

तिथिसुभेभद्रा विषमांघ्रिभे चेद्वारे गुरुक्ष्मातनयार्कजानाम्॥ त्रिपुष्करो योग इति प्रदिष्टो वृद्धौ च हानौ त्रिगुणातिकर्ता॥५६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें भद्रा तिथि और नक्षत्रका प्रथम वा तृतीय चरण होय और बृहस्पति, मंगल, शनैश्चर वार होंय तो त्रिपुष्करयोग होता है वृद्धिमें और नाशमें त्रिगुण फल करता है इस योगमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है॥ ५६॥

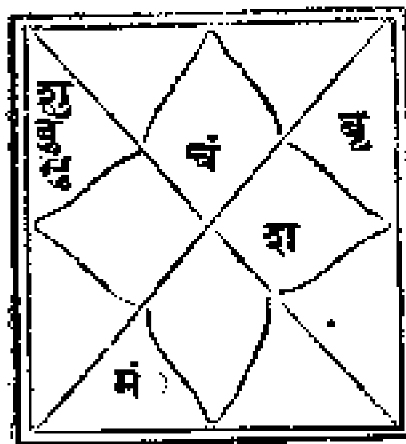
मैत्रे च दास्रेऽप्यथवात्मतुङ्गे वर्गोत्तमे भूमिसुतः करोति ॥
महीपतिं पार्थिववंशजातं चान्यं प्रधानं धनिनं समृद्धम् ॥ ५७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अनुराधा, अश्विनी नक्षत्रमें अथवा अपनी उच्चराशि मकरमें अथवा वर्गोत्तम नवांशमें मंगल बैठा होय ऐसे योगमें उत्पन्न राजाके वंशमें पैदा हुवा राजा होताहै अन्य वंशमें उत्पन्न धनवान् समृद्धिसहित राजाका वजीर होताहै ॥ ५७ ॥

चेद्भार्गवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशांकः ॥
अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः॥५८॥

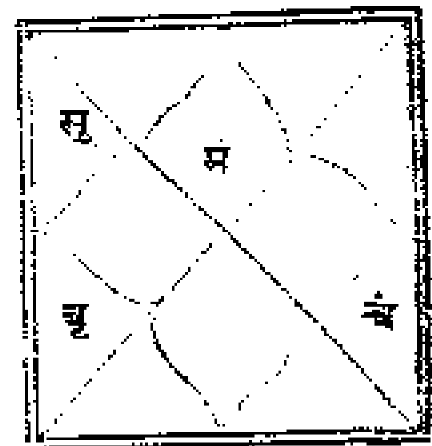
जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र नवम बैठा होय और पूर्णचंद्रमा दशम बैठे और बाकीके ग्रह ग्यारहें बैठे होंय तो राजाके वंशमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ५८ ॥

राजयोगः



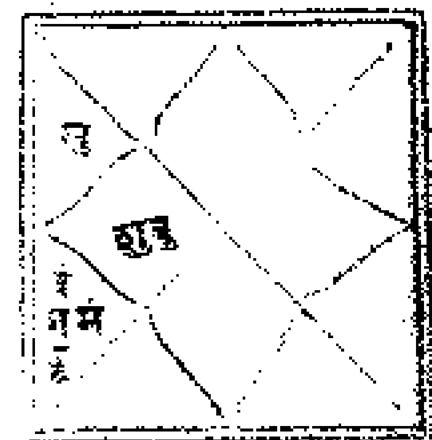
उपचयभवनस्थाः सर्वखेटाः शशांकाद्रविगुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवंति॥त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेंद्रं गजतुरगरथानां संपदा राजमान्यम् ॥ ५९ ॥

राजयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे तीसरे छठे दशवें ग्यारहें सब ग्रह बैठे होंय (एको योगः) अथवा मंगलसे तीसरे, पांचवें, नवम, सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा बैठे होंय तो वह मनुष्य हाथी घोड़े और रथ औरभी अनेक संपदासहित राजमान्य होता है ॥ ५९ ॥

राजयोगः



सुखे सितज्ञौ सहजेम्बुजेश स्तिष्ठंति खेटाः सुतधाम्नि चान्ये ॥ निजारिराशौ नहि कश्चिदत्र धात्रीपतिश्चैककृतातपत्रः ॥ ६० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें शुक्र, बुध, बैठे होंय और तीसरे सूर्य बाकीके ग्रह पंचम बैठे होंय अपने शत्रुकी राशिमें कोई न होय तो ऐसे योगमें उत्पन्न मनुष्य धरतीका एकछत्र धारी राजा होताहै ६०

सिंहे कमलिनीभर्ता कुलीरस्थो निशाकरः ॥
दृष्टौ द्वावपि जीवेन पार्थिवं कुरुतः सदा ॥ ६१ ॥

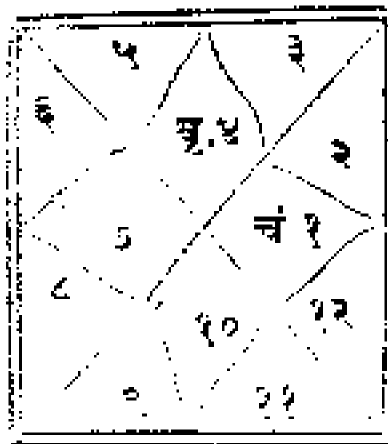
जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंहराशिमें सूर्य बैठा होय और कर्कराशिमें चंद्रमा बैठा होय और बृहस्पति करके दोनों दृष्ट होंय तौ वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६१ ॥

राजयोगः

बुधः कर्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्धरे ॥
रविभूसुतदृष्टौ तौ पार्थिवं कुरुते सदा॥६२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बुध कर्कराशिमें बैठा होंय और बृहस्पति धनराशिमें बैठे और दोनों सूर्य,मंगल करके दृष्ट होंय तौ वह राजा होता है ॥ ६२ ॥

राजयोगः



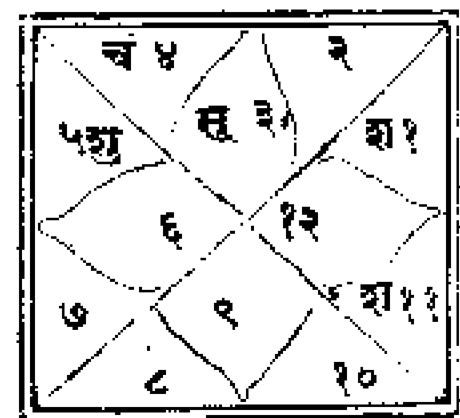
शफरीयुगले चंद्रः कर्कटे च बृहस्पतिः ॥
शुक्रः कुंभे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक्६३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीन वा मेषराशिमें चंद्रमा बैठा होय और कर्कराशिमें बृहस्पति होय और शुक्र कुंभराशिमें बैठा होय तौ वह राजा हाथी घोडों सहित समृद्धिका भोगी होता है ॥ ६३ ॥

राजयोगः

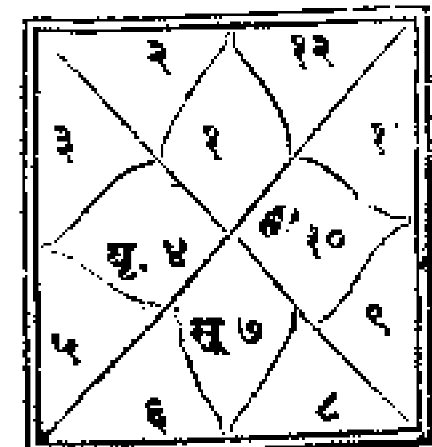
सितदृष्टः शनिः कुंभे पद्मिनीनायकोदये ॥
चंद्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत्६४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र करके दृष्ट शनैश्चर कुंभराशिमें बैठा होय और सूर्य लग्नमें बैठा होय और चंद्रमा कर्कराशिमें बैठा होय तौ वह मनुष्य राजा होता है ॥ ६४ ॥



राजयोगः

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः ॥ केंद्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ प्रकीर्तितौ भूपतिसंभवाय ॥ ६५ ॥



जिस मनुष्यके जन्मकालमें जो केंद्रवर्ती ग्रह नीच राशिमें बैठा होय उस राशिका स्वामी जो ग्रह है उसकी उच्चराशिका स्वामी केंद्रमें बैठा होय तौ राजाके कुलमें उत्पन्न मनुष्य राजा होता है ॥ ६५ ॥

कृत्तिका रेवती स्वाती पुष्यस्थायी भृगोः सुतः ॥
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ॥ ६६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कृत्तिका, रेवती और स्वाती और पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुक्र बैठा होय तो वह मनुष्य राजा होता है ओ अश्विनी नक्षत्रमें शुक्र होय तो भी पूर्वोक्त फल मानना चाहिये ॥ ६६ ॥

अथ राज्यप्राप्तिकालमाह ।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवा दशायाम् ॥
तयोरलाभे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदि जन्मकाले ६७ ॥

अथ राज्यप्राप्तिके कालको कहते हैं राज्यका जो ग्रह दशममें बैठा होय उस करके राज्यका लाभ कहना अथवा लग्नमें जो ग्रह बैठा होय उसकी दशामें राज्यका लाभ कहना चाहिये इन दोनों भावोंमें जब कोई ग्रह नहीं बैठा होय सब ग्रहोंमें जो अधिक बलवान् होय उस ग्रहकी दशा श्रेष्ठ राजयोग कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

इति राजयोगाध्यायः ।

अथ राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः ।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य ॥
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवंति वा पाणितलेमलानि॥१॥
अनामिका मूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा॥
मध्याङ्गुलेर्या मणिबंधमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा
॥ २ ॥ विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य
यस्य ॥ भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेषैः सहितो
विनीतः॥ ३ ॥ चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करि-
णी सृणिर्वा ॥ वीणा च पादौ चरणे नराणां तैः स्युर्नराणाम-
धिपा वरेण्याः ॥ ४ ॥

अब राजयोगोंके प्रसंगसे सामुद्रिकाध्याय कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलवान राजयोग होय उसके हाथ और पैरोंमें निर्मल राजचिह्न होते हैं ॥ १ ॥ अनामिका अंगुलीकी जड़से चली जो रेखा उसको पुण्यविधान रेखा कहते हैं और मध्यम अंगुलीसे चलकर हाथके मणिबंधतक प्राप्तहुई जो रेखा उसको ऊर्द्ध रेखा कहते हैं वह राज्यकी प्राप्ति कराती है ॥ २ ॥ जिसके अंगूठेके बीचमें यवका चिह्न मौजूद होय वह मनुष्य यशस्वी अपने वंशका भूषण बहुत आभूषणोंसहित नम्रता युक्त होता है ॥ ३ ॥ और जिसके हाथकी हथेलीमें और पैरोंमें हाथीके सदृश वा छत्रके तुल्य मछलीके समान वा तलैयाके तुल्य या अंकुशके समान वा वीणाके समान रेखा होवें तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्च तत्पाणितले मिलंति॥स्यान्माण्डलीकोवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात् ॥ ५ ॥ चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रे धनुर्ध्वजाब्जव्यजनासनानि ॥ रथाश्वदोलाकमलाविलासास्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः ॥ ६ ॥ स्तंभस्तु कुंभस्तु तरुस्तुरंगो गदा मृदंगोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे ॥ दण्डोऽथवा खण्डितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितः पण्डितशौण्डको वा ॥७॥ सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः ॥ आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमण्डलाखंडलमार्यवर्याः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके हाथ और पैरोंमें सीसेकी तरह माला और कमण्डलुकी तरह पर्वत और हलके सदृश रेखाका आकार होवे वह मनुष्य एकदेशका राजा अथवा बड़ा राजा अपने कुलके समान होता है ॥ ५ ॥ और जिसके हाथ पैरोंमें चक्र, धनुष, ध्वजा, कमल, पंखा और आसनके समान रेखा होवे उसके घरपर रथ, घोड़े, पालकी, लक्ष्मीका विलास हाथी घोड़ोंकी शाला होती है ॥ ६ ॥ और जिसके हाथ पैरोंमें थमलेके समान वृक्ष, घोड़ा, गदा, मृदंग, दंडके समान रेखा होवे वह मनुष्य अखंडित राज्यलक्ष्मीको प्राप्त पंडितोंका शिरोमणि होता है ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यका शिर गोल चौड़ा माथा और कानोंके पासतक चौड़े लंबे नेत्र कमलके तुल्य पींडियोंतक बाहें होवें वह पुरुष पृथिवीमंडलपर इंद्रकी समान राजा होता है ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला च यस्य वक्षःस्थलं चापि शिलातलाभम् ॥ नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स

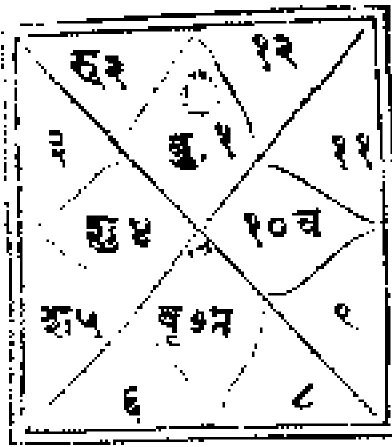
भूपः ॥ ९ ॥ करतले यदि यस्य तिलो भवेद्विरलः किल तस्य धनागमः ॥ पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः ॥ १० ॥ प्रसन्नमूर्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः ॥ अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ॥ ११ ॥ एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदंति ॥ प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ॥१२॥ चिह्नानियानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि ॥ वामेतरेऽङ्गे च करे नराणां धन्यानि वामे खलु कामिनीनाम् ॥ १३ ॥ इति श्रीदैवज्ञपण्डितराजविरचिते जातकाभरणे राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः॥ ९ ॥ ॥ ❀ ॥ ॥

जिस मनुष्यकी नाक सीधी और छाती शिलाके समान और ठुड्डी गहरी और कोमलवर्णके पैर होवें वह राजा होता है ॥ ९ ॥ जिस मनुष्यकी हाथकी हथेलीमें तिलका चिह्न होवे, तिसको बहुत धन प्राप्त होता है और जिस्के पैरोंके तलुवेमें तिलका चिह्न होवे और वाहन चिह्न होय वह राजा होता है ॥ १० ॥ जो मनुष्य प्रसन्न मूर्ति और उदारचित्त वाला होय और श्रेष्ठवंशमें पैदा होय श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला अन्यायसे डरनेवाला गुरु और साधुओंसे नम्र होता है वह राजा होता है॥ ११ ॥ और राजवंशके बिना अन्यकुलमें पैदा होय तो वह अपने वंशके समान राजलक्ष्मीको प्राप्त करता है ॥ १२ ॥ जो जो चिह्न कहे हैं वह चिह्न प्रकट दीखपडते होंय तो पूरा फल देते हैं पुरुषोंके दहिने हाथ पैर और स्त्रियोंके बांयें हाथ पैरमें पूर्वोक्त चिह्न श्रेष्ठ फल देते हैं ॥ १३ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां राजयोगसंगतिसामुद्रिकाध्यायः ॥ ९ ॥

॥ अथ राजभंगयोगाध्यायप्रारंभः ॥

राजभंगयोगः

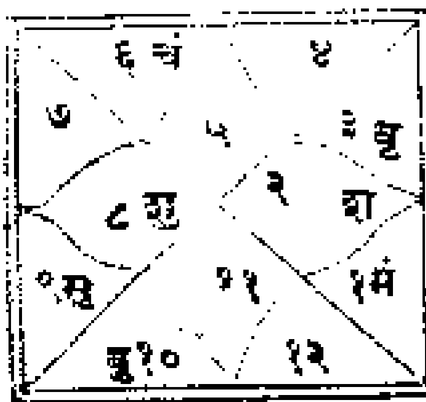


राजभंगयोगः

शत्रुक्षेत्रगतैः सर्वैर्वर्गोत्तमयुतैरपि ॥ राजयोगा विनश्यंति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शत्रुकी राशिमें सब ग्रह बैठे होंय और चाहे नवांशामें वर्गोत्तम होंय तो राजयोग नष्ट होते हैं (एको योगः) अथवा बहुत ग्रह नीचराशिमें बैठे होंय तो भी राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

राजभंगयोगः



चंद्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोपि वीक्षते॥तथापि राजयोगानां भंगमाह पराशरः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमाको वा लग्नको कोई एकभी ग्रह नहीं देखता होय तो सब राजयोग भंग होजाते हैं ये पराशर कहते हैं ॥ २ ॥

राजभंगयोगः



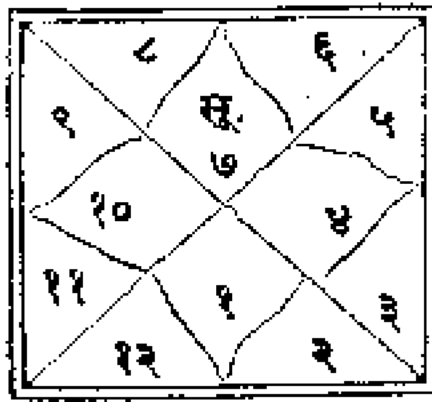
स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीनैः ॥ कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य अपने नवांशमें बैठा होय और क्षीण चंद्रमाको पापग्रह देखते होंय और शुभग्रह नहीं देखते होंय तो वह मनुष्य तो पहिले राज्य करे पीछेसे दुःखको प्राप्त आशा नष्ट होजाता है ॥ ३ ॥

उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा ॥ वैधाजयोगेऽपि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोऽतितरां भवेत्सः ॥४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उल्काघात होय अथवा व्यतीपातयोग होय, अथवा धरती कंपाय-मान होय वा फटजावे या जन्मके समयेमें केतु तारेका उदय होय तो वे समग्र राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य दरिद्री होता है ॥ ४ ॥

राजभंगयोगः



तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः॥
निर्दिष्टराजयोगानां दलनोऽथ भवेद्ध्रुवम्५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तुलाराशिगत सूर्य परमनीच राशिमें बैठा होय तो पहिले कहे हुए सब राजयोग नष्ट होजाते हैं ॥ ५ ॥

राजभंगयोगः



मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेऽतिदरिद्रताम् ॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकरलग्नमें बृहस्पति परमनीच-राशिगत बैठा होय तो राजयोगोंमें पैदा हुआ मनुष्य अत्यंत दरि-द्री होता है ॥ ६ ॥

राजभंगयोगः



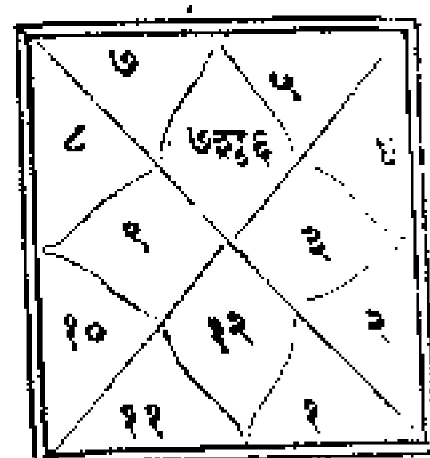
वाचस्पतावस्तगते ग्रहै-
स्त्रयोपि नीचेषु घटो
विलग्ने ॥ एकोपि नीचे
दशमेऽपि पापा भूपाल-
योगाः विलयं प्रयांति ७

राजभंगयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति अस्तका होय और तीन ग्रह नीच राशिमें बैठे होंय और जन्मलग्न कुंभ होय तौ सम्पूर्ण राजयोग नष्ट होजाते हैं (एको योगः) अथवा एकभी ग्रह लग्नमें नीचराशिका बैठा होय और दशमें पापग्रह बैठे होंय तो उस मनुष्यका राजयोग नष्ट होजाता है ॥ ७ ॥

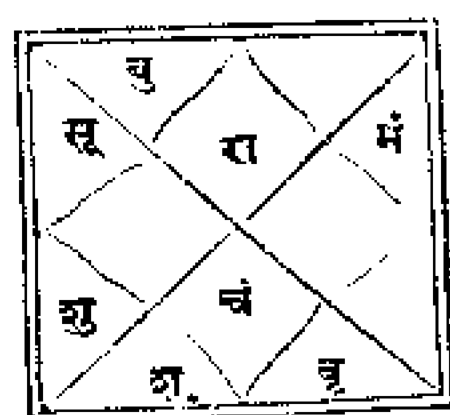
राजभंगयोगः



प्रमतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः ॥ करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुक्र परम नीचराशिगत बैठा होय तो वह मनुष्य राजयोगसे नष्ट होता है ॥ ८ ॥

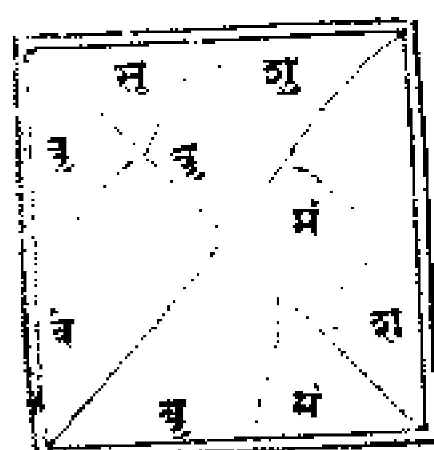
राजभंगयोगः



यदि तनुभवनस्थो राहुरिंदुग्रहष्टः सहजारिपुभवस्था भानुमंदावनेयाः ॥ शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यैर्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेति चिंत्यम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु लग्नवर्ती बैठाहोय और चंद्रमा देखताहोय और तीसरे, छठे, ग्यारहें, सूर्य, शनैश्चर मंगळ बैठे हों और शुभग्रह केंद्रसे बाहिर हों अथवा शुभग्रह सप्तममें बैठे हों तो उस मनुष्यके राजयोग खाली जाते हैं ॥ ९ ॥

राजयोगः



राजयोगः



केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तं गतैर्नीचगृहस्थितैर्वा ॥ चतुर्ग्रहैर्वाप्यरिमंदिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयांति ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केन्द्रोंमें कोई शुभग्रह नहीं बैठाहोय (एको योगः) अथवा केन्द्रमें जो ग्रह बैठे होवें अस्तगत हों (द्वितीयो योगः) अथवा नीच राशिगत हों (तृतीयो योगः) वा चारों केन्द्रोंमें शत्रुराशिगत ग्रह बैठे हों तो राजयोग नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

सर्वोंपि पापा यदि कंटकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः ॥
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगो विलयं प्रयाति ११

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे राजभंग-
योगाध्यायः ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सम्पूर्ण पापग्रह भी केन्द्र १ । ४ । ७ । १० । में बैठे होंय और नीचराशि वा शत्रुक्षेत्री होंय किसी शुभग्रह करके दृष्ट न होंय अथवा नीच शत्रुराशिगत बारहें बैठे होंय तो राजयोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ ११ ॥

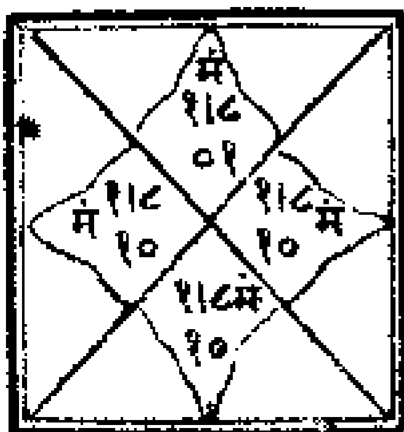
इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्यो-
तिर्विकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां
राजभंगयोगाध्यायः ॥ ६ ॥

अथ पंचमहापुरुषाध्यायप्रारंभः ।

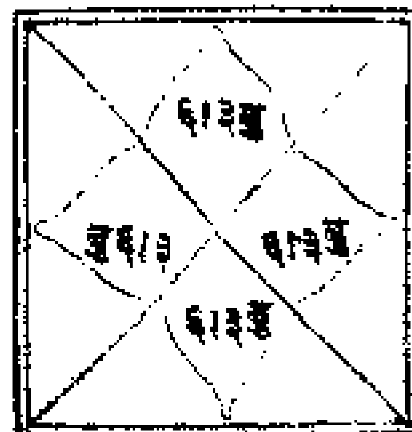
ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पंच पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः ॥
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥ १ ॥
स्वगेहतुंगाश्रयकेंद्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसूनुमुख्यैः ॥
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥२॥

अब पंच महापुरुष योगाध्याय कहते हैं ये महापुरुषसंज्ञक राजा पांच पहिले मुनीश्वरों करके वर्णन किये हैं उन पांच महापुरुष राजयोगविधि दर्शनकी इच्छाकरके सरल बडी उक्ति करके कहता हूं ॥ १ ॥ जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने घरमें अपने उच्चमें भौमादि पांच ग्रह बैठे होंय तो क्रम करके मंगलसे रुचक बुधसे भद्र बृहस्पतिसे हंस और शुक्रसे मालव्य और शनैश्चर करके शशकनाम ये योग होते हैं ॥ २ ॥

रुचकयोगः ४



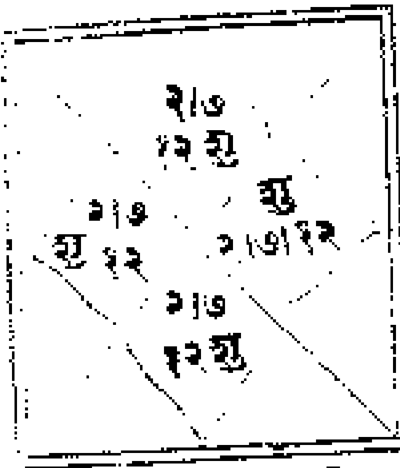
भद्रयोगः ५



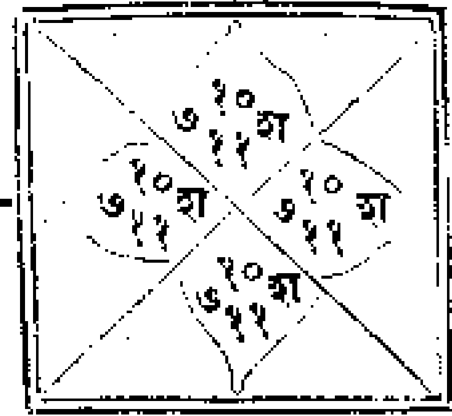
हंसयोगः ६



मालव्ययोगः



शशकयोगः



अथ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकांतिर्बहुरुधिरबलः साहसात्प्राप्तसिद्धिश्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मंत्रविच्चारुकीर्तिः॥ रक्तश्यामोतिशूरो रिपुबलमथनः कंबुकंठो महौजाः क्रूरो भक्तः सुराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः॥ ३॥ खट्वांगपाशवृषकार्मुकचक्रवीणा वज्रांकहस्तचरणः सरलांगुलः स्यात्॥ मंत्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम्॥ ४ ॥ सह्यस्य विंध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिजीवितोऽसौ ॥ शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥ ५ ॥

अब रुचकयोगजनित राजाके लक्षण कहते हैं बडी उमरवाला निर्मल कांतिवाला बहुत रुधिरको बलवाला साहसकरके कार्यकी सिद्धिको प्राप्त सुंदर भौंहवाला नीलवर्णके बालोंवाला हाथ पैर समान एकसे मंत्रका जाननेवाला सुंदर यशवाला लाली लिये श्यामवर्णवाला अत्यंत शूरवीर शत्रुओंके बलको नाश करनेवाला शंखके समान कंठवाला बडा पराक्रमी क्रूरस्वभाव देवताओंका भक्त ब्राह्मण और गुरुओंसे नम्र दुर्बल जानु और उरु और जांघोंवाला होता है ॥ ३ ॥ खट्वांग और फांसी और बैल और धनुष, चक्र, वीणा और वज्र इन चिह्नोंकरके अंकित हाथ पैर जिसके सीधी अंगुलियोंवाला मंत्रोंके अभिचारमें कुशल तुलाके मान करके एक हजार पल तोल जिसकी देहका भार होता है लंबा मुख होता है ॥ ४ ॥ सह्य और विंध्याचल और उज्जयिनीपुरीका राजा होता है और पचहत्तर वर्षकी आयु पाता है और शस्त्र तथा अग्नि चिह्नकरके देवताके स्थानमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

अथ भद्रयोगफलम् ।

शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ॥ कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयः संरुद्धगण्डस्थलः प्राज्ञः पङ्कजगर्भपाणिचरणः स-

त्वाऽधिको योगवित् ॥ ६ ॥ शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः॥यात्रागजेंद्रमदवारिकृता-द्रंभूमिः सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ॥ ७ ॥ सद्रूपगोऽतिमतिमान्खलु शास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः ॥ सत्कुक्षिधर्मनिरतो सुललाटपट्टो धीरो भवेदसितकुंचितकेशपाशः ॥ ८ ॥ स्वतंत्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमी ॥ भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ॥ ९ ॥ भारं तुलायां तु भवेत्सुरत्ने श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम ॥ १० ॥

अब भद्रसंज्ञक राजाके सुलक्षण कहते हैं सिंहके समान हाथीकीसी चाल चलनेवाला मोटी जांघोंवाला पुष्ट छातीवाला लंबी पुष्ट बाहोंवाला और भुजाओंके प्रमाण कर ऊंचा कामी और कोमल महीन रोमोंके समूह करके ढकाहुआ गंडस्थल जिसका चतुर कमलपत्रके समान हाथ और पैरोंवाला अधिक बलवान योगशास्त्रका जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥ शंख और तलवार और हाथी, गदा, कमलपुष्प और बाण, पताका और चक्र, चंद्रमा, हल इत्यादि चिह्नों करके अंकित हाथ पैर जिसके और उस राजाकी यात्राके समय हाथियोंके मदके जल करके धरती गीली होती है और केसरके समान सुगंधित देहवाला श्रेष्ठ आवाजवाला होता है ॥ ७ ॥ श्रेष्ठ रूपवाला बुद्धिवान निश्चयकरके शास्त्रका जाननेवाला मान और भोगों सहित छिपाहुआ गुह्यस्थल जिसका श्रेष्ठ कुक्षिवाला धर्ममें तत्पर श्रेष्ठ माथेवाला धैर्यवान् काले बालोंवाला होता है ॥ ८ ॥ और भद्रराजा सब कामोंमें स्वतंत्र अपने मित्रोंपर दया करनेवाला और उस राजाके वैभवको नित्यही अतिथिलोग भोगते हैं ॥ ९ ॥ और भद्रनाम राजाकी देहका भार तुलामान १००० पल होता है और वह राजा कान्यकुब्ज देशका स्वामी पुत्र और स्त्रीके सौख्यसहित अस्सी वर्षकी आयु पाता है ॥ १० ॥

अथ हंसमहापुरुषलक्षणम्।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसो प्रसन्नेंद्रियो गौरःपीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः॥शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वांगमाला घटे चश्चत्पादकरस्थलेमधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥ ११ ॥ जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ॥ उच्चोङ्गुलैर्वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्ष-

ण्णवतिः समानाम् ॥१२॥ बाह्लीकदेशांतरशूरसेनगांधर्वगंगा-
यमुनांतरालान् ॥ भुक्त्वा वनांते निधनं प्रयाति हंसोयमुक्तो
मुनिभिः पुराणैः ॥ १३ ॥

अब हंसनामक राजाके लक्षण कहते हैं हंसनामक राजाका लाल मुख ऊँची नाक सुंदर पैर प्रसन्न इंद्रियोंवाला गोरे और पुष्ट गालोंवाला लाल अंगुलियोंवाला हंसके समान शब्द-वाला कफप्रकृतिवाला और शंख कमल, अंकुश मछली और खट्वांग, माला, कुंभ इन चिह्नों करके अंकित हाथ पैर जिसकी सहतके समान आभावाले नेत्र गोल शिरवाला होता है ११॥ और जलकी जगहमें प्रीति करनेवाला अंत्यत कामी स्त्रियोंसे तृप्तिको प्राप्त नहीं और छियासी अंगुल ऊँचा शरीर और छयानवे वर्षकी आयु पाता है ॥ १२ ॥ और हंसराजा बाह्लीक शूरसेन देश, गांधारदेश और गंगायमुनाके बीचकी भूमिका राजा होताहै और वनके बीचमें मृत्युको प्राप्त होता है ये पहिले मुनीश्वरोंने कहा है ॥ १३ ॥

अथ मालव्यनृपतिलक्षणमाह ।

अस्थूलोष्ठो विषमवपुर्नैव रिक्तांगसंधिर्मध्ये क्षामः शशध-
ररुचिर्हस्तिनासः सुगंडः ॥ सद्दीप्ताक्षिः समसितरदो जानुदे-
शाप्तपाणिर्मालव्योयं विलसति नृपःसप्ततिर्वत्सराणाम्॥१४॥
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रव-
णांतरालम् ॥ मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च
मालवकसिंधुसुपारियात्रान् ॥ १५ ॥

अब मालव्यनृपतिके लक्षण कहते हैं मालव्यनामकराजा पतले होठोंवाला कमती बढती देहवाला नहीं अंगकी संधि जिसकी खाली नहीं कमर जिसकी पतली चंद्रमाके समान स्वरूपवाला लंबी नाक सुंदर कपोलोंवाला होता है और मालव्यराज बराबर सफेद दांतोंवाला आजानुबाहु बडे नेत्र सत्तर ७० वर्षकी आयुतक राज्य भोगताहै ॥ १४ ॥ तेरह अंगुल मुख जिसका लंबा दश अंगुल चौड़ा मालव्यनामराजा लाटदेश, मालवदेश, सिन्धुदेश, पारियात्रकदेशोंके राज्यको भोगता है ॥ १५ ॥

अथ शशकपुरुषलक्षणमाह ।

लघुद्विजास्यो द्रुतगः सकोपः शठोतिशूरो विजनप्रचारः ॥
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥१६॥

नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्चापि किंचिद्धातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलः कोलनेत्रः॥ स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो मध्ये क्षामः सुललितमती रंध्रवेधी परेषाम् १७ पर्यंकशंखशरशस्त्रमृदंगमालावीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः॥ वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं सम्यक्शशास्यनृपतिः कथितो मुनींद्रैः॥ १८॥ केंद्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवंति॥ कुर्वंति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छंति ते केवलसत्फलानि॥ १९॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जात० पंचमहापुरुषलक्षणाध्यायः ७

अब शशकनाम नृपतिके लक्षण कहते हैं शशकनामक राजा छोटे दांतोंवाला भली चलनेवाला क्रोधसहित शठ अत्यंत शूरवीर वन पर्वतोंमें प्रचार करनेवाला और नदीमें आसक्त अतिथियोंका प्यारा बहुत छोटा नहीं प्रसिद्ध होता है॥ १६॥ अनेक फौजोंके दल करके सहित ऊंचे दांतोंवाला किंचित् धातुके विवादमें चतुर बडा चंचल शूकरकेसे नेत्रोंवाला स्त्रीमें सक्त पराये धनका हरनेवाला माताका भक्त श्रेष्ठ जांघोंवाला कमरसे दुर्बल सुंदर बुद्धि पराये छिद्र देखनेवाला होताहै॥ १७॥ शय्या और शंख, बाण तलवार और मृदंग माला और वीणाके समान निश्चय कर जिसके हाथ पैरोंमें रेखा होती हैं और शशकनाम राजा सत्तर ७० वर्षकी उमरतक राज्यभोग करता है यह मुनीश्वरोंने कहा है॥ १८॥ और पूर्वोक्त केंद्र १।४।७।१० में भौमादि पांचों ग्रह उच्चमें बैठे होंय और चंद्रमा वा सूर्य करके युक्त होंय तौ पूर्वोक्त राजयोग नहीं करते हैं केवल श्रेष्ठ फल देते हैं॥ १९॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां पंचमहापुरुषलक्षणवर्णनाध्यायः॥ ७॥

अथ कारकयोगाध्यायप्रारंभः।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केंद्रगता मिथः स्युः॥ ते कारकाख्या मुनिभिः प्रणीता विज्ञेय आज्ञाभवने विशेषः॥ १॥

जो ग्रह अपने मूलत्रिकोणी राशिमें अथवा अपनीही राशिमें वा अपने उच्च राशिमें केंद्र १।४।७।१०। में प्राप्त होवें तो वे ग्रह आपसमें कारक कहाते हैं परंतु केंद्रमेंभी दशम स्थानस्थित ग्रह विशेष कारक होते हैं॥ १॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्तिवर्ती स्वमंदिरस्थो यदि तुंगयातः ॥
सूर्यार्कजारामरराजपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्य लग्नमें सिंह वा मेषराशिका बैठा होय तौ सूर्य शनैश्चर बृहस्पति यह परस्पर कारक संज्ञक होते हैं ॥ २ ॥

शुभग्रहे लग्नगते च खाम्बुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात् ॥
तुंगत्रिकोणे स्वगृहांशयातास्तेपीहमाने तपने विशेषात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे होंय अथवा दशम चतुर्थ बैठे होंय वे ग्रह कारक होते हैं और उच्च वा मूलत्रिकोणी वा अपनी राशि वा अपने नवांशोंमें बैठे होकर दशममें हों तो विशेष कारक होतेहैं ॥ ३ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये ॥
केंद्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम् ॥ ४ ॥
केंद्रस्थिता गुरुविलग्नपजन्मनाथा मध्ये व यस्यतितरां
निरंति भाग्यम् ॥ शीर्षोदयाङ्गयुभयभेषु गता भवेयु-
रारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सूर्यसे दूसरे घरमें शुभग्रह बैठे होंय और जन्मलग्न अपने नवांशमें होय और चारों केन्द्रोंमें भी शुभग्रह बैठे होंय उसके मकानमें लक्ष्मी वास करती है ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यके बृहस्पति और लग्नका स्वामी जन्मराशिका स्वामी केन्द्रमें बैठे होंय तो उस मनुष्यका भाग्य जवानीमें उदय होता है और शीर्षोदय राशिगत बैठे होंय और उभयोदय राशिगत ग्रह होंय तो बालकपन और जवानी बुढापे में फल देते हैं ॥ ५ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मंत्री भवेत्कारकखेचरेंद्रैः
राजान्वये यस्य भवेत्प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ॥ ६ ॥
इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे कारकयोगाध्यायः ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कारकयोग होवे और वह नीचवंशमें पैदा होय तौ मंत्री होता है और जो राजाके वंशमें पैदा होय तौ वह क्यों नहीं राजा होयँगे अर्थात् अवश्य राजा होयँगे ॥ ६ ॥

इति श्रीबंसबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां कारकयोगवर्णनाध्यायः ॥ ८ ॥

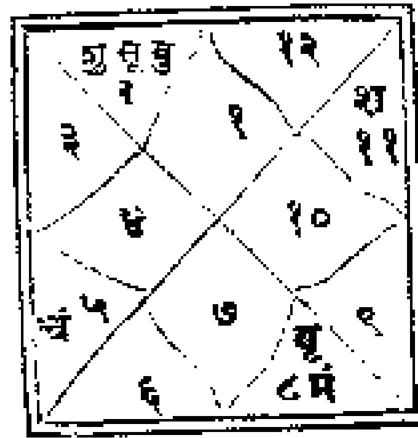
अथ नाभसयोगाध्यायप्रारंभः ।

अथ रज्जु-मुसल-नलयोगानाह ।

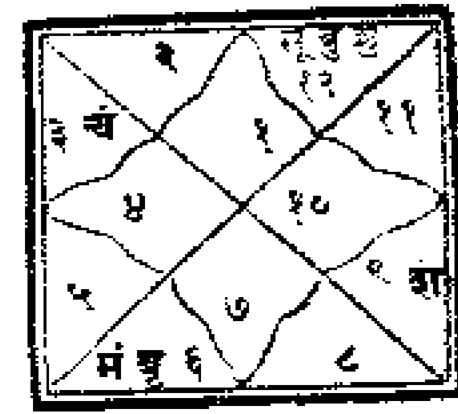
रज्जुयोगः



मुसलयोगः



नलयोगः

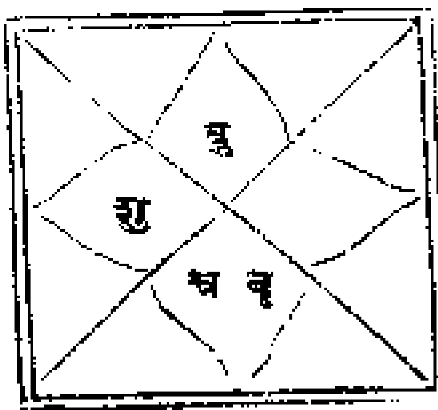


सर्वैं चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवंति ॥
क्रमेण रज्जुर्मुसलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥ १ ॥

अब आश्रयादि तीन योग कहते हैं जो सब ग्रह चरराशियोंमें बैठे होंय तो रज्जुनाम योग होता है और सब ग्रह स्थिरराशियोंमें बैठे होंय तो मुसलनाम योग होता है और सब ग्रह द्विस्वभावराशियोंमें बैठे होंय तो नलनाम योग होता है ये तीन आश्रययोग कहे हैं ॥ १ ॥

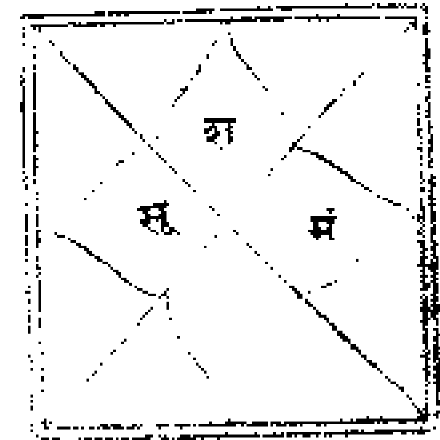
अथ मालाव्यालयोगद्वयम् ।

मालायोगः



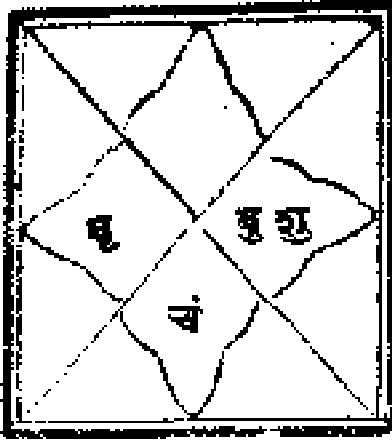
केंद्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्याल-समाह्वयः स्यात् ॥ इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि ॥ २ ॥

व्यालयोगः

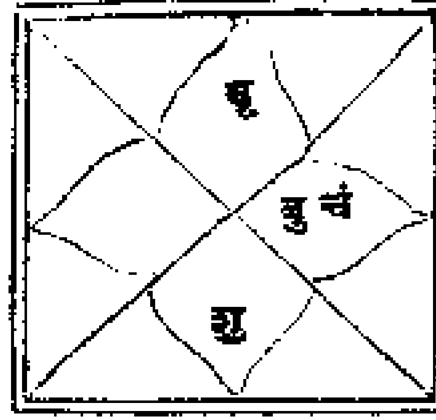


जिस मनुष्यके तीन केंद्रोंमें सब शुभ ग्रह बैठे होंय तो मालायोग होता है और तीन केंद्रोंमें पापग्रह बैठे होंय तो व्यालयोग होता है ये दो योग पराशरने दल कहे हैं ॥ २ ॥

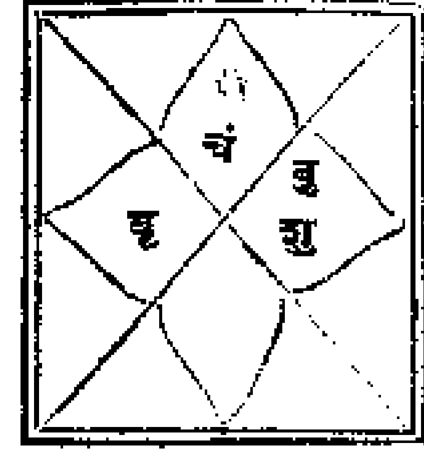
मालायोगः



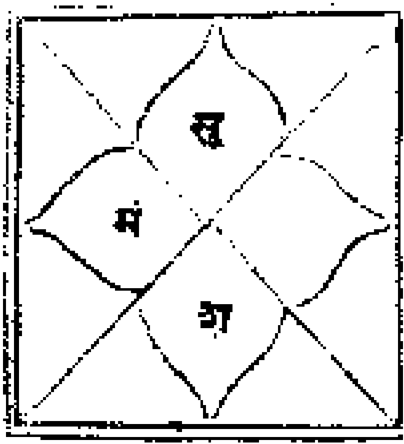
मालायोगः



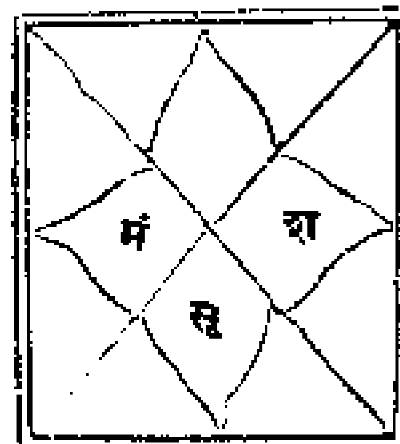
मालायोगः



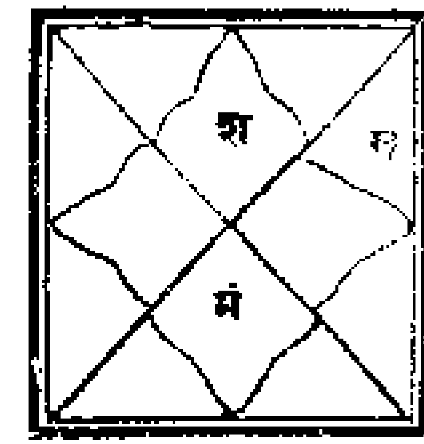
व्यालयोगः



व्यालयोगः



व्यालयोगः

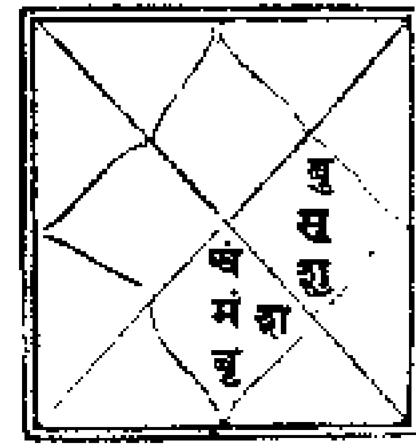


अथ गदाशकटविहंगशृंगाटकयोगानाह ।

गदायोगः

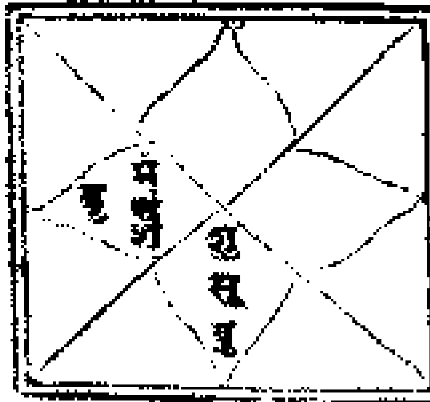


गदायोगः

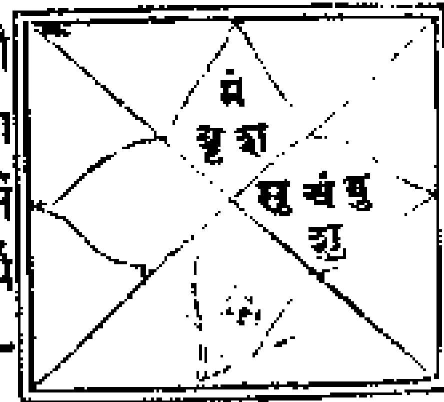


आसन्नकेंद्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थैः शकटः समेतैः॥ खबंधुयातैर्विहगः प्रदिष्टः शृंगाटकं लग्नवात्मजस्थैः ॥ ३ ॥

गदायोगः



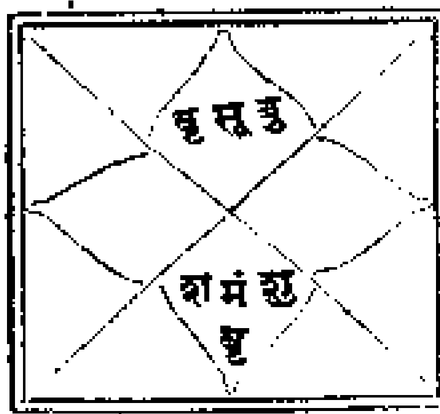
गदायोगः



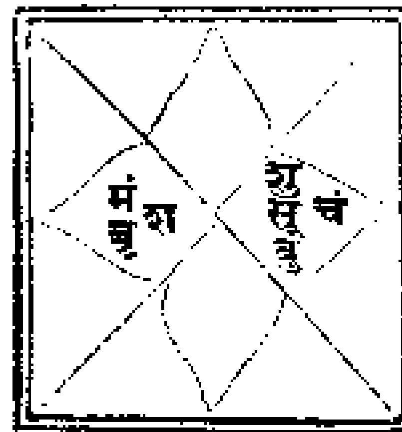
जिस मनुष्यके जन्मकालमें पास पासके केंद्रोंमें सब ग्रह बैठे होंय तौ गदानाम योग होता है यह गदायोग चार प्रकारका होता है लग्नचतुर्थमें सब ग्रह होंय (एको योगः) चतुर्थ सप्तममें सब ग्रह बैठे होंय (द्वितीयो योगः) सप्तमदशममें सब ग्रह बैठे होंय (तृतीयो योगः) दशम लग्नमें सब ग्रह बैठे होंय तो (चतुर्थो योगः) ये चारप्रकारका गदायोग कहा है अब शकटयोग कहते हैं जो लग्न सप्तममें सब ग्रह बैठे होंय

तो शकटयोग होता है और जिसके चतुर्थ दशममें सब ग्रह बैठे होंय तो विहंगनामयोग होता है अब शृंगाटकयोग कहते हैं जो लग्न पंचम नवममें सब ग्रह पड़ें तो शृंगाटक योग होता है अब हलयोग कहते हैं द्वितीय, छठे, दशममें सब ग्रह पड़े होंय (द्वितीयो योगः) और तृतीय सप्तम, एकादशमें सब ग्रह पडे होंय (तृतीयोयोगः) और चतुर्थ, अष्टम, बारहें सब ग्रह पड़ें तो (चतुर्थो योगः) ये चार योग होते हैं ॥ ३ ॥

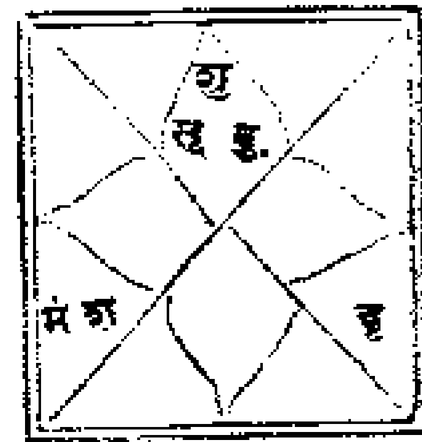
शकटयोगः



विहंगयोगः



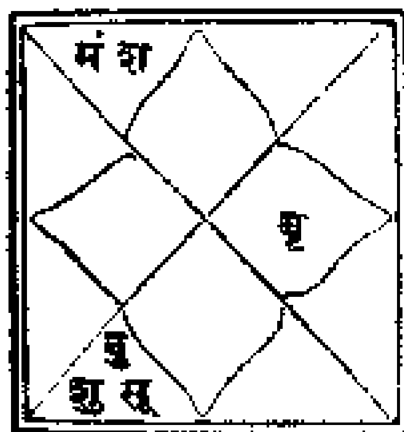
शृंगाटकयोगः



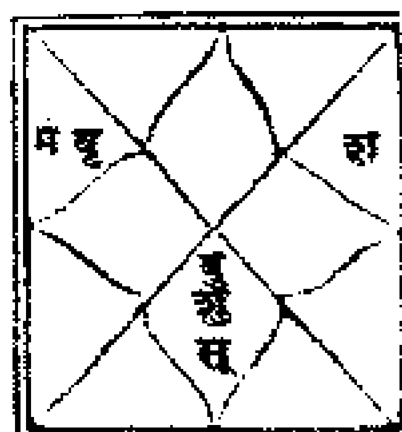
अथ हलनामयोगः।

धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरंध्रव्ययसंस्थितैर्वा ॥
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोयं निखिलागमज्ञैः ॥ ४ ॥

हलयोगः



हलयोगः



हलयोगः



अब हल नाम योग कहते हैं सो तीन प्रकारका है २।६।१०सब ग्रह पड़ें(एको योगः) ३।७।११सब ग्रह पड़े (द्वितीयो योगः)४।८।१२सब ग्रह पड़े तो (तृतीयो हल नाम योगः) यह योग सम्पूर्ण ज्योतिषवेत्ताओंने कहा है ॥ ४ ॥

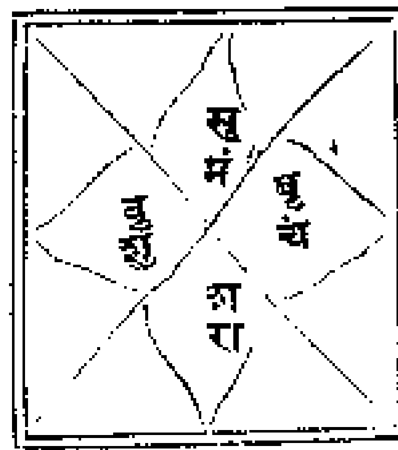
अथ वज्रयवकमलयोगानाह ।

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबंधुयातैः ॥
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्यवश्चमिश्रैः कमलाभिधानः ॥ ५ ॥

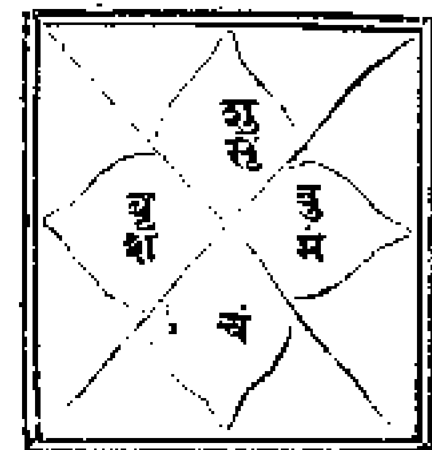
वज्रयोगः



यवयोगः



कमलयोगः



अब वज्र, यव, कमल, तीन योग कहते हैं जिस मनुष्यके लग्न सप्तममें शुभ ग्रह पड़ें और पापग्रह चौथे दशमें पड़ें तौ वज्र नाम योग होता है और चतुर्थ दशम शुभ ग्रह पड़ें और लग्न सप्तम पापग्रह पड़ें तौ यव योग होता है और जो चारों केन्द्रोंमें शुभाशुभ दोनों तरहके सब ग्रह पड़ें तौ कमल नाम योग होता है ॥ ५ ॥ ये योग उस देशमें होते हैं जहांकि पलभा आठसे ज्यादे होगी अब भारतवर्षीयभी तीनों योग कहते हैं इससे शंका दूर होजायगी ॥ ५ ॥

सूर्याच्चतुर्थे कविचन्द्रसूनू कथं भवेतामिति नैव युक्तौ ॥
यवाख्यवज्रौ त्विदमामनंति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ॥ ६ ॥

सूर्यसे चौथे घरमें बुध शुक्र नहीं होसक्ते हैं तौ यव वज्र योगोंको नहीं मानना चाहिये उन योगोंकी उपपत्ति दिखाताहूं ॥ ६ ॥



विलग्नपार्श्वद्वयवर्तिनौ चेज्ज्ञशुक्रजीवान्यतमो विलग्ने ॥ कुजार्किचंद्राः खजलस्मरस्था वज्रं विलोमाच्च यवो निरुक्तम् ॥ ७ ॥



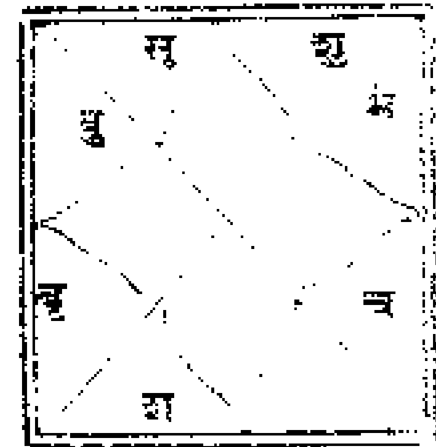
जन्मलग्नसे दूसरे बारहें बुध शुक्र बैठे होंय और बृहस्पति मं. श. चं. ये योगकारक होंय तो पूर्वोक्त योग होतेहैं इस प्रकार भारतवर्षमें भी योगोंका होना संभव है सो चक्रमें देखलो ॥ ७ ॥

सर्वैर्नभोगैर्यदि नाभसाख्यो व्यालाख्यमाले त्रिभिरेव खेटैः ॥ कथं भवेतामिति चिंतयंति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ॥८॥

सम्पूर्ण ग्रहोंकरके ये नाभस योग व्याल और माला तीन ग्रहोंकरके कैसे योग होवे तो क्या सम्पूर्ण नाभस योगमें से व्यालमाला योगमें दोष आयजावे तो क्या मुनियोंका कहा हुआ झूठा होजायगा ॥ ८ ॥

अथ वापीयोगः।

वापीयोगः

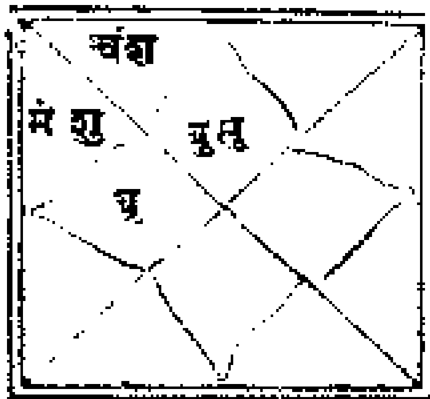


त्यक्त्वाकेंद्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ॥ वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥ ९ ॥

अब वापी योग कहते हैं चारों केंद्रस्थानोंको छोड़ करके ग्रह अन्यस्थानोंमें बैठे होंय तो वापी योग होता है ये पहिलेके आचार्योंने कहा है ॥ ९ ॥

अथ यूपशरशक्तिदंडयोगानाह।

यूपयोगः

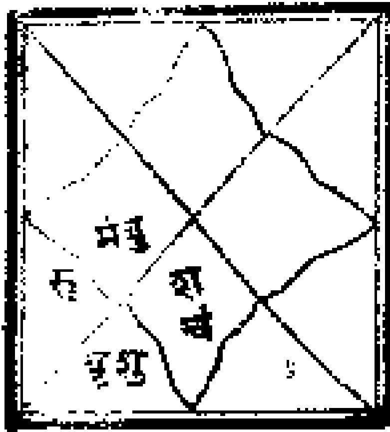


लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्ग्रहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ॥ क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥

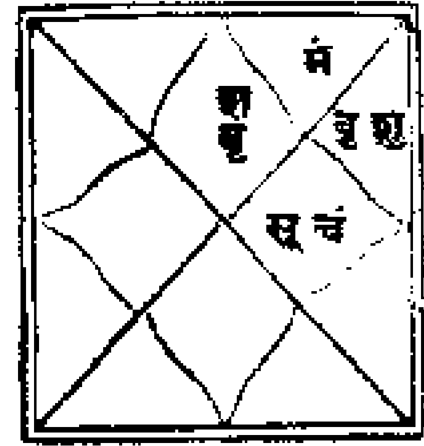
शक्तियोगः



शरयोगः



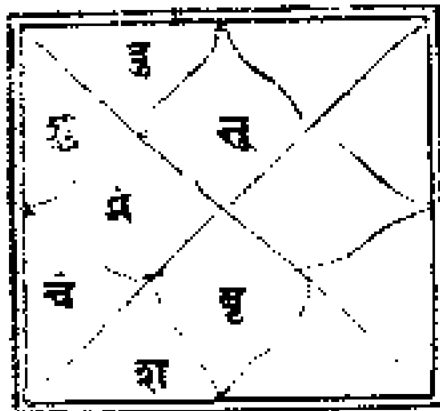
दंडयोगः



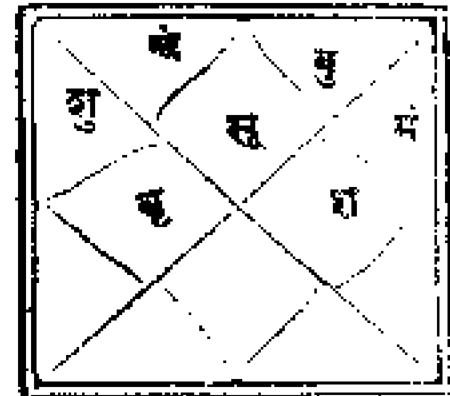
अब यूप. शर शक्ति. दंड. चार योग कहते हैं लग्नसे चतुर्थभावतक सब ग्रह पड़ें तौ यूप नाम होताहै और चतुर्थसे सप्तमतक सर्व ग्रह पड़े तौ शर नाम योग और सातवेंसे दशमताईं सब ग्रह पड़ें तौ शक्तियोग और दशमभावसे लग्नपर्यंत सब ग्रह हों तौ शक्तियोग होता है यह ज्योतिषी लोगोंने कहा है ॥१०॥

अथ नौकूट छत्र-धनु-अर्द्धचन्द्रयोगानाह ।

नौकायोगः

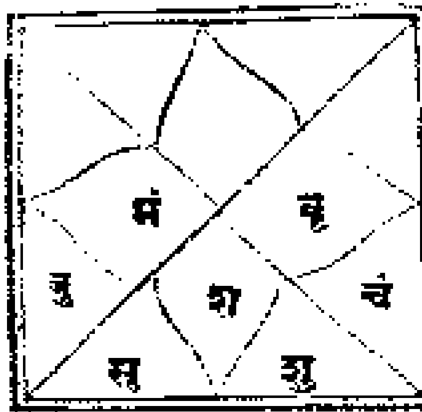


धनुषयोगः

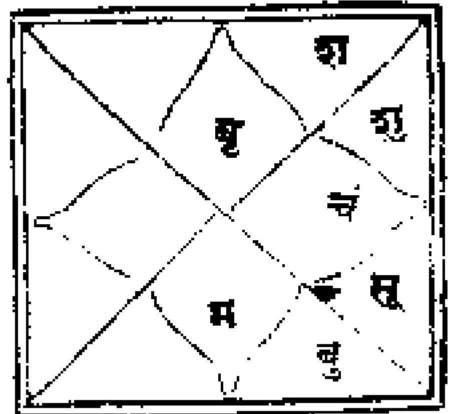


लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः ख-मध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरथ कू-टसंज्ञः॥ छत्रं धनुश्चान्य गृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इ-हार्धचंद्रः॥ ११ ॥

कूटयोगः



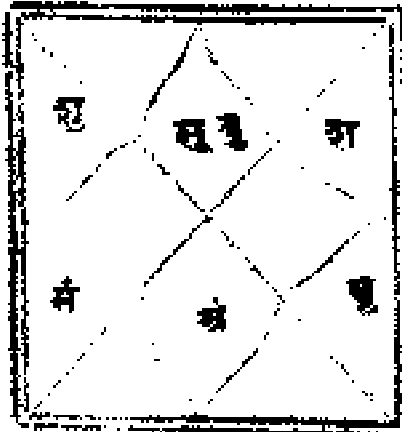
छत्रयोगः



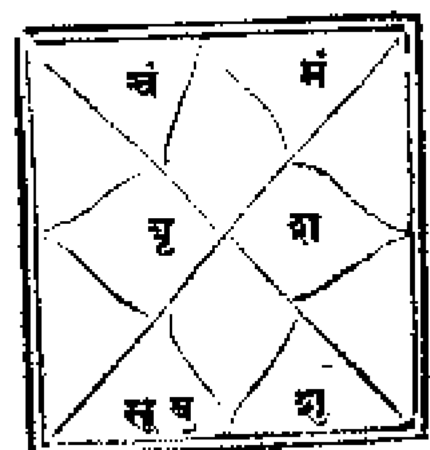
अब नौकाकूट छत्र धनुष चार योग कहते हैं जिसके लग्नसे लेकर सातवें भावतक सब ग्रह पड़ें तो नौका योग होता है और चतुर्थसे लेकर दशमभावतक सब ग्रह पड़ें तौ कूटयोग होता है और सप्तमसे लेकर लग्नतक सब ग्रह पड़ें तो छत्रयोग होता है और दशमसे लेकर चतुर्थतक सब ग्रह पड़ें तो धनुषयोग होता है ॥ ११ ॥

अथ चक्रसमुद्रार्द्धशशियोगानाह ।

चक्रयोगः



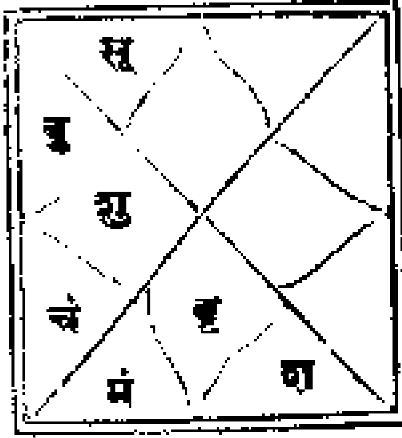
समुद्रयोगः



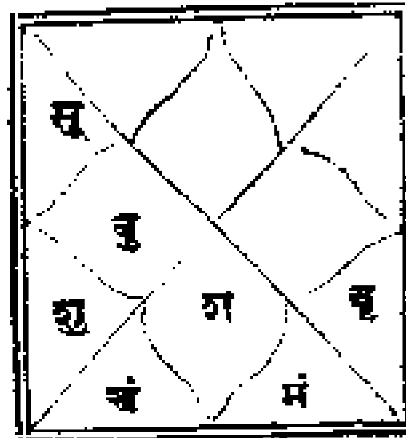
तनोर्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेच-रेंद्राः ॥ चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इती-हाकृतिजाश्च विंशत् १२

जिसके लग्नसे लेकर एक राशि बीचमें देकर छः राशियोंमें सब ग्रह पड़ें तो चक्रयोग होता है और दूसरे भावसे लेकर एकभाव बीचमें छोडकर सब ग्रह पड़ें तो समुद्रयोग होता है ॥ १२ ॥

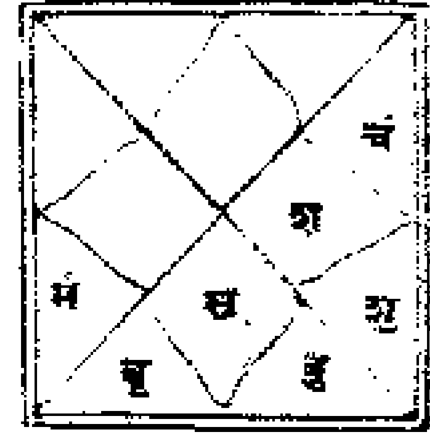
अर्द्धशशीयोगः



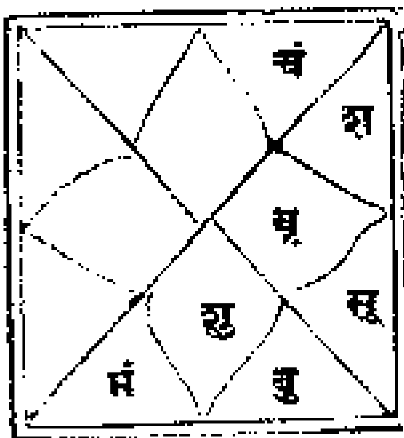
अर्द्धशशीयोगः



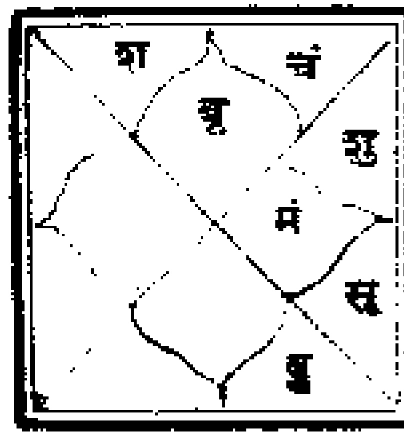
अर्द्धशशीयोगः



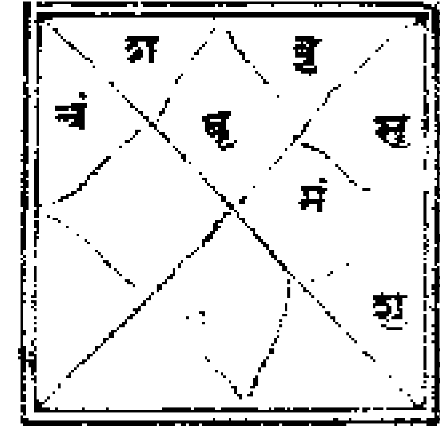
अर्द्धशशीयोगः



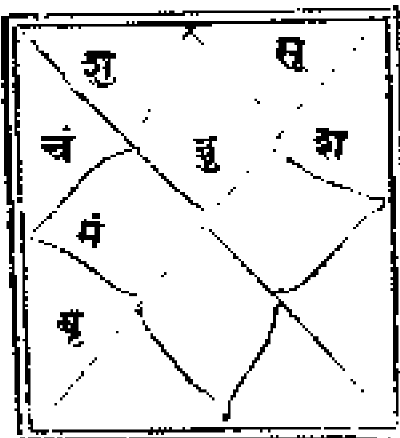
अर्द्धशशीयोगः



अर्द्धशशीयोगः



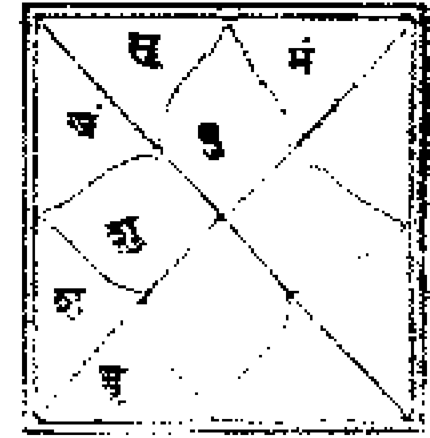
अर्द्धशशीयोगः



अथ गोलादिसप्तयोगानाह ।

ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवेद्गोलैश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहोपगैः ॥ केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पंचस्थितैः षट्स्थैर्दामिनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥१३॥ नानाप्रकारैः किल कालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्तिता ये ॥ तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिंतनीयम् ॥ १४ ॥

अर्द्धशशीयोगः



जो ये पहिले बहुतसे योग कहे हैं इनके न होनेसे जो एक भावमें सब ग्रह पड़ें तो गोलयोग होता है और दो स्थानोंमें सब ग्रह पड़ें तो युगयोग होताहै और तीन भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो शूलयोग होता है और चार भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो केदारयोग होता है पांच भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो पाशनाम योगहोता है और छः भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो दामिनी योग होता है और सात भावोंमें सब ग्रह पड़ें तो वीणायोग होता है। ये संख्या योगकी कही हैं ॥ १३ ॥ अनेक प्रकारकरके निश्चयकरके ज्योतिषशास्त्रवेत्ताओंकरके महर्षियोंने ये योग वर्णन किये उन योगकारक ग्रहोंकी दशामें बलके अनुसार इनका फल चिंतवन करै ॥१४॥

अथ रज्जुयोगफलम् ।

चञ्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहाः क्रूरकार्ये नितांतम्॥
रज्जुयोगोत्पन्नमर्त्याः स्वदेशे ह्यन्यस्मिन्वै संचरन्त्यर्थलब्धयै १५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें रज्जुनाम योग होता है वह मनुष्य श्रेष्ठ रूपवाला दुःखका भागी दुष्ट कामोंमें निरंतर उत्साही परदेशमें विचरनेवाला धनको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

अथ मुसलयोगफलम् ।

नानामानैर्ज्ञानधान्योपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः ॥
पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षोवातिकृन्मौसलेयः १६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मुसलयोग होताहै वह मनुष्य अनेक ज्ञान और ध्यानसहित पुत्र और लक्ष्मी करके राजतेज करके शोभाको प्राप्त राजाका आश्रित हर्षकरके सहित हर्षकी उत्कर्षताकरके पूर्णताको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ नलयोगफलम् ।

शश्वत्पूर्णापूर्णरत्नैः स्वगेहा राजस्नेहाः पुण्यदेहाश्च मर्त्याः ॥
कीर्त्या युक्ताः सर्वदा तेन देवा दैवाद्येषां जन्मकाले नलश्चेत् १७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नलनाम योग होता है वह मनुष्य निरंतर रत्नोंकरके सहित अपने घरमें होता है और राजासे प्रीति करनेवाला पुण्यवान् देहवाला कीर्तिसहित हमेशा होता है ॥ १७ ॥

अथ मालायोगफलम् ।

पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूपाविशेषैर्नानायानैरन्वितास्ते भवंति ॥
येषां पुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलिशीला १८

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मालायोग होवे वह मनुष्य पुत्र और मित्रों करके सहित सुन्दर आभूषणोंसहित अनेक सवारी करके सहित स्त्रियोंमें क्रीडा करनेवाला होता है ॥१८॥

अथ सर्पयोगफलम् ।

भोक्तान्यस्यान्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहो रुद्रमद्रोऽप्य-
भद्रः ॥ दुर्दर्पः स्याच्चापकाराय सार्पः सर्पः सूतौ यस्य मर्त्य-
स्य योगः ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सर्पनामयोग होताहै वह मनुष्य पराये अन्नका भोगनेवाला क्रोधी दरिद्री निद्राका उत्साही बड़े रोगसहित अमंगलकारी खोटे अभिमानवाला पराई बुराई करनेवाला होताहै ॥ १९ ॥

अथ गदायोगफलम् ।

नानाशास्त्रानेकमंत्रानुरक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा ॥
रौद्रो द्वेषी द्वेषिवर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणाद्यैर्गदायाम् ॥ २० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गदायोग होवे वह मनुष्य अनेक शास्त्र और अनेक मंत्रोंमें तत्पर गानेबजानेमें चतुर यज्ञ करनेवाला उग्र वैर करनेवाला शत्रुओंकरके युक्त भूषणसहित स्त्रियों वाला होता है ॥ २० ॥

अथ शकटयोगफलम् ।

दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्यस्त्रोत्पत्यावाप्तकार्श्योऽप्यजस्रम् ॥
याति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्त्वा योगे शाकटे यस्य जन्म ॥ २१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शकटयोग होता है वह मनुष्य दीन हीन मित्र और वैभव करके सहित कृशता करके सहित खोटी स्त्रीको प्राप्त त्यागकरनेवाला होता है ॥ २१ ॥

अथ विहंगयोगफलम् ।

येषां सूतौ मानवानां विहंगो भोगो योगोत्पन्नसौख्यं न तेषाम् ॥
याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासो सेवार्थानामल्पता जल्पतार्थैः ॥ २२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें विहंगयोग होता है वह मनुष्य भोगोंसहित योगोंकरके उत्पन्न सौख्यवाला यात्रामें प्रीति नित्यही परदेश जानेवाला बहुत बोलनेवाला होता है ॥ २२ ॥

अथ शृंगाटकयोगफलम् ।

भूयोत्कर्षः साहसी संगरेच्छुः सौख्यैर्युक्तोत्यंतकुद्दिनेरः स्यात् ॥
प्रीतिं गच्छेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्याद्रोहं चैवं शृङ्गपूर्वे सुखादे ॥ २३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शृंगाटक नाम योग होताहै वह मनुष्य उत्कृष्ट राजा साहसी युद्धकी इच्छा करनेवाला सौख्य सहित बड़ा बुद्धिवान् पहिली स्त्रीसे वैर करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

अथ हलनामयोगफलम् ।

प्रेष्यो युक्तः साधुभिर्मित्रवर्गैः कृष्याजीवी दुःखितोत्यंतभुक्स्यात् ॥
उत्पत्तिं यो लाङ्गलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं निर्धनत्वात्प्रकामम् २४

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हल नाम योग होताहै वह मनुष्य दूत साधु और मित्रोंकरके रहित खेती करके आजीविका करनेवाला अत्यंत दुःखोंका भोगी होताहै और क्लेशोंको प्राप्त धनहीन होताहै ॥ २४ ॥

अथ वज्रयोगजातफलम् ।

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवःस्यात् ॥
मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामक्रोधैरन्वितो वज्रयोगे ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वज्र नाम योग होताहै वह मनुष्य पहिली अवस्थामें जीविकाको प्राप्त अंतमें सौख्यको प्राप्त भाग्यवान् होताहै और जवानीमें भाग्यहीन काम क्रोध करके सहित होताहै ॥ २५ ॥

अथ यवयोगफलम् ।

मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत्सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदान्यः ॥
नित्योत्साहः सद्व्रते तु प्रशांतः शांतक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये२६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यवनाम योग होताहै वह मनुष्य जवानी उमरमें धर्म काम अर्थसंपत्ति और सौख्यसहित नम्रतासहित हमेशा उत्साही श्रेष्ठवृत्तिवाला शांतचित्त क्रोधरहित होताहै ॥ २६ ॥

अथ कमलयोगफलम् ।

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयांश्चञ्चत्कांतिर्गीतिकीर्तिर्मनुष्यः ॥
योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञो वंशे वा भवेद्दीर्घजीवी॥२७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कमल नाम योग होताहै वह मनुष्य हमेशा बड़े हर्षवाला बलवान् सुंदर कांतिवाला यशवान् राजाके वंशमें उत्पन्न बड़ी उमरवाला होताहै ॥ २७ ॥

अथ वापीयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोत्यंतधारो मनीषी ॥
चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुण्यवापी वापीयोगे यःप्रसूतः प्रतापी२८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वापी योग होताहै वह मनुष्य बड़ी उमरवाला अपने कर्ममें प्रतापी सौख्य सहित अत्यंत धीर सुंदर वाणी बोलनेवाला श्रेष्ठ मन फूलोंकी वाटिका करनेवाला प्रतापी होताहै ॥ २८ ॥

अथ यूपयोगजातफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ॥
यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् २९

जिस मनुष्यके जन्मकालमें यूपनाम योग होताहै वह मनुष्य धैर्यवान् उदार यज्ञकर्ममें तत्पर अनेक विद्या और श्रेष्ठ विचार करनेवाला लक्ष्मीकरके सहित होताहै ॥ २९ ॥

अथ शरयोगफलम् ।

हिंस्रोत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननांते शरज्ञः ॥
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् ३०

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शर नाम योग होवे वह मनुष्य हिंसा करनेवाला शिल्पका जाननेवाला दुःखों करके संतापको प्राप्त वनमें आनंदको प्राप्त बाणका जाननेवाला जन्मसे कभी सौख्यको प्राप्त नहीं होताहै ॥ ३० ॥

अथ शक्तियोगजातफलम् ।

नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्बलश्च ॥
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ३१

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शक्तियोग होताहै वह मनुष्य नीच ऊंचे मनुष्योंसे प्रीति करनेवाला आलस्यसहित सौख्य और धनसे रहित विवाद और युद्धमें तिसकी विशाल बुद्धि स्थानका सौख्य थोडा होताहै ॥ ३१ ॥

अथ दण्डयोगजातफलम् ।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ॥
कांतापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगाप्तजन्मा ॥३२॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दंडनाम योग होवे वह मनुष्य दीन हीन उन्मत्तोंसे मित्रताको प्राप्त दूत वैरकरनेवाला अपने कुटुंबियोंसे वैर करनेवाला स्त्री पुत्र धन मित्रोंकरके हीन बुद्धिरहित होताहै ॥ ३२ ॥

अथ नौकायोगजातफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः॥
क्लेशी शश्वच्चंचलस्वांतवृत्तिर्वृत्तिस्तेयोद्भूतधान्येन तस्य ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें नौकायोग होय वह मनुष्य प्रसिद्ध लोभी और भोग सौख्यसे रहित क्लेश पानेवाला निरंतर चंचल चित्तवृत्तिवाला चोरी करनेवाला अन्नसहित होताहै॥ २३॥

अथ कूटयोगजातफलम्।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निंद्यकर्मा ॥
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कूटयोग होताहै वह मनुष्य वन पर्वतोंमें वास करनेवाला दृढ़बलवान् भीलोंसे प्रीति करनेवाला धनहीन निंदित कर्म करनेवाला धर्म अधर्मके ज्ञानरहित चुगली करनेवाला होताहै ॥ २४ ॥

अथ छत्रयोगजातफलम्।

प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वे पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः ॥
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्य च्छत्रसच्चामरादौ २५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छत्रयोग होताहै वह मनुष्य चतुर राजाओंका कार्य करनेवाला दयावान् बालकपन और बुढ़ापेमें सब सौख्योंको प्राप्त और वह श्रेष्ठ छत्र और चमरकी प्राप्ति करनेवाला होताहै ॥ २५ ॥

अथ कार्मुकयोगजातफलम्।

आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः॥
योगे जातः कार्मुके सोतिगर्वी गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः २६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कार्मुक योग होताहै वह मनुष्य बालकपन और बुढ़ापेमें सौख्य पानेवाला वन और पर्वतोंमें रहनेवाला बडा अभिमानी गर्वकी उन्मत्ततासे आपत्तिको प्राप्त धनुष धारण करनेवाला होताहै ॥ २६ ॥

अथ अर्धचंद्रयोगजातफलम्।

भूमीपालप्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः ॥
चंद्रोत्पत्तौ यस्य योगोर्द्धचंद्रश्चंद्रः साक्षादुत्सवार्थे जनानाम् २७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अर्द्धचंद्रनाम योग होताहै वह मनुष्य राजाकरके श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त श्रेष्ठ सेना और आभरण धनवस्त्रादिसहित मनुष्योंके उत्सवके अर्थ चंद्रमासमान होता है ॥ २७ ॥

अथ चक्रयोगजातफलम्।

श्रीमद्रूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूयो भूयोपायनैरन्वितः स्यात् ॥
योगे जातः पूरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनी तस्य कीर्तिः ॥ ३८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चक्रनाम योग होताहै वह मनुष्य लक्ष्मीवान् रूपवान्, बड़ा प्रतापी वारंवार नजर लेनेवाला उस राजाका यश समग्र धरतीपर होताहै ॥ ३८ ॥

अथ समुद्रयोगजातफलम्।

दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम् ॥
योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ३९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें समुद्रयोग होताहै वह मनुष्य दानी धैर्यवान् सुंदरशीलवाला दयावान् राजा करके सौख्यको प्राप्त धन्य वह पुरुष और उसके वंशको धन्य होता है ॥ ३९ ॥

अथ गोलयोगजातफलमाह।

विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ॥
येषां योगः संभवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते॥४०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें गोलयोग होताहै वह मनुष्य विद्या और बल उदारता और सामर्थ्यसे रहित अनेक दुःखोंको प्राप्त हमेशा परदेश जानेवाला अनेक असत्योंमें प्रीति करता है ॥ ४० ॥

अथ युगयोगजातफलम्।

पाखंडेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रयुक्ताः ॥
पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ॥४१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें युगनाम योग होताहै वह मनुष्य पाखंडमें पूरी प्रीति करनेवाला लज्जारहित धर्मकर्मरहित पुत्र और धनसे हीन और युक्त अयुक्तज्ञानसे शून्य होताहै ४१

अथ शूलयोगजातफलम्।

युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्धनाश्च ॥
योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवंति ४२

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शूलनाम योग होताहै वह मनुष्य युद्ध और विवादमें तत्पर बड़ा शूरवीर क्रूर स्वभाव कठोरचित्त धनहीन होय और संसारी मनुष्योंको शूलके समान होता है ॥ ४२ ॥

अथ केदारयोगजातफलम् ।

सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ॥
योगे केदारे नरास्तेपि धीरा धीराचारश्चापि तेषां विशेषात्४३॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केदारयोग होता है वह मनुष्य सत्यसहित धनवान् नम्रता सहित खेती करके उत्साह करे आदरसे उपकार करनेवाला धैर्यवान् और श्रेष्ठ आचारवाला होता है ॥ ४३ ॥

अथ पाशयोगजातफलम् ।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्ता भूरितल्पाः सदम्भाः ॥
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः ४४॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पाशयोग होवे वह मनुष्य दीन स्वरूप बुराई करनेमें तत्पर बंधन करके दुःखी बहुत स्त्रियोंवाला क्रोधसहित अनेक अनर्थसहित वनमें प्रीति करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

अथ दामिनीयोगजातफलम् ।

जातानन्दो नंदनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूषाकोशसंजाततोषः ॥
चंचच्छीलोदारबुद्धिप्रशस्तः शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः ४५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दामिनी योग होय वह मनुष्य आनंदको प्राप्त पुत्रोंसहित धैर्यवान् विद्वान् आभूषण और खजानेसे संतोषको प्राप्त चंचल शील उदार बुद्धि श्रेष्ठ होताहै ॥ ४५ ॥

अथ वीणायोगजातफलम् ।

अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च सङ्गीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ॥
नानासौख्यैरन्वितास्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणिनां जन्म येषाम् ४६

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वीणा योग होय वह मनुष्य धनसहित शास्त्रके पार जाने-वाला बहुत जनोंका पालन करनेवाला अनेक सौख्यसहित चतुर होताहै ॥ ४६ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्म का-लम् ॥ तस्माद्‌तेऽत्यंतयत्नादपूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदि-

ष्टाः ॥ ४७ ॥ एवं योगानां फलं शालिनीसद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्तं निरुक्तम् ॥ तस्मात्प्राज्ञैः सत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ॥ ४८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे नाभसयोगाध्यायः ॥ ९ ॥

ये जो इतने नाभस योग कहे हैं सो सम्पूर्ण प्राणियोंके जन्मकालमें विचार करना चाहिये इनको अत्यंत यत्नसे पूर्वाचार्योंने विचारकरके कहाहै ॥ ४७ ॥ इस प्रकार ये नाभसयोग शालिनी छंदमें श्रेष्ठ वृत्ति करके युक्तियोंकरके युक्त कहे हैं तिस कारणसे चतुर जन और श्रेष्ठ कविजन सौख्यको प्राप्त होय कोमल उक्तिकरके कहे हुए जातक ग्रंथ करके विचार कर फलको कहैं ॥ ४८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रो
राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां नाभसयोगाध्यायः ॥ ९ ॥

अथ रश्मिजातकाध्यायप्रारंभः ।

अथैकादिपंचरश्मिफलम् ।

येषां नराणां किरणाः प्रसूता एकादितः पंचभवेति यावत् ॥
ते सर्वथा दुःखदरिद्रभाजो नीचप्रिया नीचकुलाःखलाश्च ॥ १ ॥

जिस मनुष्यके एक रश्मिसे लेकर पांच रश्मितक ग्रहकी होय वह मनुष्य हमेशा दुःख और दारिद्र्यको भोगनेवाला नीचोंका प्यारा और नीच दुष्ट होताहै ॥ १ ॥

अथ दशरश्मिफलम् ।

पंचादितः खेंदुमिताश्च यावन्मरीचयस्ते जनयंत्यवश्यम् ॥
नरान्विदेशेऽभिरतान्सुदीनान्भाग्येन हीनान्प्रतिपालितांश्च ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांचसे लेकर दश रश्मितक ग्रहोंकी होय वह मनुष्य परदेशमें तत्पर दीन भाग्यहीन निरंतर दूसरोंसे पालनकियाभे दुःखी होताहै ॥ २ ॥

अथ पंचदशरश्मिफलम् ।

परं दशाभ्यस्तिथयस्तु यावत्ते भानवो मानवमल्पकार्थम् ॥
धर्मप्रियं संजनयंति नूनं कुलानुरूपं सुखिनं सुवेषम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशसे लेकर पंद्रह रश्मितक बलयुक्त ग्रह होवें वह मनुष्य थोड़े धनवाला होताहै धर्म जिसको प्यारा अपने कुलके समान रूपवाला सुखी श्रेष्ठ वेषवाला होताहै ॥ ३ ॥

अथ विंशतिरश्मिफलम् ।

पंचेंदुतो विंशतिरेव यावद्भस्तयस्ते मनुजं सुशीलम् ॥
कुर्वंति सत्कीर्तिकरं सुधीरं वंशावतंसं कुशलं कलासु ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंद्रहसे लेकर बीस पर्यंत रश्मि होंय वह मनुष्य शीलवान् श्रेष्ठ कीर्तिवाला धैर्यवान् अपने वंशमें प्रकाशवान् कलाओंमें कुशल होताहै ॥ ४ ॥

अथ पंचविंशतिरश्मिफलम् ।

यस्य प्रसूतौ च नखा मयूखास्तद्भाग्यरेखा सुहृदां सुखाय ॥
पंचाधिका विंशतिरत्र यावत्तावत्फलाधिक्यमनुक्रमेण ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बीस वा पच्चीस पर्यंत रश्मि होंय सो मनुष्य मित्रोंके लिये सुख देनेवाला हो क्रमसे अधिक अधिक फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशद्रश्मिफलम् ।

यावत्रिंशत्संमिता पंचवर्गा येषां सूतौ चेन्मयूखा नराणाम् ॥
भूमीपालात्प्राप्तसौख्याः प्रधाना नानासंपत्संयुतास्ते भवंति॥६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसपर्यंत रश्मियां होंवे वह मनुष्य राजाकरके सौख्यको प्राप्त राजाका दीवान होता है और अनेक संपत्तिसहित होता है ॥ ६ ॥

अथ एकत्रिंशद्रश्मिफलम् ।

येषां नूनं मानवानां प्रसूतावेकत्रिंशत्संख्यकाश्चेन्मयूखाः ॥
विख्यातास्ते राजतुल्या प्रधाना नानासेनास्वामिनः संभवंति ७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकतीस रश्मियां हों वह मनुष्य संसारमें प्रसिद्ध राजाके समान वा राजाका वजीर अनेक सेनाओंका स्वामी होताहै ॥ ७ ॥

अथ द्वात्रिंशद्रश्मिफलम्।

प्रसूतिकाले किरणा नराणां द्वित्रिप्रमाणा यदि संभवंति ॥
नानापुराणामथवा गिरीणां ते स्वामिनो ग्रामशताधिपा वा॥८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बत्तीस ग्रहकी रश्मियां होवें वह मनुष्य अनेक नगरोंका बसावेवाला अनेक पर्वतोंका स्वामी और सौ ग्रामोंका पति होता है ॥ ८ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशद्रश्मिफलम्।

रामाग्निभिश्चापि युगाग्निभिर्वा करैर्नरस्य प्रसवो यदि स्यात् ॥
क्रमात्सहस्रं त्रिसहस्रकं च ग्रामान्स पातीति वदंति केचित् ॥९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तेतीस वा ३४ रश्मियां होवें वह मनुष्य एक हजार वा तीनहजार ग्रामोंका स्वामी होता है ऐसा कोई कोई कहते हैं ॥ ९ ॥

अथ पंचत्रिंशद्रश्मिफलम्।

पंचत्रिसंख्यैः खलु यो मयूखैर्जातो भवेन्मण्डलनायकश्च ॥
विलाससत्त्वामलशीलशाली यशोविशेषाधिककोशयुक्तः॥१०॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पैंतीस रश्मि ग्रहोंकी होवें वह मनुष्य एकदेशका राजा होताहै और विलासयुक्त पराक्रमी निर्मल शीलवान् बड़े यशवाला बहुत खजानेवाला होताहै ॥ १० ॥

अथ षट्त्रिंशद्रश्मिफलम्।

रसाग्निसंख्यैश्च नगाग्निसंख्यैर्जातो मयूखैः खलु यः क्रमेण ॥
ग्रामान्मनुष्यः स तु सार्धलक्षं लक्षत्रयं पाति महाप्रतापात्॥११॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रहोंकी रश्मियोंका योग ३६ हो होय वह मनुष्य डेढ़ लाख-गावोंका स्वामी होताहै और जिसके सैंतीस रश्मियां होय वह मनुष्य तीन लाख गामोंका स्वामी होताहै ॥ ११ ॥

अथाष्टत्रिंशद्रश्मिफलम्।

यस्य प्रसूतौ किरणप्रमाणमष्टत्रिसंख्यैः स भवेन्महौजाः ॥
भूमीपतिर्लक्षचतुष्टयं हि ग्रामान्प्रशास्तींद्रसमानसंपत् ॥ १२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अडतीस ग्रहोंकी रश्मियोंका योग होय वह मनुष्य बड़ा पराक्रमी राजा चार लाख गावोंके ऊपर हुक्म चलानेवाला इंद्रकी समान संपत्तिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथैकोनचत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

नवत्रिसंख्याजनने मयूखा विख्यातकीर्तिर्नृपतिर्भवेत्सः॥
प्रौढप्रतापाद्गरुडस्वरूपो गर्वोद्धतारातिभुजंगमेषु ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें उनतालीस रश्मियोंका योग होय वह मनुष्य प्रसिद्ध यश-वाला राजा होता है बडे प्रतापवाला शत्रुओंके अभिमानको नष्ट करनेवाला जैसे गरुडजी सर्पोंके विषे प्रतापी होते हैं ॥ १३ ॥

अथ चात्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे ॥
भवंति सेनागजगर्जितानां प्रतिस्वनाः खे घनगर्जितानि ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चालीस रश्मियोंका योग होताहै वह मनुष्य राजाओंका जीतनेवाला और उस राजाकी फौजसे हाथियोंकी गर्जनाके शब्द होते हैं जैसे आकाशमें मेघ गर्जते हैं ॥ १४ ॥

अथैकचत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

मयूखजालं परिमितिकाले यस्यैकवेदाह्वयकं नरस्य ॥
द्व्यंभोधिवेलामलमेखलाया भवेदिलायाः परिपालकः सः १५॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें इकतालीस रश्मियोंका योग होय वह मनुष्य समुद्रकी है मेखला जिसकी ऐसी पृथ्वी मंडलका स्वामी चक्रवर्ती राजा होता है ॥ १५ ॥

अथ द्विचत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

यमलजलधितुल्यो वा गुणाब्धिप्रमाणो भवति किरणयोग-
श्चेन्नराणां प्रसूतौ ॥ अतुलबलविलासत्रासिताराातिवर्गाः
त्रिजलधिवलयायाःपालकास्ते पृथिव्याः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बयालीस वा तेतालीस रश्मियोंका योग हो वह मनुष्य बडे बलवाला विलासयुक्त शत्रुओंको त्रासकरनेवाला तीन समुद्रहैं कंकण जिसके ऐसी धरतीका पालन करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशद्रश्मिफलम् ।

सूतौ वेदयुगप्रमाणकिरणाश्चेत्सार्वभौमः स ना यत्सेनाजलधौ
गलन्मदजला दंतावलाः शैलताम् ॥ यांतिच्छत्रविचित्रिताः
कमठतां मीनध्वजा मीनतां नौकात्वं च रथास्तथायुधरुचिः
कल्लोलमालातुलाम् ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चौवालीस रश्मियोंका योग होवे वह मनुष्य सार्वभौम राजा होता है उस राजाकी फौज घोडा हाथी पैदल और सवारोंसहित दिशाओंको विजय करनेवाली डंका निशान और मत्स्य पताका सहित संग्रामकी इच्छा करनेवाली आनंदको करती हुई शत्रुओंको मूर्छित करती है ॥ १७ ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशद्रश्मियोगफलम्।

पंचाब्धितश्चेत्परतो भवंति गभस्तयो जन्मनि मानवानाम्॥
ते देवतानामपि दुर्जयाः स्युर्द्वीपान्तरोद्गीतयशोविशेषाः ॥ १८ ॥
इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे रश्मि-
जातकाध्यायः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पैंतालीस रश्मियोंका योग हो अथवा इससे अधिक होयतो वह मनुष्य देवताओं करके भी कठिनतासे जीताजाय द्वीपद्वीपांतरोंमें उसका यश गाया जाता है ॥ १८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डित-
श्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां रश्मिजात-
काध्यायः ॥ १० ॥

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थामाह।

दीप्तस्तुंगगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः शांतः
शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तःस्फुरद्रश्मिभाक्॥ लुप्तः स्याद्वि-
कलः स्वनीचगृहगो हीनः खलः पापयुक् खेटो यः परिपी-
डितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः ॥ १ ॥

अब दीप्तादि ग्रह कहते हैं जो ग्रह अपने उच्चमें बैठा होय वह दीप्त कहाता है और जो अपनी राशिमें बैठाहोय वह स्वस्थ कहाताहै और जो ग्रह मित्रकी राशिमें बैठाहोय वह हर्षित कहाताहै और जो ग्रह ग्रहोंके शुभवर्ग में बैठा होय वह शांत कहाताहै और जो ग्रह प्रकाशित किरणोंवाला होय वह शक्त कहाताहै और जो ग्रह सूर्यकरके अस्त होय वह विकल कहाताहै अपनी नीचराशिमें बैठाहुआ ग्रह दीन कहाताहै और जो पापग्रहों करके युक्त होय वह ग्रह खल कहाताहै और ग्रहोंकरके पीडित होय वह ग्रह पीडित कहाताहै ॥ १ ॥

अथ दीप्तग्रहफलम्।

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुंजरेशः॥
नरो भवेत्तन्निलये सलीलं पद्मालयालंकुरुते विलासम् ॥ २ ॥

अब दीप्तग्रहका फल कहते हैं जो ग्रह दीप्त अवस्थामें बैठा होय वह अधिक प्रताप कराता है और उसके शत्रु संतापको प्राप्त होते हैं और चुचियायरहाहै मद जिनके ऐसे हाथियोंका स्वामी होताहै और उसके घरमें लक्ष्मी विलास करती है ॥ २ ॥

अथ स्वस्थग्रहफलम् ।

स्वस्थे महावाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलत्वयुक्तः ॥
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजाघातजयाधिशाली ॥३॥

अब स्वस्थ ग्रहका फल कहते हैं जो ग्रह स्वस्थ होताहै बडे बडे वाहन और धान्यसहित और बडे स्थानोंमें रहनेवाला फौजका मालिक बडा पराक्रमी शत्रुओंसे जय पानेवाला होताहै ॥ ३ ॥

अथ हर्षितग्रहफलम् ।

हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणचयव्रजावित्तः ॥
धर्मकर्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें हर्षित ग्रह होताहै वह मनुष्य स्त्रियें करके हर्षको प्राप्त अधिक भूषण और धनसहित होताहै और धर्म कर्म करनेवाला शत्रुदलका नाश करनेवाला होताहै ॥ ४ ॥

अथ शांतग्रहफलम् ।

शांतोनिशांतो हि महीपतीनां मंत्री स्वतंत्रो बहुपुत्रमित्रः ॥
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात्परोपकारी सुकृतैकचित्तः ॥५॥

अब शांत ग्रहका फल कहते हैं शांत ग्रह अत्यंत शांत स्वभाव करानेवाला राजाका मंत्री और मुखत्यार बहुत पुत्र मित्रोंवाला शास्त्रका अधिकारी और पराया उपकार करानेवाला पुण्य कर्ममें चित्तयुक्त होता है ॥ ५ ॥

अथ शक्तग्रहफलम् ।

शक्तोनिशक्तः पुरुषो विशेषात्सुगंधमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ॥
विख्यातकीर्तिः सुजनः प्रसन्नो जनोपकर्तारिजनप्रहन्ता ॥ ६ ॥

अब शक्तग्रहका फल कहते हैं शक्तग्रह अत्यंत बलवान् सुगंध और पुष्पोंकी मालाओंमें रुचि करनेवाला पवित्र प्रसिद्ध यशवाला श्रेष्ठ मनुष्य प्रसन्न सबका उपकार करनेवाला शत्रुओंका नाश करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ विकलग्रहफलम् ।

हतबलो विकलो मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलश्च गलन्मतिः ॥
खलसखः स्थलसंचलितो नरः कृशतरः परकार्यगतादरः ॥ ७ ॥

अब विकल ग्रहका फल कहते हैं विकल ग्रहवाला मनुष्य बलहीन मलीन हमेश उसके वैरी बलवान् होंय बुद्धिहीन दुष्ट मित्रोंवाला स्थानसे चलनेवाला दुर्बल देह पराये कार्यको बिगाड़नेवाला होताहै ॥ ७ ॥

अथ दीनग्रहफलम् ।

दीनेतिदीनोपचयेन ततः संप्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ॥
संत्यक्तनीतिः खलु हीनकांतिः स्वजातिवैरं हि नरः करोति॥८॥

अब दीन ग्रहका फल कहते हैं दीन ग्रहवाला मनुष्य अत्यंत दीन शत्रुओंकरके संतापित राजाकरके भयको प्राप्त नीतिरहित निश्चयकर कांतिरहित अपनी जातिसे वैर करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ खलग्रहफलम् ।

खलाभिधाने हि खलैःकलिः स्यात्कांतातिचिंतापरितप्तचित्तः ॥
विदेशयानं धनहीनता च प्रकोपता लुप्तमतिप्रकाशः ॥ ९ ॥

अब खलग्रहका फल कहतेहैं जो खलग्रह होय तौ वह मनुष्य दुष्ट स्त्रीकी चिंतावाला अत्यंत संतापको प्राप्त परदेशयात्रा करनेवाला धनहीन क्रोधसहित बुद्धिहीन होताहै ॥ ९ ॥

अथ पीडितग्रहफलम् ।

पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोपि नितांतम् ॥
याति संचलनतां निजस्थलाद्व्याकुलत्वनिजबंधुचिंतया ॥१०॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
दीप्तादिग्रहफलाध्यायः ॥ ११ ॥

अब पीडित ग्रहका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें पीड़ित ग्रह होय वह मनुष्य पीड़ाको प्राप्त हमेशा व्याधिसहित व्यसनयुक्त अपने स्थानसे चलनेवाला व्याकुलताको प्राप्त भाइयोंकी चितावाला होताहै ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिक-
पंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां दीप्तादिफलाध्यायः ॥ ११ ॥

अथ स्थानादियुक्तग्रहफलम् ।

तत्रादौ स्थानबलयुक्तग्रहफलम् ।

परां विभूतिं जनयत्यवश्यं बलाधिकत्वं महसः प्रवृद्धिम् ॥
नानाधनं कौशलगौरवादि कुर्याद्दलं स्थानबलोपपन्नः ॥ १ ॥

अब स्थान बलयुक्त ग्रहका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें स्थानबली ग्रह होय वह मनुष्य पराई विभूति करके सहित अधिक बलवान् उत्सवकी वृद्धिवाला अनेक धन और कुशलतासहित गौरवयुक्त होता है ॥ १ ॥

अथ दिग्बलयुक्तग्रहफलम् ।

आशाबलं यस्य भवेत्प्रकृष्टं खेटः स्वकाष्ठां नियमेन नीत्वा ॥
विशिष्टलाभं कुरुते दशायां पुंसां निजद्रव्यविमिश्रितं हि ॥ २ ॥

अब दिग्बली ग्रहका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें ग्रह दिग्बली होवे वह मनुष्य अपनी दशाके नियमसे बडे लाभको करनेवाला अपनी दशामें होता है और अपने धनके प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ कालबलयुक्तग्रहफलम् ।

शत्रुक्षयं भूगजवाजिवृद्धिं शौर्यं च रत्नाम्बरसंपदं च ॥
लीलाविलासं विमलां च कीर्तिं कुर्याद्ग्रहः कालबलाधिशाली ३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कालबली ग्रह होय वह मनुष्य शत्रुओंको नाश करनेवाला धरती हाथी घोडोंकी वृद्धिवाला वीरतासहित रत्न और वस्त्रकी संपदाको प्राप्त लीलाओंका विलास करनेवाला निर्मल यशवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ सौम्यबलिग्रहफलम् ।

आचारशौचशुभसत्ययुताः सुरूपास्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः ॥ पुष्पाम्बरोत्तमविभूषणसादराश्च सौम्यग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवंति ॥ ४ ॥

अब सौम्यग्रहका फल कहतेहैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह बलवान् होय वह मनुष्य आचार करके पवित्र शुभ और सत्यसहित सुंदररूपवाला तेजस्वी देवता और ब्राह्मणोंका भक्त उत्तम पुष्प और वस्त्र आभूषणों करके सहित होताहै ॥ ४ ॥

अथ बलिपापग्रहफलम्।

लुब्धाः कुकर्मनिरता निजकार्यनिष्ठाः साधुद्विषः स्वकुलदाश्च तमोगुणाढ्याः॥ क्रूरस्वभावनिरता मलिनाः कृतघ्नाः पापग्रहे बलयुते पुरुषा भवंति॥ द्वौ वा त्रयो वा बलिनो भवंति फलप्रदानत्वमिति प्रकल्प्यम् ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह अधिक बली होंय वह मनुष्य लोभी खोटा कर्ममें तत्पर अपने काममें निष्ठा रखनेवाला साधुओंका वैरी तमोगुणसहित क्रूरस्वभाववाला मलिन कृतघ्नी होता है जिस मनुष्यके दो वा तीन ग्रह बलवान होंय तौ पूर्वोक्त शुभाशुभ फल कहना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ नैसर्गिकबलमाह।

मंदारसौम्येज्यसितेंदुसूर्या यथोत्तरं स्युर्बलिनो निसर्गात् ॥ ६ ॥

अब ग्रहोंका नैसर्गिक बल कहते हैं शनैश्चरसे अधिक बली मंगल और मंगलसे बुध और बुधसे बृहस्पति और बृहस्पतिसे शुक्र और शुक्रसे चंद्रमा और चंद्रमासे अधिक बली सूर्य नैसर्गिक बल पाता है ॥ ६ ॥

अथ चेष्टाबलयुक्तग्रहफलम्।

क्वचिद्राज्यं क्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यं क्वचिद्यशः ॥
ददाति खेचरश्चित्रं चेष्टवीर्यसमन्वितम् ॥ ७ ॥

अब ग्रहोंकी चेष्टा बल कहते हैं थोड़ा राज्य और थोड़ी पूजा थोड़ा धन थोड़ा यशको प्राप्त होता है जो चेष्टा वीर्यमें युक्त ग्रह होयतौ फलको देता है ॥ ७ ॥

अथ दृष्टिबलिग्रहफलम्।

दुष्टप्रदः सौम्यनिरीक्षितश्चेद्दुष्टं फलं नो सकलं ददाति ॥
क्रूरेक्षितः सत्फलदोपि चैवं विचारणेयं खलु दृग्बलस्य ॥ ८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः ॥ १२ ॥

अब दृष्टिबली ग्रहोंका फल कहते हैं जो बुरा फल देनेवाला ग्रह शुभग्रह करके दृष्ट होय तौ वह मनुष्यको पूर्ण दुष्ट फल नहीं देताहै और पापग्रह देखता होय तौ अच्छे फलको देनेवाला ग्रह भी शुभ फल नहीं देता ये दृष्टिबली ग्रहका विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थरामज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां स्थानादियुक्तग्रहफलाध्यायः ॥ १२ ॥

अथ सूर्ययोगाध्यायप्रारंभः ।

तत्रादौ वोशियोगाः ।

खेचरा दिनमणेर्विधुवर्ज्यं द्वादशे च धनभे ह्युभये वा ॥
वोशिवेश्युभयचर्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इति योगाः ॥ १ ॥

अब वोश्यादि योग कहते हैं सूर्यसे चंद्रमाको छोडकर बारहें दूसरे और दोनों तरफ ग्रह बैठनेसे वोशि वेशि उभयचरी योग होते हैं यथा जहां कहीं सूर्य बैठा होय उस सूर्यसे चंद्रमाके विना कोई ग्रह बारहें बैठा होय तौ वोशी योग होता है और दूसरे कोई ग्रह होय तौ वेशी योग होताहै और सूर्यसे बारहें दूसरे दोनों तरफ ग्रह बैठा होय तौ उभयचरी नाम योग होता है ॥ १ ॥

अथ वोशियोगफलम् ।

स्यान्मंदहष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्यत्यधश्चोन्नतपूर्वकायः ॥
असत्यवादी यदि वोशियोगो प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य ॥ २ ॥

अब वोशी योगका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें वोशी योग होय वह मनुष्य मंधी आंखोंवाला बहुत कार्य करने वाला नीचेको देखनेवाला ऊंचे देह वाला झूठ बोलनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ वेशियोगफलम् ।

चेत्संभवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः ॥
स्याद्वाग्विलास्यालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टेः ३

अब वेशियोगका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें वेशीयोग होय वह मनुष्य दयावान मोटी देहवाला वाग्विलासमें कुशल आलसी तिरछी निगाहवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ उभयचरीयोगफलम् ।

सर्वसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः सत्त्वाधिकः समशरीरविराजमानः ॥ नात्युच्चकः सरलदृक् प्रबलामलश्रीयुक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ॥ ४ ॥ सूर्यस्य वीर्यात्खचरानुसाराद्वाश्यंशयोगात्प्रविचार्य सर्वम् ॥ न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ ५ ॥

अब उभयचरी योगका फल कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें उभयचरीनाम योग होताहै वह मनुष्य सबकी सहनेवाला स्थिरस्वभाववाला अत्यंत समृद्धियोंसहित अधिक बलवान् एकसी देहवाला अत्यंत ऊँचा नहीं सीधी दृष्टि अधिक लक्ष्मी सहित होताहै ॥ ४ ॥ सूर्यके बीर्यसे ग्रहोंके अनुसार राशि अंशोंके योगसे विचार करे न्यून वा सम वा मध्य फल पंडितजन कल्पना करें ॥ ५ ॥

अथ चंद्रयोगाध्यायप्रारंभः-तत्र

सुनफाऽनफादुरुधराकेमद्रुमयोगानाह ।

द्विजपतेर्धनगैः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितैः ॥
दुरुधराः खचरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदिता महदादरात् ॥ १ ॥

चंद्रमासे दूसरे भावमें ग्रह बैठे होंय तो सुनफा योग होता है और चंद्रमासे बारहवें कोई ग्रह बैठे होंय तो अनफा योग होता है और चंद्रमासे दूसरे और बारहवें दोनों तरफ ग्रह बैठे होंय तोदुरुधरानाम योग होता है ये मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ १ ॥

अथ केमद्रुमयोगमाह ।

निशाकराज्जन्मनि खेचरेंद्रा धनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः ॥
वदंति केमद्रुमनाम योगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् ॥ २ ॥

अब केमद्रुमयोग कहते हैं चंद्रमासे धन और बारहवें दोनों तरफ ग्रह कोई नहीं होंय तो मुनीश्वर केमद्रुम नाम योग कहते हैं इसमें पैदाहुआ मनुष्य लक्ष्मीहीन होता है ॥ २ ॥

अथ सुनफायोगफलम् ।

निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विशदकीर्तियुतो मतिमान्सुखी ॥
ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृती कृती ॥ ३ ॥

अब सुनफा योगका फल कहते हैं अपनी भुजाओं करके मालको इकट्ठा करनेवाला बड़े यशवाला बुद्धिमान् सुखी होता है और वह राजाका मंत्री श्रेष्ठ कृत्यकरनेवाला होता है ३॥

अथ अनफायोगफलम् ।

उदारमूर्तिर्गुणकीर्तिशाली कंदर्पकेलिः शुभवाग्विलासः ॥
सद्वृत्तियुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सुनफा योग होय वह मनुष्य उदार मूर्ति गुणवान् यश-वाला कामकलासहित श्रेष्ठ वाणीबोलनेवाला श्रेष्ठ वृत्ति करनेवाला निरंतर नम्रतासहित स्वामी होता है ॥ ४ ॥

अथ दुरुधरायोगफलम् ।

द्रविणवाहनवाहवसुंधरासुखयुतं सततं कुरुते नृपम् ॥
दुरुधरातितरां जितवैरिणं सुनयनानयनाञ्चललालसम् ॥ ५ ॥

अब दुरुधरायोगका फल कहतेहैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें दुरुधरा योग होय वह मनुष्य धन वाहन और घोडे धरतीके सुखवाला निरंतर राजा शत्रुओंका जीतनेवाला श्रेष्ठ स्त्री के अंचलकी लालसा करनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ केमद्रुमयोगजातफलम् ।

विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी ॥
कांतासुहृत्सूनुधनैर्विहीनो केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोपि ॥ ६ ॥

अब केमद्रुमयोगका फल कहते हैं केमद्रुमयोगमें पैदा हुआ मनुष्य उलटी वृत्तिवाला मलिन बुरे वेषवाला परदेशका वासी स्त्री और मित्र और पुत्र तथा धन करके हीन होता है चाहे राजाका पुत्र होय ॥ ६ ॥

अथ केमद्रुमभंगमाह ।

केंद्रादिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति ॥
विभ्राजमानोन्नतिनैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ॥ ७ ॥

अब केमद्रुम भंगयोग कहते हैं जो सूर्यसे चंद्रमा केंद्रमें बैठे होंय तो उस बालकको ज्ञान मान, उन्नति, निपुणता अधम होती है और सूर्यसे पणफरमें चंद्रमा होय. तो पूर्वोक्त फल सम कहना और सूर्यसे आपोक्लिमस्थानमें चंद्रमा बैठे होंय तो पूर्वोक्त फल उत्तम कहने चाहियें ॥ ७ ॥

प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः ॥
नरं चिरंजीवितसार्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमाको सब ग्रह देखते होंय वह मनुष्य बहुत कालतक जीनेवाला राजाके समान होता है और केमद्रुम योगको नाश करता है ॥ ८ ॥

चतुर्षु केन्द्रेषु भवंति खेटा दुष्टोपि केमद्रुमयोग एषः ॥
विहाय केमद्रुमतां नितांतं कल्पद्रुमः स्यात्किल सत्फलाप्त्यै ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चारों केंद्रोंमें ग्रह बैठे होंय तो दुष्ट केमद्रुम योगभी होय वह निरंतर केमद्रुम योगको दूर करके कल्पद्रुम नाम योग होता है सो श्रेष्ठ फलको प्राप्त करता है ॥ ९ ॥

क्षितिसुतयुतजीवे सूतिकाले तुलायां विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम् ॥ विधुरपि यदि शेषैर्नेक्षितो मेषवर्ती जनपतिनृपतींद्रं हंति केमद्रुमं च ॥ १० ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे सुनफा-अनफादियोगाध्यायः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगलकरके सहित बृहस्पति तुलाराशिमें बैठा होय और सूर्य कन्याराशिमें बैठा होय और मेषराशिगत चंद्रमा होय और बाकीके कोई ग्रह उसको नहीं देखतेहोंय तो वह पुरुष राजा होता है केमद्रुम योगका नाश करता है ॥ १० ॥

इति श्रीवंशवरेलीस्थराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-भाषाटीकायां सुनफादियोगाऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ प्रव्रज्याध्यायप्रारंभः ।

येषां सूतौ राजयोगा नराणां प्रव्रज्याचेत्तापसास्ते भवेयुः ॥ वक्ष्ये संक्षेपेण तांस्तापसानां योगोत्पन्नान्संमतान्प्राक्तनानाम् १

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राजयोग होवे और प्रव्रज्यायोग भी होय तो वह मनुष्य तपस्वी होता है उन तपस्वी योगोंको मैं संक्षेपसे पूर्वाचार्योंकी सन्मति लेकर कहता हूं ॥ १ ॥

अथ चतुरादिभिर्ग्रहैः प्रव्रज्यायोगः ।

ग्रहैश्चतुर्भिर्यदि पंचभिर्वा षड्भिस्तथैकालयसंस्थितैश्च ॥ नश्यंति सर्वे खलु राजयोगाः प्रव्राजिको योग इति प्रदिष्टः ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चार वा पांच अथवा छः ग्रह एक राशिमें बैठे होंय तो उस मनुष्यके सम्पूर्ण राजयोग नष्ट होजाते हैं केवल वह सन्यास ही योग कहा जाता है ॥ २ ॥

अन्यग्रहालोकनवर्जितश्चेज्जन्मेश्वरो नैव शनिं प्रपश्येत् ॥ मंदोपि नो जन्मपतिं निसत्त्वं दीक्षाविचक्षप्रचुरो नरः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें और ग्रहोंकी दृष्टिसे जन्मलग्नका स्वामी रहित होय और लग्नेश शनैश्चरको न देखताहोय और शनैश्चर बलहीन लग्नेशको न देखता होय तो वह दीक्षा लेकर सन्यासी होता है ॥ ३ ॥

जन्माधिराजो रविजत्रिभागे कुजार्कजांशेर्कजवीक्षितश्च ॥
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखण्डिकं मंडनतत्परं च ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी शनैश्चरके द्रेष्काणमें मंगल वा शनैश्चरके नवांशमें बैठा होय और उसको शनैश्चर देखताहोय तौ वह मनुष्य कुटिल दुष्टशील पाखंडका मंडन करनेवाला तपस्वी होता है ॥ ४ ॥

होराशीतकरामरेंद्रसचिवाः सौरेण सर्वीक्षिताः पुण्यस्थे सुरमंत्रिणि प्रणयकृत्तीर्थाटनैर्मानवः ॥ कोणे पुण्यग्रहाश्रिते ह्यखचरैर्नैवेक्षिते दीक्षितः स्यान्नूनं तदपि प्रसूतिसमये सद्राजयोगोद्भवः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म चंद्रमा वा बृहस्पतिकी लग्नमें होय और शनैश्चर देखताहोय और नवमभावमें बृहस्पति बैठाहोय तो वह मनुष्य विख्याततीर्थोंमें घूमनेवाला साधु होता है और नवम, पंचम, शुभग्रह बैठा होय और कोई ग्रह नहीं देखताहोय तो भी संन्यासी होता है चाहे उसके जन्मकालमें राजयोग होय ॥ ५ ॥

अथ प्रव्रज्याभेदमाह ।

प्राव्राजिकोर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक्सलिंगी ॥
दण्डी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ॥ ६

अब प्रव्रज्याके भेद कहते हैं सूर्यादिकोंके बलकरके संन्यासयोग कहना चाहिये जो संन्यासयोगकारक ग्रहोंमें सूर्य अधिक बली होय तो वह मनुष्य वैखानस सन्यासी वनमें पैदा हुआ संन्यासी होता है वैखानस उस तपस्वियोंको कहते हैं जो तपस्वी अग्निहोत्र करनेवाला पर्वत,वन नदीके किनारे आश्रम बनाकर रहे तपस्या करनेवाला सूर्यका आराधन करता है और जो चंद्रमा संन्यास योगकारक ग्रहोंमें अधिक बली होय वह मनुष्य कपाली संन्यासी होता है वृद्धश्रावकमतके धारण करनेवाले हिंसासे रहित भस्म करके सफेदवर्ण देहवाले और सोमसिद्धांतमें तत्पर कपालोंको धारण करनेवाले नंगे रहनेवाले शिवजीकी दीक्षावाले उपवास करनेवाले शंख और कमलके समान शोभायमान खर्परधृक् सन्यासी कहाता है और संन्यासयोगकारक ग्रहोंमें मंगल अधिक बली होय वह मनुष्य लिंगी गेरुवे वस्त्र धारण करनेवाला सन्यासी होता है अपनी बुद्धिकरके देवताओंकी उपासना करनेवाला शिखारहित पांडुवस्त्र पहिरनेवाला भीख माँगनेवाला लाल कपडे पहिरनेवाला इंद्रियोंको जीतनेवाला संन्यासी होता

है और बुध बली होय तो दंडी संन्यासी होता है कपटका करनेवाला गारुडी मंत्रोंका साधन करे मयूरतंत्रके मतमें स्थित मांसका खानेवाला दंडी कहाता है और जिसके संन्यास योगकारक ग्रहोंमें बृहस्पति बलवान् होय तो यती तपस्वी एक दंड अथवा तीन दंडोंका धारण करनेवाला गेरुआ कपडे पहिरनेवाला वानप्रस्थ धर्मस्थित ब्रह्मचर्यको प्राप्त तीर्थोंमें स्नान करनेवाला होता है और संन्यासयोग करनेवाले ग्रहोंमें शुक्र अधिक बलवान् होय तो वह चक्रका धारण करनेवाला पशुपतिपक्षकी दीक्षामें स्थित हमेशा व्रत करनेवाला होता है और संन्यास योगकारक ग्रहोंमें शनैश्चर अधिक बली होय तो वह नंगा संन्यासी पाखंडमतमें स्थित नग्नव्रत धारण करनेवाला श्रावकमतमें स्थित कठिन तपस्या करनेवाला होताहै और जो संन्यासयोगकारकग्रह किसी ग्रहसे युद्धमें हारा होय अन्य वा जन्मपति पराजय होय तो वह संन्यासपतित होजाता है ॥ ६ ॥

एकस्थानस्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ॥
निरम्बरा निराहारा योगमार्गपरायणाः ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकस्थानमें सम्पूर्ण बलयुक्त ग्रह बैठे होंय व संन्यासयोगकारक होंय तो वह मनुष्य नंगा होकर भोजन त्यागकर योगमार्गमें तत्पर होता है ॥ ७ ॥

एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ॥
ते स्युर्भूमीपालवंशेपि जाताः कांतारांतर्वासिनः सर्वथैव ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकराशिमें चार ग्रहोंका योग बलवान् होय वह मनुष्य राजाके वंशमेंभी पैदा हुआ हमेशा वनमें वास करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

पंचखेचरपतिर्यदि सूतौ भूपतेरपि सुतः स च नित्यम् ॥
कंदमूलफलभक्षणचित्तोत्यंतशांतिविजितेन्द्रियशत्रुः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पांच ग्रह एकभावमें संन्यासयोगकारक बैठे होंय वह मनुष्य राजाकाभी पुत्र हमेशा कंद, मूल, फल भोजन करनेमें चित्त करनेवाला अत्यंतशांत इंद्रियों का जीतनेवाला होता है ॥ ९ ॥

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ॥
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठंति भूपालकुलेषु जाताः ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एकस्थानमें संन्यासयोगकारक छः ग्रहोंका योग होय वह मनुष्य चाहे राजाके वंशमें पैदा होय तोभी पर्वतोंकी शिलाके तले वास करनेवाला होता है १०

प्रव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयं चेत्प्रबलं प्रसूतौ ॥
फलं विरुद्धं ह्यनुभूय पूर्वं ततो व्रजेद्राज्यपदाधिकारम् ॥ ११ ॥
इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे
प्रव्रज्याध्यायः ॥ १४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें प्रव्रज्यायोग और राजयोग दोनों बलवान् होय तो वह मनुष्य विरुद्ध फल भोगकर साधु होकरकेभी राजा होता है ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां प्रव्रज्यायोगाध्यायः ॥ १४ ॥

अथारिष्टाध्यायारंभः ।

रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्मादिष्टमात्रं प्रवच्मि ॥
यस्याभावे साधितायुःप्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्संभवे सर्वथैव ॥ १ ॥

मनुष्योंका आयुर्दाय अरिष्टयोगोंके आधीन होता है इसवास्ते पहिले अरिष्टयोग कहते हैं जिसके अरिष्टयोग न होवैं उसका आयुर्दाय साधन करीहुई आयुके प्रमाणके तुल्य दीर्घायु होताहै ॥ १ ॥

अथारिष्टयोगः ।

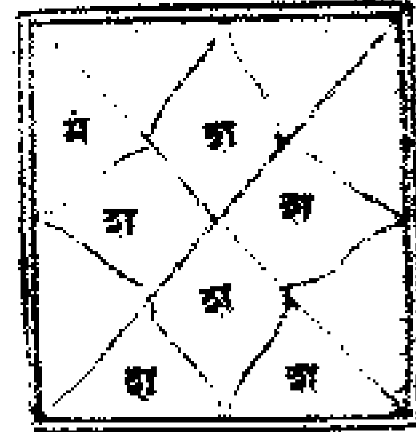
रिष्टयोगः२



भौमालयेकारशनीन्दुदृष्टे गृहेष्टमे चित्रशिखण्डिसूनुः ॥ अदृष्टमूर्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः ॥ २ ॥

अब अरिष्टयोग कहते हैं जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष वृश्चिक राशिगत बृहस्पति अष्टममें बैठा होय और सूर्य, मंगल, शनैश्चर, चंद्रमाकरके दृष्ट होय और शुक्र नहीं देखता होय तो वह मनुष्य थोडेकाल जीता है ॥ २ ॥

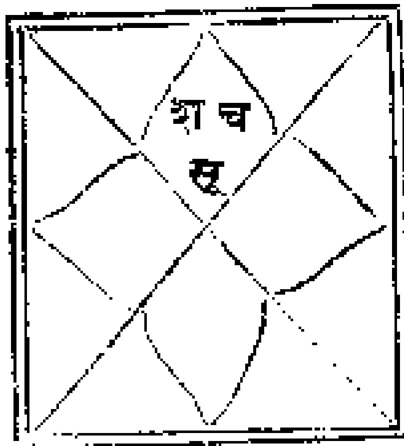
अथ त्रिभिर्वर्षैरिष्टयोगः ।



षष्ठाष्टमे वापि चतुष्टये वा विलोमगामी कुजमंदिरस्थः ॥ बलान्वितेनावनिजेन दृष्टो वर्षैस्त्रिभीरिष्टकरः शनिः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे वा आठवें या केंद्र १ । ४ । ७ । १० । में वक्री होकर शनैश्वर बैठा होय और बलकरके मंगल उसको देखता होय तो वह मनुष्य तीन वर्षमें रोग पाताहै ॥ ३ ॥

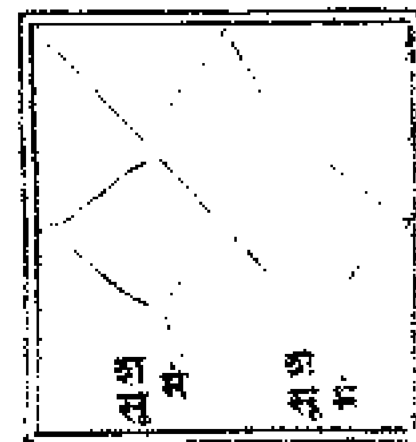
अथ नवमवर्षे मृत्युयोगः ।



चंद्रार्कयुग्जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः ॥

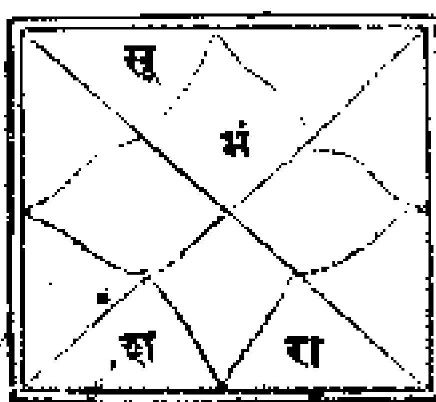
जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा और सूर्य करके सहित शनैश्वर बैठा होय तो उस मनुष्यको नवमवर्षमें मृत्यु होता है ॥

अथ मासेन मृत्युयोगः ।



मासेन मंदावनिसूनुसूर्याच्छिद्रेरिगेहाश्रिततासमेताः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शनैश्वर, मंगल और सूर्य मिलकर अष्टम वा छठे बैठे होंय वह मनुष्य एकमासमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥



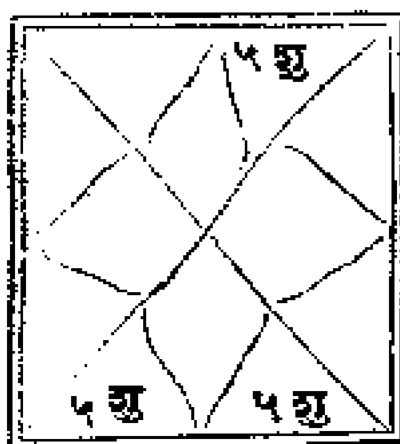
एकोपि पापोष्टमगोरिगेहे पापेक्षितोब्देन शिशुं निहन्यात् ॥ सुधारसो यद्यपि येन पीतः किमत्र चित्रं न हि येन पीतः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें एक भी पापग्रह अष्टम वा छठे बैठा होय और पापग्रह करके देखाहुआ होय तो उस

बालकने चाहे अमृत क्यों नहीं पियाहो तौ क्या आश्चर्य है कि जिसने अमृत नहीं पियाहै एक वर्षमें मृत्युको प्राप्तहोताहै ॥ ५ ॥

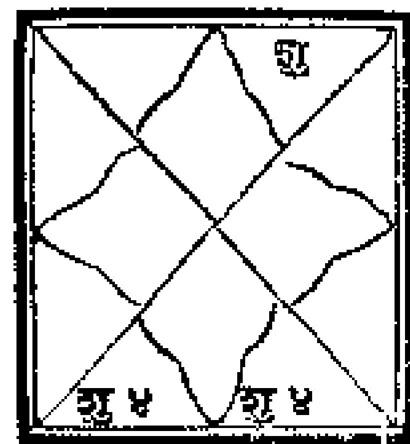
अथ षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ।

षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ६



सूर्येन्दुगेहे दनुजेंद्रमंत्री व्ययाष्टमारिस्थितसौम्यखेटैः ॥ सर्वैःप्रदृष्टः खलु षड्भिरब्दैर्जातस्य जंतोर्वितनोति रिष्टम् ॥ ६ ॥

षष्ठवर्षे रिष्टयोगः ६



जिस मनुष्यके जन्मकालमें सिंह वा कर्क राशिगत शुक्र छठे आठवें बारहें बैठा होय और शुभ ग्रह उसको सब देखते होंय तो उस बालकको छठे वर्ष रिष्ट होताहै ॥ ६ ॥

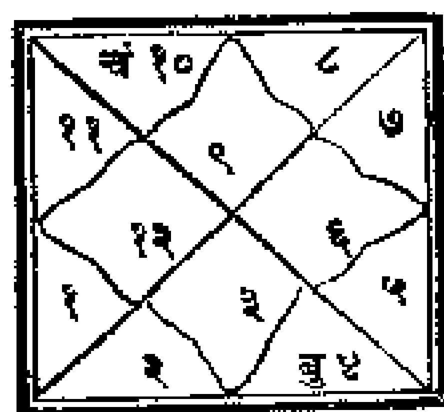
अथ चतुर्भिर्वर्षैरिष्टयोगः ।

चतुर्वर्षैरिष्टयोगः ७



सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेष्टमे वा भवने विलग्नात् ॥ चंद्रेण दृष्टोऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जंतोः प्रकरोति रिष्टम् ७॥

चतुर्वर्षैरिष्टयोगः ७



जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत बुध छठे वा आठवें स्थानमें लग्नसे बैठा होय और चंद्रमा करके दृष्टहोय तो उस बालकको चौथे वर्षमें अरिष्ट करताहै ॥ ७ ॥

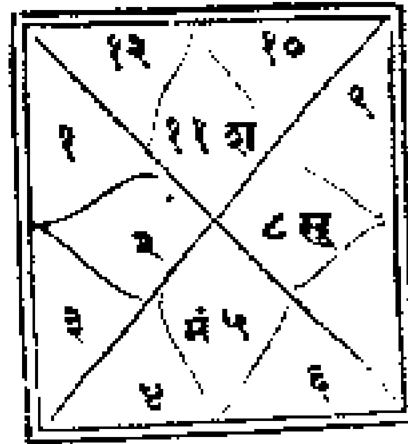
केतूदयो भे प्रभवेच्च यस्मिंस्तस्मिन्प्रसूतिर्यदि यस्य जंतोः ॥ स्यात्तस्य मासद्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदंति पूर्वे ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यका जन्म धूम्रकेतु ताराके उदयके नक्षत्रमें होय वह बालक दो मासमें निश्चय करके मरताहै ॥ ८ ॥

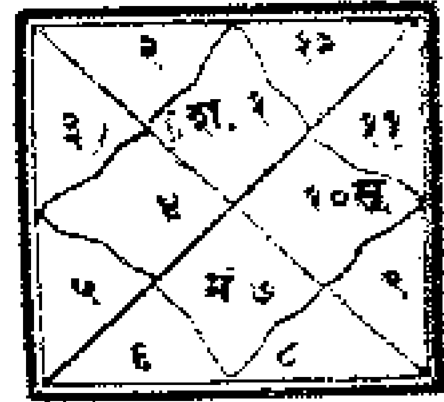
अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

शीघ्रमृत्युयोगः ९





शीघ्रमृत्युयोगः ९



मेषूरणेकौं धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कान्मजधामसंस्थः ॥
पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ॥ ९॥

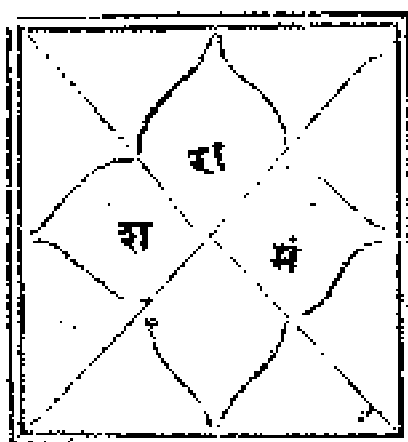
जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें सूर्य मेष वृश्चिक वा मकर कुंभ राशिमें बैठा होय और पापग्रह देखते होंय तो वह बालक मृत्युको शीघ्रही पाताहै ॥ ९ ॥

अथ सप्तमवर्षे मृत्युयोगः ।

लग्ने भवंति द्रेष्काणाः शृंखलापाशपक्षिणाम् ॥
सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्न संशयः ॥ १० ॥

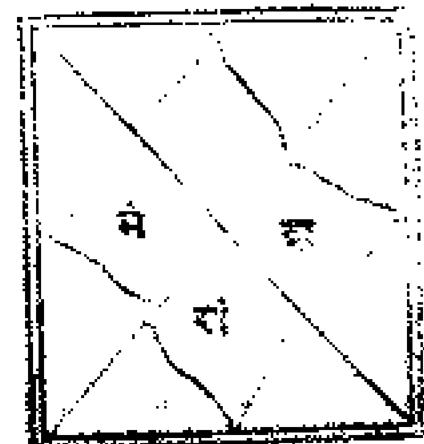
जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नमें निगड़ पाश पक्षिद्रेष्काण होय और पाप ग्रह युक्त होंय तो वह बालक सातवें वर्षमें मरताहै इसमें संशय नहींहै ॥ १० ॥ मीन कर्क राशिका अंतिम और वृश्चिक राशिका प्रथम द्वितीय द्रेष्काण निगड़ संज्ञक होताहै वृष राशिका पहिला मकरका पहिला द्वितीय द्रेष्काण पाश कहाताहै और तुला राशिका द्वितीय और अंतिम सिंह राशिका पहिला कुंभ राशिका पहिला द्रेष्काण पक्षिसंज्ञक होताहै॥ १० ॥

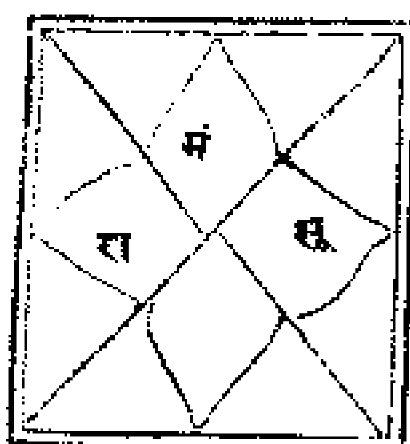
दशाब्दे षोडशाब्देवा मृत्युयोगः ११



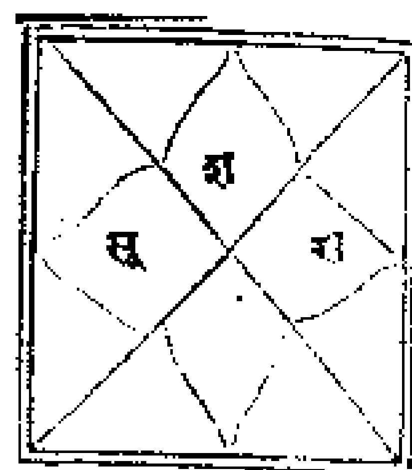
राहुर्भवेज्जन्मनि केंद्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत् ॥ करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदंति वा षोडशभिश्च केचित् ११

दशाब्दे वा यो० ११





जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु केंद्र १ । ४ । ७ । १० वर्ती बैठा होय और पापग्रह उसको देख- ते होंय तो उस बालकको दशमें वर्षमें नाश करता है किसी आचा- र्यके मतमें सोळहें वर्ष मृत्यु करता है ॥ ११ ॥

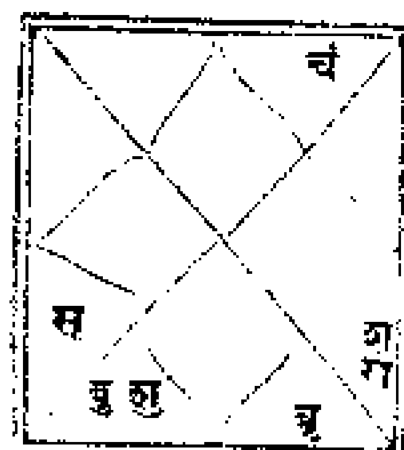


अथाष्टवर्षे मृत्युयोगः ।

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेंद्राः पापास्त्रिकोणे यदि जन्मलग्नात् ॥ क्रूरेक्षितास्ते निधनं वि- दध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलग्रहष्टाः ॥ १२ ॥

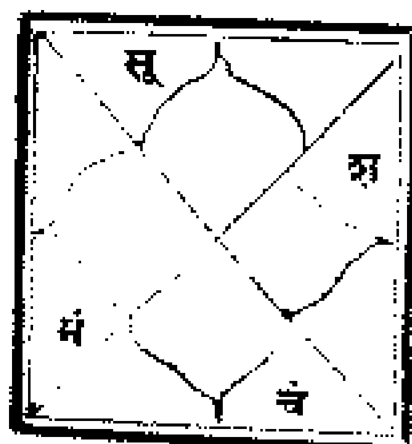
जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे होंय और पापग्रह पंचम नवम बैठे होंय और पापग्रहों करके दृष्ट होंय तो आठवें वर्षमें मृत्यु करतेहैं ॥ १२ ॥

अष्टवर्षे मृत्युयोगः १२



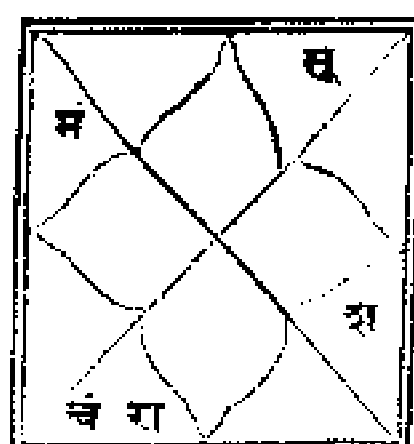
अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

शीघ्रमृत्युयोगः १३



सूतिकाले भवेच्चंद्रः षष्ठो वाऽष्टमसंस्थितः ॥ बाल- स्य कुरुते सद्यो मृत्युं पापविलोकितः ॥ १३ ॥

शीघ्रमृत्युयोगः १२

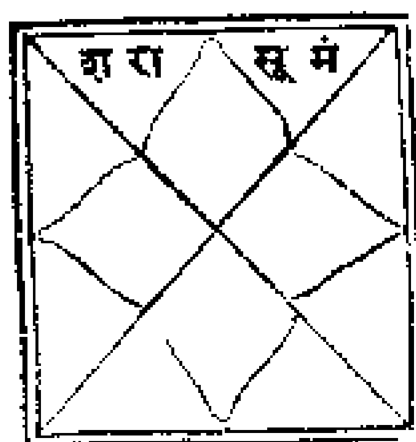


जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा छठे वा आठवें बैठा होय और पापग्रह देखते होंय तो वह बालक शीघ्र मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

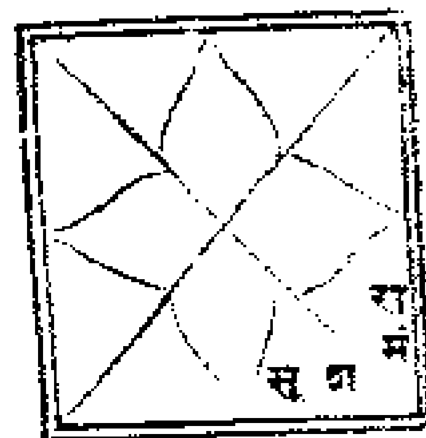
शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम् ॥
न्यूनाधिकत्वे सुधिया विधेयस्त्रैराशिकेनैव विनिश्चयोऽयम् १४॥

जो षष्ठाष्टमस्थित चंद्रमाको शुभ ग्रह और पापग्रह दोनों बराबर देखते होंय तो वह बालक चौथे वर्षमें मृत्युको प्राप्त होताहै और जो कमती शुभग्रह देखते होंय पापग्रह ज्यादे देखते होंय वा पापग्रह कमती देखते होंय और शुभग्रह ज्यादे देखते होंय तो गेराशिक गणितसे अरिष्ट विचार करना चाहिये ॥ १४ ॥

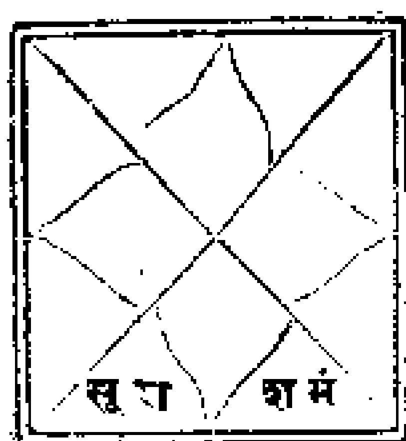
षष्ठेऽष्टमे मासि मरणयोगः १५

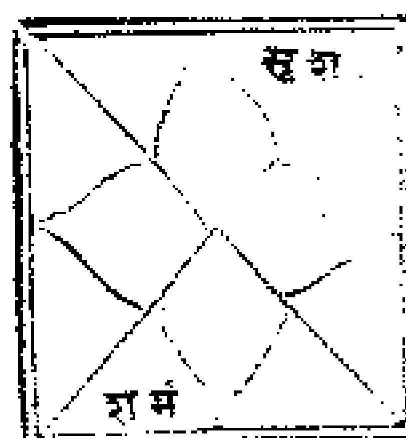


षष्ठेष्टमे मासि मरणयोगः १५



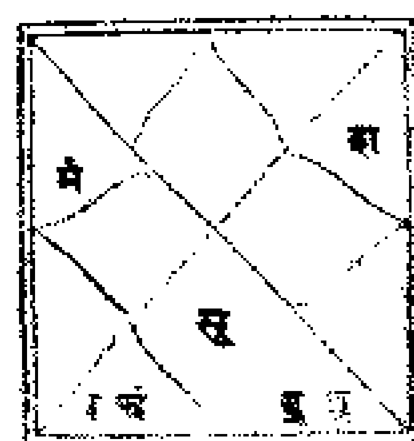
धनांतगैर्वाऽरिमृतिस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा ॥ क्रूरग्रहै यो जननं प्रपन्नः षष्ठेष्टमे मासि मृतिं प्रयाति ॥ १५ ॥





जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह दूसरे बारहें बैठे होंय 'एको योगः' अथवा छठे आठवें बैठे होंय 'द्वितीयो योगः' अथवा अष्टम नवममें बैठे होय तो 'तृतीयो योगः' अथवा छठे बारहें स्थानमें बैठे होंय तो वह बालक छठे वा आठवें महीनेमें मरताहै ॥ १५ ॥

मासेन मृत्युयोगः १६



षष्ठाष्टमस्था शुभखेचरेंद्रा विलोमगैः पापखगैः प्रदृष्टाः ॥ शुभैरदृष्टा यदि ते भवंति मासेन नूनं निधनं तदानीम् ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे होंय और वक्री होकर पापी ग्रह देखते होंय और शुभ ग्रह नहीं देखते होंय तो वह मनुष्य एक मासमें मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥

अथ राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः ।

समानवर्षेमृत्युयोगः १७

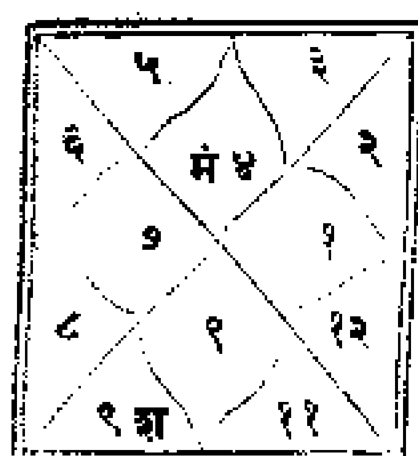


विलग्नजन्माधिपती भवेतामस्तंगतावष्टरि-पुव्ययस्थौ ॥ जातस्य जंतोर्मरणप्रदौ तौ वदंति राशिप्रमितैर्हि वर्षैः ॥ १७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्न और जन्मराशिका स्वामी छठे आठवें बारहें अस्तगत होकर बैठे होंय तो वह बालक राशिके तुल्य वर्षोंमें मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ १७ ॥

अथ राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः ।

चतुर्थमासे मरणयोगः १८



होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टः चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः ॥ जन्मेश्वरस्तन्निधने दिनेशःशुक्रेक्षितोऽब्दैर्भवनप्रमाणैः॥ १८॥

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः १८



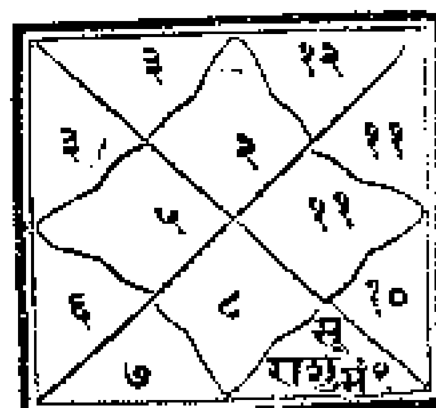
जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी अष्टम बैठा होय और पापग्रहों करके दृष्ट होय तो वह चौथे मासमें मृत्युको प्राप्त होताहै और जन्मलग्नका स्वामी अष्टम बैठा होय और शुक्र सूर्य करके दृष्ट होय तो वह बालक राशिके समान वर्षोंमें मृत्युको प्राप्त होताहै १८

शीघ्रमृत्युयोगः १९



होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य ॥ मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापान्वितो रंध्रगृहाश्रितश्च ॥ १९ ॥

मासेनमरणयोगः १९

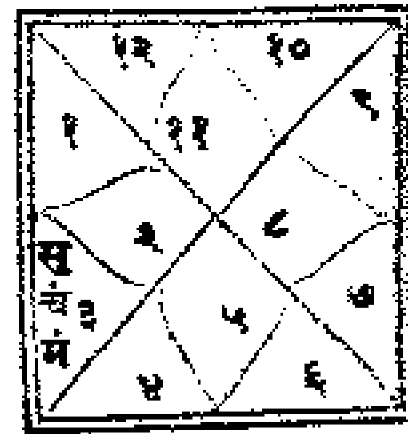


जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नका स्वामी पापग्रह सहित सप्तम बैठा होय तो वह बालक शीघ्र मरजाता है (एको योगः) और लग्नेश पापग्रह सहित अष्टमभावमें बैठा होय तो एक मासमें बालक मरजाताहै ॥ १९ ॥

अथ नवमाऽब्दे मृत्युयोगः ।

युक्तो भवेदारदिवाकराभ्यां निशाकरश्चारुखगैर्न दृष्टः ॥ स्वसूनुगेहोपगतो विनाशं करोति वर्षे नवमेऽर्भकस्य ॥ २० ॥

नवमाऽब्देमृत्युयोगः २०



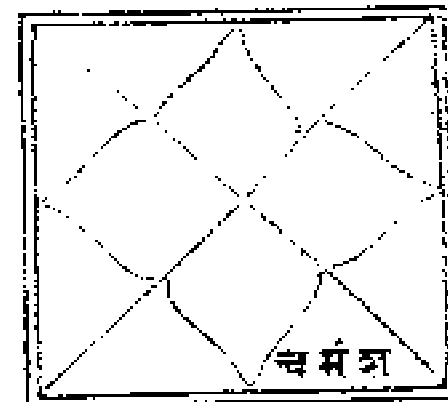
जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा सूर्य मंगल करके सहित, पंचम स्थानमें बुधकी राशिमें बैठा होय तौ वह मनुष्य नवम वर्षमें मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २० ॥

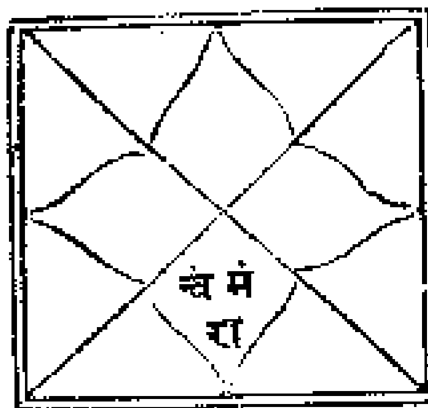
शीघ्रमरणयोगः २१



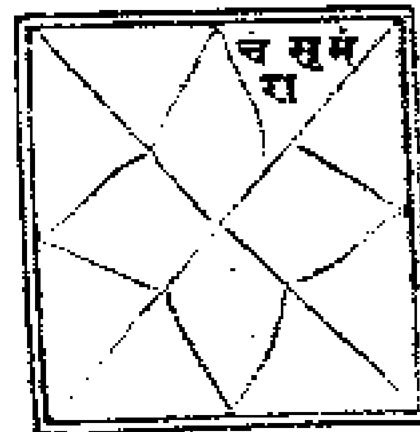
लग्नास्तरंध्रान्त्यगते शशांके पापान्विते सौम्यखगैरदृष्टे ॥ केंद्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति ॥ २१ ॥

शीघ्रमरणयोगः २१





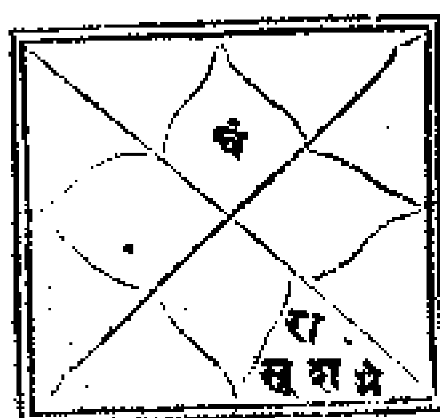
जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न सप्तम अष्टम चंद्रमा पापग्रहों करके सहित बैठा होय और शुभग्रहोंसे अदृष्ट होय और कोई शुभग्रह केंद्रमें न बैठे होय तौ वह बालक यमलोकको शीघ्र ही जाता है ॥ २१ ॥



अथ शीघ्रमृत्युयोगः ।

रन्ध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात् ॥ कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति यः प्रसूतः ॥ २२ ॥

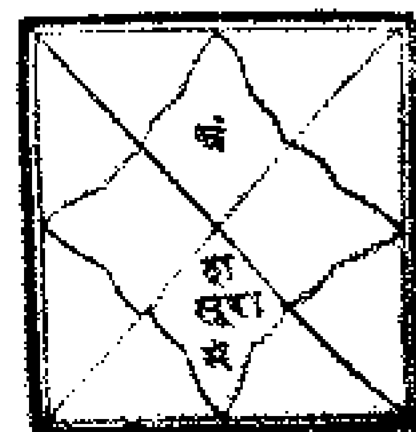
शीघ्रमृत्युयोगः



शी.



शी.



की.



शी.



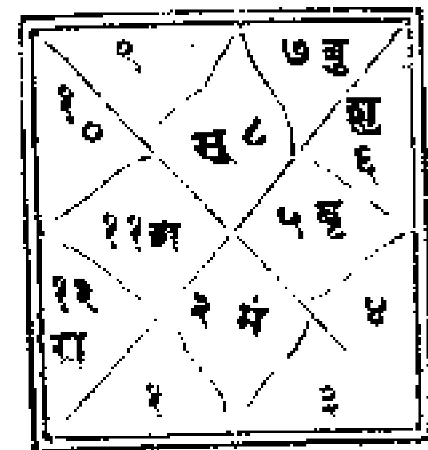
जिस बालकके जन्मकालमें अष्टम वा केंद्रस्थानमें पापग्रह बैठे होंय और क्षीण चंद्रमा लग्नमें बैठा होय तौ वह बालक शीघ्रही नष्ट होजाता है २२

अथ वज्रमुष्टियोगः

वज्रमुष्टियोग: २३



वज्रमुष्टियोग: २३



लग्ने कुलीरेप्यथवा लिसंज्ञे खलग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः ॥ सौम्यः परार्धे खलु वज्रमुष्टियोगोयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम्२३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्न कर्क वा वृश्चिक होय और पापग्रह लग्नसे लेकर सातवें भावतक बैठे होंय और शुभग्रह सातवें घरसे लेकर लग्नपर्यंत बैठे होंय तौ वज्रमुष्टि नाम योग होताहै इसमें पैदा हुआ बालक अरिष्टको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

शीघ्रमृत्युयोग: २४

व्ययारिरंध्रेषु शुभाभिधानास्त्रिकोणकेंद्रेषु भवंति पापाः ॥ सरोजबन्धोरुदये प्रसूतिर्यस्याऽन्यलोकं त्वरया स याति ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बारहें और छठे आठवें शुभ ग्रह बैठे होंय और त्रिकोण केंद्रमें पापग्रह बैठे होंय और चंद्रमा लग्नमें बैठा होय तौ वह बालक शीघ्रही मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २४॥

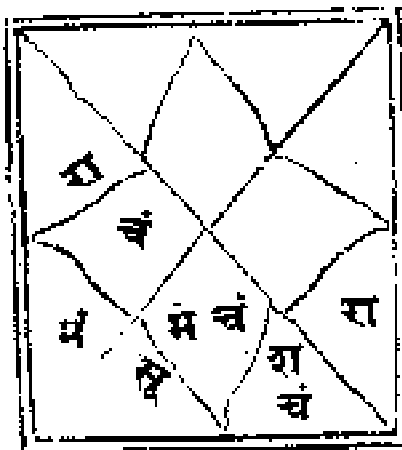
एकादशाब्देमृत्युयोग: २५



सौरस्यालयसंस्थो देवगुरुर्निधनभावगो लग्नात् ॥ पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशे हि तुल्यः स्यात् ॥ २५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मकर वा कुंभराशिगत बृहस्पति अष्ट भावमें बैठा होय और पापग्रह लग्नको देखते होंय तौ वह बालक ग्यारहें दिन मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ २५ ॥

शीघ्रमरणयोगः २६



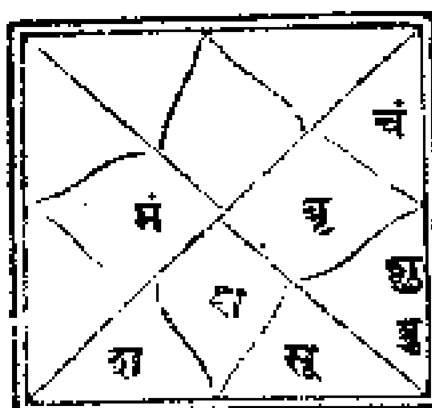
रंध्रांबुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापद्वय-
मध्ययाते ॥ यस्य प्रसूतिः स तु याति कामं
यमस्य धाम प्रवदंति पूर्वे ॥ २६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें अष्टम चतुर्थ सप्तम भावमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें बैठा होय वह बालक शीघ्रही यमलोकको जाताहै ॥ २६ ॥

संध्याद्वये भांत्यगताश्च पापाश्चंद्रस्य होरा यदि जन्मकाले ॥
चतुर्षु केंद्रेषु शशांकपापाः स याति बालः किल कालगेहम् २७

जिस बालकके सायं प्रातः कालकी संध्यामें जन्म होय और पापग्रह राशिके अंतमें बैठे होंय और चंद्रमाकी होरामें जन्म होंय और चंद्रमा करके सहित पापग्रह केन्द्रमें बैठे होंय तौ वह बालक शीघ्र मर जाता है ॥ २७ ॥

मातासहितमरणयोगः २८

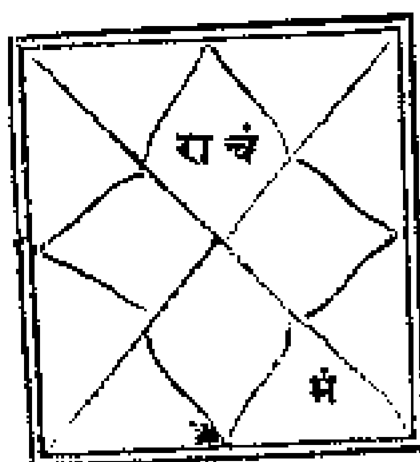


स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापेक्षिताः
साधुखगैर्न दृष्टाः॥करोति रिष्टं त्वरयाभकस्य
साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् ॥ २८ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सातवें आठवें पापग्रह बैठे होंय और पापग्रह देखते होय और शुभ ग्रह नहीं देखते होंय तौ वह बालक मातासहित अरिष्टको प्राप्त होताहै ॥ २८ ॥

अथ मात्रा सह मृत्युयोगः ।

मात्रा सह मरणयोगः २९



निजोपरागे त्वशुभान्विते-
न्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतो
ष्टमस्थः ॥ ततो जनन्या
सह बालकस्य मृत्युस्तथा-
र्के सति शस्त्रघातः ॥ २९ ॥

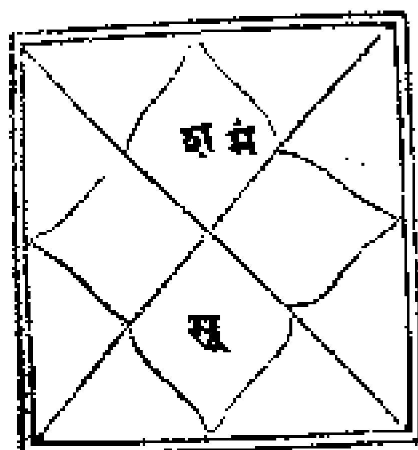
मात्रा सह मरणयोग ३०



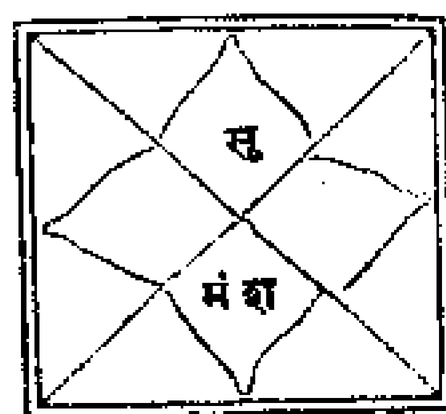
अपने ग्रहणके समय पापग्रहके सहित चंद्रमा लग्नमें बैठा होय और मंगल अष्टम बैठा होय तौ वह बालक मातासहित मृत्युको प्राप्त होताहै और सूर्य पापग्रह सहित लग्नमें बैठा

होय और मंगल अष्टम बैठा होय और सूर्य ग्रहणके समयका जन्म होय तौ वह बालक मातापरके सहित हथियारसे माराजाताहै ॥ २९ ॥

चिरेण मृत्युयोगः ३०

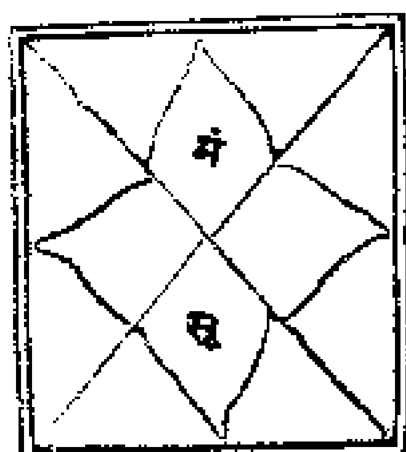


चिरेण मृत्युयोगः ३०

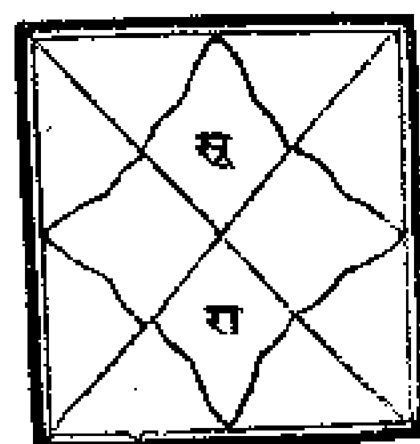


भमीसुते वार्कसुते वि-लग्ने भानौ स्मरस्थान-गतेन्यथा वा ॥ युक्ते तयोरन्यतमेन चंद्रे चिरेण मृत्युः परिवेदितव्यः ॥ ३० ॥

३०



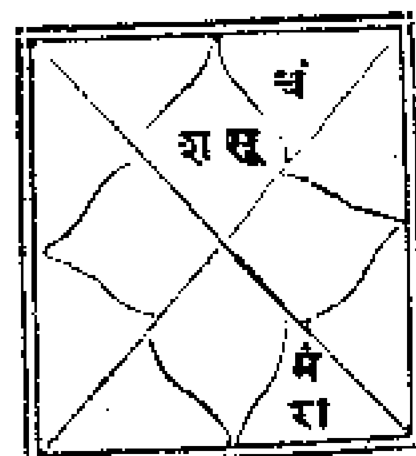
३०



जिस बालकके जन्मकालमें मंगल वा शनैश्चर लग्नमें बैठा होय और सूर्य सातवें बैठा होय अथवा लग्नमें सूर्य सातवें मंगल वा शनैश्चर बैठा होय और अन्यस्थानोंमें चंद्रमा बैठा होय तौ वह बालक थोड़े कालमें मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥

अथान्यरिष्टयोगः ।

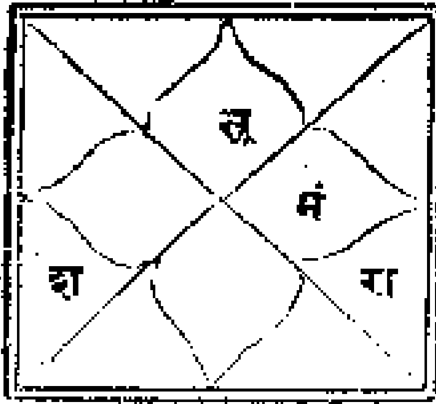
शीघ्रमरणयोगः ३१



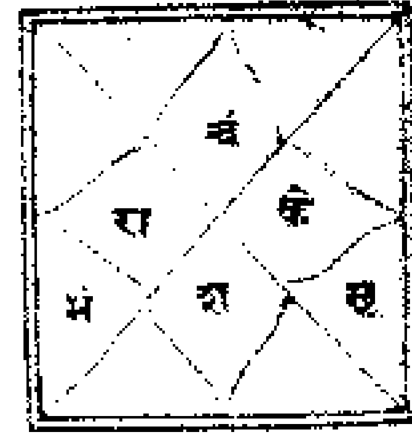
पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते ॥ केंद्रेषु सौम्या न भवंति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ॥ ३१ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्न और आठवें बैठे होयँ और क्षीण चंद्रमा बारहें बैठा होय और केंद्रमें शुभ ग्रह नहीं होयँ तौ वह बालक शीघ्र मरजाता है ॥ ३१ ॥

शीघ्रमरणयोग: ३२



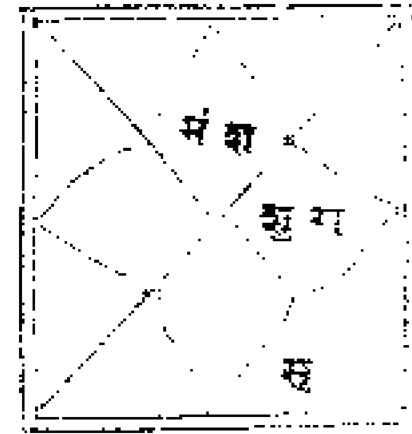
शीघ्रमृत्युयोग: ३२



त्रिकोणकेंद्रेषु भवंति पापाः शुभग्रहालोकनवर्जिताश्चेत्॥लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरे रिष्टसमुद्भवः स्यात् ॥ ३२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें पंचम नवम और केंद्रोंमें पापग्रह बैठे होयँ उनको शुभ ग्रह नहीं देखते होयँ और लग्नमें सूर्य अथवा चंद्रमा बैठा होय तो उस बालकको शीघ्रही रोग होताहै ॥ ३२ ॥

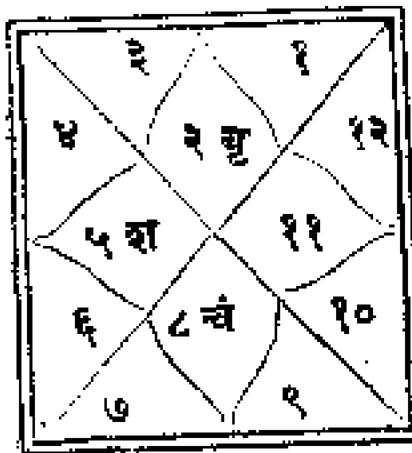
नवमवर्षे मृत्युयोग: ३३



भानुभानुतनयोशनसः स्युश्चेत्प्रसूतिसमये खलयुक्ताः ॥ यद्यपीड्यगुरुणा परिदृष्टा रिष्टदास्तनुभृतां नवमेद्रे ॥ ३३ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें सूर्य और शनिश्चर और शुक्र पापग्रहोंकरके युक्त होंय और उनको बृहस्पति नहीं देखता होय तो उस बालकको नवमवर्षमें रोग होता है ॥ ३३ ॥

नवमवर्षे मृत्युयोग: ३४



कामिनीभवनगस्तु हिमांशुर्लग्नगो मृतिपतिः शनिदृष्टः॥ रिष्टदो नवसमाभिरीडितो जातकज्ञमुनिभिः पुरातनैः ॥ ३४ ॥

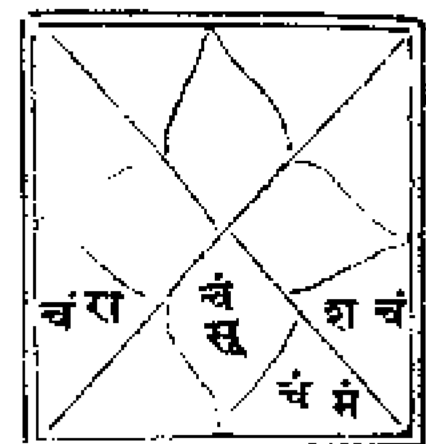
जिस बालकके जन्मकालमें सातवें चंद्रमा बैठा होय और लग्नम अष्टमभावपति बैठा होय उसको शनिश्चर देखता होय तौ उस बालकको नवमवर्षमें रोग होता है ॥ ३४ ॥

दृष्टेरिष्टे नाम दृष्टेस्यकाले प्रालेयांशौ स्वालयं वा विलग्नम् ॥ वीर्योपेतं संगते पापदृष्टे शक्त्या युक्ते मृत्युकालोब्दमध्ये॥३५॥

नहीं कहे हुये रिष्टकालमें एकवर्षमें रिष्ट करता है और जिस रिष्टयोगमें समयका नियम नहीं कहा है तिसमें योग करनेवाले ग्रहोंके बीचमें जो ग्रह बली होय तिसकी राशिमें च

चंद्रमा आवे तब मृत्यु करता है अथवा चंद्रमा जन्म लग्नमें जिस राशिका है उसी राशिमें वा लग्नमें फिर अपने चारकरके आवे तब मृत्यु करताहै अथवा बलवान् पापग्रह देखते होंय तब मृत्युको देता है ॥ ३५ ॥

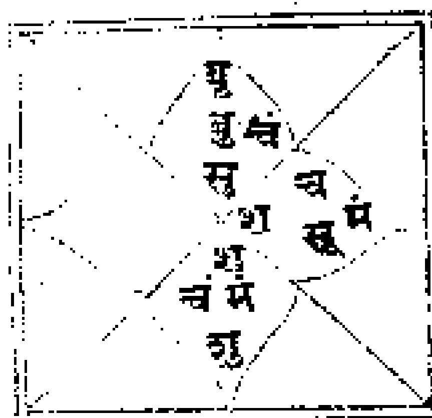
मृत्युयोगः ३६



लग्नत्रिकोणांतिमसप्तरंध्रे चंद्रे सपापेऽपचयं प्रयाते ॥ शुभैर्न युक्ते यदि न प्रदृष्टे रिष्टं भवेदत्र किमत्र चित्रम् ॥ ३६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न और पंचम नवम सातवें अष्टम चंद्रमा पापग्रहों करके सहित हो न तो शुभ ग्रह देखते होंय और न शुभग्रह युक्त होंय तौ उसकी मृत्यु होय इसमें क्या आश्चर्य है ॥ ३६ ॥

पंचमेऽब्दे मृत्युयोगः ३७



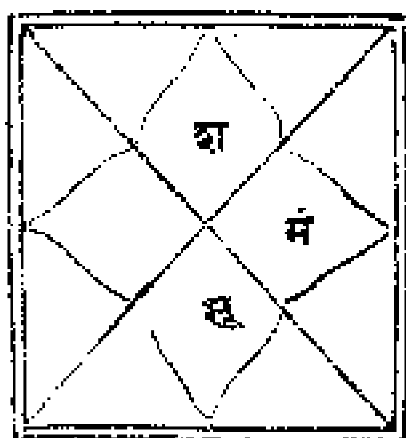
सूर्यज्ञजीवाः शनिभौमशुक्राः सूर्यारमंदाश्च यदीन्दुयुक्ताः ॥ प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युर्नाशः शिशोरब्दकपंचकेन ॥ ३७ ॥

जिस बालके जन्मकालमें सूर्य बुध बृहस्पति चंद्रमा एकभावमें पडें (एको योगः) अथवा शनि मंगल शुक्र चंद्रमा एकभावमें पडें (द्वितीयो योगः) अथवा सूर्य, मंगल, शनिश्चर चंद्रमा एकभावमें बैठे होंय तौ वह बालक पांचवे वर्षमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥

विलग्ननाथो भवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः ॥ मासैर्दृकाणाधिपतिर्लवेशो दिनैर्मुनींद्राः प्रवदंति सर्वे ॥ ३८ ॥

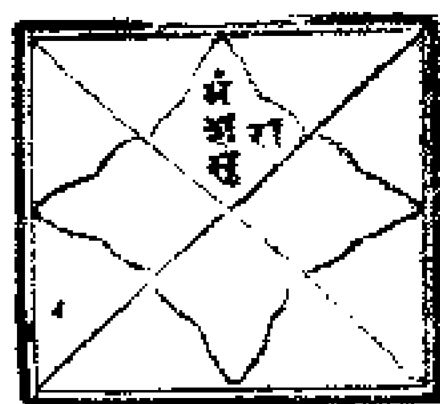
जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी छठे बैठा होय तौ जिसराशिमें बैठा होय उस राशिप्रमाण वर्षोंमें मृत्यु करता है और द्रेष्काणका स्वामी छठे बैठा होय तौ उतने महीनोंमें मृत्यु करता है और नवांशपति छठे बैठा होय तौ उतने दिनोंमें मृत्यु करता है ये सब मुनीश्वरोंने कहा है ॥ ३८ ॥

षोडशाहे मृत्युयोगः ३८



लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशं खलु षोडशाहात् ॥ करोति मासेन च पापयुक्तः पापैर्विनाशं खलु वत्सरेण ॥ ३९ ॥

षोडशाहे मृत्युयोगः ३९



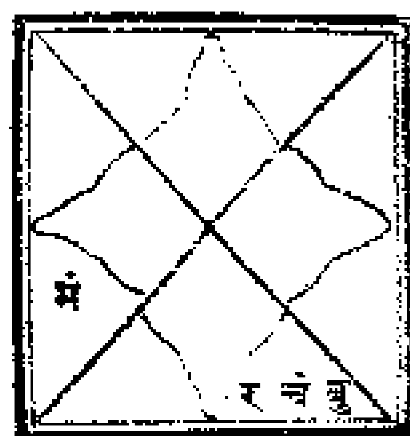
जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्नमें शनैश्चर बैठा होय और पापग्रह उसे देखते होंय तौ वह सोलहें दिनमें मरता है और लग्नमें पापग्रह करके युक्त शनैश्चर बैठा होय तौ महीने भरमें मरजाता है और पापग्रहों करके युक्त न होय और न पापग्रह देखते होंय तौ साल भरमें मरता है ॥ ३९ ॥

रवींदुयुक्पापनिरीक्षितोज्ञश्चैकादशाब्दैः कुरुते विनाशम् ॥ लग्नेर्कमन्दावनिजाः कृशेन्दुः स्मरे षडब्दैरथसप्तभिर्वा ॥ ४० ॥

सप्तमाब्दे मृत्युयोगः



एकादशाब्दे मृत्युयोगः ४१



जिस बालकके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा करके युक्त बुध पापग्रहों करके दृष्ट होय तौ ग्यारहें वर्षमें वह बालक मरताहै जिसके जन्मलग्नमें सूर्य शनैश्चर मंगल बैठे होय और क्षीण चंद्रमा सातवें बैठा होय तौ छठे वा सातवें वर्षमें मृत्यु करता है ॥ ४० ॥

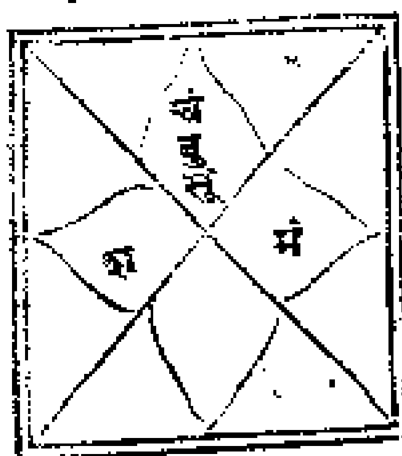
कृशः शशांकः स्मरगो विलग्ने मंदारशुक्रा गुरुदृष्टिहीनाः ॥ विनाशनं तेब्दकसप्तकेन कुर्वंति जातस्य विनिश्चयेन ॥ ४१ ॥

सप्ताब्दे मृत्युयोगः



जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा सातवें बैठा होय और लग्नमें शनि मंगल बैठे होंय और शुक्र बृहस्पतिकी दृष्टिसे हीन होंय तौ वह बालक सातवें वर्षमें मरता है ॥ ४१ ॥

द्विवर्षेन्दे मृत्युयोगः



चंद्रः सचान्द्रिर्यदि केंद्रसंस्थः सूर्यांशुलुप्तः कुजमंददृष्टः ॥ वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वशिष्ठादय एवमूचुः ॥ ४२ ॥

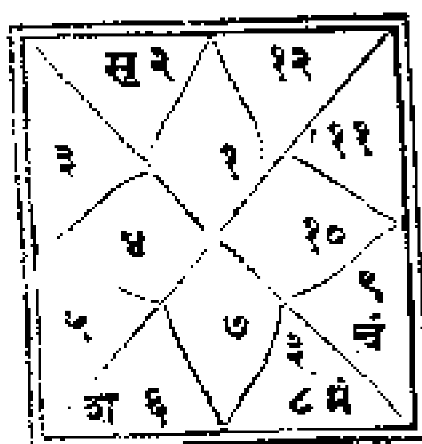
जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा बुध केंद्रमें बैठे होय और सूर्य करके लुप्त होवे वह बालक दो वर्षमें मरताहै जो मंगल शनैश्चर देखते होय यह स्पष्ट वशिष्ठादिक आचार्योंने कहा है ॥ ४२ ॥

वर्षद्वयांते रिष्टयोगः ४३

निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतां प्रयातः ॥ क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्न दृष्टो वर्षद्वयांते स करोति रिष्टम् ॥ ४३ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रमा लग्नेशसे अष्टम बैठा होय और क्षीण होय और शुभग्रह नहीं देखते होंय और पापग्रह देखते होंय तो वह बालक दो वर्षमें मरजाता है ॥ ४३ ॥

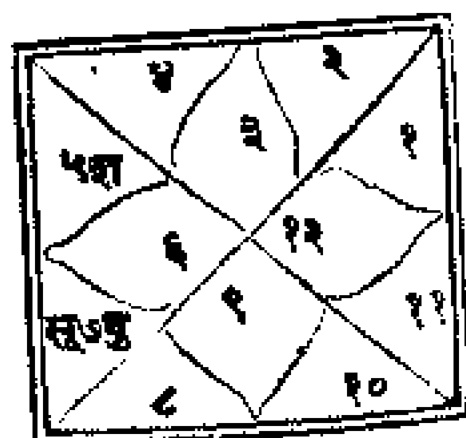
नवमाब्दे मृत्युयोगः



लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चंद्रस्य च द्वादशगः शशांकात्॥पापेक्षितो मारयति प्रसूतौ शिशुं नवाब्दैः खलु कीर्तयंति ॥ ४४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी पापग्रह होवे और चंद्रमाके नवांशमें बैठा होय और चंद्रमासे बारहें बैठा होय और पापग्रह देखते होंय तो वह बालक नवम वर्षमें मरता है ॥ ४४ ॥

राशिसमानवर्षे मृत्युयोगः

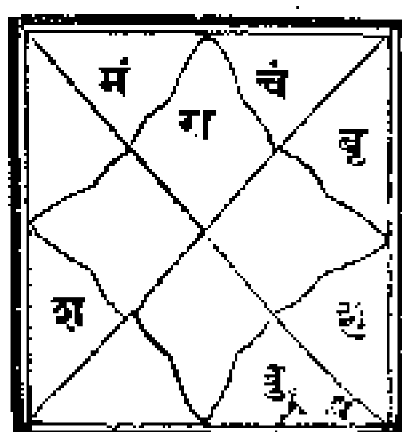


लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमेश्वरेण प्रविलोक्यमानः ॥ रिष्टंकरो राशिसमानवर्षैः प्राज्ञैरुदाहारि नरस्य जन्म ॥ ४५ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नका स्वामी सूर्य करके लुप्त होवे और अष्टमेश करके दृ० होय तो जिसराशिमें लग्नेश बैठा

होय उस राशिके समान वर्षोंमें उस बालकको रिष्ट होता है पंडितजन मनुष्योंके जन्मकालमें कहते हैं ॥ ४५ ॥

सप्तमाब्देमृत्युयोगः

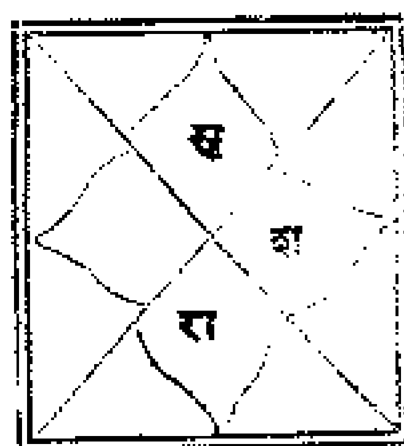


अदृश्यभागे यदि पापखेटा दृश्ये विभागे शुभदा भवंति ॥ स्वर्भानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽङ्कसप्तकं हि ॥ ४६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह लग्नसे सातवें भावतक बैठे होय और शुभ ग्रह सातवें भावसे लग्नपर्यंत बैठे होय और लग्नमें राहु बैठा होय तौ वह बालक सातवें वर्षमें मरता है ॥ ४६ ॥

अथ द्वादशाब्दे मृत्युयोगः।

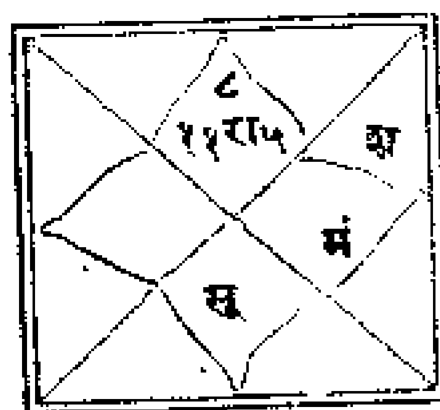
द्वादशाब्दे मृत्युयोगः



सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थः शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत् ॥ नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादश यःप्रसूतः ४७

जिस मनुष्यके जन्मकालमें राहु सातवें बैठा होय उसको शनैश्चर और सूर्य देखता होय और शुभग्रह कोई नहीं देखता होय तौ वह बालक बारहें वर्षमें मरजाता है ॥ ४७ ॥

सप्तमाब्दे मृत्युयोगः ४७



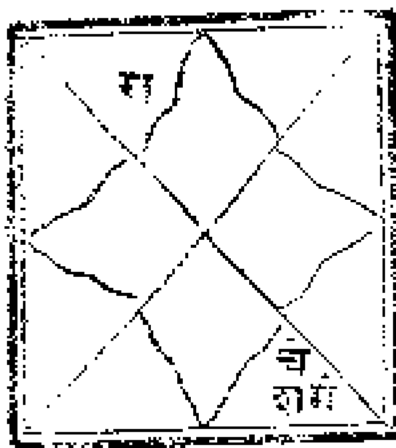
सिंहालिकुंभस्थितसैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्यदि स्यात् ॥ वर्षाणि सप्तैव तदीयमायुः प्रकीर्तितं जातकशास्त्रविद्भिः॥४८॥

जिस बालकके जन्मकालमें सिंह कुंभ वृश्चिक राशिमें राहु बैठा होय और उसको पापग्रह देखते होंय तौ वह बालक सात वर्षतक जीता है यह जातकग्रंथोंके जाननेवाले कहते हैं॥ ४८ ॥

केतूदयः स्यात्प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवंति ॥ यो रौद्रसार्पाख्यमुहूर्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममंदिरं सः ॥४९॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें धूमकेतुके तारेका उदय होय और जन्मसे पहिले वा पीछे निर्घात शब्द होय अथवा प्रचंड वायु चले अथवा वज्रपात होय अथवा जन्मसमयमें रौद्र सर्प मुहूर्त होय ऐसे समयमें उत्पन्न बालक शीघ्रही यमलोक जाता है ॥ ४९ ॥

अल्पदिनैर्मृत्युयोगः ५०



चंद्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा ॥ दिनैः स्वल्पतरैर्बालः कालस्यालयमाव्रजेत् ॥५०॥

जिस बालकके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा पापग्रहोंकरके युक्त होय उसको राहु देखताहोय वह बालक थोडेही दिनमें यमलोक जाता है ॥ ५० ॥

मातंगै ८ र्नभभिश्च ९ रामनयनै २३ र्नेत्राश्विभिः२२ सायकै ५ रेकेनां १ बुधिभि ४ स्त्रिलोचनमितै २३ र्धृत्या १८ च विंश २० न्मितैः ॥ भूनेत्रै २१ र्दशभि १० र्लवैर्यदि भवेन्मेषादिसंस्थो विधुर्वैषैभांगसमैः करोति निधनं कालोऽयमज्ञोदितः ॥ ५१ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणेऽरिष्टयोगाध्यायः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म मेषके आठवें अंशमें और वृषके नवमें अंशमें और मिथुनके तेईसवें और कर्कके बाईसवें सिंहके पांचवें और कन्याके पहिले तुलाके चौथे और वृश्चिकके २३ धनके १८ मकरके २० कुम्भके २१ और मीनराशिके दशवें अंशमें होय तौ वह बालक मृत्युको प्राप्तहोता है ॥ ५१ ॥

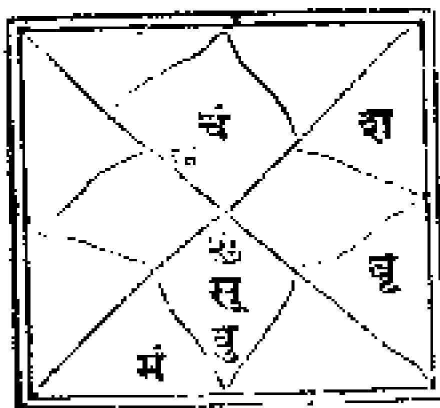
इति श्रीवंशबरेलीस्थराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां रिष्टवर्णनाध्यायः ॥ १५ ॥

अथ रिष्टभंगाध्यायप्रारंभः।

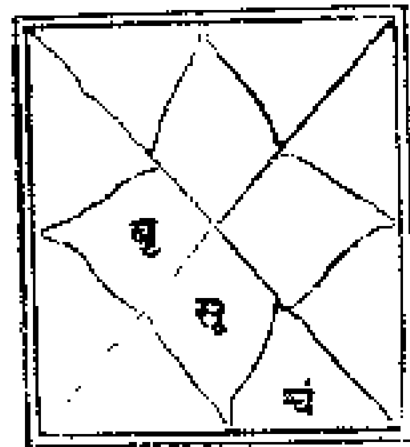
होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदिष्टाः॥
ते रिष्टभंगे यदि नो समर्थाः स रिष्टभंगोप्यभिधीयते ततः॥ १॥

अब अरिष्टभंग योग कहते हैं ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंसे बहुत प्रकार करके अरिष्ट योग कहेगये हैं उन अरिष्टयोगोंके भंग करनेमें जो योग समर्थ होंय सो अरिष्टभंग योग कहते हैं॥ १॥

अरिष्टनाशयोगः १

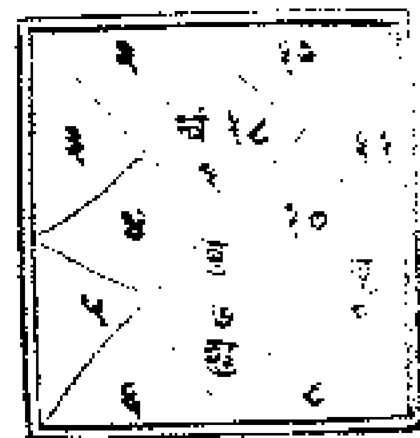


अरिष्टनाशयोगः २



पूर्णे कैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा रिष्टं हंत्यत्यथवा सुहृद्वर्गगतः सद्वीक्षितोऽतिप्रभः॥ क्षीणोवापि निजोच्चगः शुभखगैः शुक्रेण च प्रेक्षितो रिष्टं यः समुपागतं स तु हरेत्सिंहो यथा सिंधुरम्॥ २॥

अरिष्टनाशयोगः ३

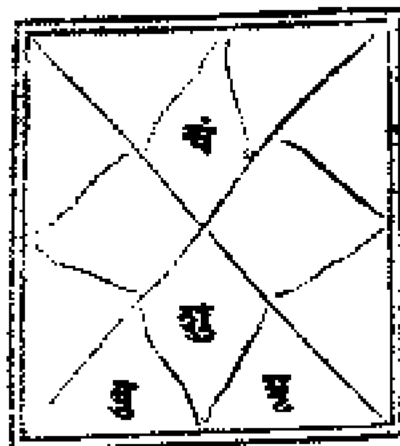


अरिष्टनाशयोगः ४

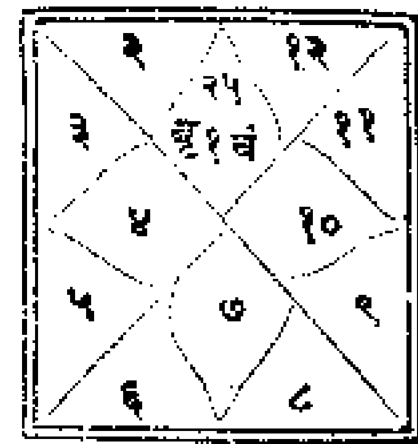


जिस मनुष्यके जन्मकालमें पूर्ण चंद्रमाको संपूर्ण ग्रह देखते होंय वह सब अरिष्टोंको नाश करता है (एको योगः) और जो चंद्रमा मित्रग्रहके नवांशमें बैठाहोय उसको शुभ ग्रह देखते होय तौभी अरिष्टोंको नाश करता है (द्वितीयो योगः) और जो क्षीण चंद्रमा भी होय उसको शुभग्रह देखतेहोय तौभी रिष्टोंका नाश करता है और अपने उच्चमें प्राप्त चंद्रमाको शुक्र देखताहोय तौभी अरिष्टोंको नाश करता है॥ २॥

रिष्टनाशयोगः ३



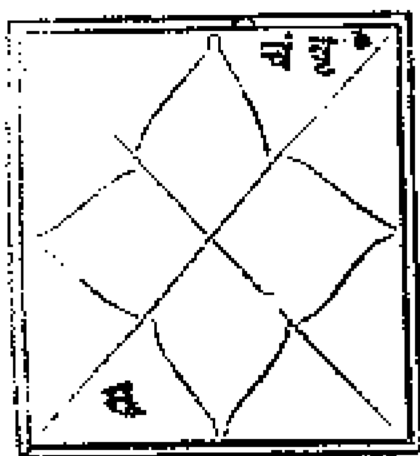
अरिष्टभङ्गयोगः ३



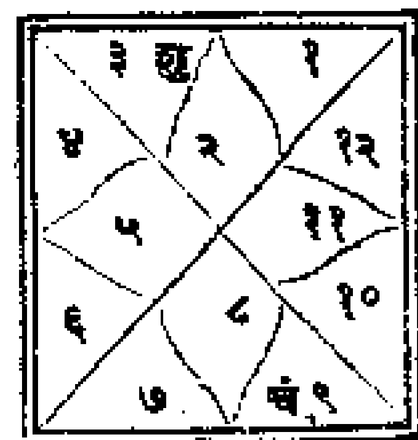
रिष्टं निहन्युः शुभदाः शशांकात्पापैर्विनास्ते-ष्टमशत्रुसंस्थाः ॥ शुभा-न्वितः साधुदृकाणवर्ती पीयूषमूर्तिः शमयेत्सरिष्टम् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे सातवें आठवें छठे शुभग्रह बैठे होंय तौ अरिष्टका भंग करते हैं अथवा शुभग्रहों करके सहित चंद्रमा शुभग्रहके द्रेष्काणमें बैठा होय तौभी रिष्टयोगोंका भंग करता है ॥ ३ ॥

अरिष्टनाशयोगः ४



रिष्टनाशयोगः ४



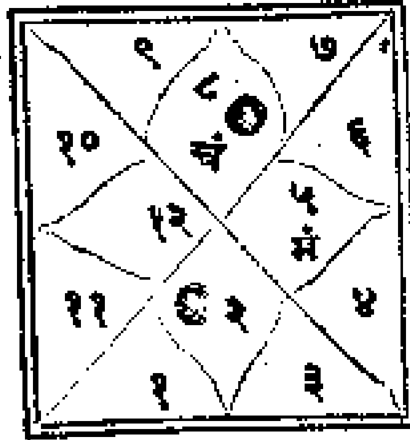
शुभग्रहा द्वादभावसंस्थाः पूर्णः शशी रिष्टहरः प्र-दिष्टः ॥ लग्नेशदृष्टः शु-भराशियातो नान्येक्षि-तो रक्षति रिष्टयोगात् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह और पूर्ण चंद्रमा बारहें बैठे होंय तौ भी रिष्टयोगको नाश करता है अथवा पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रहके द्वादशांशमें बैठाहोय तौभी रिष्टनाश करता है और जो शुभग्रहकी राशिमें चन्द्रमा बैठाहोय और उसको लग्नेश देखताहोय तौभी रिष्टोंको नाश करता है ॥ ४ ॥

वलक्षपक्षे यदि जन्म रात्रौ कृष्णे दिवाष्टारिगतोपि चंद्रः ॥ क्रमेण दृष्टः शुभपापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यका जन्म शुक्ल पक्षमें रात्रिके समय होय और कृष्णपक्षमें दिनको होय और क्रमकरके शुभग्रह और पापग्रहों करके चंद्रमा दृष्ट होय तौ वह चन्द्रमा पिताकी तरह बालकको पालता है ॥ ५ ॥

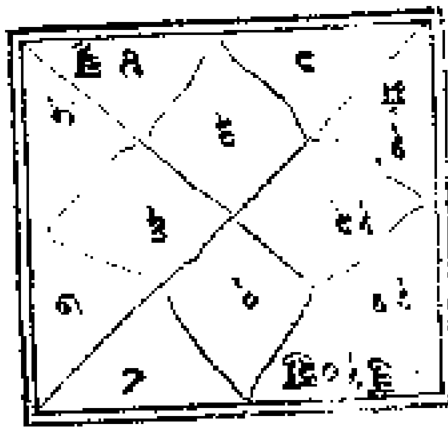
अरिष्टनाशयोगः



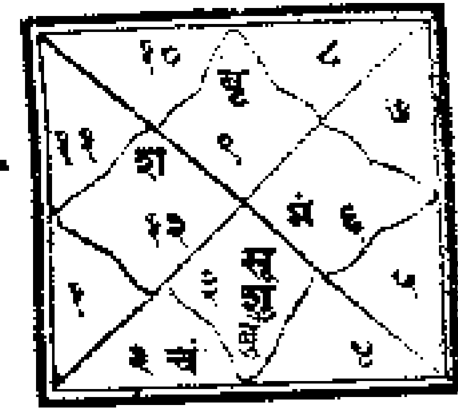
स्थितः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशीश्वरेणापि विलोकितश्च ॥ तद्वर्गगो वा यदि तेन युक्तः कुर्यादलं मंगलमेव नान्यत् ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहकी राशिमें बैठाहोय और राशीश्वर करके दृष्ट होय अथवा राशीश्वरके षड्वर्गमें बैठा होय वा राशीश्वर करके युक्त होय तो सब रिष्टोंका नाश करके मंगल करता है ॥ ६ ॥

रिष्टनाशयोगः ७



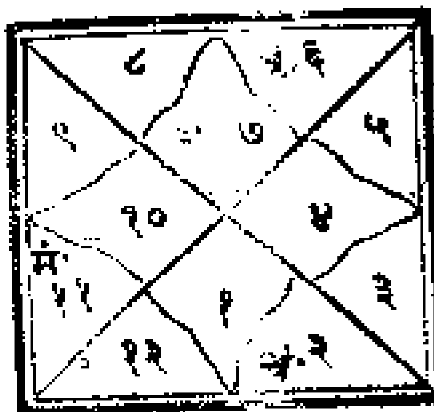
रिष्टनाशयोगः ६



जन्माधिपालो बलवान्किल स्यात्सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः ॥ यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो रिष्टं हि चंद्रेण कृतं निहंति ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होवे और शुभग्रह अथवा मित्रग्रहोंकरके दृष्ट होवे (एको योगः) अथवा लग्नेश लग्नमें बैठाहोय और सब ग्रहोंकरके दृष्ट होय तो चंद्रकृत अरिष्टोंको नाश करता है ॥ ७ ॥

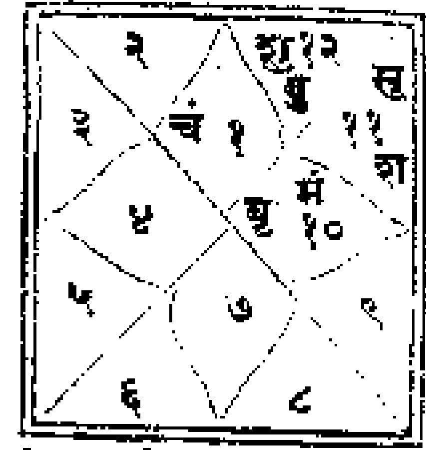
रिष्टनाशयोगः



स्वोच्चे स्वभे वा यदि वात्मवर्गे स्थितो हितानां च सतां प्रदृष्टः ॥ शुभैर्न पापारियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्णकलः कलावान् ॥ ८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने उच्चमें अथवा अपनी राशिमें अथवा अपने षड्वर्गमें चंद्रमा बैठाहोय और मित्र ग्रहों करके और शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट होय तो वह चंद्रमा रिष्टोंको नाश करता है ॥ ८ ॥

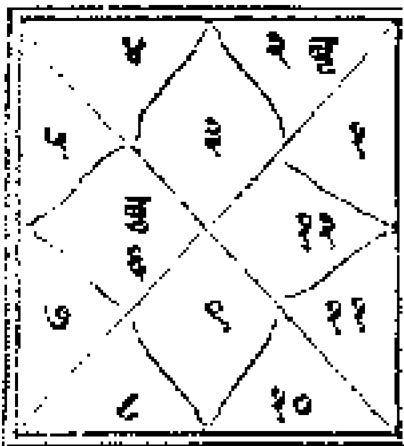
रिष्टभंगयोगः



वाचामधीशो दशमेशशांकाद्व्यये ज्ञशुक्रौ च खलः किलाये ॥ विलग्नपाव्यंबुदशांत्यलाभे शुभेक्षितेंदुश्च हरेत्सरिष्टम् ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमासे बृहस्पति दशवें बैठाहोय और बारहें बुध शुक्र बैठे होंय और पापग्रह ग्यारहें बैठे और लग्नका स्वामी तीसरे वा चौथे वा दशवें या बारहें या ग्यारहें बैठाहोय और शुभग्रह चंद्रमाको देखते होंय तौ रोगोंको नाश करता है ॥ ९ ॥

अरिष्टनाशयोगः १०



प्रसूतिकाले यदि जन्मपालः किलेक्षितो निर्मलखेचरैश्च ॥ बलाधिशाली प्रलयं करोति रिष्टस्य शीतांशुसमुद्भवश्च ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होय और उसको शुभग्रह देखते होंय तौ चंद्रकृत रिष्टोंको नाश करता है ॥ १० ॥

भवेन्निशा जन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा ॥ तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशांको निधनं निहंति ॥ ११ ॥

जिस बालकका रात्रिका जन्म होय और वृष वा कर्कराशिगत चंद्रमा बैठा होय अथवा वृष कर्कके नवांशमें होय शुभग्रहों करके दृष्टपूर्ण चंद्रमा होय तो अरिष्टयोगोंको नाश करताहै ॥ ११ ॥

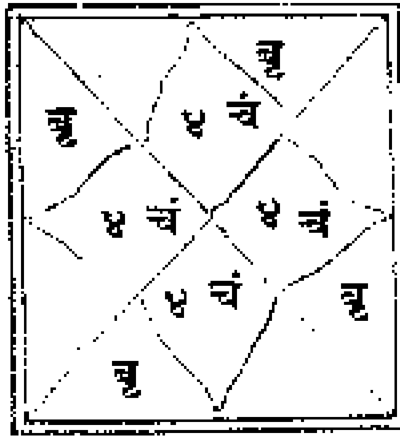
दास्रेग्निभे वा गुरुभे शशांके वर्गोत्तमे पूर्णकलाकलापे ॥ त्रिपुष्करे शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्याशु लयं प्रयाति ॥ १२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रमा अश्विनी कृत्तिका पुष्य नक्षत्रका होय अथवा वर्गोत्तमी होय अथवा त्रिपुष्कर योगका चंद्रमा हो तो सब अरिष्टोंका नाश करताहै ॥ १२ ॥

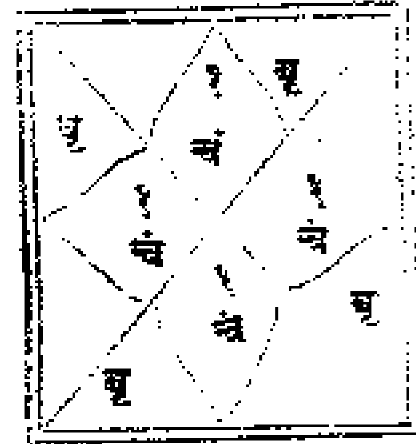
पादे द्वितीये यदि वा तृतीये पुष्यस्य ताराधिपतिर्यदि स्यात् ॥ वा रोहिणीनां चरणे द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् १३

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रमा पुष्य नक्षत्रके दूसरे वा तीसरे चरणका होय अथवा रोहिणी नक्षत्रके द्वितीय चरणका होय और शुभग्रहों करके दृष्ट होय तो वह चंद्रमा मृत्युदोषसे रक्षा करताहै ॥ १३ ॥

रिष्टहंतृयोगः १४



रिष्टभंगयोगः १४



कुलीरमेषगश्चंद्रः केंद्रस्थः शुभवीक्षितः ॥ ग्रस्तोऽपि रिष्टभंगाय भवेदत्र न संशयः ॥ १४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें कर्क-वा मेष राशिगत चंद्रमा केंद्र १ । ४ । ७ । १० में बैठाहोय और शुभग्रह देखते होंय तो वह बालकके बड़े रिष्टोंको दूर करताहै ॥ १४ ॥

केंद्रेषु चेदम्बरमार्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगो विलग्ने ॥ क्षीणोऽपि चंद्रः स्मरभावसंस्थः संप्राप्तरिष्टं शमयेदवश्यम् ॥ १५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे चंद्रकृद्रिष्टभंगाध्यायः ॥ १६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें केंद्रमें १ । ४ । ७ । १० दो दो ग्रह बैठे होंय और लग्नमें शुभग्रह होय और क्षीण चंद्रमा भी सातवें बैठा होय तो अरिष्टको भंग करताहै ॥ १५ ॥

इति श्रीवंशबरेलिस्थराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां चंद्रकृद्रिष्टभंगवर्णनाध्यायः ॥ १६ ॥

अथ सर्वग्रहरिष्टभंगाध्यायप्रारंभः ।

मरीचिमालामलकांतिशाली प्रसूतिकाले प्रबलो यदि स्यात् ॥ बृहस्पतिर्मूर्तिगतो निहंति रिष्टानि नूनं मुनयो वदंति ॥ १ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें निर्मल किरणोंवाला प्रकाशवान् बृहस्पति लग्नमें बैठा होय तो उस बालकके सम्पूर्ण अरिष्टोंका नाश करताहै ये मुनीश्वर कहते हैं ॥ १ ॥

पापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते ॥
निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः सक्षीयते रिष्टमुपागतं वै ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रह बलहीन होंय और शुभग्रह पूर्ण बली होंय और लग्नमें शुभ ग्रहोंकी राशि होय और लग्नको शुभ ग्रह देखते होंय तो सम्पूर्ण रिष्टयोगोंका नाश होताहै ॥ २ ॥

सौम्यवर्गाश्रिताः पापाः सौम्यवर्गाश्रितैः शुभैः ॥
दृष्टा अपि प्रकृष्टं ते रिष्टं नाशयितुं क्षमाः ॥ ३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रहोंकी राशिमें पापग्रह बैठे होंय और शुभग्रह शुभराशियोंमें बैठकर उन पापग्रहोंको देखते हों तो अरिष्ट दूर होजाताहै ॥ ३ ॥

मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडायगो रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः ॥
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न यातैरशेषखेटैः किल रिष्टभंगः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे छठे और ग्यारहें राहु बैठा होय और उसको शुभ ग्रह देखते होंय तो सब रिष्टोंको नाश करताहै और जिस मनुष्यके सम्पूर्ण ग्रह ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११ राशियोंमें बैठे होंय तो भी रिष्टोंको नाश करते हैं ॥ ४ ॥

प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभो हरेद्रिष्टमपापदृष्टः ॥
कश्चिद्ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैः प्रदृष्टः किल रिष्टभङ्गः ॥ ५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रह जयको प्राप्तहोंय और उनको शुभग्रह देखते होंय और कोई ग्रह अस्तको भी प्राप्तहोय और पापग्रह देखते होंय तो भी रिष्टभंग करता है ॥ ५ ॥

रजोविहीनं गगनं च खस्थाः स्वस्था भवेयुर्जलदाः सुनीलाः ॥
मंदानिलाश्चेद्विमला मुहूर्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभङ्गः ॥ ६ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें आकाश साफ होय और ग्रह स्वस्थ होंय और मेघ नीलवर्णवाले साफ होंय मंद मंद पवन चलती होय और शुभ मुहूर्त होय ऐसे समयमें उत्पन्न बालकके सब रिष्ट भंग होते हैं ॥ ६ ॥

कुंभयोनेर्मुनीनां चेदुद्गमे जननं भवेत् ॥
विलीयते तदा रिष्टं नूनं लाक्षेव वह्निना ॥ ७ ॥

[illegible] बालकके जन्मकालमें अगस्त्यका तारा उदय होय ऐसे समय पैदा होय तो रिष्ट [illegible] होते हैं जैसे अग्नि करके लाख जलताहै ॥ ७ ॥

वृषाजकर्काख्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेदिष्टविनाशकर्ता ॥
शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युः तथापि रिष्टं विलयं प्रयाति॥८॥

जिस बालकके जन्मकालमें मेष वृष कर्क लग्न होय उसमें राहु बैठा होय तो रिष्ट नाश करताहै और जिसके जन्मकालमें बहुतसे शुभ योग होवें तो भी रिष्ट नाशको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै ॥
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेपि हरन्त्यरिष्टम् ॥ ९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें मकर कुंभ मीन राशियोंमें केतु तीसरे वा छठे वा ग्यारहें बैठा होय तो रिष्टोंको नाश करताहै और जिसके शुक्र बृहस्पति बुध पंचम नवम बैठे होंय तो भी रोगोंको नाश करता है ॥ ९ ॥

संध्याभवा वैधृतिपातभद्रागण्डांतयुक्ता अपि जन्मकाले ॥
भवंति रिष्टस्य विनाशनार्थं निरंतरा दृश्यदलेथ सर्वे ॥ १० ॥

जिस बालकका जन्म सायं वा प्रातः संध्यामें होय वा वैधृति व्यतीपातमें होय अथवा भद्रा गंडांतकालमें जन्म होय और सब ग्रह लग्नसे लेकर सातवें भावतक बैठे होंय तो सब रिष्टोंको नाश करताहै ॥ १० ॥

त्र्यायारितुंगेषु गतः पतङ्गो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्ता ॥
एकर्क्षगाः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेपि रिष्टं शमयंति खेटाः ११॥

जिस बालकके जन्मकालमें तीसरे छठे ग्यारहें उच्चराशिगत सूर्य बैठा होय और पापग्रहोंकरके ग्रसित न होय तो रिष्टोंको नाश करताहै और जिसके एक राशिमें छठे तीसरे ग्यारहें सब ग्रह बैठे होंय तो रिष्टोंको नाश करताहै ॥ ११ ॥

शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयो वाप्यनेकशः ॥
एकांतस्थास्तदा रिष्टभंगो भवति निश्चयात् ॥ १२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें चंद्रमासे वा लग्नसे दो वा तीन वा अनेक ग्रह एक राशिमें बैठे होंय तो रिष्टोंको निश्चयकर नाश करते हैं ॥ १२ ॥

पातालयातः प्रबलेंदुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले ॥
देवेंद्रमंत्री दलयत्यवश्यममङ्गलं रिष्टभवं क्षणेन ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चतुर्थ भावमें धन वा मीन राशिमें बृहस्पति बैठा होय उसे बलवान् चंद्रमा देखता होय तौ रिष्टोंका नाश करता है ॥ १३ ॥

लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः ॥
तत्कालमुद्भवाः खेटा रिष्टदारणकारिणः ॥ १४ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नमें कोई ग्रह बैठा होय और दूसरे बारहवें तीन तीन ग्रह बैठे होंय तो उस कालमें पैदाहुआ ग्रह रिष्टको नाश करता है ॥ १४ ॥

केन्द्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च ॥
शुभांशस्था ग्रहाः सर्वे रिष्टभंगकराः स्मृताः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें केंद्र१।४।७।१०वा अपोक्लिम३।६।९।१२ अथवा पणफर २। ५। ८।११ में जो सब ग्रह बैठे होंय और शुभ ग्रहके नवांशामें बैठे होंय तौ सम्पूर्ण रिष्टोंका नाश करते हैं ॥ १५ ॥

अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः ॥
स्वर्भानुसंयुताः खेटा रिष्टदोषापहारकाः ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें परस्पर चौथे ग्रह युग्मभावमें बैठे होयं और राहुकरके सहित होंय तौ रिष्टोंको नाश करते हैं ॥ १६ ॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोष्टमगो न कश्चित् ॥
त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दृशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥१७॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बलकरके युक्त शुभ ग्रह केंद्र १ । ४ । ७ ।१० में बैठे होंय और आठवें कोई ग्रह न होय तौ वह बालक तीस वर्ष जीता है और पूर्वोक्त योग कारक ग्रहोंको शुभ ग्रह देखते होंय तौ चालीस वर्षकी उमर होती है ॥ १७ ॥

निजत्रिभागेस्य गृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात्खलु सप्तविंशत् ॥
बृहस्पतिस्तुंगगतो विलग्ने भृगोः सुतः केंद्रगतः शतायुः ॥१८॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने द्रेष्काणमें बृहस्पति बैठा होय तौ सत्ताईस वर्षकी आयु कहना चाहिये और जिसके बृहस्पति उच्चमें बैठा होय और शुक्र केंद्रमें बैठा होय तौ वह सौ वर्ष जीता है ॥ १८ ॥

लग्ने स्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः ॥
मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥ १९ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्नमें उच्चका बलवान् चंद्रमा बैठा होय और शुभ ग्रह अपनी राशिमें बैठे होंय तौ साठ वर्षकी आयु कहना चाहिये और जो शुभग्रह अपने मूल त्रिकोणमें वा उच्चमें बैठे होंय तौ अस्सी बरसकी आयु कहना चाहिये ॥ १९ ॥

लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूरा स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ ॥
बलान्वितावंबरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनींद्रैः ॥२०॥

जिस बालकके जन्मकालमें लग्न और अष्टम छठे चंद्रमा न बैठा होय और पापग्रह अपनी राशिमें बैठे होंय और बलकरके सहित दो ग्रह दशममें बैठे होंय तो वह बालक सौ वर्षतक जीता है ॥ २० ॥

शून्ये रन्ध्रे केंद्रगैः सौम्यखेटैः लग्ने जीवे त्र्यारिलाये शुभाश्चेत् ॥
नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥२१॥
इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे सर्वग्रह-
रिष्टभंगाध्यायः ॥ १७ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें कोई ग्रह नहीं होय और शुभग्रह केंद्रमें १। ४। ७। १० बैठे होंय और लग्नमें बृहस्पति बैठा होय और तीसरे छठे ग्यारहवें पापग्रह बैठे होंय और लग्नवर्ती बृहस्पतिको कोई पापग्रह नहीं देखते होंय तो वह मनुष्य सत्तर वर्षके आयु पाता है ॥ २१ ॥

इति श्रीवंशबरेलिस्थगौड़वंशावतंसराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां
श्यामसुंदरीभाषाटीकायां सर्वग्रहकृतरिष्टभङ्गाध्यायः ॥ १७ ॥

अथ सदसद्दशाविचारणा।

राजयोगगृहभावसंभवं रिष्टयोगजनितं च यत्फलम् ॥
तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्फलमलं ब्रुवेऽधुना ॥ १ ॥

जो पूर्वमें राजयोग और भावास्थित ग्रहोंका फल अथवा भावोंका फल रिष्टयोगजनित फल कहा है सो दशाकालमें होताहै सो दशाफल इस कालमें कहते हैं ॥ १ ॥

अथ देवस्तुतिः।

सर्वदेववरदो वरदो वः शारदापि वरदा वदनाब्जे ॥
इंदिरा च खलु मंदिरसंस्था प्रस्थिता जलनिधीन्मतिकीर्तिः ॥२॥

सब देवताओंके पूजनीय देव श्रीगणेश आपको वरदानको देवें और सरस्वती मुखारविंदमें वास करें और लक्ष्मीजी निश्चयकरके स्थानमें वास करे और समुद्रपर्यंत कीर्ति प्रख्यात करे ॥ २ ॥

स्वोच्चे स्वगेहे यदि वा त्रिकोणे वर्गे स्वकीयेऽथ चतुष्टये वा ॥
नास्तंगतो नो शुभदृष्टियुक्तो जन्माधिपः स्याच्छुभदः स्वपाके३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अपने उच्चमें वा अपनी राशिमें हो या अपने मूलत्रिकोणी होय वा अपने षड्वर्गमें बैठा होय केंद्र १ । ४ । ७ । १० में स्थित होय न तो अस्तका होय और न पाप ग्रहोंकरके दृष्ट होय तौ जन्मपति अपनी दशामें शुभ फलको देता है ॥ ३ ॥

त्रिषष्ठलाभेषु गतैः समस्तैः सौम्यैः सुखार्थाश्च भवंति बाल्ये ॥
तत्रैव पापैर्वयसोंत्यभागे जायार्थपुत्रादिसुखानि सम्यक् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें तीसरे छठे ग्यारहें सब पापग्रह बैठे होंय और शुभ ग्रह द्वितीय चतुर्थ बैठे होंय तौ बाल्य अवस्थामें उस पुरुषको सुख देते हैं और पापग्रह उमरके अन्त्यभागमें स्त्री धन पुत्रादिकोंके भलेमकार सुखोंको देतेहैं ॥ ४ ॥

तुंगे स्वगेहे स्वसुहृद्गृहांशे नीचारिभस्थेऽपि च खेचरेंद्रे ॥
मिश्रं फलं स्यात्खलु तस्य पाके होरागमज्ञैः परिकल्पनीयम् ५॥

जो ग्रह अपने मित्रोंके नवांशामें बैठे होंय अथवा नवांशामें उच्च वा स्वक्षेत्रमें बैठे होय और नीच वा शत्रु राशिमें बैठे होंय तौ वह अपनी दशामें मिश्रफलको देतेहैं यह ज्योतिषशास्त्रमें ...वेत्ताओंने कहा है ॥ ५ ॥

वाचांपतिर्लग्नगते स्वतुंगे स्वर्क्षे दशायत्रिगतश्च सूतौ ॥
करोति राज्यं स्वकुलानुमानं नानाविधोत्कर्षविशेषयुक्तम् ॥ ६॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति लग्नमें अपने उच्चमें बैठा होय अथवा अपनी राशिमें होय दशमें ग्यारहें तीसरे बैठा होय तौ वह बृहस्पति अपनी दशामें अपने कुलके समान राज्य देता है अनेक प्रकारकी उत्कर्षतासहित होताहै ॥ ६ ॥

आरोहिणी दशा यस्य खेचरः सत्फलप्रदः ॥
सत्फलापचयं कुर्याद्दशा चेदवरोहिणी ॥ ७ ॥

जो ग्रह अपनी उच्चराशिसे लेकर आगे पांच राशियोंमें बैठा होय उस ग्रहकी दशा आरोहिणी कहाती है वह ग्रहकी दशा श्रेष्ठ फलको देतीहै और जो ग्रह अपनी नीचराशिसे लेकर आगेकी पांच राशिमें बैठा होय उस ग्रहकी दशा अवरोहिणी कहाती है वह ग्रहकी दशा नेष्ट फलको देतीहै ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिगतचंद्रदशाफलम्।

स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणोपलब्धिं कर्के हिमांशुः कुरुते दशायाम् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह अपनी दशामें स्त्री पुत्र और मित्र धनकी प्राप्ति करता है।

अथ भौमराशिगतचंद्रदशाफलम्।

जायापशूनां हनने प्रवृत्तिं करोति पृथ्वीतनुजस्य गेहे ॥ ७ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेषवृश्चिक राशिका चंद्रमा होय तौ वह अपनी दशामें स्त्री और पशुओंके मारनेमें प्रवृत्त होताहै ॥ ८ ॥

अथ बुधगुरुराशिगतचंद्रदशाफलम्।

सच्छास्त्रमित्राधिगमं करोति बुधस्य राशौ गुरुधामसंस्थः ॥

अथ शुक्रराशिगतचंद्रदशाफलम्।

नृपप्रसादं विपुलां च लक्ष्मीं शुक्रस्य गेहे फलमेतदेव ॥ ९ ॥

अथ शनिराशिगतचंद्रदशाफलम्।

तुषाररश्मिः शनिवेश्मसंस्थः प्रेष्यं मनुष्यं कुरुते दशायाम् ॥
अरण्यदुर्गस्थितमाददाति प्रीतिं मरुद्रोगहानिर्मितौ च ॥ १० ॥
मित्रे चोपचयस्थाने त्रिकोणे सप्तमेपि वा ॥
पाकेश्वरात्स्थितश्चंद्रः कुरुते सत्फलां दशाम् ॥ ११ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे सदसद्दशाविचारणाध्यायः ॥ १८ ॥

जो बुध या बृहस्पतिकी राशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ श्रेष्ठ शास्त्र और मित्रोंकी प्राप्ति अपनी दशामें कराताहै ॥

और जो शुक्रकी राशिमें चंद्रमा होय तौ राजाकी कृपासे बहुत धनको लाभ कराताहै ॥ ९ ॥

जो शनैश्चरकी राशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ वह मनुष्य दूत होताहै वन और किला कोटमें स्थितिको कराताहै वन वासियोंसे प्रीति करनेवाला और गौ तथा मकान बनानेवाला होताहै ॥ १० ॥ जो चंद्रमा दशाधिपतिसे मित्रोंकी राशिमें ३ । ६ । १० । ११ स्थानमें अथवा ५ । ९ । ७ बैठा होय तौ वह अपनी दशामें श्रेष्ठ फलको देताहै ॥ ११ ॥

इति श्री वंशबरेलिस्थगौडवंशावतंसश्रीरामजीज्योतिर्विदात्मजपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां सदसद्दशाविचाराध्यायः ॥ १८ ॥

अथ रविदशाफलविचारः लिख्यते ।

भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननु मानवानाम् ॥
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोतीव धनागमः स्यात् ॥ १ ॥
मंत्राभिचारेभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात् ॥
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पे चरणेन चिंता ॥२॥
व्ययश्च दंतोदरनेत्रबाधा कांतासुताभ्यां वियुतश्च चिंता ॥
नृपाग्निचौराहितबंधुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात् ॥३॥

अब सूर्यकी दशाका फल कहते हैं सूर्यकी दशामें परदेशमें वास निश्चय कर कभी कभी होताहै और धरती अग्नि राजा ब्राह्मण और दवाईसे बहुत धन प्राप्त होताहै ॥ १ ॥ और मंत्राभिचारमें विचित्र प्रीति करनेवाला और राजा करके विशेष मैत्री करनेवाला और प्रसिद्ध कर्मोंमें प्रीति करनेवाला बुद्धिवान् बहुत बोलनेवाला संग्रामकी चिंतासहित होताहै ॥ २ ॥ खर्च करनेवाला दांत और पेट व नेत्रोंमें पीड़ासहित स्त्री पुत्रोंसे वियोगको प्राप्त चिंतासहित राजा और चोर और शत्रु और बंधुवर्ग करके अपने गोती भाईयों करके प्रबल होताहै॥ ३॥

अथ परमोच्चगतरविदशाफलम् ।

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वधर्मकर्माभिरुचिं करोति ॥
तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः ॥ ४ ॥

परमोच्चके सूर्य अपने उच्चमें बैठे होंय तौ वह अपनी दशामें धर्मकर्ममें रुचि कराता है और पिता करके पैदा किये हुये धन और गृहादिकोंका लाभ कराताहै और अनेक सुख स्त्री पुत्रोंका होताहै ॥ ४ ॥

अथोच्चच्युतरविदशाफलम् ।

उच्चच्युतस्यातितरामरिष्टं कष्टं च रोगान्स्वजनैर्विरोधम् ॥
रवेर्दशातीव चतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम् ॥ ५ ॥

जो उच्चसे पतित हुआ सूर्य होवे तो वह अपनी दशामें बहुत रोग और कष्ट तथा अरिष्ट देताहै और अपने जनोंमें वैर करावे और चौपायोंकी अधिक हानि कराता है ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिस्थितरविदशाफलम् ।

कांतासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु ॥
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ६ ॥

जो वृष राशिमें सूर्य बैठा होय तौ अपनी दशामें स्त्री और पुत्रोंको पीड़ा और खेती तथा वाहनोंको पीड़ा करता है और नेत्र तथा हृदयमें तकलीफ और अनेक तरहके रोगोंकी पीड़ा होतीहै ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिगतरविदशाफलम् ।

स्यान्मंत्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्ता प्रीतिः पुराणे च भवेन्नराणाम् ॥
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम्॥७॥

जो मिथुन राशिमें सूर्य बैठा होय तौ अपनी दशामें मंत्रशास्त्रमें और उत्तमकाव्यमें प्रीति करावे पुराणोंमें प्रीति खेतीकी क्रिया और अन्न धन करके सुख करता है ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिगतरविदशाफलम् ।

ख्यातिर्नृपप्रीतिरतीव नित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महान्प्रकोपः ॥
सुहृज्जने नूनमनूनपीडा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ॥ ८ ॥

जो कर्कराशिमें सूर्य बैठा होय तौ वह प्रसिद्ध राजासे प्रीतिवाला होताहै और स्त्री करके जीताहुआ बड़े क्रोधवाला होताहै और मित्रजनोंको बहुत पीडा होतीहै ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतरविदशाफलम् ।

दुर्गादरण्ये च कृषिक्रियायां धनान्यनेकानि भवंति नूनम् ॥
स्यात्ख्यातिरुच्चैर्नृपगौरवं च कण्ठीरवस्थार्कदशाप्रवेशे ॥ ९ ॥

जिसके सिंहराशिगत सूर्य बैठा होय तौ उसकी दशामें किले कोटसे जंगलसे खेती करनेसे अनेक धन प्राप्त होते हैं और बड़ा प्रसिद्ध राजासे गौरवताको प्राप्त होताहै ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिगतरविदशाफलम् ।

स्यात्कन्यकानां जननं च भानौ देवद्विजानामनुपूजनं च ॥
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्याम्बुजबांधवस्य १०

जिसके कन्याराशिमें सूर्य बैठाहोय तौ अपनी दशामें कन्या संतानको पैदा करनेवाला मानसहित देवता और ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाला और पशुओंकी प्राप्ति कराता है ॥ १० ॥

अथ तुलाराशिगतरविदशाफलम् ।

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासु पीडा चोराग्निभीतिश्च विदेशयानम् ॥
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य रवेर्दशायाम् ११॥

और जो तुलाराशिमें सूर्य बैठा होय तौ अपनी दशामें स्थान और पुत्र तथा धन और स्त्रियोंको पीडा करे और चोर तथा अग्निसे भय करावे और परदेशकी यात्रा करावे और नीच भावको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ नीचांशशुक्ररविदशाफलम् ।

नीचांशयुक्तस्य रवेर्दशायां सुखेन लाभः परवंचनश्च ॥
जायानिमित्तोद्यतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितांतम् १२॥

जो सूर्य परम नीच अंशोंसे निकलगया होय तो अपनी दशामें सुख करके लाभ और दूसरोंको ठगने तथा धनका लाभ करे और स्त्रीके निमित्तसे दुःख प्राप्त और नीच पुरुषोंसे मित्रता कराता है ॥ १२ ॥

अथ नीचराशिगताष्टमस्थानरविदशाफलम् ।

नीचाष्टमस्थस्य रवेर्दशायामुद्विग्नता दोषसमुद्भवः स्यात् ॥
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडा पित्रोश्च बाधा बहुधात्रगम्या ॥१३॥

जो नीचराशिगत सूर्य अष्टमभावमें बैठाहोय तौ अपनी दशामें उद्विग्नताको पैदा कराता है और नीचराशिगत छठे बैठाहोय तौ व्रणरोगकी पीडा करावे और पिताको बहुत प्रकार बाधा करता है ॥ १३ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतरविदशाफलम् ।

तेजोविशेषाभियुतो नितांतं विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च ॥
पित्रा जनन्यागतचित्तशुद्धिः स्याद्वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायाम् १४

जो वृश्चिकराशिमें सूर्य बैठाहोय तो विशेष तेज करके सहित विष अग्नि शस्त्रकरके परिपीडित होता है माता पितासे चित्तविकारको प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

अथ धनराशिगतरविदशाफलम् ।

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः ॥
संगीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥ १५ ॥

जो धनराशिमें सूर्य बैठाहोय तो अपनी दशामें स्त्री पुत्र और धनका सौख्य करावे और राजाके कुलसे तथा ब्राह्मणोंसे गौरवको प्राप्त करावे और संगीतशास्त्रमें प्रीति करावे बडे सुखको प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

अथ मकरराशिगतरविदशाफलम्।

जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्यादनल्पपीडा भयतो नितांतम् ॥
भवेत्पराधीनतयातिचिंता नक्रोपयातस्य रवेर्दशायाम् ॥ १६ ॥

जो मकरराशिमें सूर्य बैठाहोय तौ स्त्री पुत्र और धन व सुखकी कमी करता और रोगसे बहुत पीडाको प्राप्त और पराधीनताकी विशेष चिंताको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ कुंभराशिगतरविदशाफलम्।

हृद्रोगबाधासुतवित्तकांताचिंताः परान्नादिसुखं न किंचित् ॥
शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनता स्याद्घटाधिरूढस्य दशाप्रवेशे॥ १७ ॥

और जो कुंभराशिमें सूर्य बैठा होय तौ अपनी दशामें हृदयमें रोग और पीड़ा करताहै और पुत्र धन स्त्रीकी चिंताको प्राप्त पराये अन्न आदिका सुख नहीं शत्रुओंका भय अत्यंत दीनताको प्राप्तहोताहै ॥ १७ ॥

अथ मीनराशिस्थितरविदशाफलम्।

स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम् ॥
वृथाटनत्वं ननु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाप्रवेशे ॥ १८ ॥

जिसके मीनराशिमें सूर्य बैठा होय तो वह अपनी दशामें स्त्री पुत्र धनके सौख्यसमूहको प्राप्त बड़ी प्रतिष्ठासहित और पुत्रादिकोंको ज्वरकी पीडा होय तथा व्यर्थ भ्रमण करानेवाला होताहै ॥ १८ ॥

अथोच्चराशिस्थिताष्टमभावस्थितरविदशाफलम्।

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशा दिनेशस्य च दोषदा स्यात् ॥ षष्ठस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः ॥ १९ ॥ पूर्वे भवेत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम् ॥ लग्नादशा क्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता ॥ २० ॥

जो उच्चराशिगत सूर्य अष्टम बैठा होय तौ अपनी दशामें दोष करताहै और जो उच्चराशिगत सूर्य छठे बैठा होय तो व्रणरोगकी पीड़ा अपनी दशामें करे और माता पिताको बाधा करता है ॥ १९ ॥ सूर्यकी दशा प्रवेशकालमें माता पिताको अनेक पीड़ा करती है और लग्नभावस्थित सूर्यकी दशा विशेष रोगोंकी देनेवाली होतीहै और लग्नस्थित चंद्रमाकी अत्यंत श्रेष्ठ होतीहै ॥ २० ॥

अथ चंद्रदशाफलानि ।

आरोहिणी चंद्रदशा नराणां सर्वार्थसिद्ध्यै कथिता विशेषात् ॥
तथावरोहात्कुरुते विलंबं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमान्द्यम् ॥ १ ॥
नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा ॥
मंत्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भूदेवदेवार्चनताप्रवृत्तिः ॥ २ ॥
सन्मंत्रविद्या विविधा धनाप्तिर्नानाकलाकौशलशालिता च ॥
गंधैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ॥ ३ ॥
ख्यातिः सुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकाराय मतिर्यशश्च ॥
इतस्ततः संचलनप्रियत्वं कन्याप्रजासंजननं मृदुश्च ॥ ४ ॥
जलस्य कर्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकुलताक्षमा च ॥
कृष्यादिकर्माभिरुचिः शुचित्वं कफानिलाधिक्यमतीव सत्त्वम् ५
भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसंगो बहुजल्पता च ॥
चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्ये सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ॥ ६ ॥

अब चंद्रदशाका फल सामान्यसे कहते हैं जो चंद्रकी आरोहिणी दशा होय तौ सब प्रकारकी सिद्धि विशेष करता है और जो चंद्रमाकी अवरोहिणी दशा होय तौ कार्यसिद्धिमें देर करे और सब कामोंमें मंद बुद्धिको करती है ॥ १ ॥ चन्द्रमाकी दशाके प्रवेशमें मनुष्य बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त राजाकी कृपासे वजीरके पदवीको प्राप्त ब्राह्मण और देवताओंकी पूजनमें प्रवृत्ति कराता है ॥२॥ श्रेष्ठ मंत्रविद्या और अनेक प्रकारके धनकी प्राप्ति और अनेक कलाओंमें कुशलताको प्राप्त और सुगंध तिल फल पुष्पोंकी वृद्धि और वृक्षों करके पूर्ण धनकी वृद्धिको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥ प्रसिद्धता श्रेष्ठ कीर्ति नम्रता अधिक पराये उपकारमें बुद्धि यशको प्राप्त होय इधर उधर भ्रमण करनेमें प्रीति और कन्याकी संतानको प्राप्त कोमलता होती है ॥ ४ ॥ और जलके कामसे बहुत प्रीति और आलस्य तथा निद्रा और व्याकुलता और क्षमाको प्राप्त होता है खेतीके काममें प्रीति पवित्रतायुक्त कफ और वातकी अधिकताको प्राप्त अधिक सत्त्वको प्राप्त ॥ ५ ॥ और अपने जनोंसे वैरको प्राप्त और लडाई करनेवाला बहुत बोलनेवाला अच्छे कामोंमें चित्तकी स्थिति नहीं होती यह सामान्य चंद्रमाकी दशाका फल कहा है ॥ ६ ॥

अथ मेषराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

मेषे शशांकस्य दशाप्रवेशे योषात्मजानंदभरो जनानाम् ॥
विदेशकर्माभिरतिर्व्ययः स्यात्क्रौर्यं शिरोरुक्सहजारिबाधा ॥७॥

जो मेषराशिमें चंद्रमा होय तौ अपनी दशामें स्त्री और पुत्रोंका आनंद मनुष्यको देता है और परदेशके कामोंमें प्रीति ज्यादे खर्च करनेवाला क्रोधसहित भ्राता और शत्रुओंकी बाधा करता है ॥ ७ ॥

अथ वृषराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

उच्चाधिरूढस्य दशा जडांशोः कुलानुसारं हि ददाति राज्यम् ॥
योषाविभूषात्मजगोतुरंगगजातिसौख्यापचयं जयं च ॥ ८ ॥

जो वृषराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ अपनी दशामें उस मनुष्यको कुलके समान राज्य देता है और स्त्री और अभूषण और गौ, घोडा, हाथी प्राप्त कराता है और सौख्यसमूह तथा जयको प्राप्त करै है ॥ ८ ॥

अथ मूलत्रिकोणराशिस्थितचंद्रदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशा विदेशाभिगमं करोति ॥
कृषेः क्रयाद्विक्रयतो धनाप्तिं कफानिलार्तिं स्वजनैर्विरोधम् ॥९॥

और जो चंद्रमा वृष राशिके तीन अंशोंसे अधिक अंशोंमें बैठा होय तौ अपनी दशामें परदेशयात्रा करावे खेती करके क्रय विक्रयसे धनकी प्राप्ति कफ और वातकी पीडा करावे और मित्रोंसे विरोधको करातहै ॥ ९ ॥

अथ वृषस्थपूर्वार्द्धपरार्द्धगतचंद्रदशाफलम् ।

वृषस्य पूर्वार्धगतो हिमांशुः पापान्वितः संजनयेज्जनन्याः ॥
मृत्युं परार्द्धे जनकस्य सौख्यसङ्क्षणान्मृत्युसमानरोगम् १०॥

और जो वृषराशिके पंद्रह अंशके भीतर चंद्रमा पापग्रहयुक्त होय तौ माताकी मृत्यु कराता है और जो वृष राशिके पंद्रह अंशके ऊपर तीसके भीतर पापग्रह युक्त चंद्रमा होय तौ पिताकी मृत्यु करे और जो चंद्रमा शुभ ग्रहयुक्त होवे तौ माता वा पिताको मृत्यु समान रोग देता है ॥ १० ॥

अथ मिथुनराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

द्वंद्वाधिसंस्थेन्दुदशाप्रवेशे देवद्विजार्चाधनभोगसंस्थम् ॥
स्थलांतरे संचलनं किल स्यात्सुखेन सम्यङ्नतिवैभवं च ॥११॥

और जो मिथुनराशिमें चंद्रमा होय तौ अपनी दशामें देवता और ब्राह्मणोंका पूजन धनक भोग सुख कराता है और स्थानांतरमें यात्रा करनेवाला सुख करके बुद्धि और वैभवको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

अथ कर्कराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

कुलीरसंस्थस्य कलानिधेः स्यात्पाके पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ॥
कलाकलापाकलनं च शैले वने रुचिर्गुह्यगदप्रकोपः ॥ १२ ॥

जो कर्कराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ अपनी दशामें चौपाये और धन खेतीकी वृद्धि करावे कलाओंके समूहकी रचना करनेवाला पर्वत और वनोंमें रुचि करनेवाला और गुप्तरोग कराता है ॥ १२ ॥

अथ सिंहराशिगतचन्द्रदशाफलम् ।

कंठीरवस्थस्य निशाकरस्य पाके नरोर्थं लभते च नित्यम् ॥
श्रेष्ठां प्रतिष्ठां विकलत्वमंगेनंगेपि [illegible]वमनुप्रयाति ॥ १३ ॥

जिसके सिंहराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ अपनी दशामें मनुष्यको नित्यही धन लाभ करावे और श्रेष्ठ प्रतिष्ठाको प्राप्त शरीरमें विकलतायुक्त कामदेवकी हीनताको प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

अथ कन्याराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

कन्याश्रितेन्दोश्च दशाप्रवेशे विदेशयानं वनितोपलब्धिः ॥
कलाकलापामलबुद्धिवृद्धिः स्वल्पार्थसिद्धिश्च भवेन्नराणाम् १४॥

जिस मनुष्यके कन्याराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ परदेशकी यात्रा और स्त्रीको प्राप्ति करावे कलाओंके समूहमें निर्मल बुद्धिकी वृद्धि थोडे धनकी सिद्धि कराताहै ॥ १४ ॥

अथ तुलाराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

कलानिधेस्तौलिगतस्य पाके लोलं मनः स्याद्वनिताविषादः ॥
वादश्च कैश्चिद्धनहीनता च प्रोत्साहभंगः खलु नीचसंगः ॥१५॥

जिस मनुष्यके तुलाराशिमें चंद्रमा होय तौ अपनी दशामें चंचलमन करावे स्त्रीसे विषाद करावे किसीसे झगडा करावे धनहीनता होवै उत्साहभंग होवे निश्चय कर नीचोंका संग कराता है ॥ १५ ॥

नीचोपयातस्य विधोर्दशायां स्याद्व्याधिवृद्धिर्बहुधा नराणाम् ॥
वियोजनं वै स्वजनेन नूनं गानाल्पतानल्पविकल्पचिन्ता॥१६॥

जो परमनीचमें चंद्रमा बैठा होय तौ अपनी दशामें बहुत व्याधिकी वृद्धि मनुष्योंको करावे और मित्रोंसे वियोग करावे मानकी हीनता और बहुत चिंताको कराता है ॥ १६ ॥

अथ नीचच्युतचंद्रदशाफलम्।

विमुक्तनीचोडुपतेर्दशायां भवेदवाप्तिः क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
धर्मव्यथाधर्मविधानमल्पमल्पं च सख्यं जनमित्रवर्गैः ॥ १७ ॥

जो परमनीचसे पतित चंद्रमा वृश्चिकराशिमें होय तौ अपनी दशामें क्रय और विक्रयसे प्राप्ति कराता है धर्मकी व्यथा और धर्मकी अल्पता थोड़ी मित्रताका सौख्य होता है ॥ १७ ॥

अथ धनराशिगतचंद्रदशाफलम्।

चापोपयातस्य च शीतरश्मेर्दशाप्रवेशे गजवाजिवृद्धिम् ॥
पूर्वार्जितार्थोपहतिर्नितांतमन्यत्र सौभाग्यसुखानि नूनम् ॥ १८ ॥

और जो धनराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ हाथी घोड़ोंकी वृद्धि अपनी दशामें करावे और पहिलेका पैदा किया धन नाश होय, और दूसरे स्थानमें सौभाग्य सुख करानाहै ॥ १८ ॥

अथ मकरराशिगतचंद्रदशाफलम्।

हिमकरश्च सदा मकरस्थितः सुतसुखानि धनागमनानि च ॥
वितनुते तनुतामनिलात्तनोरनुदिनं गमनागमनानि वै ॥ १९ ॥

जो मकरराशिमें चंद्रमा बैठा होय तौ अपनी दशामें पुत्रोंका सुख धनकी प्राप्ति करावे और वातविकारको बढावे और हरएकदिन जाना आना होताहै ॥ १९ ॥

अथ कुंभराशिगतचंद्रदशाफलम्।

क्रीडा च पीडा व्यसनानि नूनं स्युर्मानवानां तनुता शरीरे ॥
ऋणोपलब्धिश्चलता नितांतं दशाप्रवेशे कलशस्थितेन्दोः ॥ २० ॥

जो कुंभराशिमें चंद्रमा बैठा होय तो अपनी दशामें कमरमें पीडा और खोटे व्यसनकी प्राप्ति करता है और शरीरमें दुर्बलताको प्राप्त कर्जकी प्राप्ति चंचलताको प्राप्ति करता है ॥ २० ॥

अथ वर्गोत्तमे कुंभराशिगतचंद्रदशाफलम्।

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोर्दशा प्रवेशे बलिभिर्विरोधः ॥
कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगो दशनास्यपीडा ॥ २१ ॥

और जो कुंभराशिगतवर्गोत्तमी चंद्रमा होय तो अपनी दशामें किसी बलवान मनुष्यसे वैर करावे स्त्री और मित्र, धन, संतानका वियोग करावे और दांत और मुखमें पीडा कराता है ॥ २१ ॥

अथ मीनराशिस्थितचंद्रदशाफलम् ।

मीनोपयातस्य च शीतभानोर्दशाप्रवेशे हि जलोद्भवार्थः ॥
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं शत्रुक्षयो बुद्धिविवृद्धिरुच्चैः ॥ २२ ॥

जो मीनराशिमें चंद्रमा बैठा होय तो अपनी दशामें जलके संबधसे धनकी प्राप्ति करावे और स्त्री पुत्रादिकोंका सुख करावे शत्रुओंका नाश करावे और बुद्धिकी बडी वृद्धि कराता है २२

अथ वर्गोत्तममीनराशिगतचंद्रदशाफलम् ।

वर्गोत्तमस्थस्य झषे हिमांशोर्दशाप्रवेशे महिषीगजाश्वान् ॥
पुत्रादितोषं रिपुनाशमुच्चैर्लभेन्मनुष्यो हि यशो मनीषाम् ॥२३॥

जो मीनराशिगत वर्गोत्तमी चंद्रमा होय तो अपनी दशामें भैंस और हाथी घोडोंको सुख पुत्रादिकोंसे संतोषको प्राप्त और शत्रुओंका नाश करावे और बडा यशका लाभ कराता है ॥ २३ ॥

अथ व्ययभावस्थितचंद्रदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे व्ययभावगेन्दोः पापार्जितद्रव्यसमुद्गमः स्यात् ॥
क्षीणे रिपुस्थानगते हिमांशौ सम्यक्फलं प्राग्गदितं तथैव ॥२४॥

जो व्ययभावस्थित चंद्रमा होय तो अपनी दशामें पापकर करके धन इकट्ठा करे और जो क्षीण चंद्रमा छठे बैठा होय तोभी पहिलेका कहाहुआ फल होता है ॥ २४ ॥

अथ नीचराशिगताष्टमभावस्थचंद्रदशाफलम् ।

नीचस्थितस्याष्टमभावगेन्दोर्दशाप्रवेशे हि गदोद्गमः स्यात् ॥
चेत्पापयुक्तो निधनं तदानीं जातिच्युतिं वा लभते मनुष्यः २५

जो नीचराशिगत अष्टमभावमें चंद्रमा बैठा होय तो अपनी दशामें रोगकी वृद्धि करावे और जो नीचराशिगत पापग्रहयुक्त चंद्रमा अष्टममें होय तो मृत्युको देता है अथवा जातिसे पतित होता है ॥ २५ ॥

अथ भौमदशाफलम् ।

ताराग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः ॥
मिश्रं फलं ते निजपाककाले यच्छंति नूनं सुधिया विचिंत्यम् १

अब मंगलकी दशाका फल कहते हैं जो भौमादि पांच ताराग्रह आपने उच्चमें वा स्वक्षेत्र वा मूलत्रिकोण वक्रगत वा अस्तंगत होंय तो अपनी दशामें मिश्रफलको देते हैं निश्चयकर इसका विचार बुद्धिमान करे ॥ १ ॥

स्यात्पाके क्षितिनंदनस्य च धनं शस्त्राच्च धात्रीपतेर्भूपज्ञ्या-
श्च चतुष्पदादपि तथा नानाविधैरुद्यमैः ॥ पित्तासृग्ज्वरपीडनं
क्षितिपतेर्भीतिं च नीतिच्युतिं मूर्च्छाद्यं च निजालये
कलिरिति प्रोक्तं फलं सूरिभिः ॥ २ ॥

मंगलकी दशामें राजासे हकीमी करनेसे चौपायोंसे और अनेक प्रकारके उद्यम करनेसे मनुष्यको धनकी प्राप्ति होती है और पित्त करके रुधिरविकार राजाका भय नीतिसे भ्रष्ट करता है और मूर्छादिरोग अपने घरमें कलह कराता है इतने प्रकारका फल पंडित जनोंने कहा है ॥ २ ॥

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणाङ्गणे चारु यशो विशेषात्॥३॥

और जो मंगल मूलत्रिकोणी होय तो अपनी दशामें पुत्र और स्त्रीका सौख्यको प्राप्त और साहस करके धनकी प्राप्तिको प्राप्त संग्राममें सुंदर यश पाता है ॥ ३ ॥

अथ मेषराशिगतभौमदशाफलम्।

मेषोपयातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मंगलानि॥
स्यात्संततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवः स्यात्॥४॥

जो मेषराशिमें मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें मंगलको करे संतान पैदा होती है और हठ करके अग्निबाधाको प्राप्त अनेक प्रकारके शत्रु पैदा होते हैं ॥ ४ ॥

अथ वृषराशिस्थितभौमदशाफलम्।

वृषस्थितस्यावनिनंदनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः ॥
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ॥ ५ ॥

जो वृषराशिमें मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें पुरुष हर्षको प्राप्त बहुत बोलनेवाला गुरु और देवताओंकी भक्ति पराया उपकार करता है ॥ ५ ॥

अथ मिथुनराशिस्थितभौमदशाफलम्।

युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः ॥
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधी नरः कलाज्ञो नितरां विधिज्ञः ६॥

जो मिथुनराशिमें मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें परदेश जानेकी इच्छावाला बात-पित्तका कोप बहुत खर्च करावे मित्रों से विरोध करावे वह मनुष्य कलाओंका जाननेवाला निरंतर विधानका जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ कर्कराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्निप्रभवार्थयुक्तः ॥
नरो हि दारासुतदूरवर्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्तिः ॥ ७ ॥

जो कर्कराशिमें परमनीचका मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें बाग और वन अग्निसे उत्पन्न धनको प्राप्त स्त्री और पुत्रोंसे दूर रहनेवाला क्लेशको प्राप्त बलहीन होता है ॥ ७ ॥

अथ नीचांशच्युतभौमदशाफलम् ।

संत्यक्तनीचांशकुजस्य पाके स्यात्तः पुमान्सर्वगुणोपपन्नः ॥
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात्प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः ॥ ८ ॥

जो कर्कराशिगत मंगल परमनीच अंशोंके बाहर होय तो वह मनुष्य प्रसिद्ध सब गुणोंसहित चौपायोंकरके युक्त बलवान् और अकस्मात् गुह्यरोगसे पीडित होता है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतभौमदशाफलम् ।

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम् ॥
कांतासुताद्यैश्च वियोगता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता ॥ ९ ॥

जो सिंहराशिमें मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें बहुत मनुष्योंका स्वामी करता है और स्त्री पुत्रोंकरके वियोगको प्राप्त और सूर्य तथा अग्नि करके पीड़ित होता है ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

कन्यानुमाताऽवनिनंदनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात् ॥
यज्ञक्रियायामपि सादरश्च दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यम् १०॥

जो कन्याराशिमें मंगल बैठा होय तो अपनी दशामें आचारमें तत्परताको प्राप्त और यज्ञक्रियाको आदरसे करनेवाला स्त्री और पुत्र, धन, धान्यके सौख्यवाला होता है ॥ १० ॥

अथ तुलाराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद्द्रव्यभार्याविधुतो हि मर्त्यः ॥
चतुष्पदाभावकलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वै विकलांगयष्टिः ॥ ११ ॥

जो तुलाराशिमें मंगल बैठाहोय तो अपनी दशामें धन और स्त्री करके रहित और चौपायोंसे हीन और कलहके प्रसंगमें उत्साहसे हीन विकल अंगवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

पुमान्भवेद्वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्ता ॥
स्वसंग्रहे जातमनःप्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च ॥ १२ ॥

जिसके वृश्चिकराशिमें मंगल बैठाहोय तौ वह मनुष्य खेतीका काम करनेवाला और धन संग्रह करनेवाला और बहुत जनोंका वैरी बहुत बोलनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ धनराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

धनुर्द्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः ॥
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च ॥ १३ ॥

जो धनराशिमें मंगल बैठाहोय तौ अपनी दशामें देवता और ब्राह्मणोंकी भक्ति कराता और राजाकरके मनोरथको प्राप्त और कलहके संगसे उत्सवरहित होता है ॥ १३ ॥

अथ मकरराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

वक्रस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात् ॥
युद्धे विवादे विजयो नितांतं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम् ॥ १४ ॥

जो मकरराशिमें मंगल अपने परमोच्चमें बैठाहोय तौ अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति अपने कुलके समान करावे संग्राममें और झगडेमें विजयको प्राप्त होवे श्रेष्ठ रत्न और सुवर्ण तथा घोड़ोंका सौख्य देता है ॥ १४ ॥

अथोच्चांशत्यक्तभौमदशाफलम् ।

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः ॥
शस्त्राद्भवेच्छ्वापदतोऽपि भीतिः संतोषजल्पत्वमहाप्रयासाः ॥ १५ ॥

जिसके उच्चांशसे रहित मंगल मकरमें बैठा होय तौ अपनी दशामें यत्नसे कार्यकी सिद्धिको प्राप्त शस्त्रसे वा व्याघ्रादिसे भयको प्राप्त होय संतोष होय और विवाद होय बड़ा प्रयास कराता है ॥ १५ ॥

अथ कुंभराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

आचारहीनश्च सुतादिचिंता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम् ॥
कुंभोपयातस्य च मंगलस्य स्यात्पाककाले फलमेतदेव ॥ १६ ॥

जो कुम्भराशिमें मंगल बैठाहोय तौ अपनी दशामें आचारसे रहित पुत्र पौत्रादिकोंकी चिंताको प्राप्त बहुत खर्च करनेवाला उद्वेगको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अथ मीनराशिस्थितभौमदशाफलम् ।

मीनोपयातावनिनंदनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिंता ॥
व्ययामयत्वं च क्रमोपलब्धिर्विचार्चिकादद्रुविदेशवासाः ॥ १७ ॥

मीनराशिवर्ती मंगलकी दशा पुत्र और पोतोंकी चिंताको प्राप्त धनका खर्च रोग उग्र करनेसे धनका लाभ फोडा फुनसी और दादका रोग व परदेशमें वास कराती है ॥ १७ ॥

अथ वर्गोत्तमभौमदशाफलम्।

संग्रामसंप्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोऽत्यंतगुणाभिरामः ॥
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः ॥ १८

जो मंगल वर्गोत्तमी होय तो अपनी दशामें संग्राममें जयको प्राप्त बल करके सहित अत्यंत गुणोंकी सुंदरता प्राप्त अनेक वस्तुओंको लाभ कराता है ॥ १८ ॥

अथ नीचांशस्थितभौमदशाफलम्।

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसो विषादः ॥
फलोन्मुखं कार्यमतीव दूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् ॥ १९ ॥

जो मंगल नीच नवांशमें बैठाहोय तो अपनी दशामें वृथा भ्रमण करावे मनमें विषाद करावे प्राप्त होनेवाली वस्तु अथवा कार्यसिद्धि होनेमें विघ्न पड़ता है और उच्चतासे रहित अधिकारको नष्ट कराता है ॥ १९ ॥

अथ मूलत्रिकोणराशिस्थितभौमदशाफलम्।

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्माधिगतस्य पाके ॥
राज्योपलब्धिर्विजयो रिपुभ्यः सद्वाहनालंकरणानि नूनम् २०॥

जो मंगल अपने मूलत्रिकोण वा उच्चराशिगत दशमभावमें बैठाहोय तो अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति कराता है शत्रुओंसे जयको प्राप्त श्रेष्ठ सवारी और आभूषणोंको प्राप्त कराता है ॥ २० ॥

अथ बुधदशाफलम्।

विद्याविवेकप्रभुतासमेतः कृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ॥
महोद्यमावाप्तधनश्च नूनं भवेन्मनुष्यो शशिजस्य पाके ॥ १ ॥
शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलं स्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेष एव ॥
सद्वाद्यगीताभिरुचिर्नवीनसक्रीडभूषागृहनिर्मितत्वम् ॥ २ ॥
कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैः कालक्रमत्वं विनयोपलब्धिः ॥
आचार्यविद्वद्गुरुसंमतत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ३ ॥
पीडापि गाढा कफवातपित्तैरसंचयोऽर्थस्य च सौम्यपाके ॥
बलाबलत्वं प्रविचार्य सर्वं शुभाशुभत्वं सुधिया विचिंत्यम् ॥४॥

अथ बुधकी दशाका फल कहते हैं विद्या और विवेक और मधुरता करके सहित स्त्रीके काम यज्ञविधान करनेमें चित्तवाला बहुत उद्यम और धन करके पूर्णताको कराता है ॥ ॥ १ ॥ शिल्पादिकर्मोंमें कुशलताकी प्राप्ति हमेशा उत्सवोंकी प्राप्ति श्रेष्ठ बाग और शांति में रुचि करावे नवीन श्रेष्ठ बर्तन और आभूषण मकानोंका बनवाना होता है ॥ २ ॥ कुतूहल करके वार्तालाप करके और हँसी करके समयको व्यतीत करे नम्रताको प्राप्त आचार्य और गुरुके संमतिको प्राप्त स्त्री पुत्रोंके सुखकी प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥ कफ, वात, पित्त करके बड़ी भारी पीडा करावे और धन संग्रह नहीं होता है बुधकी दशामें बलाबल विचार कर सम्पूर्ण शुभाशुभ पंडितजन विचार करके फल कहैं ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिस्थितबुधदशाफलम्।

मेषस्थशीतद्युतिशीतपाके नैकत्र संस्थानकरो नरः स्यात् ॥
स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तो विमुक्तसौजन्यविधिस्तु निःस्वः॥ ५ ॥

जो मेषराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें एक जगह स्थिति नहीं करावे चोरी झूंठ जुआ और शठताको करावे स्वजनतारहित धनहीन कराता है ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

वृषाधिरूढस्य जडांशुसूनोर्दशाप्रवेशे व्ययकृन्मनुष्यः ॥
मातुस्त्वनिष्टश्च कलत्रपुत्रमित्रादिचिंता गलरुग्भयार्तः ॥ ६ ॥

वृषराशिगत बुध स्वदशामें मनुष्यको धनका व्यय कराता है माताको नष्ट फल करता है स्त्रीपुत्रादिकोंकी चिंताको करावे गलेमें रोग करता है ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

द्वंद्वाधिसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेकवार्ता बहुजल्पकर्ता ॥
दारात्मजज्ञातिसुखोपपन्नो नूनं जनन्याश्च सुखेन हीनः ॥ ७ ॥

जो मिथुनराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें अनेक बातें करे बहुत बकवाद करे स्त्री पुत्र और ज्ञातिके सुखसहित होय और निश्चय कर माताके सुखसे हीन होता है ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

कर्काश्रितस्येंदुसुतस्य पाके विदेशवासाल्पसुखो विरोधी ॥
मित्रैश्च सत्काव्यकलार्जितार्थोऽत्यर्थं मनुष्यो व्यवसाययुक्तः ८॥

जो कर्कराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें परदेशका वास करावे थोड़ा सुख और विरोध करावे और श्रेष्ठ काव्यसे धनलाभ करावे और बड़े व्यवसायसहित होता है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

सिंहस्थितस्येंदुसुतस्य पाके लोलं भवेद्वैभवमेव धैर्यम् ॥
स्वमित्रदारात्मजसौख्यहानिः स्यान्मानवानां मतिहीनता च९॥

जो सिंहराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें चंचल वैभव और धैर्य होता है श्रेष्ठ मित्र और स्त्री पुत्रके सौख्यकी हानि करावे और मतिकी हीनताको कराता है ॥ ९ ॥

अथ परमोच्चराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

उच्चाश्रितस्येंदुसुतस्य पाके स्यान्मानवो वै बहुवैभवाढ्यः ॥
लेखक्रियाकाव्यकलानुरक्तो जितारिपक्षश्च सुनीतियुक्तः ॥१०॥

जो बुध अपने परमोच्चमें बैठा होय तो मनुष्यको बहुत वैभवयुक्त कराता है लेखक्रिया और काव्यकी कलामें तत्पर करावे शत्रुओंको जीते श्रेष्ठ नीति युक्त होता है ॥ १० ॥

अथ मूलत्रिकोणांशस्थितबुधदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके विवेकविद्यादिगुणैः प्रपूर्णः ॥
विदेशयानानुरतो नरः स्यात्पराक्रमादाप्तधनो विधिज्ञः ॥११॥

जो बुध कन्याराशिगत मूलत्रिकोणी होय तो अपनी दशामें विवेक और विद्या और अनेक गुणों करके पूर्ण होता है परदेशकी यात्रा करनेवाला पराक्रमसे धनको प्राप्त करै विधिको जाननेवाला करता है ॥ ११ ॥

अथ स्वक्षेत्रे कन्याराशिस्थबुधदशाफलम् ।

तुंगत्रिकोणाक्रमणप्रकर्तुर्बुधस्य पाके पशुसौख्यहानिः ॥
स्वबंधुवैरं विकलत्वमंगे कलिप्रसंगेतिविहीनता स्यात् ॥ १२ ॥

जो बुध कन्याराशिमें स्वक्षेत्रमें होय तो अपनी दशामें पशुओंके सौख्यकी हानि करावे, और भाईसे वैर करावे, शरीरमें विकलताको करावे, कलहके प्रसंगसे हीनताको प्राप्त कराता है ॥ १२ ॥

अथ तुलाराशिस्थितबुधदशाफलम् ।

तुलागतस्येंदुसुतस्य पाके स्यात्क्षीणता दृङ्मतिवाग्विलासे ॥
शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणं च वाणिज्यतोर्थः पशुपीडनं च१३॥

जो तुलाराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें दृष्टिकी क्षीणतासहित बुद्धि और वाग्विलासमें क्षीणताको प्राप्त और शिल्पकर्ममें निपुणताको प्राप्त व्यवहारसे धनलाभ पशुकी पीडा देता है ॥ १३ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितबुधदशाफलम्।

पाके भवेद्वृश्चिकसंस्थितस्य मृगांकसूनोर्मनुजोल्पतुष्टः॥
आचारकर्मक्रमणानुरक्तो व्ययेन मुक्तः स्वजनैर्वियुक्तः॥ १४॥

जो वृश्चिकराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें थोडे संतोषको प्राप्त आचार कर्म करनेमें तत्पर खर्च करके सहित अपने जनोंसे रहित होता है॥ १४॥

अथ धनराशिस्थितबुधदशाफलम्।

शरासनाध्यासनतां गतस्य बुधस्य पाके बहुनायकः स्यात्॥
मंत्री च नामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतो मनुष्यः॥ १५॥

जो धनराशिमें बुध बैठा होय तो वह मनुष्यको बहुत पुरुषोंका स्वामी करता है और राजाका मंत्री दो नामवाला होय खेतीकी किया और धनसहित होता है॥ १५॥

अथ मकरराशिस्थितबुधदशाफलम्।

मृगांकसूनोर्हि मृगस्थितस्य पाके भवेद्भूरि ऋणं नराणाम्॥
बह्वाटनं वै कपटत्वमुच्चैर्नीचैश्च सख्यं मतिहीनता च॥ १६॥

जो मकरराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें बहुत कर्ज करे बहुत भ्रमण करावे और ज्यादे कपट करावे और नीचबुद्धि कराता है॥ १६॥

अथ कुंभराशिस्थितबुधदशाफलम्।

सोमस्य कुंभोपयुतस्य पाके विहीनतेजा मनुजोतिनिःस्वः॥
मित्रादिपीडापरिपीडितात्मा विदेशयानव्यसनानुरक्तः॥ १७॥

जो कुंभराशिमें बुध बैठा होय तो अपनी दशामें तेजहीन व धनहीन करै मित्रोंको पीडा करै पराई आत्माको पीडा देवे परदेशयात्रा करे व्यासनोंमें तत्पर होता है॥ १७॥

अथ मीनराशिस्थितबुधदशाफलम्।

नीचांशसंस्थस्य बुधस्य पाके विवेकसत्योपहितो हि मर्त्यः॥
स्थानांतरस्थो व्यवसायशीलःस्यादल्पलाभः कृशकायकांतिः १८

जो बुध मीनराशिगत अपने परमनीचांशमें बैठा होय तो वह मनुष्य विवेक और सत्य-रहित और स्थानांतरको प्राप्त उद्यम करनेमें स्वभाव जिसका थोडे लाभवाला दुर्बल देह-वाला होता है॥ १८॥

अथ गुरुदशाफलम्।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य भूपप्रधानाप्तमनोरथः स्यात्॥
सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ता भवेन्मनुष्यः सततं विनीतः॥ १॥

यज्ञादिकर्मण्यतिसादरत्वं भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ ॥
अत्यर्थमर्थो विभुताविशेषः पुत्रादितोषः पुरुषस्य नूनम् ॥ २ ॥
भूम्यम्बराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलोपपन्नः कुलधुर्यता च ॥
गतागतागामिविचारणोच्चैः सत्संगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च॥ ३ ॥
दाहादिपीडापि गले कदाचिद्विरुद्धभावस्थितितो विचिंत्यम् ॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमार्यैर्वक्ष्येधुना यत्प्रतिराशिपूक्तम् ॥ ४ ॥

अब बृहस्पतिकी दशाका सामान्य फल कहते हैं बृहस्पतिकी दशाप्रवेशमें राजाके मंत्रीसे मनोरथको प्राप्त श्रेष्ठ कर्म और धर्मका माननेवाला वेदशास्त्रका वेत्ता निरंतर नम्रतासहित होताहै ॥ १ ॥ यज्ञादिकर्मोंमें बहुत आदर पानेवाला ब्राह्मण देवताओंमें भक्तिकी प्रवृत्ति करनेवाला बड़ाईको प्राप्त धन वैभवकरके सहित पुत्रोंसे सुख पानेवाला होताहै ॥ २ ॥ धरती वस्त्र और घोडोंके सुखको प्राप्त बलसहित कुलमें अग्रगामी तीनों कालको विचारकरनेवाला श्रेष्ठ संगतिकरनेवाला श्रेष्ठ बुद्धि और धैर्यवान् होताहै ॥ ३ ॥ दाहकी पीड़ा कभी गलेमें होतीहै और अपने घरमें विरोध करनेवाला होताहै यह बृहस्पतिकी दशाका सामान्य फल आचार्योंने कहाहै अब हरएक राशिस्थित बृहस्पतिका फल कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ मेषराशिगतगुरुदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य मेषोपयातस्य भवेन्नराणाम् ॥
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ॥ ५ ॥

जो मेषराशिमें बृहस्पति स्थित होय तौ उसकी दशाके प्रवेशमें धनको प्राप्त बहुत मनुष्योंका स्वामी स्त्री पुत्रादिकोंके सुखको प्राप्त होताहै ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिगतगुरुदशाफलम् ।

वृषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोतिदुःखी ॥
विदेशवासी बहुसाहसश्च वित्ताल्पता वित्तगतोत्सवश्च ॥ ६ ॥

जो वृषराशिमें बृहस्पति स्थित होय तौ उसकी दशामें मनुष्य अत्यंत दुःखको प्राप्त परदेशमें वास करनेवाला बड़ा साहसी थोडे धनवाला धनखर्च करनेवाला उत्सव रहित होताहै ६॥

अथ मिथुनराशिगतगुरुदशाफलम् ।

युग्मोपयातस्य बृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषः शुचिः स्यात् ॥
मात्रा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रवादातिविषादतप्तः ॥ ७ ॥

जो मिथुनराशिमें बृहस्पति स्थितहोय तौ मनुष्य पवित्रताको प्राप्त भ्राताकरके गोत्रके पुरुषोंसे वैरको प्राप्त और स्त्रीके वादकरके विषादयुक्त होताहै ॥ ७ ॥

अथ परमोच्चगतगुरुदशाफलम्।

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराज्यलब्धिः ॥
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवं च ॥ ८ ॥

जो अपने परमोच्चांशमें पांचअंशके भीतर कर्कराशिगत बृहस्पति बैठाहोय तौ अपनी दशामें राज्यकी प्राप्ति कराता है और खिताबसहित नामको प्राप्त होता है और बड़ानामी बडेआदमियोंसे मित्रता करनेवाला बहुवैभवको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथोच्चच्युतगुरुदशाफलम्।

वाचांपतेरुच्चसमुत्थितस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी ॥
पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तप्तश्च नानाव्यसनाभिभूतः ॥ ९ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें बृहस्पति परमोच्चसे रहित उच्चराशिमें बैठाहोय तो वह मनुष्य बृहस्पतिकी दशामें पितामाताके दुःखको प्राप्त पहिलेका पैदाहुआ धन नाशकरके संतापको प्राप्त अनेकव्यसनों सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ सिंहराशिगतगुरुदशाफलम्।

सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ॥
नृपाप्तमानो ननु मानवःस्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः ॥ १० ॥

जो सिंहराशिमें बृहस्पति बैठाहोय तौ तिसकी दशामें धनवान् श्रेष्ठ होता है राजाकरके मानको प्राप्त और स्त्री पुत्र भ्राता करके हर्षको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

अथ कन्याराशिगतगुरुदशाफलम्।

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपमानलब्धः ॥
कांतासुतावाप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ॥ ११ ॥

जो कन्याराशिमें बृहस्पति बैठाहोय तौ अपनी दशामें मनुष्यको राजासे मानको प्राप्त स्त्री पुत्रोंसे सुखको प्राप्त शूद्रादि नीचों करके कलहको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

अथ तुलाराशिगतगुरुदशाफलम्।

तुलास्थदम्भोलिभिदिज्यपाके विवेकहीनः प्रमिताल्पभोक्ता ॥
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात् ॥ १२ ॥

जो तुलाराशिमें बृहस्पति बैठा होय तौ वह मनुष्य विवेकरहित बहुत अल्पखानेवाला स्त्री पुत्रोंकरके शत्रुभावको प्राप्त उत्साहरहित होताहै ॥ १२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतगुरुदशाफलम् ।

बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः ॥
प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणी भवेन्ना नियमेन हीनः॥१३॥

जो वृश्चिकराशिमें बृहस्पति बैठा होय तौ वह मनुष्य बुद्धिमान सामर्थ्यवान चतुर उत्साहसहित और नम्रता करके युक्त ऋणसे रहित नियमसे हीन होताहै ॥ १३ ॥

अथ मूलत्रिकोणांशराशिगतगुरुदशाफलम् ।

मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान्मनुष्यः ॥
स्यान्मांडलिको यदि वा प्रधानः पित्रान्वितः स्त्रीवचनाऽनुषक्तः ॥

जो बृहस्पति धनराशिमें अपने मूलत्रिकोणांशमें बैठा होय तौ अपनी दशामें बुद्धिमान करता है राजा मंडलका स्वामी अथवा वजीर पिताकरके सहित स्त्रीके वचनोंमें आसक्त होताहै ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रांशगतगुरुदशाफलम् ।

नवांशकेभ्यः परतश्च चापे संस्थस्य देवेंद्रगुरोर्दशायाम् ॥
कृषिक्रियायज्ञचतुष्पदेषु भवेन्मनुष्यस्य मनःप्रवृत्तिः ॥ १५ ॥

जो बृहस्पति धनराशिमें मूलत्रिकोणांशसे रहित अपने स्वक्षेत्रमें बैठा होय तो अपनी दशामें खेतीके काममें और यज्ञकर्मकरके चौपायोंमें मनकी प्रवृत्ति करनेवाला होता है॥ १५ ॥

अथ नीचांशगतगुरुदशाफलम् ।

नीचांशसंस्थस्य मृगान्वितस्य गुरोर्दशायां परकर्मकर्ता ॥
मर्त्यो भवेज्जाठरगुह्यरोगी सार्द्धं वियोगी धनबंधुभिश्च ॥ १६ ॥

जो बृहस्पति मकरराशिमें नीचांशगत बैठा होय तो पराये कर्म करनेवाला और पेटमें और गुह्यस्थानमें रोगयुक्त धन और संबंधियों करके रहित होता है ॥ १६ ॥

अथ नीचांशच्युतगुरुदशाफलम् ।

वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्य पाके निषादात्कृषितो धनाप्तिः ॥
भूमीरुहेभ्यो धनवंचनाद्वा क्लेशोपलब्धिर्ननु मानवस्य ॥ १७ ॥

नीचांशसे पतित मकरराशिगत बृहस्पतिकी दशामें निषादकरके खेती करके धनप्राप्ति करनेवाला और वृक्षोंकरके ठगई करके धन प्राप्त करनेसे क्लेशको प्राप्त करताहै ॥ १७ ॥

अथ कुंभराशिगतगुरुदशाफलम्।

पाकप्रवेशे कलशस्थितस्य वाचामधीशस्य नरः कलाज्ञः ॥
विद्याप्रसिद्ध्यर्थमहामतिःस्यात्कांताविलासानुरतो नितांतम् १८

जो कुंभराशिमें बृहस्पति बैठा होय तो अपनी दशामें कलाओंका जाननेवाला और प्रसिद्ध विद्यावाला बड़ा बुद्धिमान और निरंतर स्त्रीके विलासमें तत्पर होता है ॥ १८ ॥

अथ मीनराशिगतगुरुदशाफलम्।

झषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषो मनीषी ॥
सन्मानसूनुप्रमदादिसंपद्राजान्वये यातमहासुखश्च ॥ १९ ॥

जो मीनराशिमें बृहस्पति बैठाहोय तो अपनी दशामें श्रेष्ठताको प्राप्त और सन्मान, पुत्र, स्त्री और संपत्तिसहित राजाके वंशमें उत्पन्न मनुष्योंकरके बड़े सुखको प्राप्त होता है १९

अथ भृगुदशाफलम्।

दैत्यामात्यः स्वीयपाकप्रवेशे योषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिम् ॥
नानामानं मानवानां प्रकुर्यात्कंदर्पस्याभ्युद्गमात्सौख्यमुच्चैः॥१॥
गीते नृत्येऽत्यंतसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः ॥
बुद्ध्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रये वा क्रये वा ॥२॥
गोवाहनेभ्यो ननु नन्दनेभ्यः सौख्यं भवेन्नंदननन्दनेभ्यः ॥
पूर्वार्जितस्य द्रविणस्य लब्धिः कलिः कुले स्याच्चलनात्स्थलाच्च३
कफानिलाभ्यां किल निर्बलं स्यात्कलेवरं नीचतरैश्च वैरम् ॥
विप्रादिचिंतापरितप्तमेव चित्तं च सख्यं कुजनैः कदाचित् ॥४॥
सामान्यतः प्रोक्तमिदं सितस्य दशाफलं पूर्वमुनिप्रणीतम् ॥
अथोच्यतेऽत्र प्रतिराशिजातं फलं प्रयोज्यं बलतारतम्यात्५॥

अब सामान्यसे शुक्रकी दशाका फल कहते हैं शुक्र अपनी दशाके प्रवेशमें स्त्री और भूषण तथा रत्न और वस्त्रोंकी प्राप्ति कराता है और कामदेवकी वृद्धि करे बड़ोंकरके सुखकी प्राप्ति करावे ॥ १ ॥ गीत और नृत्यमें बड़े हर्षको प्राप्त विद्या पढ़नेमें प्रीति सुंदर स्वभावको करता है और बहुत बुद्धि करे अन्नदानमें प्रवृत्ति करे और चीजोंके क्रय विक्रय करनेमें चतुर होता है ॥ २ ॥ और गायसे, सवारीसे, बेटे पोतोंसे सुख करता है और पहिलेका पैदा किया हुआ धनको प्राप्त और कुलमें कलहको प्राप्त और मार्गमें तथा घरमें कलह होता है ॥ ३ ॥

और कफवातकरके निर्बलता होती है नीचपुरुषोंसे प्रीति होय और मित्रादिकोंसे चित को प्राप्त संतापयुक्त चित्त होता है और कभी कभी दुष्टोंसे मित्रताको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥ यह सामान्यता करके शुक्रका फल बलाबल करके पहिले मुनीश्वरोंने कहा है अब प्रत्येक राशिस्थित शुक्रकी दशाका फल कहते हैं वह फलभी शुक्रके बलाबलकरके कहना चाहिये॥५॥

अथ मेषराशिगतभृगुदशाफलम् ।

शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणाम्॥
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगता चञ्चलचित्तवृत्तिः ॥ ६ ॥

जो मेषराशिमें शुक्र बैठा होय तौ अपनी दशामें स्त्री और धनके सौख्य समूहको नाश हमेशा भ्रमण करनेवाला दुर्व्यसनोंसहित उद्वेगतासहित चंचल चित्तवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ वृषराशिस्थितभृगुदशाफलम् ।

वृषोपयातोशनसो दशायां कृषिक्रियासत्पशुसौख्यवृद्धिः ॥
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतरां विचित्रा दातृत्वकन्याजननप्रसादाः ७॥

जो वृषराशिमें शुक्र बैठा होय तो अपनी दशामें खेती करके श्रेष्ठपशुओं करके सौख्यकी वृद्धिको प्राप्त शास्त्रमें बुद्धि विचित्र दान करनेमें प्रीति कन्याकी संतान पैदा करे प्रसन्नताको प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अथ मिथुनराशिगतभृगुदशाफलम् ।

युग्मगामिभृगुजस्यदशायां मानुषो भवति काव्यकलाज्ञः ॥
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ॥ ८ ॥

जो मिथुनराशिमें शुक्र बैठा होय तो अपनी दशामें मनुष्य काव्यकी कलाओंका जानने-वाला और हंसीमें विस्मयमें कथामें रुचि करनेवाला परदेश जानेकी इच्छा करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ कर्कराशिगतभृगुदशाफलम् ।

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्यदक्षः ॥
भार्यान्तरावाप्तिसमुत्सुकोपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः ॥ ९ ॥

जो कर्कराशिमें शुक्र बैठा होय तो अपनी दशामें अपने काममें चतुरताको प्राप्त स्त्रीको प्राप्त और उत्साहको प्राप्त अनेक तरहके उद्यम करनेवाला कृतज्ञ होता है ॥ ९ ॥

अथ सिंहराशिगतभृगुदशाफलम् ।

दैत्येन्द्रवन्द्यस्य मृगेंद्रगस्य पाकप्रवेशो वनिताप्तवित्तः ॥
नरं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखो मनुष्यः ॥ १० ॥

जो सिंहराशिमें शुक्र बैठा होय तो अपनी दशामें स्त्री करके धनको प्राप्त पराये धनकरके आजीविका करनेवाला और चौपाये तथा पुत्रोंके थोड़े सुखको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

अथ कन्याराशिगतभृगुदशाफलम्।

पाके भवेद्दानववंदितस्य कन्यास्थितस्यागचयः सुखानाम् ॥
वित्ताल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलं मनः स्वस्थलतश्चलत्वम् ११॥

जो कन्याराशिमें शुक्र बैठाहोय तो अपनी दशामें सुखसमूहसहित होता है धनकी अल्पतासहित और मनोरथ नष्ट चंचलमन अपने स्थानसे चलनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ तुलाराशिगतभृगुदशाफलम्।

तुलाधरस्थाऽसुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः ॥
विशिष्टमानो धनवाहनाढ्यः स्वजातिसंप्राप्तमहासुखः स्यात् १२

जो तुलाराशिमें शुक्र बैठा होय तो अपनी दशामें खेती करनेवाला श्रेष्ठ मानको प्राप्त धन वाहनसहित और अपनी ज्ञातिकरके बडे सुखको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतभृगुदशाफलम्।

भवेद्भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी ॥
परस्य कार्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः ॥१३॥

जो वृश्चिकराशिमें शुक्र बैठाहोय तो अपनी दशामें परदेशयात्रा कराना पराये कार्यमें तत्पर बडा प्रतापी कर्ज करके सहित कलहमें तत्पर कराता है ॥ १३ ॥

अथ धनराशिगतभृगुदशाफलम्।

चापोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं नृपतेः प्रतिष्ठा ॥
कलाकलापाकलनं किल स्यात्क्लेशाधिकत्वं द्विषतां प्रवृद्धिः १४

जो धनराशिमें शुक्र बैठाहोय तो अपनी दशामें कामनासहित होताहै राजासे प्रतिष्ठाको प्राप्त कलाओंके कलापसहित क्लेशकी अधिकतासहित शत्रुताकी वृद्धि सहित होता है ॥ १४ ॥

अथ मकरराशिगतभृगुदशाफलम्।

नक्रस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पुरुषः शत्रुविनाशदक्षः ॥
श्लेष्मानिलाभ्यां विबलः कदाचित्कुटुम्बचिंतासहितः सहिष्णुः १५

मकरराशिगत शुक्रकी दशामें मनुष्य शत्रुओंके नाशमें चतुर कफवातकरके निर्बलतासहित कभी कभी कुटुंबकी चितासहित सहनशील होता है ॥ १५ ॥

अथ कुंभराशिगतभृगुदशाफलम् ।

उशनसः कलशस्थितिकारिणो यदि दशा पुरुषो व्यसनाकुलः ॥ गदयुतो वियुतः शुभकर्मणा व्रतहतोप्यनृतोक्तिरतो भवेत् ॥ १६ ॥

जो कुम्भराशिगत शुक्रकी दशा हो तो पुरुष व्यसनों करके व्याकुल रोगसहित श्रेष्ठ कार्यरहित व्रतों करके रहित झूँठ बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ मीनराशिगतभृगुदशाफलम् ।

दशाप्रवेशे भृगुनंदनस्य मीनाधिसंस्थस्य नृपप्रधानः ॥
स्यान्मानवोऽत्यंतधनप्रसन्नः कृषिक्रियाभोगभरोपपन्नः ॥१७॥

जो मीनराशिमें शुक्र बैठाहोय तो अपनी दशामें राजाका मंत्री बहुत धनसे प्रसन्नताको प्राप्त खेतीकी क्रियामें आसक्त भोगयुक्त होता है ॥ १७ ॥

अथोच्चांशगतभृगुदशाफलम् ।

स्वोच्चांशभाजो भृगुजस्य पाके विलग्नकर्मोपगतस्य मर्त्यः ॥
क्षोणीहिरण्योत्तमवारणाद्यैर्युतो भवेद्वै निजवंशनाथः ॥ १८ ॥

जो अपने उच्चांशमें शुक्र बैठा होय और लग्न वा दशममें बैठा होय तो अपनी दशामें धरती सोना और श्रेष्ठ हाथी और घोडों करके सहित अपने वंशमें नाथ होता है १८

अथ शनिदशाफलम् ।

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरग्रामकृताधिकारः ॥
धीमाँश्च दानाधिकृतातिशाली नानाकलाकौशलसंयुतश्च ॥१॥
तुरंगहेमाम्बरकुञ्जराद्यैः संपन्नतां याति विनीततां च ॥
देवद्विजार्चाभिरतो विशेषात्पुरातनस्थानकलब्धसौख्यः ॥ २ ॥
देवद्विजेंद्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्तिः स्वकुलावतंसः ॥
आलस्यनिद्राकफवातपित्तजनाङ्गनादद्रुविचर्चिकार्तः ॥ ३ ॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमत्र शनेर्दशायां गदितं हि पूर्वैः ॥
अथाभिधास्ये प्रतिराशिजाते फलं सुधीभिर्बलतोविचिंत्यम् ॥४॥

अब सामान्यतासे शनैश्चरका फल कहते हैं शनैश्चर की दशामें मनुष्य नगर और ग्रामके अधिकारको प्राप्त होय बुद्धिमान दानकी अधिकतासहित अनेककलामें कुशल होता

है ॥ १ ॥ घोडे, सोना, वस्त्र, हाथियों करके युक्त नम्रतासहित देवब्राह्मणोंके पूजनमें तत्पर पुराने स्थानोंका सौख्य प्राप्त करनेवाला होता है ॥ २ ॥ देवता और ब्राह्मणोंके स्थानको करनेवाला श्रेष्ठशील बडी कीर्तिसहित अपने कुलमें प्रतापी होता है और आलस्य करके सहित निद्रायुक्त कफ वात पित्तसहित और उसकी स्त्री दाद और फुडियोंके रोगसे पीडित होती है ॥ ३ ॥ यह सामान्यतः फल शनिश्चरकी दशाका पूर्वाचार्योंने कहा है अब अगाडी हरएकराशिस्थित शनैश्चरका फल बलाबलके अनुसार विचार करना चाहिये॥ ४॥

अथ मेषराशिगतशनिदशाफलम्।

मेषोपयातस्य शनैश्चरस्य दशाप्रवेशे पुरुषो विशेषात् ॥
क्लेशाभिभूतः पतनात्सदुःखो विचर्चिकाद्यामयक्तः कृशांगः ॥५॥

जो मेषराशिमें शनैश्चर बैठा होय तो अपनी दशामें विशेष करके मनुष्य क्लेशोंकरके सहित और ऊपरसे गिरकर दुःखको प्राप्त और फोडे फुंसीके रोगकरके सहित दुर्बल शरीर होता है ॥ ५ ॥

अथ वृषराशिगतशनिदशाफलम्।

वृषोपयातस्य दिनेशसूनोः पाकप्रवेशे मतिमान्मनुष्यः ॥
नरेंद्रसन्मानविराजमानः संग्रामसंप्राप्तयशोविशेषः ॥ ६ ॥

जो वृषराशिमें शनैश्चर बैठा होय तो अपनी दशामें मनुष्यको बुद्धिमान करता है और राजाके सन्मानको प्राप्त शोभायमान युद्धमें यशको प्राप्त विशेष करके होता है ॥ ६ ॥

अथ मिथुनराशिगतशनिदशाफलम्।

शनेर्दशायां मिथुनाश्रितस्य नरो भवेच्चारुविलासशीलः ॥
चौरोच्चदारादिजनाद्धनाप्ती रणप्रसङ्गाच्च परोपकारी ॥ ७ ॥

जो मिथुनराशिमें शनैश्चर बैठा होय तो अपनी दशामें श्रेष्ठ विलासमें शीलवाला और चोरोंसे वा स्त्रीसे धनकी प्राप्ति करनेवाला संग्राममें वीर पराया उपकार करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अथ कर्कराशिगतशनिदशाफलम्।

कर्कस्थितार्कात्मजपाककाले लोलं मनः पुत्रकलत्रमित्रैः ॥
श्रोत्रे च नेत्रे परिपीडनं स्यात्कलेवरं निर्बलतां प्रयाति ॥ ८ ॥

जो कर्कराशिमें शनैश्चर बैठा होय तो अपनी दशामें पुत्र स्त्री मित्रोंकरके चञ्चलमनको प्राप्त और कान आंखोंमें पीडाको प्राप्त और निर्बलताको प्राप्त शरीर होताहै ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतशनिदशाफलम् ।

पञ्चाननस्थस्य शनेर्दशायां बाधा भवेद्वै विविधा नराणाम् ॥
दारात्मजाद्यैः कलहप्रसङ्गस्तुरंगगोदासजनेष्वसौख्यम् ॥ ९ ॥

जो सिंहराशिमें शनैश्वर बैठा होय तो अपनी दशामें अनेक तरहकी बाधाको प्राप्त होता है और स्त्री पुत्रादिकों करके कलहको प्राप्त और घोड़े तथा दासजनोंकरके क्लेशको प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

अथ कन्याराशिगतशनिदशाफलम् ।

कन्योपयातस्य शनेर्दशायां भवेत्क्रमेण द्रविणोपलब्धिः ॥
जलाच्च भूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापि महाप्रमोदः ॥ १० ॥

जो कन्याराशिमें शनैश्वर बैठा होय तो अपनी दशामें क्रम करके धनकी प्राप्ति करानेवाला और जलकरके वृक्षोंकरके ऊंचस्थानोंसे और उत्तमदेशसे आनंदको प्राप्त होता है १० ॥

अथ तुलाराशिगतशनिदशाफलम् ।

काले दशायां नलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः ॥
गजाश्वहेमांबररत्नपूर्णा भवेन्नराणां करुणाधिकत्वम् ॥ ११ ॥

जो तुलाराशिमें शनैश्वर बैठा होय तो अपनी दशामें उत्तम राज्यलक्ष्मीको प्राप्त हाथी, घोड़े, सोना, कपड़ा और रत्नोंकरके पूर्ण अधिक दयावान मनुष्य होता है ॥ ११ ॥

अथ वृश्चिकराशिगतशनिदशाफलम् ।

सरीसृपस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः साहसकर्मयुक्तः ॥
वृथाऽटनो वै कृपणोऽनृतश्च नीचानुरक्तश्च दयाविहीनः ॥१२ ॥

जो वृश्चिकराशिमें शनैश्वर बैठा होय तो अपनी दशामें हठकर्मोंकरके सहित व्यर्थ घूमनेवाला कृपण झूठ बोलनेवाला नीचोंमें आसक्त दयारहित होताहै ॥ १२ ॥

अथ धनराशिगतशनिदशाफलम् ।

धनुर्धरस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
संग्रामधीरश्चतुरंग्रियुक्तः कांतासुतानंदविनोदयुक्तः ॥ १३ ॥

जो धनराशिमें शनैश्वर बैठा होय तो अपनी दशामें राजाका मंत्री होता है, संग्राममें धैर्यवाला चौपायोंकरके सहित स्त्री और पुत्रोंके आनंद सहित होता है ॥ १३ ॥

अथ मकरराशिगतशनिदशाफलम् ।

शनेर्दशायां मकराश्रितस्य बहुश्रमोत्पन्नधनं नराणाम् ॥
नपुंसकस्त्रीजनसेवनत्वं विश्वासघातेन धनक्षतिश्च ॥ १४ ॥

जो मकरराशिमें शनैश्चर बैठा होये तौ अपनी दशामें बहुत परिश्रम करके धन पैदा करे नपुंसक और स्त्रीजनोंकी सेवाकरनेवाला विश्वासघात करके धर्मकी हानि करता है ॥ १४ ॥

अथ कुंभराशिगतशनिदशाफलम् ।

शनेर्दशायां कलशाश्रितस्य सुखानि नूनं महती प्रतिष्ठा ॥
श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुले नरस्य कृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः ॥१५॥

जो कुंभराशिमें शनैश्चर बैठा होय तौ उसकी दशामें मनुष्य सुख और बडी प्रतिष्ठाको प्राप्त होताहै और बडोंकरके कुलमें श्रेष्ठताको प्राप्त होताहै और खेती करके लाभ पुत्र और धनकी प्राप्तिको लाभ करताहै ॥ १५ ॥

अथ मीनराशिगतशनिदशाफलम् ।

भवेद्दशायां ननु भानुसूनोर्मीनोपयातस्य च मानवस्य ॥
नानापुरग्रामधनाङ्गनाभ्यः सुखं तथोत्साहविहीनता च ॥१६॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
दशाफलाध्यायः ॥ १९ ॥

जो मीनराशिमें शनैश्चर बैठा होय तौ अपनी दशामें मनुष्यको अनेक पुर और ग्राम, धन स्त्रियोंके सुखको प्राप्त और उत्साहहीन करता है ॥ १६ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां दशाफलवर्णनाध्यायः ॥ १९ ॥

अथ महादशाफलाध्यायः ।

दशादृकाणैश्च तनोः क्रमेण स्यादुत्तमा मध्यतमाधमा च ॥
स्थिरे च कष्टा शुभदा च मध्या मिश्रेधमाऽमध्यतमोत्तमा च १॥

अब महादशाका फल कहते हैं लग्नकी दशा द्रेष्काण करके श्रेष्ठ मध्यम अधम फलको देती है जो स्थिर लग्नमें पहिला द्रेष्काण होय तौ श्रेष्ठ और मध्यम द्रेष्काणमें मध्यम और तीसरे द्रेष्काणमें नेष्टफलको देती है और द्विस्वभावलग्नमें पहिला द्रेष्काण नेष्ट और दूसरा द्रेष्काण श्रेष्ठ और तीसरा द्रेष्काण मध्यम फल देता है और चरलग्नमें पहिला द्रेष्काण मध्यम और दूसरा द्रेष्काण श्रेष्ठ और तीसरा द्रेष्काण नेष्ट होता है ॥ १ ॥

शुभानि मध्यानि च निंदितानि फलानि लग्नेशदशोदितानि ॥
तान्येव कल्प्यानि सुधीभिरत्र बलानुमानात्तनुनायकस्य ॥२॥
संशालते यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा ॥
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम् ॥३॥

पहिले श्रेष्ठ मध्यम अधम ये तीनोंप्रकारके फल जो लग्नदशाके कहे हैं सो सब लग्नेशके बलाबल करके कहना चाहिये ॥ २ ॥ जो ग्रह दिग्बलकरके सहित होय वह ग्रह अपनी दशामें बडी भारी प्रतिष्ठा और अनेक तरहका धनलाभ कराता है ॥ ३ ॥

विलोमगामिग्रहपाककाले स्थानार्थसौख्यान्यति चंचलानि ॥
प्रवासशीलत्वमतीव जंतोर्लोके महत्त्वापचयत्वमेव ॥ ४ ॥
ऋजुप्रयातद्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः ॥
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेभिमतार्थसिद्धिः ॥ ५ ॥

जो ग्रह वक्रगति होय उसकी दशामें स्थान धन सौख्य अतिचंचल होता है और परदेशजानेकी इच्छा करे और संसारमें बडी हानिको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ और मार्गी ग्रहकी दशामें सन्मान और सौख्य धन यशकी वृद्धि होतीहै व छठे आठवें बारहवें स्थानसे रहित ग्रहकी दशामें इच्छा फलकी प्राप्ति होती है ॥ ५ ॥

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः ॥
विदेशगामी निजबंधुवर्गैस्त्यक्तो भवेदामहताभियुक्तः ॥ ६ ॥

स्वर्भानुयुक्तस्य च खेचरस्य दशा वरिष्ठाप्यतिरिष्टदा स्यात् ॥
पाकावसाने ननु मानवानां दुःखानि हानिश्च विदेशयानम् ॥७॥

जो ग्रह नीचराशिगत शत्रुक्षेत्रमें बैठा होय अथवा वक्री होय उस ग्रहकी दशामें खोट कर्ममें प्रीति होती है और परदेशमें वास अपने बंधुवर्गसे रहित हठ करके सहित होता है॥६॥ जो राहुयुक्त ग्रह बैठा होय तो अपनी दशामें भवलरोग देवे और दशाके अन्तमें दुःख और हानि परदेशयात्रा कराता है ॥ ७ ॥

जन्मराशिजतनुस्तनुनाथपो रिपुदशासमये मतिविभ्रमः ॥
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतः खलजनैः कलहो बलहीनता ॥ ८ ॥
लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्य भवेद्दशायामतिपीडनं हि ॥
दशावसानेऽपि च मानवानां भवेत्समाप्तिः खलु जीवितस्य ॥९॥
क्रूराख्यखेटस्य दशांतराले क्रूरग्रहस्यांतरजा दशा चेत् ॥
शत्रूद्गमोऽर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति वदेन्नराणाम् ॥ १०॥

जन्मराशि और जन्मलग्नके स्वामी शत्रुग्रहकी दशामें बुद्धिका भ्रम और शत्रुका भय राज्यसे पतित करना दुष्टजनोंसे कलह बलकी हीनता होती है ॥ ८ ॥ और जो लग्नका स्वामी अष्टमभावमें बैठा होय तो उसकी दशामें अत्यंत पीडा होय और दशाके अंतमें मनुष्योंको जीवनकी समाप्ति करता है ॥ ९ ॥ और पापग्रहकी दशाके बीचमें और पाप ग्रहके अंतरमें शत्रुकी उत्पत्ति और धनका नाश आयुका नाश होता है ॥ १० ॥

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्नाः कार्याःस्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत् ॥
लग्नत्रिखायारिगतोऽथ लग्ने तन्मित्रवर्गः शुभदा दशा सा ॥११॥
श्रेष्ठा प्रदिष्टेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशा कष्टफलाधिकस्य ॥
यस्येष्टकष्टे भवतः समाने फलं विमिश्रं किल तस्य पाके॥१२॥
दशाप्रवेशे खचरः स्वतुंगे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ॥
शुभेषुवर्गस्थितिकृच्छुभेष्टेष्टे दशारिष्टहरो भवेत्सः ॥१३॥

इति दैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे महादशाफलाध्यायः ॥ २० ॥

दशाके प्रवेशकालमें सब ग्रह लग्नसहित स्पष्ट करना और जो दशापति लग्नमें,तीसरे, दशम ग्यारहें, छठे स्थित होवे और दशापतिके मित्रका वर्ग लग्नमें होय वह दशा शुभफलको देती है ॥ ११ ॥ इष्टग्रह इष्टफल ज्यादे होवे तो उसग्रहकी दशा श्रेष्ठ होती है और जिसग्रहका कष्टफल अधिक होवे उसग्रहकी दशा नेष्ट होती है और जिसग्रहका इष्ट कष्ट दोनों बराबर होंय उसग्रहकी दशामें समानफल कहना चाहिये ॥ १२ ॥ दशाके प्रवेशकालमें जो ग्रह अपने उच्चमें वा मूलत्रिकोणमें अथवा अपने क्षेत्रमें वा शुभग्रहके अष्टवर्गमें और मित्रके वर्गमें बैठा होय और शुभमित्रोंकरके दृष्ट हो तो उसग्रहकी दशामें रिष्टहरण कहना चाहिये॥ १३॥

इति श्रीवंशबरेलिस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजज्योतिर्विकपंडितश्याम-
लालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां महादशाफलवर्ण-
नाध्यायः ॥२० ॥

अथांतर्दशाफलाध्यायप्रारंभः ।

अथ प्रवेशे खलु खेचराणामंतर्दशासूक्ष्मफलप्रसिद्ध्यै ॥
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन ॥ १ ॥
अंतर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव ॥
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात् ॥ २ ॥
अंतर्दशायां मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्याः ॥
रोगः कुभोगः कलहादिभंगः सङ्गश्च निन्द्यैर्हरणं धनस्य ॥ ३ ॥

अब अंतरदशाध्याय कहते हैं अब दशाफलके उपरांत सूक्ष्मफल जाननेके लिये ग्रहोंकी अंतरदशा विचार कर अच्छा बुरा फल विद्वानोंने कहा है सो यहां कहते हैं ॥ १ ॥ जो एकराशिमें पापीग्रह बैठे होंय और उन्हींकी अंतरदशा होय तो उसग्रहकी अंतरदशामें रोग और झगडा शत्रु भय दीनता धनका नाश विशेष कर होता है ॥ २ ॥ जो ग्रह सप्तम बैठे होंय उनकी अंतरदशामें स्त्रीका मरण कहना चाहिये और रोग निंद्यभोग और कलहादिभंग और नीचोंका संग धनका नाश होता है ॥ ३ ॥

खेचारिणामष्टमभावगानामंतर्दशा संजनयेदरिष्टम् ॥
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम् ॥ ४॥

त्रिकोणमेपूरणवेश्मगानामंतर्दशा सौख्यमतीव नित्यम् ॥
करोति लाभं विविधं नराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिं च ॥ ५ ॥

जो ग्रह अष्टमभावमें बैठा होय उसकी अंतर्दशामें रोग होना है और धन नाश खोटे व्यसन होते हैं और जो ग्रह छठे बैठा होय उसकी अंतरदशामें रोगकी वृद्धि होती है ॥४॥ और पंचम, नवम, दशम भावमें जो ग्रह बैठा होय उसकी अंतर्दशामें अत्यंत सौख्य और अनेकप्रकारके लाभ आरोग्यता मानकी उन्नति होती है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम्।

करोति चंद्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषांबरविद्रुमाप्तिम् ॥
समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गाच्चयं जयं च॥ १ ॥
पङ्केरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्यान्मृगाङ्को यदि लाभमुच्चैः ॥
प्रमादमङ्ग्यो ग्रहणीं च पाण्डुं केषांचिदेतन्मतमत्र चोक्तम् ॥२॥

जो सूर्यकी महादशामें चंद्रमाका अंतर होय तो वह मनुष्य सोना और आभूषण मूंगाकी प्राप्ति सहित ऊंचे मानकी उन्नति अर्थात् बड़े अधिकारको प्राप्त सुखकी वृद्धिसहित शत्रुवर्गोंसे जयको प्राप्त होता है ॥१॥ सूर्यकी दशामें चंद्रमा अंतरमें पडे तो लाभको प्राप्त होता है और जलके प्रमादसे संग्रहणीरोग और पांडुरोगकी पीडा होती है जो क्षीणचंद्रमा होय तो ऐसा फल जानना चाहिये यह किसी किसी आचार्यका मत है ॥ २ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये भौमांतर्दशाफलम्।

सत्प्रवालकलधौतसुचैलं मंगलानि विजयं च विधत्ते ॥
मंगलः कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल पुंसः ॥ ३ ॥

सूर्यमहादशामें जब मंगलका अंतर होता है तो मनुष्यको मूंगा और सोना श्रेष्ठ वस्त्र अनेक मंगल विजयकी प्राप्ति राजाके कुलमें मान होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम्।

विचर्चिकादद्रुविकारपूर्वैः पामामयैर्देहनिपीडनं स्यात् ॥
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशां प्रयाते ॥ ४ ॥

जो सूर्यकी दशामें बुधका अंतर होय तो खुजलीका विकार दाद और कुष्ठरोगसे पीडाको प्राप्त होता है और धनका खर्च उत्साह नाशको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

सद्वस्त्रधान्यादिषु संग्रहेच्छा स्वच्छा मतिर्विप्रसुरार्चनेषु ॥
भूषातिसन्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतींद्रवन्द्ये ॥ ५ ॥

जो सूर्यकी दशामें बृहस्पतिकी अंतरदशा होवे तो श्रेष्ठ वस्त्र और अन्नादिकोंके संग्रहको करनेकी इच्छा करे और ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें श्रेष्ठ बुद्धि करे अभूषणोंको प्राप्त और सन्मान अनेकधनको प्राप्त करता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यमहादशामध्ये भृगोरंतर्दशाफलम् ।

विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम् ॥
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशां प्रयातः ६॥

जो सूर्यकी महादशामें शुक्रका अंतर होवे तो परदेशयात्रा कहाई करके व्याकुल दर्द और शिर तथा कानमें पीडा बड़ा भारी ज्वरका रोग होता है ॥ ६ ॥

अथ सूर्यदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम् ।

नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसंभवः स्यात ॥
मित्राण्यमित्राणि भवंति नूनं शनैश्चरे भानुदशांतरस्थे ॥ ७ ॥

जो सूर्यकी दशामें शनैश्चरका अंतर होवे तो नीचजनोंसे वैर करावे राजासे बड़ा भय करावे और कंडूआदि रोग पैदा होंय और मित्र निश्चय कर शत्रु होजाते हैं ॥ ७ ॥

अथ चंद्रदशामध्ये रवेरंतर्दशाफलम् ।

नरेश्वराद्गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्तिं प्रकृतेर्विकारम् ॥
चोराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः ॥ १ ॥

जो चंद्रमाकी दशामें सूर्यका अंतर होवे तो राजा करके गौरवता और धनका लाभ होय और क्षयरोग करके पीडित चित्तमें भ्रम और चोर अग्नि तथा शत्रुओंका भय होता है ॥१॥

अथ चंद्रदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोषोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च ॥
कुर्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके ॥ २ ॥

जो चंद्रमाकी दशामें मंगलका अंतर होवे तो इकट्ठे कियेहुए धनका नाश रक्तपित्तादिरोगोंको प्राप्त स्थानसे पतित और मातापिताके कुलके मनुष्योंसे पीडा होती है ॥ २ ॥

अथ चंद्रदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम् ।

उदारनामांतरलब्धसुचैर्लाभगोभूमिगजाश्ववृद्धिम् ॥
विद्याधनैश्वर्यसमुन्नतत्वं कुर्याद्बुधश्चंद्रदशांतराले ॥ ३ ॥

जो चंद्रमाकी दशामें बुधका अंतर होय तो उदारताकरके विशेषपदको प्राप्त ध्वजा छत्र गौ धरती हाथी घोड़ोंकी वृद्धिको प्राप्त विद्या धन ऐश्वर्यकी उन्नतिको प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अथ चंद्रदशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

विशिष्टधर्मो धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसंपत् ॥
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

जो चंद्रमाकी दशामें बृहस्पतिका अंतर होय तो श्रेष्ठधर्म और धन अन्न भोगोंकी वृद्धि करै और हाथी घोड़ोंकी संपदाको प्राप्त और पुत्रोत्सवकरके सहित होता है ॥ ४ ॥

अथ चंद्रदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम् ।

नानाङ्गनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः ॥
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः ॥५॥

जो चंद्रमाकी दशामें शुक्रका अंतर होय तो अनेक स्त्रियोंके साथ विलास करनेमें शील होय और जलसे पैदा पदार्थ धन अन्न करके सहित मोती और आभूषणोंको प्राप्त होताहै ५

अथ चंद्रदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

नरेंद्रचौराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रासुखरुक्प्रवृद्धिम् ॥
करोति नानाव्यसनानि नूनं शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः ॥ ६ ॥

जो चंद्रमाकी दशामें शनैश्चरका अंतर होवे तो राजा और चोर, शत्रु अग्निका भय होता है और स्त्री पुत्रोंका दुःख और रोगोंकरके सहित अनेकतरहके दुर्व्यसनोंको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

अथ भौमदशामध्ये सूर्यांतर्दशाफलम् ।

नानाधनाभ्यागमनानि नूनं सन्मानवृद्धिं मनुजाधिराजात् ॥
चण्डत्वमाजौ विजयं विदध्याद्भानुर्धरासूनुदशांतरस्थः ॥ १ ॥
दुर्गशैलवनसंचलनेच्छा बंधुतातजनितातिविरोधः ॥
मानवो भवति भूतनयान्तर्भास्करे चरति केपि वदंति ॥ २ ॥

जो मंगलकी दशामें सूर्यका अंतर होय तो अनेकतरहके धनोंकी प्राप्ति सन्मानकी वृद्धि राजासे होती है और रणमें बड़ा बल तथा जयको प्राप्त होता है ॥ १ ॥ किसी किसी आचार्यका

ऐसा भी मत है कि मंगलकी दशामें सूर्यके अंतरमें किला कोट पर्वत वनमें जानेकी इच्छा करे और माता पिता तथा और मनुष्योंसे विरोध कराता है ॥ २ ॥

अथ भौमदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

नित्योत्सवानंदमहापदानि मुक्ताफलद्रव्यविभूषणानि ॥
मित्रोद्गमं श्लेष्मविकारमिंदुर्भौमस्य पाके विचरन्करोति ॥ ३ ॥

जो मंगलकी दशामें चंद्रमाका अंतर होवे तो नित्य उत्सव और आनंद बडे पदको प्राप्त मोती और द्रव्य आभूषणोंको प्राप्त होवे और मित्रोंकी प्राप्ति कफका विकार होता है ॥ ३ ॥

अथ भौमदशामध्ये बुधान्तर्दशाफलम् ।

अरातिभूपामयतस्करेभ्यः पीडां वियोगं सुतदारमित्रैः ॥
स्वल्पोत्सवो यच्छति चंद्रसूनुर्भौमस्य पाके यदि संप्रविष्टः ॥४॥

जो मंगलकी दशामें बुधका अंतर होय तो शत्रुसे राजासे रोगसे और चोरसे पीडा होय और पुत्र स्त्री तथा मित्रोंकरके वियोग थोडा उत्सव होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमदशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

कलाधिकत्वं नृपतेर्धनाप्तिं कलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यम् ॥
सत्कर्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशां प्रविष्टः ॥ ५ ॥

जो मंगलकी दशामें बृहस्पतिका अंतर होय तो बलकी अधिकता राजाकरके धन प्राप्ति स्त्री और मित्र तथा पुत्र और वाहनका सौख्य श्रेष्ठकर्म और धर्ममें तत्पर होता है ॥ ५ ॥

अथ भौमदशामध्ये भृगोरंतर्दशाफलम् ।

विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुंबवादद्रविणव्ययश्च ॥
नानाप्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमान्तरे दानवराजपूज्ये ॥ ६ ॥

जो मंगलकी दशामें शुक्रका अंतर होय तो परदेशकी यात्रा अनेक व्यसन और रोगों-करके पीडित कुटुंबियोंसे झगडा धनका खर्च अनेक परदेशोंमें चित्तकी वृत्ति चलाय-मान होती है ॥ ६ ॥

अथ भौमदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

कलत्रपुत्रात्मजनेषु बाधा प्राणप्रयाणांतशरीरपीडा ॥
स्वस्थानयानं यदि भानुसूनोरंतर्दशा भौमदशांतराले ॥ ७ ॥

जो मंगलकी दशामें शनैश्वरका अन्तर होय तो स्त्री, पुत्र, मित्र, जनोंको बाधा मृत्युतुल्य देहको पीडा और अपने स्थानसे यात्रा कराता है ॥ ७ ॥

अथ बुधांतर्दशामध्ये रवेरंतर्दशाफलम् ।

तुरंगहेम्नां च सुविद्रुमाणां सदंबराणामपि वारणानाम् ॥
भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानां सौम्यस्य पाके तपने प्रपन्ने ॥ १ ॥
स्वस्थानतः संचलनं कदाचिद्रुक्प्रकोपात्मजजन्मवित्तम् ॥
धर्मे प्रवृत्तिं कुरुते ज्ञपाके पङ्केरुहेशः प्रवदंति केचित् ॥ २ ॥

जो बुधकी दशामें सूर्यका अंतर होय तो घोड़ा, सोना, मूंगा, श्रेष्ठवस्त्र और हाथियोंकी प्राप्ति कराता है और बहुत वैभवसहित होता है ॥ १ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं अपने स्थानसे यात्रा होय रोग होय पुत्रका जन्म होय और धनका लाभ धर्ममें प्रवृत्ति होती है ॥ २ ॥

अथ बुधदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

पामादिनानामयसंभवः स्यान्मृतप्रजानां जननं विवादः ॥
पित्तप्रकोपः खलु यानपीड़ा यदा जडांशुर्ज्ञदशां प्रपन्नः ॥ ३ ॥

जो बुधकी दशामें चंद्रमाका अंतर होय तो कंडू आदि अनेक रोगोंको पैदाकरे संतानकी मृत्युहोय और झगडा होय पित्तका प्रकोप होय यात्रामें पीडा होती है ॥ ३ ॥

अथ बुधदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

गुह्यामयार्थव्यसने युतः स्यात्कांतासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः ॥
विलुप्तधर्मो मनुजः प्रविष्टे बुधस्य मध्ये वसुधातनूजे ॥ ४ ॥

जो बुधकी दशामें मंगलका अंतर होवे तो गुह्यस्थानमें रोग होय व्यसनों करके सहित स्त्री पुत्रसे प्रीतिरहित चित्त धर्मका लोप होता है ॥ ४ ॥

अथ बुधदशामध्ये गुरोरंतर्दशाफलम् ।

कांतासुतानंदयुतोरिहंता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः ॥
मंत्री नरः स्यात्पितृमातृदुःखी बृहस्पतौ सौम्यदशां प्रयाते ॥५॥

जो बुधकी दशामें बृहस्पतिका अंतर होय तो स्त्री और पुत्रोंसहित आनंदको प्राप्त शत्रुओंका नाश करे श्रेष्ठकर्म करे सुंदर बुद्धि नम्रतासहित राजाका मंत्री होय पितामातासे दुःखी होताहै ॥ ५ ॥

अथ बुधदशामध्ये भृगोरंतर्दशाफलम् ।

विबुधसाधुजनार्थितिसादरः सुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः ॥
विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरो बुधदशांतरगे सति भार्गवे ॥ ६ ॥

नानाप्रयासैश्च निरोधनैर्वा शिरोरुजा वापि शरीरभाजाम् ॥
करोति बाधां विबुधान्तराले सितः प्रयातः प्रवदंति केचित् ॥७॥

जो बुधकी दशामें शुक्रका अंतर होय तो अनेक साधुजन और अतिथियोंका आदर करे श्रेष्ठकार्योंमें उत्साही होय अनेक वस्त्र और आभूषणोंको भोगताहै ॥ ६ ॥ कोई ऐसाभी कहते हैं अनेक आयास करनेसे और वेगको रोकनेसे मस्तकपीडा और अनेकप्रकारकी शारीरिकपीडा होती है ॥ ७ ॥

अथ बुधदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम् ।

सत्कर्मधर्मद्रविणानुकंपा कंदर्पहीनो मनुजः प्रलापी ॥
वातामयार्तोऽतिमृदुस्वभावः सौम्यांतराले नलिनीशसूनौ ॥ ८ ॥

जो बुधकी दशामें शनैश्चरका अंतर होय तो श्रेष्ठकर्म और धर्मधन और दया करके रहित कामदेवकरके हीन प्रलाप करनेवाला वातरोगकरके पीडित अत्यंत कोमलस्वभाव होता है ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशामध्ये रव्यंतर्दशाफलम् ।

सुतीर्थनानाविधवस्तुलाभं विशिष्टनामांतरमाधिपत्यम् ॥
मानं नरेशात्कुरुते दिनेशो वाचामधीशस्य दशां प्रपन्नः ॥ १ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें सूर्यका अंतर होय तो श्रेष्ठतीर्थ अनेक वस्तुओंका लाभ श्रेष्ठनामको प्राप्त और हुकूमतको प्राप्त होय और राजासे मान पाता है ॥ १ ॥

अथ गुरुदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

नानाङ्गनाक्रीडनजातचित्तः श्रीराजचिह्नैश्च विराजमानः ॥
विद्यानवद्यार्थयुतो नरः स्याज्जीवांतरे शीतकरप्रचारे ॥ २ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें चंद्रमाका अंतर होय तो अनेक स्त्रियोंके साथ क्रीडा करनेमें आसक्तचित्त और छत्र चामरादि राजचिह्नोंकरके विराजमान विद्या और श्रेष्ठधनकरके सहित होता है ॥ २ ॥

अथ गुरुदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

रणाङ्गणप्राप्तयशोविशेषः सद्भोगसौख्यार्थसमन्वितश्च ॥
प्रौढप्रतापोऽतितरां नरः स्याद्धरासुते जीवदशां प्रयाते ॥ ३ ॥
शीर्षे गुदे वापि भवेत्कदाचित्पीडा नराणामरिभीतियुक्ता ॥
बलक्षयः संचलनं कुजस्य जीवांतराले प्रवदंति केचित् ॥ ४ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें मंगलका अंतर होय तो युद्धमें भयको प्राप्त होवे और श्रेष्ठभाग और सुख धनसहित होय बडाप्रताप होय ॥ ३ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं कि गुदामें कभी पीडाहोय शत्रुओंसे भयभीति होय और बलका नाश होय और स्थानांतरमें यात्रा करता है ॥ ४ ॥

अथ गुरुदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम्।

सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चनानि सदिंदिरामन्दिरवाहनानि ॥
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं कुर्य्याद्बुधो जीवदशां प्रपन्नः ॥ ५ ॥
विदेशयानं चलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादः शिरसि प्रपीडा ॥
गुरोर्दशायां चरतीन्दुपुत्रे केषां चिदेवात्र मतं निरुक्तम् ॥ ६ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें बुधका अंतर होय तो श्रेष्ठ बुद्धि और चतुरता होय देवताओंका पूजनकरे श्रेष्ठलक्ष्मी और वाहन स्थान स्त्रीपुत्रादिकोंके सुखको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ कोई ऐसा भी कहते हैं परदेशकी यात्रा करे चलायमानचित्तवाला जलके प्रमादसे शिरमें पीडा होती है ॥ ६ ॥

अथ गुरुदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम्।

निजैर्वियोगोर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसङ्गः ॥
स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धिर्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते॥७॥

जो बृहस्पतिकी दशामें शुक्रका अंतर होय तो अपने संबंधियोंके वियोगसे धनका नाश करे और कफवातकी पीडा होय कलहका संग होय और व्यसनोंकी प्राप्ति करे है ॥ ७ ॥

धर्मक्रियायां निरतत्वमुच्चैर्विद्याम्बरान्नादिकसंग्रहश्च ॥
द्विजाश्रयः स्याद्गुरुपाकयाते सिते वदंतीज्यफलं तु केचित्॥८॥

कोई ऐसा भी कहते हैं कि, बृहस्पतिकी दशामें शुक्रके अंतरमें धर्मकी क्रियायोंमें तत्पर विद्या और वस्त्र तथा अन्नादिकोंका संग्रह होय और ब्राह्मणोंका आश्रित होता है ॥ ८ ॥

अथ गुरुदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम्।

वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशाः कृशाङ्गः ॥
खरक्रमेलादियुतो नरः स्याद्गुरोर्दशायां चलितेर्कसूनौ ॥ ९ ॥

जो बृहस्पतिकी दशामें शनैश्चरका अंतर होय तो वेश्या और शराब जुआ करके खेती करके नाशकरे हैं धर्म अर्थ और यश जिसने और दुर्बल शरीर होय गधे और ऊंटोंसे सहित होता है ॥ ९ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये रव्यंतर्दशाफलम् ।

भूपभीतिरपि बंधुनिमित्तं वित्तनाशनमरात्युदयः स्यात् ॥
क्रोडगण्डनयनेष्वपि पीडा भार्गवे यदि रवेर्विनिवेशः ॥ १ ॥

जो शुक्रकी दशामें सूर्यका अन्तर होय तो राजासे भय और संबंधियोंसे धनका नाश और वैरी पैदा होय दोनों हाथोंके मध्य भागमें और गंडस्थलमें और नेत्रोंमें पीड़ा होय ॥ १ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम् ।

शीर्षदंतनखपीडनमुच्चैः कामलाच प्रबला किल पित्तम् ॥
श्वापदादपिभयं च नराणां भार्गवांतरगते हिमरश्मौ ॥ २ ॥
भूदेवदेवाग्निमनःप्रवृत्ती रणाङ्गणे स्याद्विजयो नराणाम् ॥
मातंगकार्याद्वनिताश्रयाद्वा लाभः सिते चंद्रदशेति केचित् ॥ ३ ॥

जो शुक्रकी दशामें चंद्रमाका अन्तर हो तो शिर और दांत नाखूनोंमें बड़ी पीड़ा होय निश्चय-कर पित्तका कोप ज्यादे होय और व्याघ्रादिकोंका भय होय ॥ २ ॥ कोई ऐसाभी कहते हैं ब्राह्मण और देवता और अग्नि पूजनमें मनकी प्रवृत्ति होय और युद्धमें जय और हाथियोंके कर्मसे अथवा स्त्रियोंके आश्रयसे लाभ होता है ॥ ३ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

पितात्क्षताद्रक्तविकारतो वा वैकल्यमङ्गे प्रभवेन्नराणाम् ॥
उत्साहहीनत्वमतीव याते भूमीसुते दैत्यगुरोर्दशायाम् ॥ ४ ॥
सन्माननानाविधवस्तुसौख्यं भूमीपतेः स्यात्खलु भूमिलाभः ॥
अङ्गारके भार्गवपाकसंस्थे केषांचिदेवं मतमस्ति शस्तम् ॥ ५ ॥

जो शुक्रकी दशामें मंगलका अंतर होय तो पित्तसे घावसे रुधिरविकारसे शरीरमें विकलता होती है और उत्साहहीन होता है ॥ ४ ॥ कोई ऐसाभी कहते हैं अनेक तरहसे सन्मान नानाप्रकारकी वस्तुओंके सौख्यको प्राप्त और राजाकरके धरतीका लाभ होता है ॥ ५ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम् ।

वृक्षैः फलैश्चापि चतुष्पदाद्यैर्वित्तं भवेत्सख्यविधिर्नृपेण ॥
दुरंतकार्याभिरतिर्नितान्तं भृगोर्दशायां चरतीन्दुसूनौ ॥ ६ ॥

जो शुक्रकी दशामें बुधका अंतर होय तो वृक्षों फलों और चौपायोंकरके धन होता है राजासे मित्रता होती है और बडे कठिन कार्यमें प्रीति निरंतर होती है ॥ ६ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये जीवांतर्दशाफलम्।

यज्ञादिसत्कर्मणि सादरत्वं गतार्थसिद्धिः सुतदारसौख्यम् ॥
महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्दशायां च सुरेन्द्रवन्द्ये ॥ ७ ॥

जो शुक्रकी दशामें बृहस्पतिका अंतर होय तो यज्ञादि श्रेष्ठ कर्ममें प्रीति होय और गये हुए धनकी प्राप्तिहोय पुत्र और स्त्रीके सौख्यकी प्राप्ति व अनेकआभूषणोंकी प्राप्ति करे है॥ ७ ॥

अथ शुक्रदशामध्ये शनेरंतर्दशाफलम्।

मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यं वृद्धाङ्गनाकेलिरतीव नित्यम् ॥
स्याद्वैरिनाशो ह्युशनोदशायां शनैश्चरस्यांतरजा दशा चेत् ॥८॥

जो शुक्रकी दशामें शनैश्चरका अंतर होय तो मित्रोंकी उन्नति ग्राम और नगरका अधिकार बूढी औरतके साथ नित्यही क्रीडा करे शत्रुओंका नाश करता है ॥ ८ ॥

अथ शनिदशामध्ये सूर्यांतर्दशाफलम्।

धनाङ्गनानन्दनबन्धुपीडा गाढापि बाधात्मकलेवरे स्यात् ॥
रिपूद्गमः संचलनं नलिन्याः पत्यौ स्थिते मंददशांतराले ॥ १ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें सूर्यका अंतर होय तो धन और स्त्री पुत्र और भाइयोंको पीडा होय और बडी भारी देहमें पीडा होय शत्रुओंकी उत्पत्ति होती है ॥ १ ॥

अथ शनिदशामध्ये चंद्रांतर्दशाफलम्।

नित्यं कलिर्बंधुजनैर्वियोगो हृतिर्मृतिर्वापि भवेद्गृहिण्याः ॥
उत्साहसौख्योपहतिर्नितांतं शीतद्युतौ मंददशांतरस्थे ॥ २ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें चंद्रमाका अंतर होय तो हमेशा कलह भ्रातृजनोंसे वियोग होय या तो कोई स्त्रीको हरण करलेवे वा मरजावे उत्साह और सौख्यका नाश निरंतर होता है

अथ शनिदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम्।

स्वस्थानयानं विकलत्वमंगे धनाङ्गनानां च वियोजनं स्यात् ॥
सन्मानहानिर्ननु सूर्यसूनोर्दशांतरे भूमिसुतप्रचारे ॥ ३ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें मंगलका अंतर होय तो अपने स्थानसे यात्राकरावे शरीरमें विकलता करावे धन और स्त्रीका वियोग होय सन्मानकी हानि होती है ॥ ३ ॥

अथ शनिदशामध्ये बुधांतर्दशाफलम्।

धनाङ्गनासूनुसुखोपपन्नः सद्राजमानेन विराजमानः ॥
विद्वज्जनानंदकरः कफार्तो मर्त्यो भवेज्ज्ञे शनिपाकसंस्थे ॥ ४ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें बुधका अंतर होय तो धन और पुत्र तथा स्त्रीके सुखसहित श्रेष्ठ राजमानकरके शोभायमान विद्वानोंके संगसे आनंद करे कफकी पीडा करके दुःखी होता है ॥ ४ ॥

अथ शनिदशामध्ये जीवांतर्दशाफलम् ।

कलाकलापे कुशलो विलासी पद्मालयालंकृतचारुशीलः ॥
भूपालभूलाभयुतो नरः स्याद्बृहस्पतौ मंददशां प्रयाते ॥ ५ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें बृहस्पतिका अंतर होय तो कलाओंके समूहमें कुशल विलासयुक्त लक्ष्मी करके शोभायमान श्रेष्ठशील राजासे धरतीका लाभवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ शनिदशामध्ये शुक्रांतर्दशाफलम् ।

योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिः श्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः ॥
यशःप्रकाशोऽरिकुलस्य हंता शनेर्दशायामुशनः प्रवेशः ॥ ६ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें शुक्रका अंतर होय तो स्त्री और आभूषण और पुत्रोंके सौख्यकी वृद्धिकरावे और लक्ष्मी तथा ग्राम अधिकारकी बडी प्राप्ति करावे है बडे यशको प्राप्त और शत्रुओंका नाश होता है ॥ ६ ॥

अथ शनिदशामध्ये भौमांतर्दशाफलम् ।

अंतर्दशा चेन्नलिनीशसूनोर्दशांतराले किल मङ्गलस्य ॥
भवेत्तदानीं निधनं नराणां यद्यप्यहो दीर्घमवाप्तमायुः ॥ ७ ॥
लग्ननाथरिपुर्लग्नदशायां प्रविशेद्यदि ॥
अकस्मान्मरणं कुर्यात्प्राणिनां सत्यसंमतम् ॥ ८ ॥

इती श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे अंतर्दशाध्यायः ॥ २१ ॥

जो शनैश्चरकी दशामें मंगलका अंतर होय तो उसमंगलकी अंतर दशामें मृत्युको प्राप्त होता है चाहे बडी उमरवाला क्यों न होय ॥ ७ ॥ और लग्नकी दशामें और लग्नेशके शत्रुग्रहकी अंतर दशामें अकस्मात्मरण होता है यह सत्याचार्यका मत है ॥ ८ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसरामज्योतिर्विकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां अंतर्दशाध्यायः समाप्तः ॥ २१ ॥

अथ दानाध्यायप्रारंभः ।

ये खेचरा गोचरतोऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवंति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवच्मि ॥१॥

अब दानाध्याय कहते हैं जो ग्रह गोचरकरके अष्टकवर्गकरके अथवा दशाक्रमकरके बुरे फल देनेवाले होंय वह ग्रह दानादिकरके निरंतर प्रसन्न होते हैं तिन ग्रहोंकी दानविधि अब कहते हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्यदानमाह ।

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुम्भवासो गुडहेमताम्रम् ॥
आरक्तकं चंदनमम्बुजं च वदंति दानं हि विरोचनाय ॥ २ ॥

अब सूर्यका दान कहते हैं माणिक, गेहूँका आटा, बछडासहित गाय, लाल कपडा, गुड, सोना, ताँबा, लालचंदन, कमल, यह सूर्यके निमित्त दान करना चाहिये ॥ २ ॥

अथ चंद्रदानमाह ।

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चंद्राय दद्याद्घृतपूर्णकुंभम् ॥ ३ ॥

अब चंद्रमाका दान कहते हैं बाँसकी डलिया चावल कपूर मोती सफेद कपडा, गाय और बैल चाँदी यह सब चीजें चंद्रमाके अर्थ दान करे और घीका भरा घडा देवे ॥ ३ ॥

अथ भौमदानमाह ।

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् ॥
आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदंति दानम् ॥ ४ ॥

अब मंगलका दान कहते हैं मूँगा और गेहूं, मसूर और लाल बैल गुड सोना और लाल कपडा कनेरके फूल ताम्रपात्र यह सब चीजें मंगलके निमित्त दान देवे ॥ ४ ॥

अथ बुधदानमाह ।

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम् ॥
दासी च दंतो द्विरदस्य नूनं वदंति दानं विधुनंदनाय ॥ ५ ॥

अब बुधका दान कहते हैं हरा कपडा सोना चाँदी काँसीका पात्र और मूँग, घी, पन्ना सबतरहके फूल और दासी हाथीदाँत यह सब चीजें बुधकेवास्ते दानकरना चाहिये ॥ ५ ॥

अथ गुरुदानमाह ।

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ॥
पुष्परागलवणे च कांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ ६ ॥

अब बृहस्पतिका दान कहते हैं खांड, हलदी, घोडा, चनेकी दाल और पीला कपडा पुष्पराजमणि, नोन, सोना ये सब चीजें बृहस्पतिकी प्रसन्नताके वास्ते दान करना चाहिये ६ ॥

अथ भृगुदानमाह ।

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरंगो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ॥
सुतण्डुलाज्योत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनंदनाय ॥ ७ ॥

अब शुक्रका दान कहते हैं चित्रकबरा कपडा सफेद घोडा, गाय, हीरा और चांदी, सोना और चावल, घी गंध युक्त पुष्प ये सब चीजें शुक्रके निमित्त दान करना चाहिये ॥७॥

अथ शनिदानमाह ।

माषाश्च तैलं विमलेंदुनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम्॥
सदक्षिणं चेति वदंति नूनं दुष्टाय दानं रविनंदनाय ॥ ८ ॥

अब शनैश्चरका दान कहते हैं उडद, तेल और नीलमणि तिल और कुलथी भैंस, लोहा और दक्षिणा विरुद्ध शनैश्चरके वास्ते दान करना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ राहुदानमाह ।

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च सुनीलचैलानि च कंबलानि ॥
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ॥ ९ ॥

अब राहुका दान कहते हैं गोमेदरत्न काला घोडा नीला कपडा और कंबल तिल और तेल लोहा ये सब चीजें राहुके निमित्त दान करना चाहिये ॥ ९ ॥

अथ केतुदानमाह ।

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलश्चापि मदो मृगस्य ॥
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनींद्रैः ॥ १० ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे दानाध्यायः ॥ २२ ॥

अब केतुका दान कहते हैं वैडूर्यमणि, तिल, तेल, कंबल और कस्तूरी तलवार ये सब चीजें केतुग्रहकी तुष्टीके वास्ते मुनीश्वरोंने दानकी कही हैं ॥ १० ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां दानाध्यायः ॥ २२ ॥

अथ नष्टजातकाध्यायप्रारंभः।

आधान कालोप्यथे जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम्॥
प्रसूतिकालं प्रवदंति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥ १ ॥
तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् ॥
तस्मिन्प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् ॥२॥

अब नष्टजातकाध्याय कहते हैं. जिन मनुष्योंका गर्भाधानकाल और जन्मकाल निश्चय करि नहीं मालूम होय उन मनुष्योंका प्रसूतिकाल कहते हैं नष्टजातक करके ॥ १ ॥ जिस जातककरके जन्मकालमें मनुष्योंको अच्छे और बुरे फलकी प्राप्ति होती है तिसको जातकशास्त्र कहते हैं उसजन्मकालके नष्ट होजानेसे फिर जिससे जन्मकालका ज्ञान होय उसको नष्टजातक कहते हैं ॥ २ ॥

अथ राशिगुणकविधिमाह।

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः खचं-
द्रैः ॥ १० ॥ गजैश्च ८ वेदै ४ दश १० भिश्च बाणैः ५
शैलै ७ र्भुजंगैः ८ खचरैः ९ शरैश्च ५ ॥ ३ ॥ शिवैः ११
पतंग १२ र्निहताः पुनस्ता विलग्नगाश्चेद्गुभौमजीवाः ॥
तदा तुरंगैः ७ करिभिः ८ खचंद्रै ११ र्गुण्याः शरैरन्यखगा
यदिस्युः ॥ ४ ॥

अब पहिले प्रश्नसमयकी तात्कालिकलग्नको स्पष्ट करके उसकी कलाओंका पिंड बनाना चाहिये और जो प्रश्नलग्न मेष होय तो उस कलात्मकपिंडको सातसे गुणना चाहिये वृषको १० दशगुणा करे मिथुनको ८ कर्कको ४ से सिंहको १० से कन्याको ५ से और तुलाको ७ से वृश्चिकको ८ से धनको ९ से मकरको ५ से ॥३॥ कुंभको ११ से और मीनलग्नको १२ से गुणना चाहिये ॥

अथ ग्रहगुणकविधिमाह।

जो लग्नमें प्रश्नलग्नमें सूर्य बैठा होय तो उसगुणेहुए कलात्मकपिंडको फिर पांचसे गुणना चाहिये और जो चंद्रमा होय तो भी ५ से गुणे जो प्रश्नलग्नमें मंगल बैठा होय तो उसको

८ से गुणना चाहिये जो बुध बैठा होय तो भी ५ से गुणना और जो बृहस्पति बैठा होय तो उस गुणे हुए कलापिंडको १० से फिर गुणना चाहिये और जो शुक बैठाहोय तो सातसे गुणना चाहिये जो शनैश्चर बैठा होय तो वहराशिके गुणकांकोंसे गुण्यहुआ जो कलापिंड फिर उसको ५ से गुणना चाहिये ॥ ३ ॥ ४ ॥

राशिगुणकांकचक्रम्.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि.
७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२	गुणांक.

अथ ग्रहगुणकांकचक्रम् ।

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः ॥ एवं कृते कर्मविधानयोग्यो राशिःपृथक्स्थः परिरक्षणीयः॥ ५ ॥

जो प्रश्नकालकी लग्नमें दो अथवा तीन या बहुतसे ग्रह बैठे होंय तो कहेहुए गुणकांकोंसे वारंवार उस कलापिंडको गुणना चाहिये इसीतरह राशिके अंकोंसे गुणा हुआ कलापिंड फिर ग्रहके अंकोंसे गुणा हुआ कलापिंड कर्मविधान करी हुई राशिके सम्पूर्ण अंकको अलग एकजगह बडी रक्षाके साथ स्थित करना चाहिये ॥ ५॥

अथ ग्रहगुणकांकचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह.
५	५	८	५	१०	७	५	गुणकांक.

अथ नक्षत्रज्ञानमाह ।

पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्येदृकाणे नव ९ युक् द्वितीये ॥ यथास्थितोयं नव ९ र्वर्जितोंत्ये भसंज्ञयातो हि विशेषमृक्षम् ॥ ६ ॥

और जो कर्मविधान करी हुई राशि अर्थात् कलापिंड बनाकर राशिके अंकोंसे गुणी हुई और ग्रहोंके अंकोंसे गुणी हुई जो राशि उसको सातसे गुणकर जो लग्नमें पहिलाद्रेष्काण होय तो उसमें ९ कला और जोडना चाहिये और जो मध्य द्रेष्काण होय तो कलापिं-

हको जैसा तैसा रहने देना और अंत्य द्रेष्काण होय तो ९ कलारहित करना चाहिये फिर उसमें २७ सत्ताईसका भाग देकर जो बाकी बचे वह अश्विनीसे गिनकर जन्मनक्षत्र जानना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीपुत्रमित्रशत्रूणां नष्टजातकप्रकारमाह।

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं ऋतुभिश्च वेदैः ॥
त्रिभिःशरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेयाः ॥ ७ ॥
लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवोलग्नगतग्रहस्य ॥
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्धं परिवेदितव्यम् ॥ ८ ॥

जो कोई मनुष्य स्त्री पुत्रादिके नष्टजन्मपत्र बनवानेका प्रश्नकरे तो प्रश्नलग्नकी राशिमें छः मिलानेसे स्त्रीका और चारमिलानेसे पुत्रका और प्रश्नलग्नकी राशिमें तीन मिलानेसे मित्रका और पांच मिलानेसे शत्रुका नष्टलग्न जानो जो प्रश्नलग्नकी राशिमें पूर्वोक्त अंक मिलाकर उसलग्नकी कलात्मकपिंड बनाना चाहिये ॥ ७ ॥ फिर उसकलात्मकपिंडको राशिमें अंकोंसे गुणकर और जो उसराशिमें ग्रह बैठा होय उसके अंकोंसे उसकलापिंडको गुणकर फिर उसको सातसे गुणकर नवयुक्त वा स्थिति वा ९ हीनकर २७ का भाग देकर शेष जन्म नक्षत्र जानना चाहिये जिसके निमित्त प्रश्न किया होय उसकी परंतु लग्न स्पष्ट स्वदेशी मानसे करना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ वर्षज्ञानमाह।

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोने प्यथवाधिकेस्मिन् ॥
खार्कैर्हृते शेषमिताब्दसंख्यामायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥ ९ ॥

अब वर्षका ज्ञान कहते हैं जो पहिलेराशिके अंकोंसे और ग्रहोंके अंकोंसे गुणी हुई राशि हो उसमें पहिलेकी तरह नौ घटाय वा मिलायकर उसकलापिंडको १० से गुणकर उसमें १२० का भाग देकर जो बाकी बचे उतनेही वर्षकी उमर प्रश्नकर्ताकी होती है ॥ ९ ॥

अथ ऋतुज्ञानमाह।

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवंति शेषांकतुल्याः शिशिरादयः स्युः ॥

पूर्वोक्तकर्मविधान करी हुई राशिको दशसे गुणकर ६ का भाग देकर जो बाकी बचे सो शिशिरको आदिलेकर ऋतु कहना चाहिये ॥

अथ मासज्ञानमाह।

द्विभाजिते शेषकमेकमत्रं पूर्वापरौ तदृतुजौ तु मासौ ॥ १० ॥

वह जो कर्मविधान करी हुई राशि है उसको १० से गुणकर २ से भाग देवे जो एक बाकी

बचे तो ऋतुका पहिला महीना और शून्य शेष बचे तो ऋतुका द्वितीयमास कहना यहां ऋतुके मासकी गणना मासे जानना ॥ १० ॥

अथ पक्षज्ञानमाह ।

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं तुल्येस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ॥ ११ ॥

पहिले कर्मविधान करी हुई राशिको आठसे गुणकर पहिलेकी तरह नौ घटाय वा मिलायकर दोका भाग देकर जो एक बाकी बचे तो मासका पहिला पक्ष और शून्य बचे तो मासका द्वितीयपक्ष जानना चाहिये ॥ ११ ॥

अथ तिथिज्ञानमाह ।

पंचेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवंति ॥
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र ॥ १२ ॥

और कर्मविधान करी हुई राशिमें १५ पंद्रहका भाग देवे जो बाकी बचे सो पक्षकी तिथि जानना चाहिये और नक्षत्रतिथिके योगसे ग्रहलाघवादिक ग्रंथोंसे वार लाना चाहिये वा उस संवतका पत्रा देखकर वार जाने ॥ १२ ॥

अथ दिवारात्रिजन्मज्ञानम् ।

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥ १३ ॥

और उस कर्मविधान करी राशिको सातसे गुणकर नौ घटाय वा मिलायकर दोका भाग देवे एक बाकी बचे तो दिनका जन्म कहना और शून्य बाकी रहे तो रात्रिका जन्म कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ जन्मसमये इष्टकालज्ञानमाह ।

पंचाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः ॥ १४ ॥
इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे नष्टजातकाध्यायः २३

अब कर्मविधान करी राशिको पांचसे गुणकर पहिलेकी तरह नौ घटाय वा मिलाकर दिन वा रात्रिमानकरके भाग देनेसे जो बाकी बचे वह दिनरात्रिकी इष्टकी घड़ियां जानलेना चाहिये १४

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्याममुंदरीभाषाटीकायां नष्टजातकाध्यायः ॥ २३ ॥

अथ निर्याणाध्यायप्रारंभः।

दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ॥
अनलतो जलतो करवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा ॥१॥

अब निर्याणाध्याय कहते हैं जो सूर्य अष्टममें बैठा होय तो अग्निकरके और चंद्रमा अष्टममें बैठा होय तो जल करके और मंगल अष्टम होय तो हथियारसे और बुध अष्टममें होय तो ज्वरकरके और बृहस्पति अष्टममें होय तो रोग करके और शुक्र अष्टममें होय तो क्षुधाकरके और शनैश्चर अष्टममें होय तो प्यासकरके मनुष्यकी मृत्यु कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ मरणदेशज्ञानम्।

स्थिरश्चरोद्व्यंगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः ॥
स्वकीयदेशे विषयांतरे च मार्गे प्रकुर्य्यान्मरणं क्रमेण ॥ २ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम स्थिरराशि २। ५। ८। ११ होय तो वह मनुष्य अपनेही देशमें मृत्युको प्राप्त होताहै और जो चरराशि १। ४। ७। १० इनमेंसे कोई अष्टमभावमें राशि होय तो उस मनुष्यका मरण परदेशमें होता है और जो द्विस्वभावराशि ३। ६। ९। १२ इनमेंसे कोई अष्टमभावमें होय तो उसकी मृत्यु रास्तेमें होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं च विलोकयेद्वा बलवान्महेन्द्रः ॥
तद्धेतुजातं प्रवदंति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ॥ ३ ॥

जो अष्टमभावमें कोई ग्रह नहीं बैठा होय तो उसअष्टमभावको जो ग्रह अधिक बल-करके देखता होय उसीग्रहके हेतुसे मृत्यु कहना चाहिये और जो अष्टमभावमें बहुतसे ग्रह बैठे होयँ या बलवान होकर बहुतसे ग्रह अष्टमभावको देखते होयँ तो बहुतप्रकार करके मृत्यु कहना चाहिये ॥ ३ ॥

अथ मरणहेतुज्ञानम्।

पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ वाप्यनिलः क्रमेण ॥
सूर्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ॥४॥

जो सूर्य अष्टम होयँ तो पित्त करके चंद्रमासे कफ करके मंगलसे पित्त करके और बुधसे त्रिदोष करके और बृहस्पतिसे श्लेष्मा करके और शुक्र शनैश्चर अष्टम होवें तो वातविकारसे मृत्यु होती है यह पुराने ज्योतिष वेत्ताओंने कहा है ॥ ४ ॥

युक्तं नैवालोकितं खेचरेन्द्रैर्मृत्युस्थानं यो विलग्ने दृकाणः ॥ द्वाविंशोऽस्मात्सोपि तस्यापि भर्ता कुर्य्यान्मृत्युं हेतुना स्वेन नूनम् ॥ ५ ॥ अनलतो जलतो यदुदीरितं भवति तत्रिलवाधिपहेतुकम् ॥ अथ दृकाणफलानि सविस्तरं मुनिवरैरुदितानि वदाम्यहम् ॥ ६ ॥

जो अष्टम भावको कोइ ग्रह नहीं देखता होय और न अष्टममें कोई ग्रह बैठा होय तो जन्मलग्नमें जो द्रेष्काण होय उससे बाईसवाँ जो द्रेष्काण है उसके स्वामीके हेतुसे मरण कहना चाहिये ॥ ५ ॥ अनल वा जल करके जो कहा है सो द्रेष्काणके स्वामीके हेतु करके कहना चाहिये अब द्रेष्काणका फल विस्तार पूर्वक जो मुनीश्वरोंने कहा है सो मैं कहताहूं ॥ ६ ॥

अथ मेषस्य द्रेष्काणफलम् ।

मेषस्य पूर्वत्रिलवेन दृष्टे शुभग्रहैः पापनिरीक्ष्यमाणैः ॥ प्लीहोद्भवो वा विषपित्तजोवा मृत्युस्तदानीं परिवेदितव्यः ॥ ७ ॥

जो मेषराशिमें पहिला द्रेष्काण होय और शुभग्रह उसको नहीं देखते होयँ पापग्रह देखते होयँ तो ताप तिल्ली रोगकरके अथवा विष या पित्तरोग करके उसकी मृत्यु कहना चाहिये ७

अथ मेषस्य द्वितीयद्रेष्काणफलम् ।

मेषे द्वितीये जलजो वनांते तृतीयके कूपतडागजातः ॥

जो मेषका द्वितीयद्रेष्काण होय तो जलजीवोंसे या वनके बीच मृत्यु होती है और जो मेषराशिमें तृतीय द्रेष्काण होय तो कुएँ वा तालावसे मृत्यु होती है ॥

अथ वृषस्य प्रथमद्रेष्काणमृत्युकारणम् ।

वृषस्य पूर्वे त्रिलवे खराश्वक्रमेलकादिप्रभवो हि मृत्युः ॥ ८ ॥

जो वृषराशिका द्वितीय द्रेष्काण होयं तो गधे घोडे वा ऊँटों करके मृत्यु होती है॥ ८ ॥

अथ वृषद्वितीयतृतीयद्रेष्काणफलम् ।

द्वितीयके पित्तहुताशचौरैरुच्चस्थलाश्वादिभवस्तृतीये ॥

जो वृषराशिमें द्वितीय द्रेष्काण होय तौ पित्तप्रकोपसे अग्निसे चोरसे मृत्यु होती है और जो वृषमें तृतीय द्रेष्काण होय तौ ऊँचेसे गिरकर वा घोडेसे मृत्यु कहना चाहिये ॥

अथ मिथुनस्य प्रथमद्वितीयद्रेष्काणफलम् ।

आद्ये दृकाणे मिथुने च वातश्वासैर्द्वितीये वृषगे त्रिदोषैः ॥ ९ ॥

जो मिथुनका प्रथम द्रेष्काण होय तो वातविकार और श्वास विकारसे मृत्यु होती है और द्वितीय द्रेष्काण होय तो बैल करके और त्रिदोषकरके मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

अथ मिथुनस्य तृतीयद्रेष्काणफलम्।

गजादितः पर्वतपाततो वा भवेदरण्ये मिथुनांत्यदृक्के ॥

जो मिथुनराशिमें तृतीय द्रेष्काण होय तो हाथी आदिवाहनसे पहाडके गिरनेसे जंगलमें मरता है ॥

अथ कर्कस्य प्रथमद्रेष्काणफलम्।

अपेयपानादपि कण्टकाच्च स्वभ्राच्च कर्कप्रथमे दृकाणे ॥

जो कर्कका पहिला द्रेष्काण होय तो जो पीनेलायक नहीं उसके और काँटा लगनेसे स्वप्न देखनेसे मृत्यु होती है ॥ १० ॥

अथ कर्कस्य द्वितीयद्रेष्काणफलम्।

विषादिदोषादतिसारतो वा कर्कस्य मध्यत्रिलवे मृतिः स्यात् ॥

जो कर्कराशिका द्वितीयद्रेष्काण होय तो विषादिके दोषसे वा अतीसारदोषसे मृत्यु होती है

अथ कर्कस्य तृतीयद्रेष्काणफलम्।

महाभ्रमप्लीहक गुल्मदोषैः कर्कान्त्यदृक्के निधनं निरुक्तम् ॥ ११ ॥

जो कर्कका तृतीय द्रेष्काण होय तो बडे भ्रम करके तापतिल्ली करके गुल्मरोगसे मरता है ॥ ११ ॥

अथ सिंहस्य त्रिद्रेश्काणफलम्।

विषाम्बुरोगैः श्वसनाम्बुरोगैरपानपीडाविषशस्त्रकैश्च ॥
क्रमेण सिंहस्थदृकाणकेषु नूनं मुनींद्रैर्मरणं प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

जो सिंहमें पहिला द्रेष्काण होय तो विषसे वा जलसे रोगकरके मृत्यु कहना चाहिये और द्वितीयद्रेष्काण होय तो वातरोगसे वा जलरोगसे मृत्यु कहना चाहिये और जो सिंहमें तृतीयद्रेष्काण होय तो गुदाके रोगसे विष वा शस्त्रसे मृत्यु कहना चाहिये ॥ १२ ॥

अथ कन्याराशेस्त्रिद्रेष्काणफलम्।

कन्याद्यदृक्केनिलमौलिरुग्जो दुर्गाद्रिपाताच्च नृपैर्द्वितीये ॥
खरोष्ट्रशस्त्राम्बुनिपातकांतानिमित्तजातं निधनं तृतीये ॥ १३ ॥

जो कन्याराशिमें पहिला द्रेष्काण होय तो वातरोग और शिरके रोगसे मरता है और द्वितीय द्रेष्काण होय तो किलाकोटके गिरनेसे वा पर्वतके गिरनेसे मृत्यु होती

है और तृतीय द्रेष्काण होय तो गधे ऊंट हथियार जलमें गिरनेसे स्त्रीके निमित्तसे मरण कहना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ तुलाराशेस्त्रिद्रेष्काणफलम् ।

तुलादृक्काणे प्रथमे निपातात्कलत्रतो वा पशुतोपि मृत्युः ॥
नूनं द्वितीये जठरामयैश्च व्यालाज्जलाच्चापि भवेत्तृतीये ॥ १४ ॥

जो तुलाराशिमें पहिलाद्रेष्काण होय तो गिरनेसे वा स्त्रीकरके वा पशुओंकरके मृत्यु होती है और जो द्वितीयद्रेष्काण होय तो जठररोगकरके मृत्यु कहना. और तृतीयद्रेष्काण होय तो सर्पकरके वा जलकरके मरता है ॥ १४ ॥

अथ वृश्चिकस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

पूर्वे दृकाणे खलु वृश्चिकस्य मृत्युर्विषान्नास्त्रभवोऽनगम्यः ॥
भारश्रमाद्वा कटिवस्तिरोगैर्भवेद्द्वितीये त्रिलवे तु मार्गे ॥ १५ ॥
जङ्घास्थिभङ्गाश्मकलोष्टकाष्ठैर्भवेत्तृतीये त्रिलवेऽलिराशेः ॥

जो वृश्चिकराशिमें पहिला द्रेष्काण होय तो विषसे अजीर्णसे, वा हथियारसे मृत्युको प्राप्त होता है और जो द्वितीयद्रेष्काण होय तो बोझके श्रमसे, कमर वा वस्तिके रोगसे मरता है ॥ १५ ॥ और जो तृतीयद्रेष्काण होय तो जांघकी हड्डी टूटनेसे लोहेकी कीलसे वा काष्ठसे मृत्यु होती है ॥

अथ धनस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

आद्ये दृकाणे धनुषो मृतिः स्याद्गुदामयैश्चापि मरुद्विकारैः ॥ १६ ॥ विदाहतो वा विषतः शराद्वा नाशो दृकाणे धनुषो द्वितीये ॥ भवेज्जलाद्वा जलचारिणो वा क्रोणामयाद्वा धनुषस्तृतीये ॥ १७ ॥

जो धनराशिमें पहिला द्रेष्काण होय तो गुदाके रोगकरके वातविकारसे मरता है॥ १६ ॥और जो धनमें द्वितीयद्रेष्काण होय तो दाहरोगसे विषकरके बाणकरके मृत्यु होती है और मिथुनमें तृतीयद्रेष्काण होय तो जलसे वा जलचारीजीवोंसे मृत्यु होती है ॥ १७ ॥

अथ मकरस्य त्रिद्रेष्काणफलम् ।

पूर्वे दृकाणे मकरस्य सिंहाद्व्याघ्राद्वराहाद्धृकतो द्वितीये ॥
पादौ भुजङ्गैश्च तथा तृतीये चोराग्निशस्त्रज्वरतो हि मृत्युः॥ १८॥

जो मकरमें पहिला द्रेष्काण होय तो शेरसे वा सूअरसे वा बैलसे मृत्युको प्राप्त होता है और जो दूसरा द्रेष्काण होय तो घोड़ेकी लातसे वा सर्पसे मरता है और तृतीयद्रेष्काण होय तो चोर वा अग्नि वा शस्त्र वा ज्वरकरके मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अथ कुंभस्य त्रिद्रेष्काणफलम्।

कुम्भस्य पूर्वे त्रिलवेषु पत्नी सुतोदरव्याधिकृतो द्वितीये ॥
गुह्यामयात्पर्वतपातनाद्वा विषात्तृतीये मुखरुक्पशुभ्यः ॥ १९ ॥

जो कुंभराशिमें पहिला द्रेष्काण होय तो स्त्रीकरके पुत्रकरके उदरव्याधिकरके मरता है और जो द्वितीय द्रेष्काण होय तो गुह्यरोग वा पर्वतके गिरनेसे या विषकरके मृत्यु होती है और जो तृतीय द्रेष्काण होय तो मुखरोगसे वा चौपायोंसे मृत्यु होती है ॥ १९ ॥

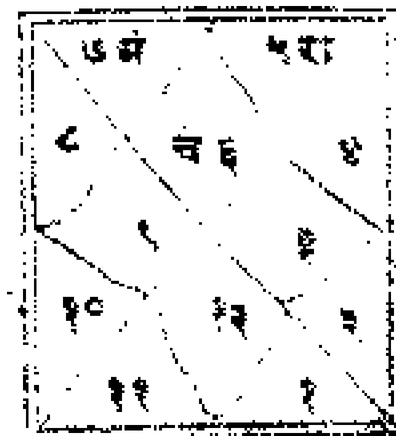
अथ मीनस्य त्रिद्रेष्काणफलम्।

मीनाद्यदृक्के ग्रहणीप्रमेहगुल्माङ्गनाभ्यश्च भवेद्द्वितीये ॥
जलोदराद्यैश्च गजग्रहैर्वा जलस्य मध्येपि च नौप्रभेदात् ॥२०॥
प्रांत्ये दृकाणे पृथुरोमसंस्थे मृत्युः कुरोगैः परिवेदितव्यः ॥
एवं तदानीं निधनं नियुक्तं नैव प्रदृष्टं गगनेचरेन्द्रैः ॥ २१ ॥

जो मीनराशिका पहिला द्रेष्काण होय तो संग्रहणी और प्रमेहरोग गुल्म रोग वा स्त्रीकरके मृत्युको प्राप्त होता है और जो द्वितीयद्रेष्काण होय तो जलोदर आदि रोगसे हाथीकरके वा ग्रहसे वा जलमें स्नानकरनेसे नौकादिप्रभेदसे मरता है ॥ २० ॥ जो मीनराशिका अंतिम-द्रेष्काण होय तो बुरेरोगोंकरके मरता है इसप्रकार मनुष्योंका मरण कहना चाहिये जो अष्टम-भावमें कोई ग्रह न बैठाहोय और न अष्टमभावको कोई ग्रह देखता होय ॥ २१ ॥

अथ शोषान्मृत्युयोगः।

शोषान्मृत्युयोगः ३२

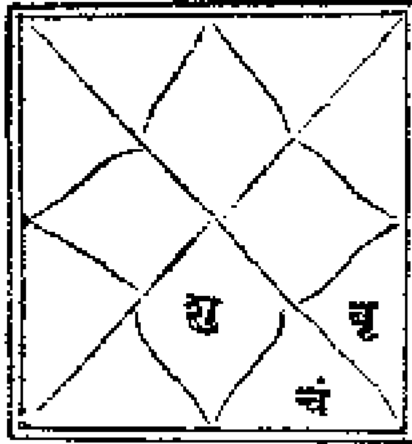


पापांतरे शीतकरे कुमार्यां शोषान्मृतिर्वा रुधिरप्रकोपात् ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें चंद्रमा कन्याराशिगत पापग्रहोंके बीचमें बैठा होय तो उसमनुष्यकी मृत्यु शोषणरोगसे वा रुधिरप्रकोपसे होती है ॥

अथ पाशहुताशनाभ्यां मृत्युयोगः ।

पाशहुताशनाभ्यां मृत्यु० २२

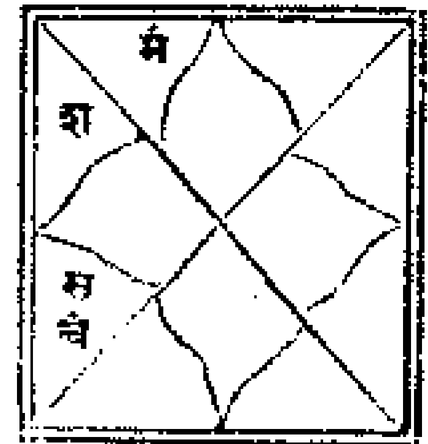


शुभांतरे शीतकरेष्टमस्थे पातेन पाशेन हु-ताशनेन ॥ २२ ॥

जो मनुष्यके जन्मकालमें शुभग्रहोंके बीचमें अष्टमभावमें चंद्रमा बैठा होय तौ वह मनुष्य गिरनेसे वा फाँसीसे वा अग्निसे मरता है ॥ २२ ॥

अथ भुजंगपाशान्मृत्युयोगः ।

भुजंगपाशान्मृत्युयोगः २२



पापेक्षितौ पापखगौ त्रिकोणे यद्वाष्टमे बंध-भुजङ्गपाशात ॥

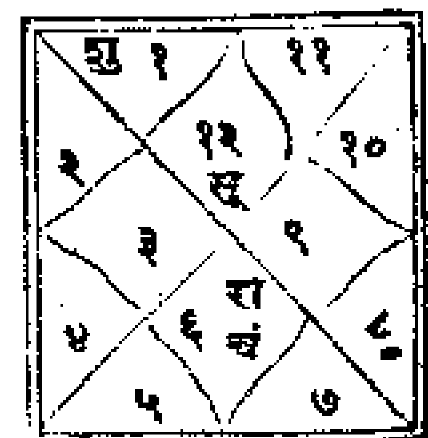
जिस मनुष्यके जन्मकालमें पापग्रहोंकरके दृष्ट पापग्रहसहित चंद्रमा पंचम नवम अथवा अष्टममें बैठा होय तो बंधनसे वा सर्पसे या फाँसीसे वह मनुष्य मरता है ॥

दृक्काणकाः स्युर्जनने हि यस्य कारागृहे स्यान्मरणं हि तस्य २३

जिस मनुष्यके जन्मकालमें पंचमनवमस्थानमें पापग्रह बैठा होय एक पंचम एक नवम होय तो वह प्राणी बंधनमें मरता है अथवा किलेमें वा हवालातमें मरता है जिसके अष्टमभावमें पाश या निगड वा सर्प द्रेष्काण होय उसमें पापग्रह बैठा होय तौ वह मनुष्य द्रेष्काणके समान बंधनसे मरता है पाश द्रेष्काणमें फांसीसे निगडमें बेडी करके सर्प द्रेष्काणमें सर्पसे मृत्युको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अथ भार्याकृतमरणयोगः ।

भार्याकृतमरणयोगः २४



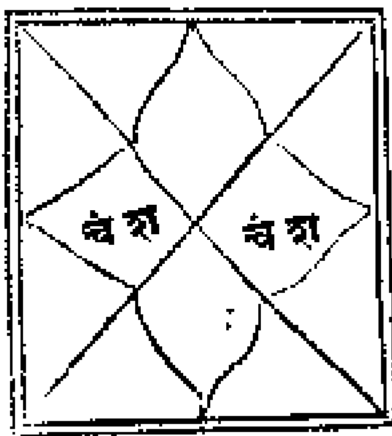
मीनोदयेर्केस्तगते मृगांके सपापके चास्फु-जिति क्रियस्थे ॥ भार्याकृतं स्यान्मरणं स्वगेहे वदंति सर्वे मुनयः पुराणाः ॥ २४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मीनलग्न होय उसमें सूर्य बैठा होय और सातवें भावमें चंद्रमा पापग्रह सहित बैठा होय

और शुक्र मेषराशिमें बैठा होय तौ वह मनुष्य स्त्रीकृत दोषसे अपने घरमें मरता है यह सम्पूर्ण पुराने मुनीश्वरोंने कहाहै ॥ २४ ॥

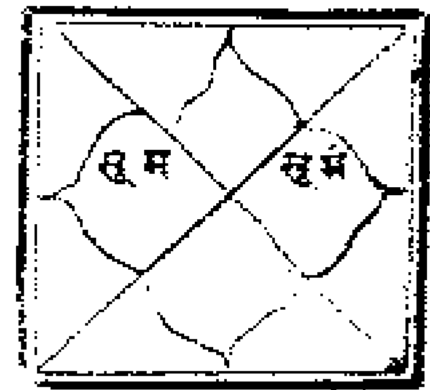
अथ शूलेन मृत्युयोगः।

शूलेन मृत्युयोगः २५



क्षीणेन्दुमंदौ गगने चतुर्थे दिनाधिराजोऽवनिजोऽथवा स्यात् ॥ मूर्तित्रिकोणायगता खलाख्याः शूलस्य मौलौ प्रलयं प्रयांति ॥ २५ ॥

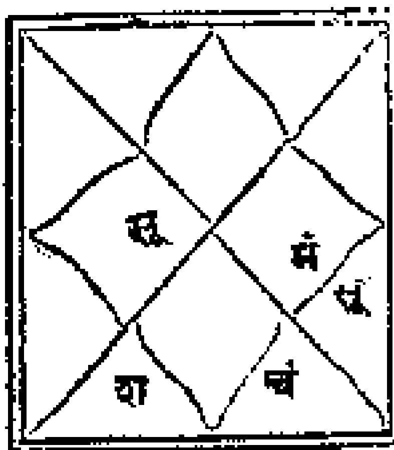
शूलेन मृत्युयोगः २५



जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा और शनैश्वर दशम चतुर्थभावमें बैठे होंय अथवा सूर्य मंगल बैठे होंय तौ वह प्राणी शूलसे मरता है अथवा लग्न पंचम, नवम, ग्यारहवें पापग्रह बैठे होंय और चंद्रमाकरके युक्त होंय तो वह मनुष्य शूलरोगसे मरता है ॥ २५ ॥

अथ काष्ठेन मृत्युयोगः।

काष्ठेन मृत्युयोगः २६

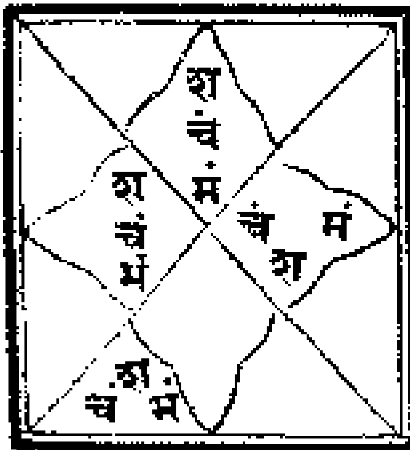


मेषूरणस्थे धरणीतनुजे दिनामणौ भूतलभावसंस्थे ॥ क्षीणेंदुमन्दप्रविलोक्यमाने काष्ठाभिघातेन वदंति मृत्युम् ॥ २६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशमभावमें मंगल बैठा होय और सूर्य चतुर्थमें बैठा होय और क्षीण चंद्रमा शनैश्वर करके दृष्ट होय तो वह मनुष्य काष्ठके लगनेसे मरता है ॥ २६ ॥

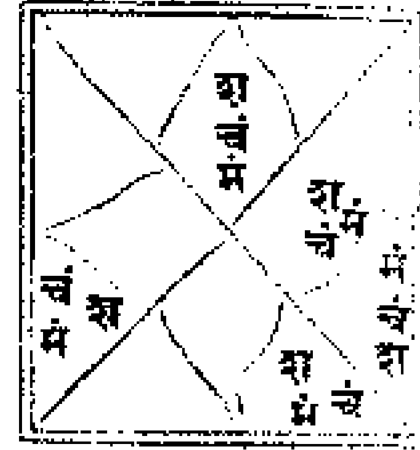
अनेकरोगैर्मृत्युयोगः ।

अनेकरोगैर्मृत्युयोगः २७



क्षीणेंदुभौमार्किदिवाकरैः स्यादायुः खलग्नाम्बुगतैर्गदाद्यैः ॥ मृत्युः खपुण्योदयपंचमस्थैस्तैरेव नानाविधिकुट्टनेन ॥ २७ ॥

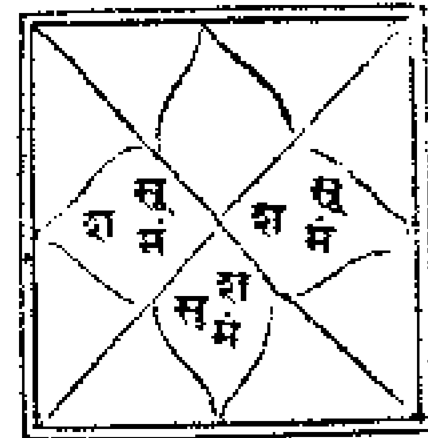
धूमाग्निर्बंधनेन मृत्युयोगः २७



जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा; मंगल, शनैश्चर, अष्टम, दशम, लग्न, चतुर्थ बैठे होंय तो वह मनुष्य अनेकरोगोंसे मरता है (एको योगः) और जो पूर्वोक्त ग्रह अष्टम, दशम, नवम, लग्नमें पंचम बैठे होंय तो वह मनुष्य अनेकप्रकारके धूमाग्निर्बंधनसे मरता है ॥ २७ ॥

अथ शस्त्रहुताशनभूपप्रकोपेन मृत्युयोगः ।

शस्त्रहुताशनजो मृत्युयोगः २८

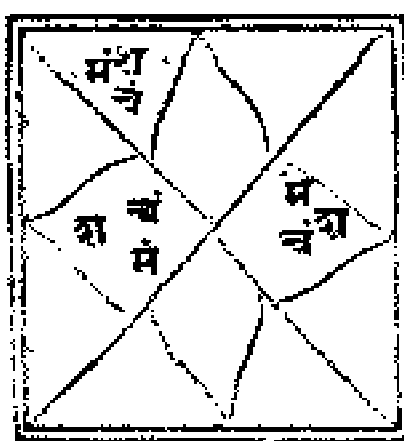


भूसूनुसूर्यार्कसुता यदि स्युश्चतुर्थजामित्रनभोगृहस्थाः ॥ कुर्वंति ते शस्त्रहुताशभूपप्रकोपजातं नियमेन मृत्युम् ॥ २८ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, सूर्य, शनैश्चर, चौथे सातवें दशम भावमें बैठे होंय तो वह मनुष्य हथियार वा अग्नि वा राजाके क्रोधसे नियमकरके मरता है ॥ २८ ॥

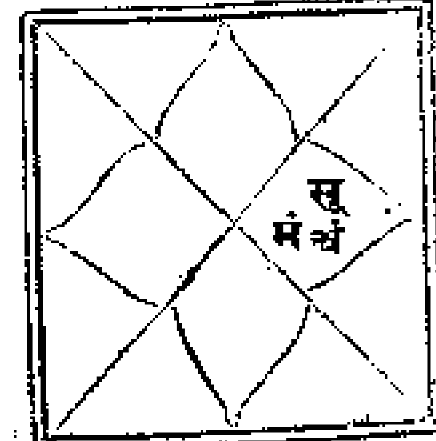
अथ प्रवासेऽग्निवाहनेन मृत्युयोगः ।

अग्निवाहनेन मृत्युयोगः २९



कुजेंदुमंदाः खजलद्विसंस्थाः क्रमिक्षतैस्ते मरणं प्रकुर्युः ॥ मेषूरणस्थै रवि भौमसोमैर्भवेत्प्रवासे ऽनलवाहनाद्यैः ॥ २९ ॥

अनलवाहनेन मृत्युयोगः २९

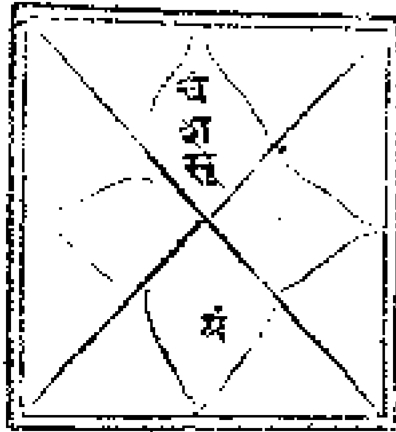


जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल, चंद्रमा, शनैश्चर दशम, चतुर्थ; दूसरे बैठे होंय तो

वह मनुष्य कीड़ों करके वा घावकरके मरता है और जो दशम भावमें सूर्य, मंगल, चंद्रमा बैठे होंय तौ वह मनुष्य परदेशमें अग्नि या वाहनादिकोंकरके मरता है ॥ २९ ॥

अथ यंत्रोत्पीडनेन मृत्युयोगः।

यंत्रोत्पीडनेन मृत्युयोगः ३०



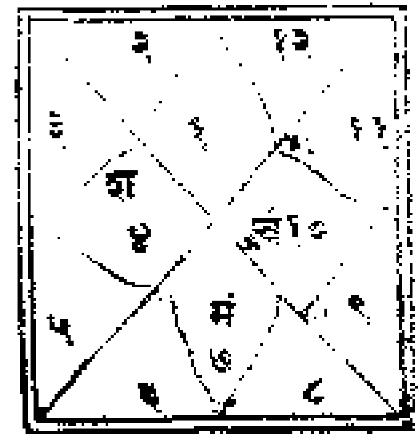
क्षीणेंदुमंदार्कयुते विलग्ने भूमीसुते सप्तमभावयाते ॥ विनाशनं यंत्रनिपीडनेन भवेदवश्यं परिवेदितव्यम् ॥ ३० ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीणचंद्रमा, शनैश्चर सूर्य लग्नमें बैठे होय और मंगल सातवें बैठा होय तो वह मनुष्य यंत्रमें पिचकर मरता है ॥ ३० ॥

अथ विण्मूत्रप्रदेशे मृत्युयोगः।

विण्मूत्रप्रदेशे मृत्युयोगः ३१

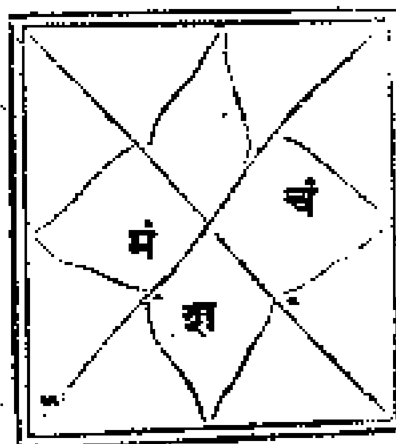
भौमे तुलायां च यमे च कर्के प्रालेयरश्मौ रविजालयस्थे ॥ विण्मूत्रितासंकुलितप्रदेशेऽवश्यं विनाशः परिवेदितव्यः ॥ ३१ ॥



जिस मनुष्यके जन्मकालमें मंगल तुलाराशिमें बैठा होय शनैश्चर कर्कराशिमें चंद्रमा मकर कुंभमें बैठा होय तौ वह मनुष्य विष्ठामूत्रके स्थानमें मरता है ॥ ३१ ॥

अथ वनांतराले मृत्युयोगः।

वनांतराले मृत्युयोगः ३२

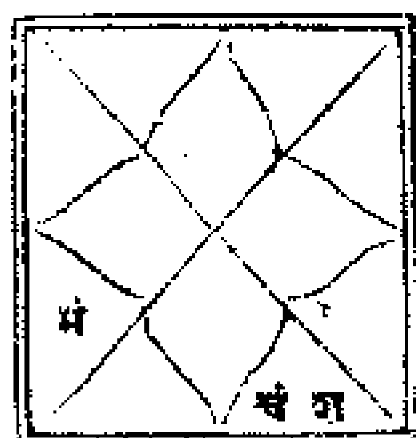


मेषूरणास्ताम्बुगृहैः क्रमेण क्षीणेंदुमंदाऽवनिपुत्रयुक्तैः ॥ दुर्गांतराले च शिलोच्चये वा वनांतराले प्रलयः किल स्यात् ॥ ३२ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें दशम, सातवें, चतुर्थ, स्थानोंमें क्षीण चंद्रमा शनैश्चर मंगल क्रमकरके बैठे होंय तो वह मनुष्य किलेकोटमें या पहाडपर अथवा जंगलमें मरता है ॥ ३२ ॥

अथ गुह्यरोगान्मृत्युयोगः ।

गुह्यरोगान्मृत्युयोगः ३३

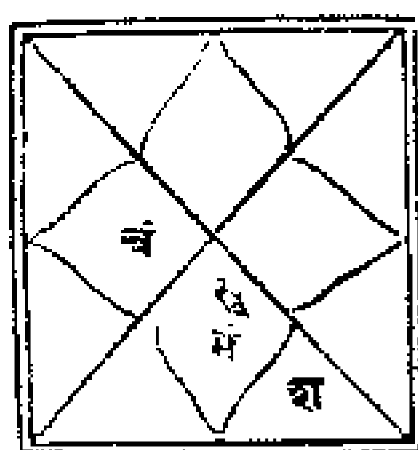


बलोपपन्नावनिसूनुदृष्टे क्षीणे विधौ रंध्रगतेर्कपुत्रे ॥ गुह्यामयाद्वाक्रिमिहेतुतो वा भवेदवश्यं मरणं रणाद्वा ॥ ३३ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें क्षीण चंद्रमा और शनैश्चर अष्टममें बैठे होंय और बलकरके मंगल देखता होय तौ वह मनुष्य गुह्यरोगकरके कीडोंके हेतुसे अथवा संग्रामसे मृत्युको प्राप्त होताहै ॥ ३३ ॥

अथ विहंगेनाश्वपदकारणेन च मृत्युयोगः ।

विहंगेन मृत्युयोगः ३४



मित्रे कलत्रोपगते सभौमे मंदेऽष्टमस्थे च विधौ चतुर्थे ॥ विहङ्गमश्वापदकारणेन निर्याणमाहुर्मुनयः पुराणाः ॥ ३४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें सातवें भावमें मंगल, सूर्य बैठे होंय और शनैश्चर आठवें और चंद्रमा चौथे बैठा हो तो वह मनुष्य पक्षियोंकरके वा घोडेकी लातकरके मरता है॥ ३४ ॥

अथ भित्तिपतनेन मृत्युयोगः ।

भित्तिपतनेनमृत्युयोगः ३५



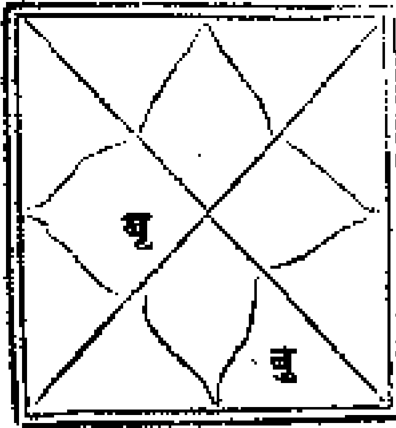
लग्नाष्टमत्रिकोणेषु भानुभौमार्केन्दुभिः ॥ पार्वतीयो भवेन्मृत्युः भित्तिपातभवोथवा॥३५

जिस मनुष्यके जन्मकालमें लग्न पंचम नवम वा अष्टमभावमें सू०मं०शनैश्चर चंद्रमा बैठे होयतो वह मनुष्य पर्वतपर या दीवालके गिरनेसे मरता है ॥ ३५ ॥

अथ तीर्थे मरणयोगः ।

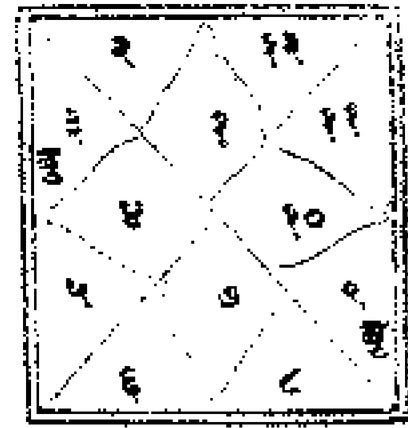
सौम्येऽष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेंद्रे ॥
तीर्थे मृतिः स्याद्यदि योगयुग्मं तीर्थे हि विष्णुस्मरणेन मृत्युः३६

तीर्थे मरणयोगः ३५



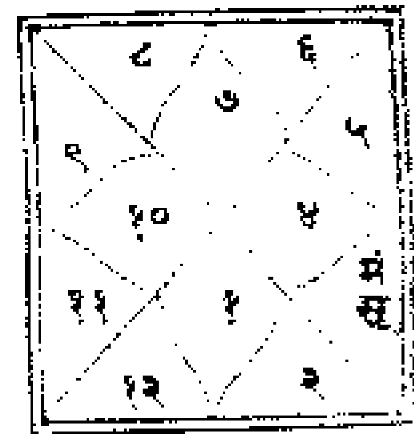
जिस मनुष्यके जन्मकालमें अष्टम भावमें शुभग्रह बैठे होयँ और शुभ-ग्रहोंकरके दृष्ट होयँ तो वह मनुष्य तीर्थमें मरता है अथवा नवम भावका स्वामी नवममें होय और शुभग्रहोंकरके दृष्ट होय तो भी विष्णुका स्मरण करके तीर्थमें मरता है ॥ ३६ ॥

ती० ३६



अथाग्निप्रवेशेन मृत्युयोगः।

अग्निनामरणयोगः ३७



धर्मस्वामी धर्मगो धर्मसंस्थौ सूर्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम् ॥ कुर्यात्पत्नी लग्नजामित्रनाथौ मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम् ॥ ३७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे निर्याणाध्यायः ॥ २४ ॥

जिसमनुष्यके जन्मकालमें नवमका स्वामी नवममें बैठा होय और सूर्य, मंगलभी नवम में बैठे होंय तो वह अग्निमें प्रवेश करके मरता है और जिसके लग्न और सप्तम भावके स्वामी आपसमें मित्र होंय अथवा शुभग्रहोंकरके युक्त होंय तो उसकी स्त्री अग्निमें प्रवेश कर मरती है ॥ ३७ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौड़वंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिक-पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां निर्य्याणाध्यायः ॥ २४ ॥

अथ चंद्रकृतनिर्य्याणाध्यायप्रारंभः।

इति प्रणीतं निर्य्याणं प्राचीनमुनिसंमतम् ॥ यवनैरुदितं यत्र सविस्तरमथोच्यते ॥ १ ॥

ये जो निर्याणाध्याय प्राचीनमुनीश्वरोंने संमति करके कहा है और यवनाचार्यने कहा है उसको विस्तारपूर्वक कहते हैं ॥ १ ॥

अथ मेषराशिस्थितचंद्रकृतनिर्याणमाह ।

धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणे रतः ॥ सर्वकर्मसमायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः॥२॥गुणाभिरामः सततं देवब्राह्मणपूजकः ॥ कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ॥ ३ ॥ शूरः शीघ्रप्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः ॥ शिरोव्रणयुतो दाता कुनखी सेवकप्रियः ॥ ४ ॥ द्विभार्यः सङ्गरे भीरुश्चपलो नितरां भवेत् ॥ प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ॥ ५ ॥ षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विषूचिका ॥ तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ॥ ६ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मेष राशिमें चंद्रमा होय वह मनुष्य धनवान् उग्र पराया उपकार करनेमें तत्पर सम्पूर्ण कर्मोंसहित श्रेष्ठ शीलवाला राजाका प्यारा होता है ॥ २ ॥ गुणोंकरके शोभित देवता ब्राह्मणोंकी पूजा करनेवाला थोडे गरम शाकको थोडा भोजन करनेवाला तांबेके समान लालनेत्रोंवाला ॥ ३ ॥ शूर वीर जल्दी मतवाला होनेवाला कामी और दुर्बलजानुवाला शिरमें व्रण होयँ दाता कुनखी सेवकोंको प्यारा होता है ॥ ४ ॥ दो स्त्रियोंवाला संग्राममें डरनेवाला निरंतर चपल होय पहिले सातवें व तेरहवें वर्षमें ज्वरकी पीड़ा होय ॥ ५ ॥ सोलहवें वा सत्रहवें वर्षमें विषूचिका रोग कहना तीसरे बारहें वर्षमें जलसे भय होता है ॥ ६ ॥

पंचविंशन्मिते वर्षे संतानं च निशांधता ॥ द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ॥७॥ कार्यारंभप्रलापी च विदेशगमने रतः॥कृशांगःशीघ्रगो मानी शुभलक्षणसंयुतः॥८॥वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवतिसंमिते॥ आयुस्तस्य विनिर्देश्यं कार्तिकस्य सितेतरे ॥ ९ ॥ पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा ॥ निधनं जायते नूनं जन्मनीन्द्वावजस्थिते ॥ १० ॥

पचीसवें वर्षमें संतान पैदा होय रतौंधरोग होय और बत्तीसवें वर्षमें हथियारसे घात होय ॥ ७ ॥ और कामके आरंभकरनेमें प्रलापकरनेवाला परदेशजानेमें तत्पर दुर्बलदेह

जल्दी चलनेवाला मानी श्रेष्ठ लक्षणोंसहित होता है ॥ ८ ॥ वातरोग अधिक हो तो चंद्रमा शुभग्रहोंकरके दृष्ट होय तो नब्बे बरसकी आयु कहना और कार्तिकके महीनेमें कृष्णपक्षमें ॥ ९ ॥ बुधवार नवमीतिथि रात्रिको शिरमें रोगसे मृत्यु होती है ॥ १० ॥

अथ वृषराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् ।

अल्पतेजा नरः स्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः ॥ सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः ॥ १ ॥ चिरायुरल्पकेशश्च परोपकरणे रतः ॥ पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः ॥ २ ॥ सभायां चतुरो नित्यं संतुष्टो येन केनचित् ॥ पीडा स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत् ॥ ३ ॥ विषूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा ॥ दशमे रुधिरोद्गारो द्वादशे पतनं तरोः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें वृषराशिमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य थोड़े तेजवाला नम्रतासहित कर्मशुद्धिसे रहित सच बोलनेवाला धनवान और कामी स्त्रियोंकी आज्ञामें चलनेवाला ॥ १ ॥ बडी उमरवाला थोड़े केशोंवाला पराये उपकारमें तत्पर पिता, माता, गुरुओंका भक्त राजाका प्यारा होता है ॥ २ ॥ सभाके बीचमें हमेशा चतुर जिस किसी तरह संतुष्ट पहिले वर्षमें पीड़ा तीसरे वर्षमें अग्निका भय होता है ॥ ३ ॥ और सातवें वर्षमें विषूचिकारोग और नवमवर्षमें व्यथा होय और दशवें वर्षमें रुधिर विकार और बारहें वर्ष वृक्षसे गिरता है ॥ ४ ॥

सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके ॥ पंचविंशन्मिते तोयाद्भयं भवति निश्चितम् ॥ ५ ॥ त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेपि च ॥ श्लेष्मलः शांतिभाक्छूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः ॥ ६ ॥ सौम्यग्रहेक्षिते चंद्रे षण्णवत्यब्दसंख्यया ॥ आयुर्जन्तोर्विनिर्दिश्यमवश्यं वचनात्सताम् ॥ ७ ॥ माघमासे नवम्यां च शुक्ले पक्षे भृगोर्दिने ॥ रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते ॥ ८ ॥

और सोलहें वर्षमें सर्पसे भय होय और उन्नीसवें वर्षमें पीडा होय पचीसवें वर्षमें जलसे भय जरूर होय ॥ ५ ॥ तीसवें वर्षमें और बत्तीसवें वर्षमें पीड़ा होती है श्लेष्माकी

प्रकृतिवाला शांतिमान शूर वीर सहन करनेवाला बुद्धिमान होता है ॥ ६ ॥ जो चंद्रमाको शुभ ग्रह देखते होंय छयानवे वर्षकी उमर पावे यह सत्पुरुषोंका मत है ॥ ७ ॥ माघमास नवमी तिथि शुक्रपक्ष शुक्रवारको रोहिणी नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ८ ॥

अथ मिथुनराशिस्थितचंद्रनिर्याणम् ।

ग्रामण्यां चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः ॥ मिष्टान्नाशी सुशीलश्च छिन्नवाक्चललोचनः ॥ १ ॥ कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहलरतिप्रियः ॥ वयसः पूर्वभागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः ॥ २ ॥ चरमेऽतितरां दुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः ॥ स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥ वृक्षाद्भीः पञ्चमे वर्षे षोडशेऽरिकृतं भयम् ॥ अष्टादशप्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम् ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके जन्मकालमें मिथुनराशिमें चंद्रमा बैठा होय वह मनुष्य स्त्रियोंमें बडा चतुर पक्की मित्रता करनेवाला मिठाई भोजन करनेवाला श्रेष्ठ शीलवान छिन्नवाणी बोलनेवाला चञ्चल नेत्रोंवाला होता है॥ १ ॥ और कुटुंबका प्यारा कामी हर्षसहित मैथुनमें प्रीति करनेवाला बालकपनेमें सुखी और जवानीमें मध्यम सुख होय ॥ २ ॥ और बुढापेमें दुःखी दो स्त्रियोंवाला गुरुका प्यारा थोडी संतानवाला गुणोंकरके सहित होता है ॥ ३ ॥ पांचवें वर्षमें वृक्षसे भय और सोलहें वर्षमें शत्रुसे भय और अठारह वर्षकी अवस्थामें कानके रोगकी पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

विंशत्या प्रमिते वर्षे पीडात्यंतं प्रजायते॥अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यान्मृत्युना समा ॥ ५ ॥ भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्मपरायणः सुभगो विषयासक्तो गीतनृत्यप्रियः सुधीः ॥६॥ शास्त्रज्ञः शुभवाग्जीवेदशीतिं शरदां नरः ॥ वैशाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे ॥ ७ ॥ मध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत्॥इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ ॥ ८ ॥

और बीसवें वर्षमें बडी पीडा होय और अडतीसवर्षकी उमरमें मृत्युसमान पीडा होय ॥ ५ ॥ भोगी दानमें तत्पर सत्य धर्ममें तत्पर श्रेष्ठ भाग्यवाला विषयमें आसक्त गायन

नाचना प्रिय जिसको बुद्धिमान होता है ॥ ६ ॥ शास्त्रका जाननेवाला श्रेष्ठ वाणी बोलनेवाला और अस्सीवर्षकी उमरतक जीता है वैशाखमहीना शुक्लपक्ष द्वादशीतिथि बुधवार ॥ ७ ॥ मध्याह्नके समय हस्तनक्षत्रमें उसकी मृत्यु होती है यह मिथुनराशिस्थित चंद्रमाका फल कहा है ॥ ८ ॥

अथ कर्कराशिस्थितचंद्रनिर्य्याणमाह।

परोपकृतिकर्ता च सर्वसंग्रहतत्परः॥पुत्रवान्गुणवान्साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रिया जितः ॥ १ ॥ अल्पायुः प्रथमे भागे निःस्वो मध्ये सुखी भवेत् ॥ तृतीये धर्मसंसक्तः तीर्थयात्रापरायणः ॥ २ ॥ रेखा तस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी ॥ वामाङ्गेऽग्निभयं विद्याच्छीर्षरुक्परिपीडितः ॥ ३ ॥ बांधवैर्बहुभिर्युक्तो बहुभार्यः प्रजायते ॥ भग्रहस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः ॥ ४ ॥

अब कर्कराशि स्थित चंद्रमाका निर्य्याण कहते हैं, पराये उपकारका करनेवाला सब चीजोंका संग्रह करनेवाला पुत्रवान गुणवान साधु पितामाताका भक्त स्त्रियों करके जीता हुआ ॥ १ ॥ पहली उमरमें अल्पायु होती है और धनहीन होता है और जवानीमें सुखी होता है और बुढापेमें धर्ममें आसक्त तीर्थयात्रामें तत्पर होता है ॥ २ ॥ और उसके माथे रेखा होती है बायें अंगमें अग्निका भय होता है शिरमें रोगकरके पीडित होय ॥ ३ ॥ बहुत बंधुगणोंसहित बहुत स्त्रियोंवाला नक्षत्रोंकी स्थितिका जाननेवाला बहुत मित्रोंवाला प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ ४ ॥

रोगी स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीये लिंगपीडनम् ॥ एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥ ५ ॥ द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत् ॥ पंचाशीतिमितं ब्रूयादायुः षण्णवतिश्च वा ॥ ६ ॥ माघे मासि सिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे ॥ रोहिणीनामनक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम् ॥ ७ ॥ प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति ॥ पुराणैर्मुनिभिः प्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम् ॥ ८ ॥

पहिले वर्षमें रोगी होय तीसवर्षमें लिंगपीड़ा होय और एकतीसवें वर्षमें सर्पसे भय होता है ॥ ५ ॥ और बत्तीसवें वर्षमें बहुत पीडा होय और पचासी वर्ष अथवा छयानवे वर्षकी आयु कहना चाहिये ॥ ६ ॥ माघका महीना शुक्लपक्ष नवमी तिथि शुक्रवार रोहिणी नक्षत्रमें आयु पूर्ण होती है ॥ ७ ॥ जन्मकालमें कर्कराशिगत चंद्रमाका फल पूर्वाचार्योंने वर्णन किया है ॥ ८ ॥

अथ सिंहराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह ।

धनधान्यसमायुक्तः श्रीमांश्च समरप्रियः॥विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो विदेशगमने रतः ॥ १ ॥ विशालः पिङ्गलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः ॥ सर्वगः शत्रुहंता च शिरोरुङ्निष्ठुरो महान् ॥ २ ॥ भूताद्बाधादिमे वर्षे पंचमेऽब्देऽग्नितो भयम् ॥ सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम् ॥ ३ ॥ विषूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम् ॥ विंशन्मिते भयं सर्पादेकविंशे प्रपीडनम् ॥ ४ ॥

अब सिंहराशिगत चंद्र निर्य्याण कहते हैं. धनधान्यकरके सहित लक्ष्मीवान संग्राम जिसको प्यारा विद्वान सब कलाओंका जाननेवाला परदेशगमनमें इच्छा करनेवाला होता है ॥ १ ॥ बड़े और पीले नेत्रोंवाला क्रोधी थोड़े पुत्रोंवाला सर्वजगह जानेवाला शत्रुओंको नाश करनेवाला शिरमें रोग बड़ा कठोर होता है ॥ २ ॥ पहिले वर्षमें भूतबाधा होय पांचवें वर्षमें अग्निभय सातवें वर्षमें ज्वरकी बाधा मनुष्यको जरूर होती है ॥ ३ ॥ विषूचिका रोगकी पीड़ा जरूर होय बीसवें वर्षमें सर्पका भय होय इक्कीसवें वर्षमें पीडा होती है ॥ ४ ॥

अष्टाविंशन्मिते वर्षे चापवादभयान्वितः ॥ द्वात्रिंशत्प्रमिते नूनं वत्सरे परिपीडनम् ॥ ५ ॥ उदरे सव्यभागे तु वातगुल्मादिसंभवः ॥ सुशीलः कृपणोऽत्यंतं सत्यवादी विचक्षणः॥ ॥ ६ ॥ शुभग्रहेक्षिते चंद्रे शतायुर्जायते नरः ॥ फाल्गुनस्यासिते पक्षे पंचम्यां भौमवासरे ॥ ७ ॥ मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः ॥ सिंहराशिस्थिते चंद्रे निर्याणमिदमीरितम् ॥ ८ ॥

अट्ठाईसवें वर्षमें झगडेका भय होय बत्तीसवें वर्षमें बड़ी पीड़ा होय ॥ ५ ॥ पेटके दहिनी तरफ वातरोग गुल्मरोग होता है श्रेष्ठ शीलवाला अत्यंत कृपण मच बोलनेवाला चतुर होता है ॥ ६ ॥ जो चंद्रमाको शुभग्रह देखते होंय तो सौवर्षकी उमर होय फागुनके महीनेमें शुक्लपक्षमें पंचमी मंगलवारको ॥ ७ ॥ मध्याह्नके समय पानीके बीचमें मृत्यु होतीहै ॥ ८ ॥

अथ कन्याराशिस्थितचंद्रफलनिर्याणम् ।

स्वजनानन्दकृन्नित्यं धनवान्बहुसेवकः ॥ प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः॥१॥ देवताद्विजवर्याणां भक्तो तत्परमानसः ॥ धर्मकर्मसमायुक्तो जनानामतिदुर्लभः ॥२॥कन्यकाल्पत्वमापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः ॥ शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत् ॥ ३ ॥ वह्निपीडा तृतीयेब्दे पंचमे लोचनव्यथा ॥ नवमे द्वारबाधा च त्रयोदशमितेपि च ॥ ४ ॥

अब कन्याराशिस्थित चंद्रनिर्याण कहते हैं ॥ अपने जनोंसे हमेशा आनंद करनेवाला धनवान् बहुत नौकरोंवाला परदेश जानेवाला कलाओंका जाननेवाला गुरुओंका भक्त प्यारी वाणी बोलनेवाला होता है ॥ १ ॥ देवता और ब्राह्मणोंकी भक्तिमें तत्पर मनवाला धर्मकर्मसहित मनुष्योंको दुर्लभ मनुष्य होता है ॥ २ ॥ थोडी कन्याकी संतानवाला बहुत पुत्रोंवाला होय उसके लिंग और कंठमें चिह्न होय ॥ ३ ॥ तीसरे वर्षमें अग्निकी पीड़ा होय पांचवें वर्षमें नेत्रोंका रोग होय और नवमवर्ष और तेरहवें वर्षमें द्वारदेशमें रोग होय ॥ ४ ॥

तथा पंचदशे वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ॥ एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः ॥ ५ ॥ अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम् ॥अशीत्यब्दं भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते॥६॥ चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां निधनं रविवासरे ॥ शीतद्युतौ स्थिते सूतौ कन्यायामिति संस्मृतम् ॥ ७ ॥

पंद्रहें वर्षमें सर्पसे भय होय और इकीसवें वर्षमें वृक्षसे गिरता है वा भीतसे गिरता है ॥ ५ ॥ तीसवें वर्षमें जंगलमें हथियारका घात होय और अस्सी वर्षकी आयु होय जो चंद्रमाको शुभग्रह देखते होंय ॥ ६ ॥ चैत्रवदी तेरस रविवारके दिन मृत्यु होय यह कन्याराशिगत चंद्रमाका फल कहा है ॥ ७ ॥

अथ तुलाराशिस्थितचंद्रकृतनिर्य्याणमाह ।

मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रहतत्परः ॥ भोगी धर्मपरः श्रीमान्बहुभृत्योविचक्षणः॥१॥वापीकूपतडागादिनिर्मितौ सादरः सदा ॥ प्राज्ञः सर्वकलाभिज्ञो नृपाणामतिवल्लभः ॥ २ ॥ मधुरान्नरसप्रीतिर्ह्रीभार्यः पितृभक्तिकृत् ॥ स्वल्पापत्याल्पबन्धुश्च कृषिकर्मविचक्षणः ॥३॥ क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः ॥ भार्यावचोनुगामी च सप्तमेब्देग्निजं भयम् ॥ ४॥

अब तुलाराशिगतचंद्रमाका निर्याण कहते हैं ॥ सब जनोंकरके माननीय वस्तुओंके संग्रहमें तत्पर होता है भोगी धर्ममें तत्पर बहुत नौकरोंवाला बडा चतुर होता है ॥ १ ॥ बावडी, कुआँ, तालाब, आदिस्थानोंको बनानेवाला चतुर संपूर्णकलाओंका जाननेवाला राजाओंका अत्यंत प्यारा होता है ॥ २ ॥ मीठे अन्न और रसोंमें प्रीति करनेवाला होय स्त्रियोंवाला पिताकी भक्ति करनेवाला थोडी संतानवाला थोडे भाइयोंवाला खेती करनेमें चतुर होता है ॥ ३ ॥ क्रयविक्रय करके धन पैदा करनेवाला देवता और ब्राह्मणोंका पूजनेवाला स्त्रीके वचनमें चलनेवाला हो सातवें वर्षमें अग्निभय होता है ॥ ४ ॥

अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम् ॥ तरोस्तुरगतः पातः सर्पभीर्वापि विंशके ॥ ५ ॥ एकविंशन्मिते पीडा चंद्रे सौम्यग्रहे स्थिते ॥ पञ्चाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ॥ ६ ॥ सार्पेष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्वयामके ॥ तुलाराशिस्थिते चंद्रे निर्य्याणमिति सूचितम् ॥ ७ ॥

आठवें वर्षमें ज्वरकी पीडा बारहें वर्षमें जलसे भय होता है और वृक्षसे वा घोडेसे गिरना सर्पका भय बीसवर्षकी उमरमें कहना चाहिये ॥ ५ ॥ इक्कीसवें वर्षमें पीडा होती है जो चंद्रमाको शुभग्रह देखते होंय तो पचासीवर्षकी उमर कहना वैशाखमासके कृष्णपक्षमें ॥ ६ ॥ आश्लेषानक्षत्रमें शुक्रवारको पहिले पहरमें मृत्यु होती है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकराशिस्थितचंद्रनिर्य्याणमाह ।

परतापपरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः ॥ विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः ॥१॥ असंतुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्यकर्मणि ॥ शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी॥२॥

बहुभृत्यश्चतुर्बंधुर्द्विभार्यो जायते पुमान् ॥प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः ॥ ३ ॥ पंचमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पंचदशेपि च ॥ पंचविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम् ॥ ४ ॥ चंद्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति ॥ ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ॥ ५ ॥ हस्तनक्षत्रसंयुक्ते मध्यरात्रे गते सति ॥ चंद्रे वृश्चिकराशिस्थे निर्याणमिति कीर्तितम् ॥ ६ ॥

अब वृश्चिकराशिस्थित चंद्रमाका निर्य्याण कहते हैं शत्रुओंसे लपनेवाला वैर करनेवाला कलह जिसको प्यारी विश्वासघात करनेवाला मित्रोंसे द्रोह करनेमें चतुर होता है ॥ १ ॥ और संतोषरहित राजपूज्य पराये कामोंमें विघ्न करनेवाला श्रेष्ठ लक्षणसहित पराक्रमी होता है ॥ २ ॥ बहुत नौकरोंवाला चार भाइयोंवाला दो स्त्रियोंवाला पहिले वर्षमें ज्वरकी पीड़ा तीसरे वर्षमें अग्निसे भय होता है ॥ ३ ॥ पांचवें वर्षमें ज्वरसे भय और पंद्रहवें वर्षमें ज्वरकी भय और पचीसवें वर्षमें बड़ी पीड़ा होय ॥ ४ ॥ जो चंद्रमा शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट होय तो नब्बे वर्ष जीता है ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष दशमी बुधवारको ॥ ५ ॥ हस्तनक्षत्रमें आधीरातको मरता है ॥ ६ ॥

अथ धनराशिस्थितचंद्रकृतनिर्य्याणमाह।

प्राज्ञो धर्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः॥द्विजदेवार्चने प्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः॥ १ ॥सभायां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः ॥ स्थूलदंताधरग्रीवः काव्यकर्ता प्रगल्भकः ॥ २ ॥ कुलशाली वदान्यश्च सभाग्यो दृढसौहृदः ॥ निम्नपादतलः क्लेशी साहसी विनयान्वितः ॥ ३ ॥ शांतः क्षिप्रप्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ् नरः ॥ स्वल्पापत्यो सुबंधुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ॥ ४ ॥

अब धनराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहते हैं। चतुर, धर्मवान, श्रेष्ठपुत्रोंवाला, राजमान्य मनुष्योंका प्यारा ब्राह्मण देवताओंके पूजनमें प्रीति करनेवाला वस्तुओंके संग्रह करनेमें तत्पर होता है ॥ १ ॥ सभाके बीचमें बोलनेवाला सुंदर नखोंवाला पवित्र मोटे दांत और ओठ गर्दनवाला पवित्र श्रेष्ठबुद्धिवाला काव्यका करनेवाला प्रगल्भ होता है ॥ २ ॥ श्रेष्ठकुल-

वाला भाग्यसहित दृढ मित्रता करनेवाला पैरोंके तलुवे जिसके कोमल क्लेश: पानेवाला साह-सी नम्रतासहित होता है ॥ ३ ॥ शांतस्वभाव जल्दी क्रोध करनेवाला तपस्वी थोड़ा खाने-वाला थोड़े पुत्रोंवाला श्रेष्ठ भाइयोंवाला पहिली उमरमें धनवान होता है ॥ ४ ॥

सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे ॥ अष्टषष्टिमितं प्राहु-रायुर्वा पंचसप्ततिः ॥ ५ ॥ चंद्रे सर्वशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जी-वति ॥ आषाढस्यासिते पक्षे पंचम्यां भृगुवासरे॥६॥निशा-यां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत् ॥ निर्य्याणमिति संप्रोक्तं चंद्रे सूतौ धनस्थिते ॥ ७ ॥

पहिली वर्षमें बाधा तेरहवें वर्षमें बडी पीड़ा होती है और अडसठ वा पचहत्तरवर्षकी उमर होती है ॥ ५ ॥ जो चंद्रमा सम्पूर्ण शुभग्रहोंकरके दृष्ट होय तो सौवर्ष जीता है आषाढका महीना शुक्रपक्ष पंचमी शुक्रवार ॥ ६ ॥ रात्रिमें हस्तनक्षत्रमें सर्वथा मृत्यु होती है यह धन-राशिगत चंद्रमाका निर्याण कहा है ॥ ७ ॥

अथ मकरराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह ।

धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्रवान्नृपतिप्रियः ॥ कृपालुः सत्यसंपन्नो वदान्यो शुभगोऽलसः ॥ १ ॥ कृष्णतालुः पुमान्नूनं विस्ती-र्णकटिरुद्भवेत्॥पंचमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम् ॥२॥ दशमे पतनं वृक्षाद्द्वादशे शस्त्रपीडनम्॥विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पञ्चविंशके ॥ ३ ॥ पंचत्रिंशत्समाकाले वामाङ्गेऽग्नि-भयं दिशेत् ॥ अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्तितम् ॥ ॥ ४ ॥ श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे ॥ ज्येष्ठायां निधनं नूनं चंद्रे मकरसंस्थिते ॥ ५ ॥

अब मकरराशिगत चंद्रमाका निर्य्याण कहते हैं, धीर चतुर क्लेशयुक्त पुत्रोंवाला राजाका प्यारा दयावान् सत्यसहित श्रेष्ठ भाग्यवाला आलसी होता है ॥ १ ॥ काले तालुवाला लंबी चौड़ी कमरवाला पांचवर्षमें पीडा और सातवें वर्षमें जलसे भय होता है ॥ २ ॥ दसवें वर्षमें वृक्षसे गिरे बारहें वर्षमें शस्त्रसे भय बीसवें वर्षमें ज्वरकी बाधा पचीसवें वर्षमें अंगोंमें पीड़ा होती है ॥ ३ ॥ पैंतीसवें वर्षकी उमरमें बायें अंगमें अग्निका भय होता है और नब्बे वर्षकी उमर होती है ॥ ४ ॥ श्रावणका महीना शुक्रपक्षमें दसमी मंगलवार ज्येष्ठा नक्षत्रमें मरता है ॥ ५ ॥

अथ कुंभराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह ।

दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्मकार्येषु सत्वरः ॥ प्रियवक्तृत्वसंयुक्तो नरः क्षीणकलेवरः ॥ १ ॥ स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः ॥ वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे ॥२॥ पंचमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ॥ व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ॥ ३ ॥ चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम् ॥ भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ॥ ४ ॥ भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ॥ एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चंद्रे जन्मनि कुंभगे ॥ ५ ॥

अब कुंभराशिगत चंद्रमाका निर्याण कहते हैं दानी मिष्टान्न भोजन करनेवाला धर्मकार्यको जल्दी करै ॥ १ ॥ प्यारा बोलनेवाला क्षीण शरीर होताहै ॥ १ ॥ थोडी संतानवाला दो स्त्रियोंवाला कामी धनहीन बायें हाथमें उसके चिह्न हो पहिले वर्षमें पीडा होती है ॥ २ ॥ पांचवें वर्षमें अग्निभय होय अथवा बारहें वर्षमें होय सर्पसे वा जलसे भय अट्ठाईसवें वर्षमें घाव ॥ ३ ॥ चोरोंकरके होता है नब्बेवर्षकी आयु पाता है भादोंका महीना कृष्णपक्ष चतुर्थी शनैश्चरवार ॥ ४ ॥ भरणी नक्षत्रमें मनुष्यका मरण होता है यह श्रेष्ठ मुनीश्वरोंने कुंभके चंद्रमाका फल कहा है ॥ ५ ॥

अथ मीनराशिगतचंद्रनिर्य्याणमाह ।

धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः ॥ पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तियुतो नरः ॥ १ ॥ उदारो रूपवाञ्छ्रेष्ठो गंधमाल्यविभूषणः ॥ पंचमेऽब्देजलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥ ॥ २ ॥ द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके ॥ पूर्वाशागमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ॥ ३ ॥ आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने ॥ कृत्तिकानामनक्षत्रे सायं

मृत्युर्न संशयः ॥ ४ ॥ इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम् ॥ मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ॥ ५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे प्रत्येकराशिस्थचंद्रनिर्य्याणाध्यायः ॥ २५ ॥

अब मीनराशिगत चंद्रमाका निर्य्याण कहते हैं धनवान् मानी नम्रतासहित भोगी प्रसन्नचित्त होता है पिता माता देवताओंका पूजन करनेवाला गुरुका भक्त होता है ॥ १ ॥ उदार रूपवान् श्रेष्ठगंध और पुष्पोंकी माला करके सुशोभित पाँचवें वर्षमें जलसे भय आठवें वर्षमें ज्वरकी पीड़ा होती है ॥ २ ॥ बाईसवें वर्षमें बड़ी पीड़ा और चौबीसवें वर्षमें पूर्वको यात्रा करे नब्बेवर्षकी उमर होती है ॥ ३ ॥ आश्विनका महीना कृष्णपक्ष द्वितीया तिथि बृहस्पतिवार कृत्तिकानाम नक्षत्रमें सायंकालके समय मृत्यु होती है ॥ ४ ॥ यह निर्याणाध्याय यवनाचार्यके मतका मीनराशिगत चंद्रमाका कहा है ॥ ५ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजगौरीपुत्रराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां सुनफादियोगाऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायप्रारंभः ।

यज्जन्मकालादुदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ॥
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥१॥

जो जन्मकालसे पुरुषोंको ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंने कहा है सो फल स्त्रियोंकोभी कहना चाहिये जो फल स्त्रियोंके कहने योग्य नहीं है सो सम्पूर्ण फल स्त्रियोंके स्वामीको कहना चाहिये ॥ १ ॥

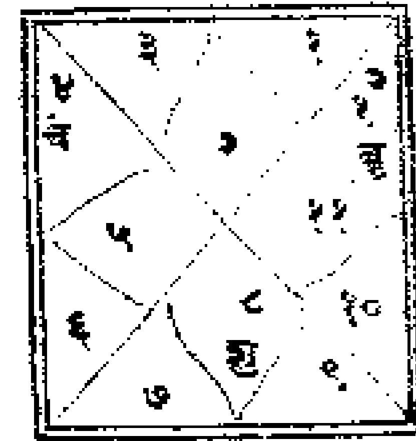
अथ स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यसुखसौंदर्यविचारस्थानमाह ।

लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैभवानि ॥
सुताख्यभावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेहे ॥२॥

स्त्रियोंके जन्मकालमें लग्न और चंद्रमासे देहका विचार करना चाहिये और लग्न चंद्रमासे

सातवें भावसे पतिका वैभव कहना चाहिये और पंचमभावसे संतानका विचार करना और अष्टमस्थानसे वैधव्यदोषका विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

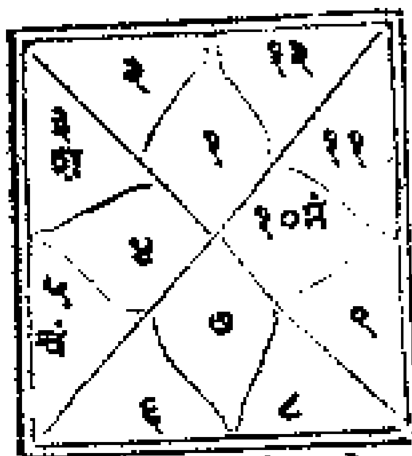
अथ स्त्र्याकृतियोगः।



लग्ने च चंद्रे समराशियाते कांता नितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् ॥ सद्रत्नभूषासहिताथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ॥ ३ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों २। ४। ६। ८। १०। १२ इन राशियोंमें होंय तो वह स्त्री स्त्रियोंकी प्रकृतिवाली होती है और जो पूर्वोक्तयोगोंको शुभग्रह देखते होंय तो वह स्त्री श्रेष्ठरत्नों युक्त आभूषणसहित श्रेष्ठशीलवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ पुरुषाकृतियोगः।



तयोः स्थितिश्चे द्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा ॥ पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जितालम् ॥ ४ ॥

जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्न और चंद्रमा दोनों विषमराशिमें होंय १। ३। ५। ७। ९। ११ और पूर्वोक्तलग्नोंको पापग्रह देखते होंय तो वह स्त्री पुरुषोंकेसे आकारवाली बुरे रूपवाली दुष्टशीलवाली गुणरहित होती है ॥ ४ ॥

अथ त्रिंशांशवशात्फलम्।

लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य स्वाम्यंशके कन्या स्याद्‌तिनिंदिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् ॥ दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी दासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाम्यंशे फलानि क्रमात् ॥ ५ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमामें जो अधिक बली होय और मंगलकी राशि

शुक्रके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या बडी निंद्य होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तो पतिव्रता होती है और मंगलके त्रिंशांशमें होय तो दुष्टा होती है और बुधके त्रिंशांशमें होय तो माया करनेवाली होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें होय तो दासी होती है ५

अथ बुधभवने लग्ने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

तारानाथकपुत्रभे वनिसुते त्रिंशल्लवे कापटा शौके हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ॥ देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितांतं तथा खाम्यंशेकेसुतस्य सा निगदिता क्लीबस्य भार्या बुधैः ॥ ६ ॥

जो लग्न व चंद्रमा बुधकी राशिमें मंगलके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या कपटस्वभाव करनेवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें होय तो कामरहित होती है और बुधके त्रिंशांशमें होय तो बहुत गुणोंवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तो निरंतर पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिंशांशमें नपुंसककी स्त्री होती है ॥ ६ ॥

अथ गुरुभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशके भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ॥ तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवेन्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कांता बुधैः कीर्तिता ॥ ७ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा बृहस्पतिके घरमें मंगलके त्रिंशांश होय तो वह कन्या गुणवती होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तो गुणोंके गण कर प्रसिद्ध होती है और बुधके त्रिंशांशमें होय तो सुंदर वैभववाली होती है और शुक्र त्रिंशांशमें होय तो पतिव्रता होती है और शनिश्चरके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या थोड़ी प्रीति करनेवाली होती है ॥ ७ ॥

अथ भृगुभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

दैत्याचार्यगृहे सुरेंद्रसचिवस्याकाशवन्ह्यंशके लग्ने वा द्युडुनायको गुणवती भौमस्य दोषाधिका॥सौम्यस्यातिकलाकलाप कुशला शुक्रस्य चश्वद्गुणैर्युक्तार्थैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ॥ ८ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके भवनमें लग्न वा चंद्रमा होय और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तौ वह कन्या गुणवती होती है और मंगलके त्रिंशांशमें होय तौ अत्यंत दुष्ट होती है और बुधके त्रिंशांशमें होय तौ कलाओंके समूहमें कुशल होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें होय तौ प्रकाशगुणवाली होती है और शनैश्वरके त्रिंशांशमें होय तौ वह पुनर्भू होती है अर्थात् विवाहके बाद दूसरेके घरमें रहती है ॥ ८ ॥

अथ शनिभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

मंदालये स्वाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला॥
बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता सा वन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ॥९॥

और जो कन्याके जन्मकालमें शनैश्वरकी राशि लग्न वा चंद्रमा होय और मंगलका त्रिंशांश होय तौ वह कन्या दासी होती है और बुधके त्रिंशांशमें होय तौ वह कन्या दुष्ट होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तौ पतिकोही देवता माननेवाली होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें होय तौ बांझ होती है और शनैश्वरके त्रिंशांशमें होय तौ नीचमें रति करनेवाली स्त्री होती है ॥ ९ ॥

अथ रविभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

लग्ने वा विधुरर्कमंदिरगतो भौमस्य स्वाग्र्यंशके स्वेच्छा संचरणोद्यता शशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ॥ देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १० ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा सूर्यकी राशिमें होय और मंगलके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या अपनी इच्छानुसार विचरनेवाली होती है. और बुधके त्रिंशांशमें होय तो दुष्टचित्तवाली होती है और बृहस्पतिके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या राजाकी रानी होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें होय तो व्यभिचारिणी होती है और शनैश्वरके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या पुरुषोंके समान प्रगल्भ होती है ॥ १० ॥

अथ चंद्रभवने लग्नेंद्वोस्त्रिंशांशवशात्फलम् ।

चंद्रागारे स्वाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्यस्य शिल्पे प्रवीणा ॥
वांछा पत्युः सद्गुणा भार्गवस्य साध्वी मंदस्य प्रियप्राणहंत्री ११॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा कर्कराशिके होंय और मंगलके त्रिशांशमें बैठे होंय तो वह कन्या अपने इच्छानुसार चलनेवाली होती है और बुधके त्रिशांशमें बैठे होंय तो शिल्पकलामें प्रवीण होती है और बृहस्पतिके त्रिशांशमें बैठे होंय तो श्रेष्ठ गुणवाली होती है और शुक्रके त्रिशांशमें होंय तो पतिव्रता होती है और शनैश्चरके त्रिशांशमें बैठे होंय तो पतिके प्राण लेनेवाली होती है ॥ ११ ॥

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह ।

अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्कौ यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे ॥
कंदर्पशांतिं कुरुते नितांतं नारी नराकारकराङ्गनाभिः ॥ १२ ॥

अब शुभाशुभयोग कहते हैं जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्रके नवांशमें शनैश्चर और शनैश्चरके नवांशमें शुक्र बैठा होय और आपसमें देखते होंय (एको योगः) अथवा जन्मलग्न तुला होय उसमें कुंभके नवांशका उदय होय तो वह कन्या नराकार किसी अन्यस्त्रियोंका करके अर्थात् किसी प्रकारका लिंग उसकी कमरमें बंधाकर उस स्त्री द्वारा अपनी कामाग्निकी शांति कराती है ॥ १२ ॥

अथ कापुरुषयोगः ।

शून्ये मन्मथमंदिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले बालायाः
किल नायको मुनिवरैः कापुरुषः कीर्तितः ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें स्थानमें कोई ग्रह नहीं होय और शुभग्रह नहीं देखते होंय और सप्तमभाव निर्बल होय तो उस कन्याका पति बेवकूफ आलसी होता है अर्थात् निरुद्यमी होता है ॥

अथ क्लीबपतियोगः ।

जामित्रं बुधमंदयोर्यदि गृहं षण्ढो भवेन्निश्चितं

जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें ३ । ६ । १० । ११ ये राशियें होंय तो उस कन्याका पति नपुंसक होता है ॥

अथ प्रवासशीलभर्तृयोगः ।

राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यंगे च मिश्रस्थितिः ॥ १३ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तमभावमें १ । ४ । ७ । १० ये राशि होंय तो उसका पति परदेशमें रहता है और जो द्विस्वभावराशि सातवें होंय ३ । ६ । ९ । १२ होय तो उसकन्याका पति कभी परदेश कभी घर रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

अथ पतित्यक्तयोगः।

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता

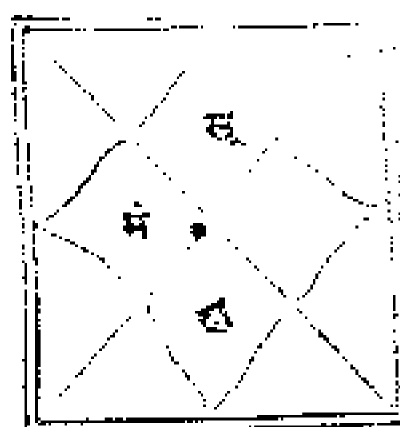
जिस कन्याके सातवें भावमें सूर्य बैठाहोय वह कन्या पति करके त्यागी जाती है ॥

अथाक्षतायाएव रंडायोगः।

क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठाहोय तौ वह कन्या बालविधवा होती है ॥

अथ विवाहविहीनतायोगः।



पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरती स्यात् ॥ १४ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शनैश्वर बैठाहोय और उसको पापग्रह देखते होंय तौ वह कन्या कुमारीही रहकर वृद्धा होजाती है ॥ १४ ॥

अथ गतालकायोगः।

खलैः कलत्रे च गतालका स्यात्

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें पापग्रह बैठे होंय तो वह कन्याकी मांग नष्ट होती है ॥

अथ पुनर्भूयोगः।

कांता विमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुभाशुभग्रह बैठे होंय तौ उस कन्याका दोबार विवाह होता है ॥

अथ पतित्यक्तायोगः।

कलत्रसंस्थे विबले खलाख्ये सौम्यैरदृष्टे विभुना विमुक्ता ॥ १५ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें बलहीन पापग्रह बैठे होंय और शुभग्रहोंकरके अदृष्ट होंय तौ वह कन्या पतिकरके त्यागी जाती है ॥ १५ ॥

अथ परपुरुषगामिनीयोगः।

अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ स्यात्तां कांता संगतान्येन नूनम् ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल शुक्रके नवांशमें बैठाहोय और शुक्र मंगलके नवांशमें बैठा होय तौ यह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

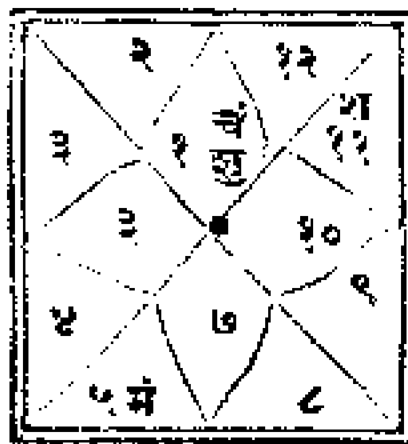
अथ पत्याज्ञया दुश्चरीयोगः

चंद्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्थावाज्ञेव स्यात्स्वामिनश्चामनंति १६॥

जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र मंगल सातवें बैठे होंय तौ वह कन्या पतिकी आज्ञासे परपुरुषसे रमण करती है ॥ १६ ॥

परपुरुषरतायोगः।

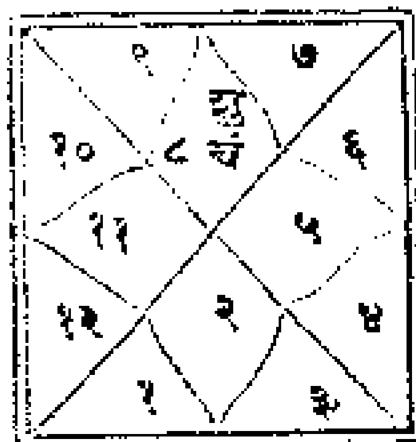
परपुरुषरतायोगः १७



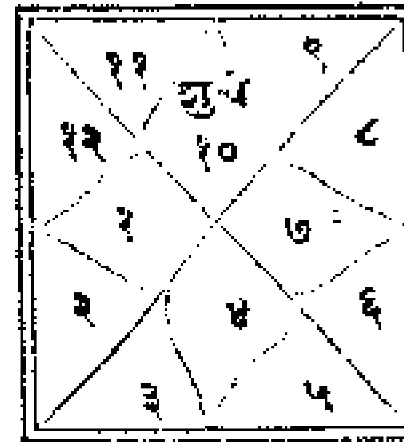
लग्ने सितेन्दू कुजमंदभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जघन्या ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें लग्नमें शुक्र और चंद्रमा मंगल शनैश्चरकी राशिमें बैठे होंय और पापग्रहोंकरके दृष्ट होंय तौ वह कन्या परपुरुषगामिनी होती है ॥

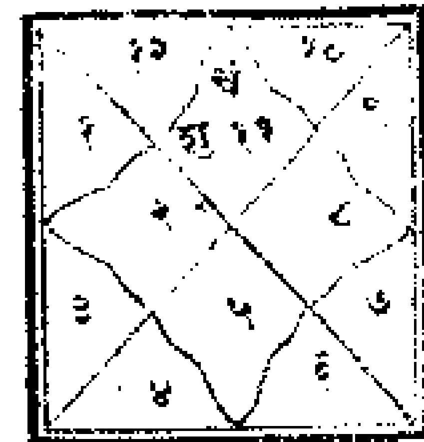
परपुरुषरतायोगः



परपुरुषरतायोगः



परपुरुषरतायोगः



विनष्टयोनियोगः।

स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे ॥ १७ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें मंगल बैठा होय और शनैश्चरकरके दृष्ट होय और शुभ ग्रह पापग्रहोंके नवांशमें बैठे होंय तौ उस कन्याकी योनि नष्ट होती है ॥ १७ ॥

अथ सप्तमभावस्थनवांशफलमाह।

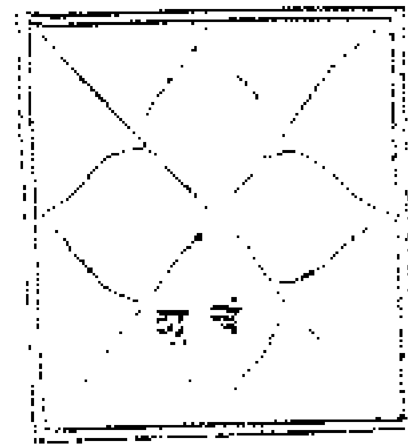
भानोर्भे यदि वा लवःस्मरगृहे संभोगमंदः पतिश्चन्द्रस्यातिमृदो मृदुः क्षितिसुतस्य स्त्री प्रियः क्रोधयुक् ॥ विद्वान् ज्ञस्य गुरोर्वशी

गुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो मंदस्य प्रवयास्तु गूढमतिरित्युक्तो बुधैर्होरिकैः ॥ १८ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें सूर्यकी राशि नवांश होवे उस कन्याका पति संभोगमें मंद होता है और चंद्रमाकी राशि और नवांश होय तो उसका पति मदयुक्त कोमल होता है और मंगलकी राशि नवांश होय तो उसका पति स्त्रीका प्यारा क्रोधसहित होता है जो सातवें बुधकी राशि नवांश होय तो उसका पति पंडित होताहै और बृहस्पतिकी राशि नवांशमें पति वशी गुणोंसहित होता है और शुक्रकी राशि नवांश सातवें होय तो उसका पति भाग्यवान होता है और शनैश्चरकी राशि और नवांश सातवें होय तो उस कन्याका पति बूढा गूढमति होराशास्त्रके जाननेवालोंने कहा है ॥ १८ ॥

अथ ईर्ष्यान्वितयोगः।

ईर्ष्यान्वितयोगः

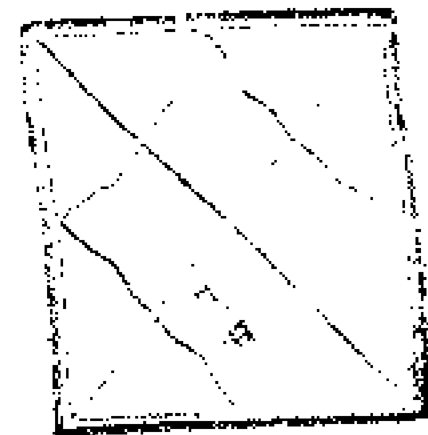


शुक्रेंदू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्विताम्

जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र चंद्रमा बैठे होंय तो वह कन्या ईर्ष्यासहित और सुखकरके सहित होती है ॥

अथ कलावतीयोगः।

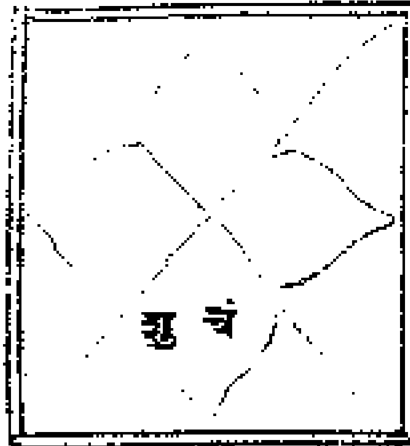
कलावतीयोगः



सौम्येंदू च कलासुखोत्तमगुणां

और जिस कन्याके सातवें भावमें चंद्रमा बुध बैठेहोंय तो वह कन्या कलावती सुखसहित उत्तम गुणोंवाली होती है ॥

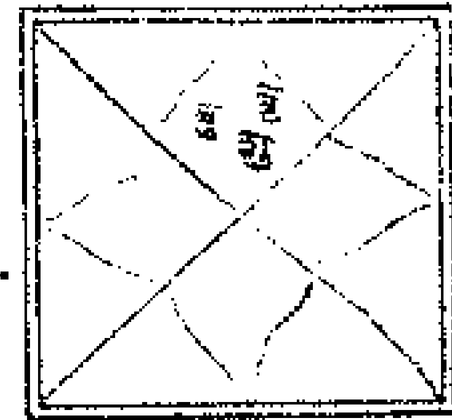
अथ भाग्यवतीयोगः ।



शुक्रेन्दुपुत्रावथ ॥ चंचद्भाग्यकलाज्ञताभिरुचिरां

और जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें भावमें शुक्र चंद्रमा बैठे होंय तो वह कन्या बडे भाग्यकरके सहित कलाओंकी जाननेवाली शोभायमान होती है ॥

अथ भूषणाढ्यायोगः ।



सौम्यग्रहैर्द्यूनस्तनौ नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखा पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥

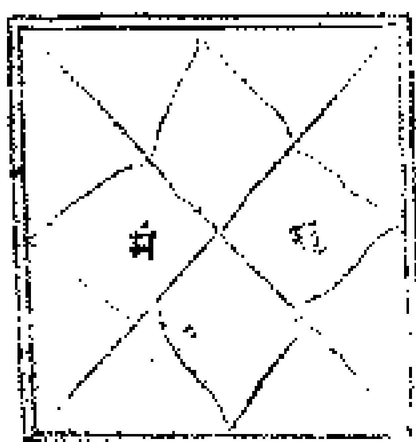
और जिस कन्याके जन्मकालमें शुभग्रह लग्नमें बैठे होंय तो वह कन्या अनेक आभूषणोंसहित श्रेष्ठ गुणवती वस्त्रोंके सुख पानेवाली होती है और जो पापग्रह सातवें बैठे होंय तो दुर्भगा दुःशीला नेष्टा दुष्टा होती है ॥ १९ ॥

अथ वैधव्ययोगः ।

वैधव्यं स्यात्पापखेटेष्टमस्थे रंध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे॥ मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि ॥ २० ॥

जिस कन्याके अष्टमभावमें पापग्रह बैठे होंय वह विधवा होती है और अष्टमभावका स्वामी जिसके नवांशमें बैठा होय उस ग्रहकी दशामें मृत्यु कहना चाहिये और जिसके दूसरे भावमें शुभग्रह बैठे होंय वह कन्या अपनेही दोषसे मरती है ॥ २० ॥

अथ शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः ।

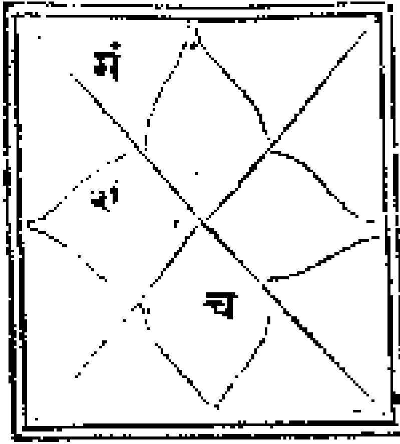


सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिः ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य, मंगल दशम, चतुर्थ बैठे होंय तो वह कन्या हिमालयपर्वतसे गिरकर मरती है ॥

अथ कूपवापीतो मरणयोगः।

कूपवापीतोमरणयोगः



भौमेन्दुर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूप-वाप्यादितः ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल चंद्रमा शनैश्चर द्वितीय, सप्तम, चतुर्थ बैठे होंय तो वह कन्या कूपमें वा बावडीमें गिरकर मरती है ॥

अथ बंधनान्मृत्युयोगः।

बन्धनान्मृत्युयोगः



सूर्याचंद्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बंधनात्

जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य, चंद्रमा पापग्रहोंकरके युत और दृष्ट होंय और कन्याराशिमें बैठे होंय तो वह कन्या बंधनमें मरती है ॥

अथ जले मृत्युयोगः।

जलेमृत्युयोगः



तौ चेद्व्यंगविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्नाः स्वतः ॥ २१ ॥

और जो सूर्य, चंद्रमा लग्नमें द्विस्वभावराशिमें बैठे होंय तो वह कन्या जलमें डूबकर मरती है ॥ २१ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः।

जलोदरेण मृत्युयोगः



रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ॥ किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥ २२ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शनैश्चर कर्कमें बैठा होय और चंद्रमा मकरराशिमें होय तो वह कन्या जलोदररोगसे मरती है ॥ ९२ ॥

अथ शस्त्राग्निना मृत्युयोगः ।

शस्त्राग्निना मृत्युयोगः

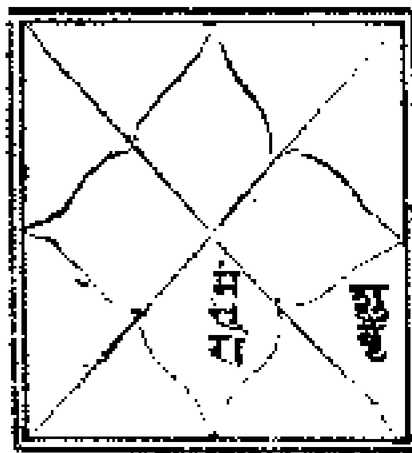


निशाकरः पापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें और मेष या वृश्चिकराशिमें होय तो वह कन्या शस्त्र वा हथियारकरके मरती है ॥

अथ संन्यासिनीयोगः ।

संन्यासिनीयोगः



पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलांगना प्रव्रजितत्वमेति ॥ २३ ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें पापीग्रह सातवें बैठे होंय और शुभग्रह नवममें बैठे होंय तो वह कन्या संन्यासिनी होती है वा घर छोड़कर परदेशमें रहती है ॥ २३ ॥

अथाल्पपुत्रायोगः ।

कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु स्वल्पपुत्रा ॥

जिस कन्याके जन्मकालमें कन्या, वृश्चिक, सिंहराशिगत चंद्रमा बैठा होय वह कन्या थोडे पुत्रोंवाली होती है ॥

बहुपुत्रायोगः ।

पुत्रालयं चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम् ॥ २४ ॥

और जिस कन्याके जन्मकालमें पंचम भावमें शुभग्रह बैठे होंय और शुभग्रहों करके दृष्ट होंय तो वह कन्या बहुत पुत्रोंवाली होती है ॥ २४ ॥

अथ पुरुषस्वभावाप्रगल्भायोगः।

शुक्रेंदुसौम्या विबला भवेयुः शनैश्वरो मध्यबलो यदि स्यात्॥
शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा॥२५॥

जिस कन्याके जन्मकालमें शुक्र, चंद्र, बुध निर्बल होंय और शनैश्वर मध्यबली होय बाकी के ग्रह सब बलवान होंय और लग्न, विषमराशिकी होय वह पुरुषोंके स्वभाववाली प्रगल्भा होती है॥ २५॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः।

समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः॥
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चा परागमज्ञानविराजमाना॥२६॥

जिस कन्याके जन्मकालमें समलग्न होंय उसमें बलकरके सहित शुक्र, बुध, चन्द्रमा बृहस्पति बैठे होंय तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करनेवाली और ब्रह्मज्ञानमें तत्पर होती है॥ २६॥

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं सम्यग्वा-
प्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम्॥ योगानां
च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा पाणिग्रहणे तथा
च वरणे संभूतिकालेऽपि च॥ २७॥

जो पहिले मुनीश्वरोंने स्त्री जातकमें विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल कहा है सो बुद्धिमानोंने ग्रहोंका बलाबल विचार करके कहना चाहिये पहिले कहे हुए स्त्रियोंके योग उनका विचार प्रश्न कालमें विवाहके समयमें अथवा लडाईके समय अथवा जन्मसमयमें विचार करना चाहिये॥ २७॥

अथ नारीचक्रमाह।

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्रे मानां सप्तकं स्थापनीयम्॥
प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः
॥ २८॥ नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चंद्रधि-
ष्ण्यावधीत्थम्॥ सत्संतापः शीर्षभे वक्रसंस्थे नित्यं मिष्टा-
न्नानि सौख्योपलब्धिः॥ २९॥

अब नारीचक्र कहते हैं स्त्रियाकारस्वरूप बनाकर मस्तकमें तीन नक्षत्र देवे और मुखमें सात नक्षत्र देवे और चूंचियोंमें चार चार नक्षत्र देवे और हृदयपर तीन नक्षत्र देवे ॥ २८ ॥ और तीन नक्षत्र टूडीमें देवे और तीन नक्षत्र गुह्यस्थानपर देवे यह नक्षत्र सूर्यके नक्षत्रसे लेकर क्रमसे देवे चंद्रनक्षत्रतक विचार करे जो चंद्रनक्षत्र शिरमें पड़े तो संताप करे और मुखके नक्षत्रमें पडे तो हमेशा मिष्टान्न खाया करे और सुखको प्राप्त होय ॥ २९ ॥

कामं स्वामिप्रेमवृद्धिस्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यंतहर्षः ॥
पत्युश्चितानंतवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ३०

और जो चूंचियोंके नक्षत्रमें चंद्रनक्षत्र पडे तौ काम और स्वामीसे प्रेमकी वृद्धि करे और छातीके स्थानमें चंद्रनक्षत्र पडे तौ अत्यंत हर्षको देता है और टूडीके नक्षत्रोंमें पडे तौ पतिकी चिंता अधिक करावे और गुह्यस्थानमें चंद्रनक्षत्र पडे तौ वह स्त्री अत्यंत कामवती होती है ॥ ३० ॥

अथ ग्रंथकारस्य देशवर्णनम् ।

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत् ॥
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत्॥३१॥

गोदावरीनदीके किनारे शोभायमान पार्थनामक नगरमें श्रेष्ठ गोलगणितमें निर्मल है यश जिनका सो मेरे पूर्वजोंके रहनेकी जगह है ॥ ३१ ॥

तत्रत्यदैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ॥
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव होरागमेऽनुक्रममादरेण ॥ ३२ ॥
इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे स्त्रीजा-
तकाध्यायः ॥ २६ ॥

तहां नृसिंहदैवज्ञका पुत्र श्रीगणेशजीका आराधन करनेवाला ढुण्ढिराज है नाम जिसका सो जातकाभरणनामकग्रंथको रचतेहुए जिसमें जन्मपत्रीका क्रम आदरसे लिखा है ॥ ३२ ॥

अथ भाषाकारकृतग्रंथसमाप्तिः ।

नंदबाणनिधीन्द्वब्दे फाल्गुनस्य सिते दले ॥
पंचम्यां चंद्रवारे च भाषा पूर्तिमगाच्छुभम् ॥ १ ॥
वंशबरेलीत्यभिधे नगरे गौडान्वये सुजनिः ॥
व्यतनोदिममनुवादं दैवज्ञः श्यामलालाख्यः ॥ २ ॥

श्रीविक्रमादित्यसंवत् १९५९ फाल्गुणका मास शुक्लपक्षमें पंचमी चन्द्रवारको यह श्रेष्ठ भाषा पूर्ण हुई ॥ १ ॥ बांसबरेलीनामनगरके विषे गौडवंशमें प्राप्त किया है जन्म जिसने सो श्यामलाल ज्योतिषीने यह भाषा विस्तार कियी ॥ २ ॥

इति श्रीवंशबरेलीस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजमौरीपुरराजज्योतिषिक-
पण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां स्त्रीजातकाध्यायः
समाप्तः ॥ २६ ॥ शुभं भवतु ॥

समाप्त ।

३२४०



"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालय—मुम्बई.